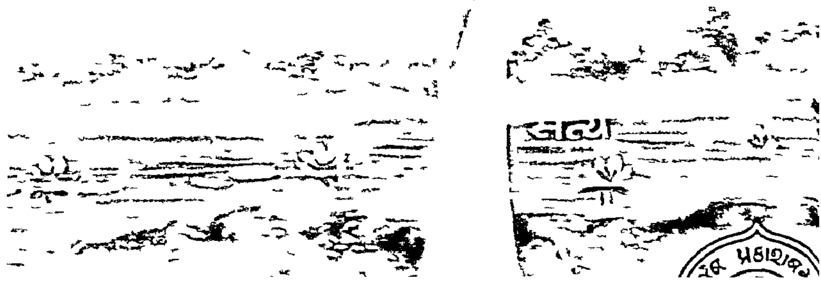

नमो लोए सव्वसाहूणं
नमो उवज्झायाणं
नमो आयरियाणं
नमो सिद्धाणं
नमो अरिहंताणं
ॐ
एसो पंच नमोक्कारो
सव्व पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं
पढम हवइ मंगलम
आसक्ति
अपरिग्रह
ब्रह्मचर्य
असतय



જૈન પ્રકાશન મંદિર, અમદાવાદ.



श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमः

सरल विधिसहित (सचित्र)

श्री पंच प्रतिक्रमण सूत्र

(भावार्थ सहित)



: प्रकाशक :

श्री पारसमल प्रेमचंद

२७०, सायन (पूर्व)

बम्बई-४०००२२

: पुस्तक प्राप्ति स्थान :

जैन प्रकाशन मन्दिर

३०९।४ खत्रीनी खडकी

दोशीवाडानी पोल-अहमदाबाद-१

फोन-३८३७०६

मूल्य : पन्द्रह रुपया



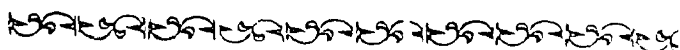
: पुस्तक प्राप्ति स्थान :

(१) जैन प्रकाशन मदिर
३०९।४ खत्रीनी खडकी
दोशीवाडा नी पोळ
अहमदाबाद-३८०००१

(२) सोमचन्द डी-शाह
जीवन निवास सामे, पालीताना-३६४२७०

(३) मेघराज जैन पुस्तक भंडार
२१९/A कीकास्ट्रीट, गोडाजीनी चाल.
पायधुनी, बबइ-४००००२

(४) श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जैन पुस्तक भंडार
मु पो शखेश्वर-३८४२४६



: मुद्रक :

श्री रामानन्द प्रिन्टींग प्रेस
काकरिया रोड
अहमदाबाद-३८००२२

अनुक्रमणिका

प्रस्तावना

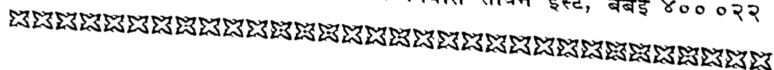
अनादि अनत कालसे चोरासी लक्षयोनि मे आत्मा का परिभ्रमण चालु है। उसमे अनंत पुण्योदयके कारण जैन धर्मकी प्राप्ति हुई।

जैन शासनमें आत्म शुद्धि के लीए धर्म क्रिया का महत्व बताया है। जैसे कपडे पर साबुन लगानेसे मैल दूर होकर वस्त्र उज्ज्वल बनता है, वैसे ही जिन दर्शित क्रिया करने से आत्मा पर लगे हुए कर्म के थर दूर होते हैं और आत्मा उज्ज्वल बनता है।

कर्मका आगमन अशुभ क्रिया से होता है, क्रिया याने प्रवृत्ति। आये हुए कर्म संवर निर्जराकी क्रियासे ही दूर होते हैं। कर्मके उदयको अटकाने के लिए संवर क्रियाकी जरूरत है।

साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका रूप चतुर्विध संघको कर्मबन्धन मे से छूटने के लीए प्रतिक्रमण क्रियाका विधान बताया है।

प्रतिक्रमण का संस्कृत के नियमानुसार-प्रति-पीछे हटना, क्रमण-गमन करना पापरूप क्रिया से पीछेहठ करना स्वदशामें आना। प्रमत्तदशासे अप्रमत्तदशामें आना।



ाक पारसमल प्रेमचद २७०, रुपउदय निवास सायन इस्ट, बबई ४०० ०२२

उस प्रतिक्रमणको मूलमें आवश्यक सूत्रभी कहते हैं प्रतिक्र-मण आवश्यक क्रियासे आत्मा अंतर दृष्टिवाला बनता है

ज्ञानी भगवंतोने आवश्यक क्रियाके छः विभाग बताये हैं

(१) सामायिक (२) चतुर्विंशति स्तव (३) वंदन (४) प्रतिक्रमण (५) काउस्सग्ग (६) पच्चक्खाण

(१) सामायिक आवश्यक इरियावही करके करेमि भंते का पाठ गुरुमुखसे होता है भूतकाल के पापों की निंदा गर्हा–वर्तमान पाप प्रवृत्तिसे अटकना, और भविष्यके पापके प्रत्याख्यान रूप हैं।

(२) चतुर्विंशति आवश्यक चतुर्विंशति जिनोंके गुणोका कीर्तन करते हुए आत्मा भगवान जैसा बनता है चैत्यवंदन करके चार थोय बोल करके होता है लोगस्स सूत्रसे चतुर्विं-शति आवश्यककी आराधना की जाती है।

(३) गुरु भगवंतके चरणोमे वादणा देनेसे होते है। गुरुका विनय और अपराध की क्षमापना करते और आलो-चना लेते समय सुगुरु वंदन सूत्र बोला जाता है गुरुका शुभाशीर्वाद से कैसे भी भारी पापों को धो डालता है।

(४) श्रावक के १२ व्रत संबंधी ७५ अतिचार (दोष और ४९ अतिचार (दोष) पंचाचार–सम्यक्त्व संलेखनाके मिलाकर १२४ अतिचारो को शुद्धि के लिए वंदित्तासूत्र

उपयोग पूर्वक अर्थ चिंतवनसे बोला जाता है तो अति पापी भी पावन हो जाता है इसीलिए हर एक आत्माको प्रतिक्रमण करना चाहिए–

(५) ज्ञानाचार–दर्शनाचार चारित्राचार–तपाचार और वीर्याचार की शुद्धि निमित्त काऊस्सग्ग किया जाता है। सवधर्मानुष्ठानकी शक्तिको विना छुपाकर उद्यम करनेसे वीर्याचार की शुद्धि होती है।

(६) गुरु भगवत के पासे आहारादि के त्यागरूप पच्चक्खाण लेने से पच्चक्खाण आवश्यक होता है "नारकीजीव सं। वर्ष मे जितना कर्म खपाते हैं उतना कर्म नवकार सीका पच्चक्खाणसे आत्मा खपाता है इसीलिए हर एक आत्माको पोरिसि साढ्ढपोरिसि पुरिमुड्ढ इत्यादि करना चाहिए–

प्रतिक्रमणके हर एक सूत्र बहुत ही गाम्भीर्य और तत्त्वसे भरपूर है उसके अर्थ–भावार्थ–समझने से अपार शुभ भावनाकी वृद्धि से आत्मा अनादि कालसे संचित कीए हुए पापका भार उतारके हल्का बन जाता है। प्रतिक्रमणके सूत्र मत्र गर्भित है

जैसे गारुडिक लोग सर्प विछि आदि का जहर उतारन के लिए मन्त्रोच्चार करते है और मन्त्रके बलसे व्यक्ति का जहर

दूर हो जाता है वैसे ही प्रतिक्रमणके सूत्र मंत्राक्षररूप होने सें कर्मरूपी जहरको उतारने की शक्तिवाला होनेसे कर्म का जहर दूर होता है।

इसलिए प्रतिक्रमण पढनेवाले और पढानेवाले प्रत्येक भव्यात्मा सूत्रों की शुद्धि एवं समझ उपर संपूर्ण लक्ष देनेका ध्यान रखते हुए करे।

अनादिकालसे इकट्ठे किये गये पापो का नाश करने वाली लाखों जन्मान्तरों को मंथन करनेवाली ऐसी चौवीस तीर्थंकर के मुखसे निकली हुइ धर्मकथासे अपना जीवन व्यतीत, करे हर एक जीव इसे सुने वाचे और उपयोगमें लावे।

सम्यग्दृष्टि देवताओं मेरेको धर्म ध्यानमें चित्तकी स्थिरता समाधि और सम्यक्त्वकी प्राप्तिमें निरतर सहायक हो।

परम पूज्य आचार्यजी विजय यशोदेव सूरीश्वरजी. ओ. की आज्ञासे श्री मुक्ति कमल जैन मोहनमाला कार्यवाहक समिति ने इस पुस्तक में लिए गये चित्रों को पुनः प्रकाशित करने की अनुमति दी है इस सहकार के लिए हम संस्था के आभारी हैं।

: प्रकाशक :

श्री पारसमल प्रेमचंद

प्रभु तारु गीत मारे गावुं छे.

प्रभु तारु गीत मारे गावु छे,
प्रेमनुं अमृत पावु छे प्रभु

थाय जीवनमा तडका ने छाया
मागु हुं तारी एक ज माया
भक्तिना रसमा न्हावु छे प्रभु

भव सागरमा नाव झकावी
त्या तो भयानक आंधी चडी आवी
सामे किनारे मारे जावु छे प्रभु

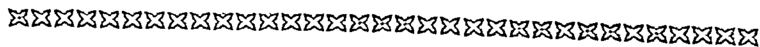
तु वीतरागी हु अनुरागी
तारा जीवननी रट मने लागी
प्रभु तारा जेवुं मारे थावु छे प्रभु

इस पुस्तक को उपयोग मे लेने से पहले पुस्तक मे दिये गये परिशिष्ट–१ और २ को ध्यान मे लेना आवश्यक होगा और पुस्तक म दिए गये चित्रो को ध्यान से देखना भी आवश्यक होगा।

प्रकाशक

॥ श्री आदीश्वर भगवान ॥

प्रकाशक पारसमल प्रेमचद २७०, रुपउदय निवास सायन इस्ट, बवई ४०० ०२



॥ श्री महावीराय नम' ॥

सरल विधि सहित-

श्री पञ्च प्रति मण सूत्र

सामायिक लेनेकी विधि

(पहिले उचे आसन पर पुस्तक प्रमुख रखके श्रावक श्राविका, शुद्ध वस्त्र से कटासणा, मुहपत्ति, चरवला लेकर भूमि पूज के कटासणे पर बैठ के मुहपत्ती बाये हाथमे मूहके पास रखके जिमणा हाथ स्थापनाजीके सन्मुख रखकर ऐसा कहे)

नमो अरिहताणं॥१॥नमो सिद्धाण॥२॥नमो आयरियाणं ॥३॥नमो उवज्झायाणं ॥४॥ नमो लोए सव्वसाहूणं ॥५॥ एसो पंच नमुक्कारो ॥६॥ सव्वपावप्पणासणो ॥७॥ मगलाणं च सव्वेसिं ॥८॥ पढमं हवइ मंगलं ॥९॥

(ऐसे एक नवकार गिनकर फिर)

पंचिदिय संवरणो, तह नवविह बंभचेर गुत्तिधरो; चउ-विह कसाय मुक्को, इअ अट्ठारस गुणेहिं संजुत्तो ॥१॥ पच महव्वय जुत्तो, पच विहायार पालण समत्थो; पंच समिओ तिगुत्तो, छत्तीस गुणो गुरू मज्झ ॥२॥

—

(ऐसे पचिंदिय कहे, यदि पहिले उस स्थान पर आचार्य प्रमुखकी स्थापना की हुई हो तो वहा नवकार और पचिंदिय नहीं कहना, फिर)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥२॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउ ॥१॥ इरियावहियाए, विराहणाए ॥२॥ गमणागमणे ॥३॥ पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग-पणगदग मट्टी-मक्कडा-संताणा-संकमणे ॥४॥ जे मे जीवा विराहिया ॥५॥ एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया ॥६॥ अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥७॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोही करणेणं, विसल्ली करणेणं, पावाणं कम्माणं, निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥८॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए

१ प्रतिक्रमण वगैरेह विधिओमे जहा जहा खमासमण देनेमे आते है वहा वहा खडे होकर देना चाहिये, आदेश भी खडे होकर मागना चाहिये ।

॥१॥सुहुमेहि, अंग संचालेहि, सुहुमेहिं, खेलसंचालेहि, सुहुमेहि दिट्ठिसंचालेहिं, ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहि, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(फिर एक लोगस्स या चार नवकारका काउस्सग्ग करना। पीछे प्रगट लोगस्स कहना सो नीचे मुताबिक है।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे, अरिहंते कित्तइस्स, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभ-मजिअं च वंदे, संभव-मभिणंदण च सुमइं च; पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पह वंदे ॥२॥ सुविहि च पुप्फदंत, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च; विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लि, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च; वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाण च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला पहीण जरमरणा; चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा; आरुग्ग बोहिलाभं, समाहि वर मुत्तम दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा; सागर वर गंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक मुहपत्ति पडिलेहु ? इच्छं,

(ऐसा कहकर मुहपत्ति पडिलेहन करना, फिर)

इच्छामि खमासमणो वंदिउ , जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक संदिसाहुं ! "इच्छं" इच्छामि खमासमणो वंदिउ , जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक ठाउं ? "इच्छं"
(ऐसा कहकर दोनो हाथ जोड के नीचे मुजब एक नवकार गिनना)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंचनमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं। पीछे (दो हाथ जोडके)

इच्छकारी भगवन् ! पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी?
(ऐसा गुरु महाराज को कहना । यदि गुरु न हो तो स्वयं बोलना)

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं, तिविहेणं मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि, (फिर)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बेसणे संदिसाहुं ? 'इच्छं' इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बेसणे ठाउं ? 'इच्छं,' इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय संदिसाहुं ? 'इच्छं' इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसी-हिआए मत्थएण वंदामि

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय करु ? 'इच्छं'

(ऐसा कहकर दोनों हाथ जोड के तीन नवकार गिनना)

सामायिक लेने की विधि संपूर्ण

राइ प्रतिक्रमण विधि

[उपरोक्त प्रकारसे सामायिक लेकर बाद]

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन ! कुसुमिण दुसुमिण उड्डावणी राइ पायच्छित्त विसोहणत्थं काउस्सग्ग करु ? इच्छं, कुसुमिण दुसुमिण उड्डावणी राइ पायच्छित्त विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्ग ”

अन्नत्थ ऊससिएण, नीससिएणं, खासिएणं, छीएण, जंभाइएण, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए ॥१॥सुहुमेहि अंग संचालेहिं, सुहुमेहिं, खेल संचालेहिं, सुहुमेहि दिट्ठि संचालेहि ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताण नमुक्कारेण न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेण मोणेण झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(चार लोगस्सका “चंदेसु निम्मलयरा” तक काउस्सग्ग करना । लोगस्स न आता हो तो सोलह नवकारका काउस्सग्ग करना, काउस्सग्ग पार के प्रगट लोगस्स कहना । वह नीचे मुजब है—)

लोगस्स उज्जोअगरे,धम्म—तित्थयरे जिणे: अरिहंते कित्तइस्स, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभ—मजिअं च वंदे, संभव-मभिणंदणं च सुमइ च; पउमप्पह सुपासं, जिण च चंदप्पह वंदे ॥२॥ सुविहि च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्ज च; विमल—मणंत च जिणं, धम्मं संति च वंदामि ॥३॥ कुंथु अरं च मल्लि, वंदे मुणिसुव्वय नमि—जिण च; वंदामि रिट्ठनेमि, पासं तह वद्धमाण च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ विहुय—रय-

मला पहीणजर मरणा; चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा, आरुग्ग बोहिलाभं, समाहि वर मुत्तम दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा; सागर वर गंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥७॥ फिर,

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करुं ? इच्छं
(ऐसा कहकर बाया घूटना ऊँचा करके चैत्यवंदन करना)

चैत्यवंदन.

जगचिंतामणि जगनाह, जगगुरु जगरक्खण, जगबंधव जगसत्थवाह, जगभाव-विअक्खण, अट्ठावय-संठविय-रूव, कम्मट्ठ-विणासण, चउवीसंपि जिणवर जयंतु, अप्पडिहयसासण ॥१॥ कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं पढम-संघयणी, उक्कोसय सत्तरिसय, जिणवराण विहरंत लब्भइ, नवकोडिहिं केवलीण. कोडिसहस्स नव साहु गम्मइ, संपइ जिणवर वीस मुणि, बिहुं कोडिहिं वरनाण, समणह कोडि सहस्स दुअ, थुणिज्जइ निच्च विहाणि ॥२॥ जयउ सामिय जयउ सामिय, रिसह सत्तुंजि, उज्जिंति पहु नेमिजिण, जयउ वीर सच्चउरी-मंडण; भरुअच्छहिं मुणिसुव्वय, मुहरिपास दुहदुरिअखंडण, अवरविदेहिं तित्थयरा, चिहुं दिसि विदिसि जिंकेवि, तीआणागय संपइअ

मला पहीणजर मरणा; चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसी-
यंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा
सिद्धा, आरुग्ग बोहिलाभं, समाहि वर मुत्तम दिंतु ॥६॥
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा; सागर वर
गभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसतु ॥७॥ फिर,

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए
मत्थएण वंदामि.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करुं ? इच्छं
(ऐसा कहकर बाया घूटना ऊँचा करके चैत्यवंदन करना)

चैत्यवंदन.

जगचिंतामणि जगनाह, जगगुरु जगरक्खण, जगबंधव
जगसत्थवाह, जगभाव-विअक्खण, अट्ठावय-संठविय-रुव,
कम्मट्ठ-विणासण, चउवीसंपि जिणवर जयंतु, अप्पडिहयसा-
सण ॥१॥ कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहि पढम-संघयणी, उक्कोसय
सत्तरिसय, जिणवराण विहरंत लब्भइ, नवकोडिहिं केवलीण.
कोडिसहस्सा नव साहु गम्मइ, संपइ जिणवर वीस मुणि, बिहुं
कोडिहि वरनाण, समणह कोडि सहस्स दुअ, थुणिज्जइ निच्च
विहाणि ॥२॥ जयउ सामिय जयउ सामिय, रिसह सत्तुंजि,
उज्जिंति पहु नेमिजिण, जयउ वीर सच्चउरी-मंडण; भरुअ-
च्छहिं मुणिसुव्वय, मुहरिपास दुहदुरिअखंडण, अवरविदेहि
तित्थयरा, चिहुं दिसि विदिसि जिकेवि, तीआणागय संपइअ

वंदुं जिण सव्वेवि ॥३॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लक्खा छप्पन्न अट्ठ कोडीओ; बत्तीससय बासिआइ, तिअलोए चेइए वंदे ॥४॥ पनरसकोडि सयाइ, कोडि बायाल लक्ख अडवन्ना; छत्तीस सहस असिइं, सासय बिंबाइं पणमामि ॥५॥

जंकिंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए, जाइ जिण बिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥१॥

नमुत्थुण अरिहंताणं भगवंताणं ॥१॥ आइगराण तित्थयराण, सयसंबुद्धाण ॥२॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाण, पुरिसवर पुंडरीआणं, पुरिसवर गंध हत्थीणं ॥३॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाण, लोगहिआण, लोगपईवाण, लोगपज्जोअगराणं ॥४॥ अभयदयाण, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥५॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्म नायगाण, धम्म सारहीणं, धम्मवरचाउरंत चक्कवट्टीणं ॥६॥ अप्पडिहय–वरनाण–दसणधराण, विअट्ट छउमाणं ॥७॥ जिणाणं जावयाणं,तिन्नाण तारयाणं, बुद्धाण बोहयाण, मुत्ताणं मोअगाण ॥८॥ सव्वन्नूण, सव्वदरिसीण सिव–मयल–मरुअ-मणत–मक्खय मव्वाबाह मपुणरावित्ति सिद्धि–गइ–नामधेय ठाणं संपत्ताण, नमो जिणाण जिअभयाण ॥९॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्सति णागए काले, संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

जावंति चेइआइ, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ; सव्वाइ ताइ वंदे, इह संतो तत्थ संताइ ॥१॥

(फिर खमासमण नीचे मुताबिक देना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि.

जावंत केवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ; सव्वेसि तेसि पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥१॥

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः

उवसग्गहर पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं; विसहर विसनिन्नासं, मंगल-कल्लाण-आवास ॥१॥ विसहर फुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ; तस्स–गह रोग मारी, दुट्ठ जरा जंति उवसामं ॥२॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामोवि बहु-फलो होइ; नर–तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि–कप्पपाय–वब्भहिए; पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इअ संथुओ महायस ! भत्तिब्भर–निब्भरेण हिअएण, ता देव दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद ॥५॥

(फिर दोनों हाथ मस्तक को लगाकर)

जय वीयराय ? जगगुरु, होउ मम तुह पभावओ भयवं; भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ॥१॥ लोगविरुद्ध-च्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च; सुहगुरुजोगो तव्वयण सेवणा आभवमखंडा ॥२॥ वारिज्जइ जइवि निआण, बंधणं वीयराय ! तुह समए; तह वि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह

चलणाण ॥३॥ दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, समाहिमरण च वोहिलाभो अः संपज्जउ मह एअं, तुह नाह पणाम करणेण ॥४॥ सर्व मंगल मागल्यं, सर्व कल्याण कारणम्, प्रधानं सर्व धर्माणा, जैन जयति शासनम् ॥५॥

(यहा एक एक खमासमण देकर भगवानहं इत्यादि एक एक पद कहना चाहिये यह नीचे मुताबिक बोलना)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि, 'भगवानहं' इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि, 'आचार्यहं इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि, 'उपाध्यायहं' इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि, 'सर्वसाधुहं.'

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय संदिसाहुं ?' इच्छं, इच्छामि खमासमणो ? वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि;

'इच्छाकारेण संदिसह भगवन सज्झाय करुं ?'' इच्छं.

(ऐसा कहकर एक नवकार गिनना, फिर भरहेसरकी सज्झाय कहनी वह नीचे मुजब)

सज्झाय.

भरहेसर वाहुवली, अभयकुमारो अ ढंढण कुमारो; सिरिओ अणिआउत्तो, अइमुत्तो नागदत्तो अ ॥१॥ मेअज्ज

थूलिभद्दो, वयररिसी नंदिसेण सीहगिरीः कयवन्नो अ सुको-सल, पुंडरीओ केसि करकंडू ॥२॥ हल्ल विहल्ल सुदंसण, साल महासाल सालिभद्दो अ, भद्दो दसन्नभद्दो, पसन्नचंदो अ जसभद्दो ॥३॥ जंबुपहू वंकचूलो, गयसुकुमालो अवंतिसुकु-मालो; धन्नो इलाइपुत्तो, चिलाइपुत्तो अ बाहुमुणी ॥४॥ अज्ज गिरिअज्ज--रक्खिअ, अज्जसुहत्थी उदायगो मणगोः काल--यसूरी संबो, पज्जुन्नो मूलदेवो अ ॥५॥ पभवो विण्हुकुमारो, अद्दकुमारो दढप्पहारी अ; सिज्जंस कूरगडू अ, सिज्जंभव मेहकुमारो अ ॥६॥ एमाइ महासत्ता, दितु सुह गुणगणेहि संजुत्ता; जेसि नामग्गहणे, पावपबंधा विलय जंति ॥७॥ सुलसा चंदनबाला, मणोरमा मयणरेहा दमयंती; नमया सुंदरी सीया, नंदा भद्दा सुभद्दा य ॥८॥ राईमई रिसिदत्ता, पउमावइ अंजणा सिरीदेवी; जिट्ठ सुजिट्ठ मिगावई, पभावई चिल्लणादेवी ॥९॥ बंभी सुंदरी रुप्पिणी, रेवई कुंती सिवा जयंती य; देवई दोवई धारणी, कलावई पुप्फचूला य ॥१०॥ पउमावई य गोरी, गंधारी लक्खमणा सुसीमा य; जंबूवई सच्चभामा, रूप्पिणी कण्हट्ठ महिसीओ ॥११॥ जक्खा य जक्खदिन्ना, भूआ तह चेव भूअदिन्ना य; सेणा वेणा रेणा, भयणीओ थूलिभद्दस्स ॥१२॥ इच्चाइ महासईओ, जयंति अकलंक सील कलिआओ; अज्जावि वज्जइ जासि, जस पडहो तिहुअणे सयले ॥१३॥

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमु—

क्कारो सव्व पावप्पणासणो, मगलाणं च सव्वेसि, पढमं हवइ मंगलं ॥

इच्छकार सुहराइ, सुखतप, शरीर निराबाधः सुखसंजमजात्रा निर्वहो छोजीः स्वामी शाता छे जी ?

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ? राइ पडिक्कमणे ठाउं इच्छ.

सव्वस्सवि राइअ दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ, मिच्छामि दुक्कडं

नमुत्थुण अरिहंताण भगवताण ॥१॥ आइगराण, तित्थयराण, सयंसंबुद्धाण ॥२॥ पुरिसुत्तमाण, पुरिससीहाण, पुरिसवरपुंडरीआण, पुरिसवरगधहत्थीण ॥३॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाण, लोगहिआण, लोगपईवाण, लोगपज्जोअगराण ॥४॥ अभयदयाण, चक्खुदयाण, मग्गदयाण, सरणदयाण, बोहिदयाण ॥५॥ धम्मदयाण, धम्म–देसयाण धम्म–नायगाण, धम्म–सारहीण, धम्मवरचाउरंत,चक्कवट्टीण ॥६॥अप्पडिहयवरनाण–दंसणं–धराण विअट्ट -छउमाण ॥७॥ जिणाण जावयाण, तिन्नाण तारयाण, बुद्धाण बोहयाणं, मुत्ताण, मोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूण, सव्वदरिसीण, सिव मयल मरुअ मणत मवखय–मव्वाबाह–मपुणराविति –सिद्धिगइ –नामधेयं–ठाण संपत्ताण,नमो जिणाण जिअभयाण ॥९॥ जेअ अईआ सिद्धा, जेअ भविस्संति णागए काले; संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियम पज्जुवासामि, दुविह तिविहेण, मणेणं, वायाए, काएण, न करेमि, न कारवेमि तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि. (फिर)

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे राइओ अइआरो, कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचितिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावग पाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए, तिण्ह गुत्तीण, चउण्हं कसायाण, पंचण्ह मणुव्वयाण, तिण्हं गुणव्वयाण, चउण्हं सिक्खावयाण, वारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खण्डिअं, जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरी करणेण, पायच्छित्त करणेण, विसोही करणेण, विसल्ली करणेण, पावाण कम्माण, निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥८॥

अन्नत्थ ऊससिएण, नीससिएण खासिएण, छीएण, जंभाइएण उड्डुएण, वायनिसग्गेण, भमलीए, पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहि अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहि दिट्ठिसंचालेहि ॥२॥ एवमाइएहि आगारेहि, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताण नमुक्कारेण न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेण मोणेण झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

क्कारो सव्व पावप्पणासणो, मगल्लाणं च सव्वेसि, पढमं हवइ मगलं ॥

इच्छकार सुहराइ, सुखतप, शरीर निराबाध. सुखसंजमजात्रा निर्वहो छोजीः स्वामी शाता छे जी ?

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ? राइ पडिक्कमणे ठाउ इच्छं.

सव्वस्सवि राइअ दुच्चितिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ, मिच्छामि दुक्कडं

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥१॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सयसंबुद्धाणं ॥२॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥३॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥४॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥५॥ धम्मदयाणं, धम्म-देसयाणं धम्म-नायगाणं, धम्म-सारहीणं, धम्मवरचाउरंत,चक्कवट्टीणं ॥६॥अप्पडिहयवरनाण-दंसणं-धराणं विअट्ट -छउमाणं ॥७॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिव मयल मरुअ मणंत मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति -सिद्धिगइ -नामधेयं-ठाणं संपत्ताणं,नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥९॥ जेअ अईआ सिद्धा, जेअ भविस्संति णागए काले; संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियम पज्जुवासामि, दुविह तिविहेण, मणेण, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि. (फिर)

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे राइओ अइआरो, कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावग पाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए, तिण्ह गुत्तीण, चउण्ह कसायाण, पंचण्ह मणुव्वयाण, तिण्हं गुणव्वयाण, चउण्हं सिक्खावयाण, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खण्डिअं, जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरी करणेण, पायच्छित्त करणेण, विसोही करणेण, विसल्ली करणेण, पावाण कम्माण, निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥८॥

अन्नत्थ ऊससिएण, निससिएण खासिएण, छीएण, जंभाइएण उड्डुएण, वायनिसग्गेण, भमलीए, पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहि अंगसंचालेहि, सुहुमेहि खेलसंचालेहिं, सुहुमेहि दिट्ठिसंचालेहि ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहि, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताण नमुक्कारेण न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेण मोणेण झाणेणं अप्पाण वोसिरामि ॥५॥

(फिर एक लोगस्स 'चदेसु निम्मलयरा" तक या चार नव-कारका काउस्सग्ग करना, पीछे प्रगट लोगस्स कहना सो नीचे मुताबक है।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म तित्थयरे जिणे; अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभ मजिअं च वंदे, संभव मभिणदणं च सुमइं च; पउमप्पहं सुपासं, जिण च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्ज च; विमल मणतं च जिण, धम्म संति च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अर च मल्लि, वंदे मुणिसुव्वय नमिजिण च; वंदामि रिट्ठनेमि, पासं तह वद्धमाण च ॥४॥ एवं मए अभि-थुआ, विहुय रयमला पहीण जर मरणाः चउवीसंपि जिण-वरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा; आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवर-मुत्तमं दितु ॥६॥ चदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयास यरा; सागर वर गंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥७॥ (फिर)

सव्वलोए अरिहंत चेइआणं, करेमि काउस्सग्गं ॥१॥ वंदण-वत्तिआए, पूअण-वत्तिआए, सक्कार वत्तिआए, सम्माण-वत्तिआए, बोहिलाभ वत्तिआए, निरुवसग्ग वत्तिआए ॥२॥ सद्धाए, मेहाए, धीइए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥३॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए,

॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(फिर एक लोगस्स का 'चंदेसु निम्मलयरा" तक या चार नवकार का काउस्सग्ग करना। फिर पुक्खरवरदी वड्ढे कहना। वह नीचे मुजब है।)

पुक्खर वरदीवड्ढे, धायईसंडे अ जंबूदीवे अ ॥ भरहेरवय विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥१॥ तम तिमिर पडल विद्धंसणस्स, सुरगण-नरिंद-महिअस्स; सीमा धरस्स वंदे, पप्फोडिअ मोह जालस्स ॥२॥ जाइ जरामरण सोग पणासणस्स ॥ कल्लाण पुक्खलविसाल सुहावहस्स ॥ को देवदाणव नरिंदगणच्चिअस्स ॥ धम्मस्स सार मुवलब्भ करे पमायं ॥३॥ सिद्धे भो पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे ॥ देवं नागसुवन्न किन्नर गणसब्भुअ भावच्चिए ॥ लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्क मच्चासुरं ॥ धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥४॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं ॥ वंदणवत्तिआए,पूअणवत्तिआए ॥ सक्कारवत्तिआए, सम्माण वत्तिआए ॥ बोहिलाभवत्तिआए ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए ॥२॥ सद्धाए मेहाए धीइए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥३॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,

जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहि अंगसंचालेहि, सुहुमेहि खेलसंचालेहि, सुहुमेहि दिट्ठिसंचालेहि ॥२॥ एवामाइएहि, आगारेहि, अभग्गो अविराहिओ; हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(फिर अतिचार की आठ गाथा का काउस्सग्ग करना, यदि न आता हो तो आठ नवकार मत्र ही गिनना । काउस्सग्गमे गिनने की आठ गाथा नीचे मुजब है)

नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि तहय वीरियंमि ॥ आयरणं आयारो ॥ इअ एसो पंचहा भणिओ ॥१॥ काले विणए बहुमाणे ॥ उवहाणे तह अनिन्हवणे ॥ वंजण अत्थ तदुभए ॥ अट्ठविहो नाण मायारो ॥२॥ निस्संकिय निक्कंखिअ ॥ निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी अ ॥ उववुह थिरीकरणे, वच्छल्ल–पभावणे अट्ठ ॥३॥ पणिहाण जोग जुत्तो ॥ पचहि समिइहि तिहि गुत्तीहि ॥ एस चरित्तायारो ॥ अट्ठविहो होइ नायव्वो ॥४॥ बारसविहंभि वि तवे ॥ सब्भितर बाहिरे कुसलदिट्ठे ॥ अगिलाई अणाजीवी ॥ नायव्वो सो तवायारो ॥५॥ अणसण मूणोअरिआ ॥ वित्ती संखेवण रसच्चाओ; कायकिलेसो संलीणया य, बज्झो तवो होइ ॥६॥ पायच्छित्तं विणओ ॥ वेयावच्चं तहेव सज्झाओ; झाण उस्सग्गो वि अ ॥ अब्भितरओ तवो होइ ।७॥ अणिगूहिअ बल वीरिओ

परक्कमइ जो जहुत्त माउत्तो ॥ जुंजइ अ जहाथामं, नायव्वो वीरिआयारो ॥८॥

(काउस्सग्ग पारके सिद्धाण बुद्धाण कहना वह नीचे मुजब है)

सिद्धाणं बुद्धाण, पारगयाणं, परपरगयाणं ॥ लोअग्ग-मुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाण ॥ १ ॥ जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति, त देवदेव–महिअं, सिरसा वदे महावीरं ॥२॥ इक्कोवि नमुकारो, जिणवर—वसहस्स वद्धमाणस्स । संसार सागराओ, तारेइ नर व नारिं वा ॥३॥ उज्जित सेल सिहरे, दिक्खा नाण निसीहिआ जस्स । त धम्मचक्कवट्टिं; अरिट्ठनेमि नमंसामि ॥४॥ चत्तारि–अट्ठ–दस दोय, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं; परमट्ठ–निट्ठि–अट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥५॥

(फिर तीसरे आवश्यक की मुहपत्ती पडिलेहन करके दो वांदणा देना, वह नीचे मुजब है)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसी-हिआए ॥१॥ अणुजाणह ॥ मे मिउग्गहं ॥२॥ निसीहि, अ–हो का–यं का–य, संफासं खमणिज्जो भे किलामो, अप्प किलताणं, बहुसुभेण भे राई वइक्कंता ! ॥ ३ ॥ जत्ता भे ? ॥४॥ ज–व–णिज्जं च भे ? ॥ ५ ॥ खामेमि खमासमणो, राइअं वइक्कम्मं ॥ ६ ॥ आवस्सिआए पडिक्कमामि, खमासम-णाण राइआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जंकिंचि

तिण्ह गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वगाणं, चउण्ह सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं ज विराहिअ ॥ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

सात लाख पृथ्वीकाय ॥ सात लाख अप्काय ॥ सात लाख तेउकाय ॥ सात लाख वाउकाय ॥ दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय ॥ चउद लाख साधारण वनस्पतिकाय ॥ बे लाख बेइंद्रिय, बे लाख तेइंद्रिय, बे लाख चउरिंद्रिय ॥ चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय ॥ चौद लाख मनुष्य, एवंकारे, चोरासी लाख जीवायोनिमांहे, म्हारे जीवे जे कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणता प्रत्ये अनुमोद्यो होय, ते सर्वे मन, वचन, कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं.

पहेले प्राणातिपात, बीजे मृषावाद, त्रीजे अदत्तादान, चौथे मैथुन, पाचमे परिग्रह ॥ छट्ठे क्रोध, सातमे मान, आठमे माया, नवमे लोभ, ॥ दसमे राग, अग्यारमे द्वेष, बारमे कलह, तेरमे अभ्याख्यान, चौदमे पैशुन्य; पन्नरमे रति अरति, सोलमे परपरिवाद, सत्तरमे माया मृषावाद, अढारमे मिथ्यात्व शल्य, ए अढार पापस्थानक माहि म्हारे जीवे जे कोइ पाप सेव्यु होय, सेवराव्यु होय, सेवता प्रत्ये अनुमोद्युं होय, ते सर्वे मन, वचन, कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ।

सव्वस्सवि राइअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इच्छं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

आरंभे; कारावणे अ करणे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥३॥ ज बद्ध मिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं; रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥४॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे; अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥५॥ संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु। सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥६॥ छक्काय समारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा। अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥७॥ पंचण्ह-मणुव्वयाणं, गुण-व्वयाणं च तिण्ह मइयारे; सिक्खाणं च चउण्ह, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥८॥ पढमे अणुव्वयंमि, थूलग-पाणाइवाय-विरइओ; आयरिय मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥९॥ वहबंधछविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए। पढम-वयस्स-इआरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं॥१०॥ बीए अणुव्वयंमि, परिथूलग-अलियवयण विरइओ। आयरिय मप्पसत्थे, इत्थ पमाय-प्पसंगेणं ॥११॥ सहसा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ। बीअ-वयस्स-इआरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥१२॥ तइए अणुव्वयंमि, थूलग परदव्व-हरण विरइओ। आयरिय-मप्पसत्थे,इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥१३॥ तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्ध गमणे अ। कूडतुल कूडमाणे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥१४॥ चउत्थे अणु-व्वयंमि, निच्चं परदारगमण-विरइओ; आयरिय मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥१५॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणगविवाह तिव्व-अणुरागे। चउत्थ वयस्सइआरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥१६॥

इत्तो अणुव्वए पचमंमि, आयरियमप्पसत्यमि । परिमाण परिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेण ॥१७॥ धण धन्न खित्त-वत्थु, रुप्प सुवन्ने अ कुविअ परिमाणे । दुपए चउप्प-यमि य, पडिक्कमे राइअ सव्व ॥१८॥ गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअ च । वुड्ढि सइअंतरद्धा, पढमम्मि गुणव्वए निंदे ॥१९॥ मज्जमि अ, मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ। उवभोग परिभोगे, बीयंमि गुणव्वए निंदे ॥२०॥ सचित्ते पडिबद्धे, अप्पोल दुप्पोलिअ च आहारे । तुच्छोसहि-भक्खणया, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥२१॥ इगाली-वण साडी, भाडी फोडी सुवज्जए कम्मं । वाणिज्जं चेवय दन्त, लक्ख रस केस-विसविसयं ॥२२॥ एव खु जंतपिल्लण, कम्मं निल्लछणं च दवदाण । सर-दह-तलाय-सोसं, असईपोसं च वज्जिज्जा ॥२३॥ सत्थग्गि-मुसल जंतग, तण कट्ठ-मंत-मूल-भेसज्जे । दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे राइअ सव्वं ॥२४॥ न्हाणु-व्वट्टण-वन्नग, विलेवणे सद्द रुव-रस गंधे । वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥२५॥ कदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहि-गरण भोग अइरित्ते । दंडमि अणट्ठाए, तइअंमि गुणव्वए निंदे ॥२६॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइ विहूणे । सामाइअ वितहकए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥२७॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रुवे अ पुग्गलक्खेवे । देसावगासिअमि, बीए सिक्खावए निंदे ॥२८॥ संथारुच्चारविहि, पमाय तह चेव भोयणाभोए । पोसह विहिविवरीए, तइए सिक्खावए निंदे

॥२९॥ सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस मच्छरे चेव। कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥३०॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे असंजएसु अणुकंपा। रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥३१॥ साहूसु संविभागो, न कओ तव-चरण-करण जुत्तेसु। संते फासुअ-दाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥३२॥ इहलोए, परलोए, जीविअ-मरणे अ आससपओगे। पंचविहो अइयारो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते ॥३३॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइ-अस्स वायाए। मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥३४॥ वंदण वयसिक्खा-गारवेसु, सन्ना कसायदंडेसु। गुत्तीसु ए समिइसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥३५॥ सम्मदिट्ठी जीवो, जइवि हु पावं समायरे किंचि। अप्पोसि होइ बंधो, जेण न निद्धधसं कुणइ ॥३६॥ त पि हु सपडिक्कमणं, सप्परि-आवं सउत्तरगुणं च। खिप्पं उवसामेइ, वाहिव्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥३७॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूल विसारया। विज्जा हणंति मंतेहि, तो त हवइ निव्विसं॥३८॥ एवं अट्ठविहं कम्मं, राग दोस-समज्जिअं। आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥३९॥ कयपावोवि, मणुस्सो, आलोइअ, निंदिअ गुरुसगासे। होइ अइरेग लहुओ ओहरिअ-भरुव्व भारवहो ॥४०॥ आवस्सएण एएण, सावओ जइवि बहुरओ होइ। दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥४१॥ आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमण-काले। मूलगुण-उत्तर

गुणे, त निंदे त च गरिहामि ॥४२॥ तस्स धम्मस्स केवली-
पन्नत्तस्स ॥

(यहा से दाहिना गोडा नीचे रखकर बोलना)

अब्भुट्ठिओ मि आराहणाए, विरओमि विराहणाए । तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥४३॥ जावंति चेइआइ, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ। सव्वाइ ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥४४॥ जावंत केवि साहू, भरहेरवयमहा-विदेहे अ । सव्वेसि तेसि पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥४५॥ चिर संचिय पावपणासणीइ, भवसय सहस्स महणीए। चउवीस-जिण–विणिग्गय–कहाइं, वोलंतु मे दिअहा ॥४६॥ मम मंगल मरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ। सम्मद्दिट्ठी देवा दितु समाहिं च बोहिं च ॥४७॥ पडिसिद्धाण करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमण।असद्दहणे अ तहा, विवरीय परू-वणाए अ ॥४८॥ खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे। मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणइ ॥४९॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं । तिविहेण पडि-क्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥५०॥

(फिर दो वार वांदणा नीचे मुताविक देना)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ॥१॥ अणुजाणह, मे मिउग्गहं ॥२॥ निसीहि, अहो का-यं, काय संफासं, खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण

भे राई वइक्कंता ? ॥३॥ ज-त्ता भे ? ॥४॥ ज व-णिज्जं च भे? ॥५॥ खामेमि खमासमणो ! राइअं वइक्कम्मं ॥६॥ आवस्सिआए, पडिक्कमामि, खमासमणाणं राइआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जंकिंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, काय दुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ॥१॥ अणुजाणह, मे मिउग्गह, ॥२॥ निसीहि, अहो–कायं–काय संफास, खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताण वहुसुभेण भे ! राई वइक्कंता, ॥३॥ जत्ता भे ॥४॥ जवणिज्ज च भे ? ॥५॥ खामेमि खमासमणो राइअ वइक्कम्मं ॥६॥ पडिक्कमामि खमासमणाणं राइआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जंकिंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर राइअं खामेउं ? इच्छं खामेमि राइअं.

(पीछे जीमणा हाथ जमीनपर रखके)

जं किंचि अपत्तिअ, परपत्तिअ, भत्ते, पाणे, विणए, वेआवच्चे, आलावे, संलावे. उच्चासणे, समासणे. अंतरभासाए, उवरिभासाए, जंकिंचि मज्झ विणय-परिहीणं, सुहुम वा बायरं वा. तुब्भे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥

(फिर दो वांदणा नीचे मुताबिक देना)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ॥१॥ अणुजाणह: मे मिउग्गह ॥२॥ निसीहि, अ-हो. का य, का-य संफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे, राई वइक्कंता ? ॥३॥ ज त्ता भे ? ॥४॥ जवणिज्जं च भे ? ॥५॥ खामेमि खमासमणो ! राइअं वइक्कम्मं ॥६॥ आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाण राइआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जंकिंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए. लोभाए सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए. सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ॥१॥ अणुजाणह मे मिउग्गह ॥२॥ निसीहि अहो काय काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलताण बहुसुभेण भे राई वइक्कंता ॥३॥ जत्ता मे ? ॥४॥

णिज्जं च मे ॥५॥ खामेमि खमासमणो राइअं वइकम्मं ॥६॥ पडिक्कमामि खमासमणाणं राइआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वगदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

आयरिय उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे अ; जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥१॥ सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलि करीअ सीसे। सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥२॥ सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मनिहिअ निअचित्तो। सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥३॥

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएण, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते, ! पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे राइओ, अइआरो, कओ. काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं-

गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(यहां पर तप चिंतन का काउस्सग्ग करना, यदि न आता हो तो सोलह नवकार गिनना, फिर काउस्सग्ग पारके प्रकट लोगस्स कहना, वह नीचे मुताबिक है ।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठ-

यरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थ-
यरा मे पसीयतु ॥४॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स
उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तम दिंतु ॥५॥
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहिय पयासयरा। सागरवर-
गंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥

(फिर छट्ठे आवश्यक की मुहपत्ति पडिलेहन कर के दो वादणा देना वह नीचे मुजब है।)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ॥१॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं ॥२॥ निसीहि, अहो कायं काय संफास खमाणज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे राई वइक्कंता! ॥३॥ जत्ता भे? ॥४॥ जवणिज्जं च भे? ॥५॥ खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कमं ॥६॥ आवस्सिआए पडिक्कमामि, खमासमणाणं राइआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जंकिंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्मा—इक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहि—आए ॥१॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं ॥२॥ निसीहि, अहो कायं काय संफास खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं, बहुसुभेण भे राई वइक्कता ॥३॥ जत्ता भे ॥४॥ जवणिज्जं

गुणव्वयाण, चउण्ह सिक्खावयाणं, वारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥

तस्स उत्तरी करणेणं,पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेण, विसल्लीकरणेणं, पावाण कम्माण निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्ग ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएण, खासिएण, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं,वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहि अगसंचालेहि, सुहुमेहि खेलसंचालेहि, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहि ॥२॥ एवमाइएहि आगारेहि, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाण वोसिरामि ॥५॥

(यहा पर तप चितन का काउस्सग्ग करना, यदि न आता हो तो सोलह नवकार गिनना, फिर काउस्सग्ग पारके प्रकट लोगस्स कहना, वह नीचे मुताविक है।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं,चउवीसंपि केवली॥१॥ उसभमजिअ च वंदे,संभवमभिणंदण च सुमइ च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पह वंदे॥२॥सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जस वासुपुज्जं च । विमलमणंत च जिण,धम्मं संति च वंदामि ॥३॥ कुंथु अर च मल्लि, वदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ,विहु-

यरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थ-यरा मे पसीयतु ॥४॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तम दिंतु ॥५॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवर-गंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥

(फिर छट्ठे आवश्यक को मुहपत्ति पडिलेहन कर के दो वादणा देना वह नीचे मुजब है।)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ॥१॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं ॥२॥ निसीहि, अहो कायं काय संफास खमाणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहु सुभेण भे राई वइक्कंता! ॥३॥ जत्ता भे? ॥४॥ जवणिज्जं च भे? ॥५॥ खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कम्मं ॥६॥ आवस्सिआए पडिक्कमामि, खमासमणाणं राइआए आसा-यणाए, तित्तीसन्नयराए, जंकिंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्मा-इक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहि-आए ॥१॥ अणुजाणह मे मिउग्गह ॥२॥ निसीहि, अहो काय काय संफास खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलताणं, बहुसुभेण भे राई वइक्कता ॥३॥ जत्ता भे ॥४॥ जवणिज्जं

भाख ॥७॥ एकसो एंशी बिंब प्रमाण, एक एक चैत्ये संख्या जाण । तेरसे क्रोड नेव्यासी क्रोड, साठ लाख वंदुं कर जोड ॥८॥ बत्रीसे ने ओगणसाठ, तीर्छालोकमां चैत्यनो पाठ । त्रण लाख एकाणुं हजार, त्रणशे वीश ते बिंब जुहार ॥९॥ व्यंतर ज्योतिषिमां वली जेह, शाश्वता जिन वंदु तेह । ऋषभ चंद्रानन वारिषेण, वर्द्धमान नामे गुणसेण ॥१०॥ समेत-शिखर वंदु जिन वीश, अष्टापद वंदु चोवीश । विमलाचल ने गढ गिरनार, आबु उपर जिनवर जुहार ॥११॥ शखेश्वर केसरिओ सार, तारंगे श्री अजित जुहार । अंतरिक्ष वरकाणो पास, जीरावलो ने थंमण पास ॥१२॥ गाम नगर पुर पाटण जेह, जिनवर चैत्य नमुं गुण गेह । विहरमान वंदुं जिन वीश, सिद्ध अनंत नमु निश दिश ॥१३॥ अढी द्वीपमां जे अणगार, अढार सहस शीलांगना धार । पंच-महाव्रत समिति सार, पाळे पळावे पंचाचार ॥१४॥ बाह्य-अभ्यंतर तप उजमाळ, ते मुनि वंदुं गुण मणिमाळ । नित नित उठी कीर्ति करुं, जीव कहे भवसायर तरुं ॥१५॥

(फिर जो पच्चक्खाण धारना हो वो यहा पर धार लेना ।)

नमुक्कार सहिअं मुट्ठिसहिअं का पच्चक्खाण

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअ मुट्ठिसहिअ पच्चक्खाइ । चउव्विहंपि आहारं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागा-

रेणं वोसिरइ ।

पोरिसि सोड्ढपोरिसि का पच्चक्खाण

उग्गए सूरे नमुकारसहिअ पोरिसिं साड्ढपोरिसि मुट्ठि-सहिअ पच्चक्खाइ उग्गए सूरे चउव्विहपि अहारं असणं,पाणं, खाइमं, साइम, अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेण, दिसामोहेणं, साहूवयणेणं, महत्तरागारेण, सव्वसमाहि-वत्तिआगारेण वोसिरइ ।

सामायिक, चउव्विसत्थो, वादणा, पडिक्कमणु, काउस्सग्ग,पच्चक्खाण किया हे जी (किया हो तो किया है, धारा हो तो धारा है,एसा कहना और नोकारसि पोरिसि उपरात पच्चक्खाण करना हो तो भी यहा पर धार लेना ।)

(पुरुष इच्छामो अणुसट्ठि नमो खमासमणाणं नमोऽर्हत्-सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्य ऐसा कहके विशाल लोचन कहे ।

विशाललोचनदलं, प्रोद्यदंताशुकेसरः प्रातर्वीरजिनेंद्रस्य, मुखपद्मं पुनातु वः ॥१॥ येषामभिषेककर्म कृत्वा, मत्ता हर्ष भरात् सुखं सुरेन्द्राः । तृणमपि गणयंति नैव नाकं,प्रातः सतु शिवाय ते जिनेंद्राः ॥२॥ कलंकनिर्मुक्तममुक्तपूर्णतं, कुतर्क-राहुग्रसनं सदोदयं,अपूर्वचंद्रं जिनचंद्रभाषितं,दिनागमे नौमि-बुधैर्नमस्कृतं ॥३॥

खुद पच्चक्खाण करने वाला 'वोसिरामि' ऐसा कहे ।

(फिर स्त्रीओ प्रतिक्रमण करती हो तो यहा पर ससारदावा कहे वह नीचे मुजब है.)

संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरं, मायारसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरं ॥ १ ॥ भावावनाम सुरदानव मानवेन, चूलाविलोलकमलावलिमालितानि, संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराज पदानि तानि ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूराभिरामं, जीवाहिंसाविरललहरी संगमागाहदेहं । चूलावेलं गुरुगममगिसंकुलं दूरपारं, सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥

(फिर निचे मुताबिक नमुत्थुणं कहना)

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवताणं ॥१॥ आइगराणं तित्थयराणं, सयं संबुद्धाणं ॥२॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरससीहाणं, पुरिसवर पुंडरीआणं, पुरिसवर गंध हत्थीणं ॥३॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं लोगहिआण, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥४॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाण, बोहिदयाणं, ॥५॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्म नायगाणं, धम्म सारहीणं, धम्मवरचाउरंत चक्कवट्टीणं ॥६॥ अप्पडिहय वरनाण दंसणधराणं; विअट्ट छउमाण ॥७॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं; बुद्धाणं बोहयाण, मुत्ताणं मोहगाणं ॥८॥ सव्वन्नूण सव्वदरिसीणं, सिव-

मयल-मरुअ-मणत- मक्खय मव्वाबाह मपुणरावित्ति सिद्धि-गइ-नामधेयं ठाण संपत्ताण, नमो जिणाण जियभयाण ॥९॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले, संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्ग वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्ग

अन्नत्थ ऊससिएण, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जभाइएणं, उड्डुएण, वायनिसग्गेण, भमलिए, पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहि अंग सचालेहि, सुहुमेहि खेलसंचालेहि, सुहुमेहि दिट्ठिसचालेहि, ॥२॥ एवमाइएहि आगारेहि, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताण भगवताण नमुक्कारेण न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेण मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग पारके फिर नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कहके प्रगट स्तुति कहना, वह नीचे मुताबिक है.)

कल्लाणकंदं पढम जिणिंदं, संति तओ नेमिजिणं मुणीदं।
पासं पयासं सुगुणिक्कठाणं,, भत्तीइ वंदे सिरिवद्धमाणं ॥१॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे; अरिहंते कित्त-इस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभ मजिअं च वंदे, संभव-मभिणंदणं च सुमइ च, पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पह वंदे ॥२॥ सुविहि च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च; विमलमणंतं च जिण, धम्म संति च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लि, वंदे मुणिसुव्वय नमिजिणं च; वंदामि रिट्ठनेमि, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला पहीण जरमरणा; चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा; आरुग्ग बोहिलाभं, समाहि वर मुत्तमं दितु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा, सागर वर गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं ॥१॥ वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए ॥२॥ सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥३॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अग संचालेहि, सुहुमेहिं खेल संचालेहिं; सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहि ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं; अभग्गो अविराहिओ; हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवं-

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलीए, पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंग संचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं; सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ; हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(फिर एक नवकार का काउस्सग्ग, करना काउस्सग्ग पारके एक स्तुति करनी वह नीचे मुजब है)

निव्वाणमग्गे वरजाणकप्पं, पणासियासेसकुवाइदप्पं ।
मयं जिणाणं सरणं बुहाणं, नमामि निच्चं तिजगप्पहाणं ॥३॥

सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परंपरगयाणं ॥ लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥ जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति, तं देवदेव महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥२॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवर-वसहस्स वद्धमाणस्स । संसार सागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥ उज्जित सेल सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स । तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥४॥ चत्तारि अट्ठ-दस-दोय, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं; परमट्ठ निट्ठि अट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥५॥

वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मद्दिट्ठिसमाहिगराणं

ताण नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके नमो अरिहंताणं बोल कर पारना. फिर स्तुति करनी वह नीचे मुजब है)

अपार ससार समुद्दपार, पत्ता सिवं दितु सुइक्कसारं। सव्वे जिणिंदा सुरविंदवंदा, कल्लाण वल्लीण विसाल-कंदा ॥२॥

पुक्खर वरदीवड्ढे, धायई संडे अ जंबुदीवे अ ॥ भर-हेरवय विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥१॥ तम तिमिर पडल विद्धं-सणस्स, सुरगण नरिंद महिअस्स; सीमा धरस्स वंदे, पप्फोडिअ मोह जालस्स ॥२॥ जाइ जरामरण सोग पणासण स्स ॥ कल्लाण पुक्खलविसाल सुहावहस्स ॥ को देव दाणव नरिंदगणच्चिअस्स ॥ धम्मस्स सार मुवलब्भ करे पमाय ॥३॥ सिद्धे भो पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे ॥ देवं नाग-सुवन्न किन्नर गणसब्भुअ भावच्चिए ॥ लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्क मच्चासुरं ॥ धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तर वड्ढउ ॥४॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं ॥ वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए ॥ सक्कारवत्तिआए, सम्माण वत्तिआए ॥ बोहिलाभवत्तिआए ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए ॥२॥ सद्धाए मेहाए धीईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥५॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलीए, पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंग संचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं; सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं॥२॥ एवमाइएहिं, आगारेहिं,अभग्गो अविराहिओ; हुज्ज मे काउस्सग्गो॥३॥ जावअरिहंताणं भगवं-ताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाण वोसिरामि ॥५॥

(फिर एक नवकार का काउस्सग्ग, करना काउस्सग्ग पारके एक स्तुति करनी वह नोचे मुजब है)

निव्वाणमग्गे वरजाणकप्प, पणासियासेसकुवाइदप्पं ।
मयं जिणाणं सरणं बुहाणं,नमामि निच्चं तिजगप्पहाणं ॥३॥

सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परपरगयाणं ॥ लोअग्ग-मुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥ जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति, तं देवदेव महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥२॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवर-वसहस्स वद्धमा-णस्स । संसार सागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥ उज्जित सेल सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स । तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमि नमंसामि ॥४॥ चत्तारि अट्ठ-दस-दोय, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं; परमट्ठ निट्ठि अट्ठा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥५॥

वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मदिट्ठिसमाहिगराणं

करेमि काउस्सग्गं ॥१॥

अन्नत्थ ऊससिएण, नीससिएणं, खासिएण, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएण, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहि अंगसंचालेहि, सुहुमेहि खेलसंचालेहि, सुहुमेहि दिट्ठिसंचालेहि ॥२॥ एवमाइएहि आगारेहि, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताण भगवंताण नमुक्कारेण न पारेमि ॥४॥ ताव काय ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(एक नवकारका काउस्सग्ग करके पारके नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कहके स्तुति करनी वह नीचे मुजब है)

कुदिंदु गोक्खीर तुसार वन्ना, सरोजहत्था कमले निसन्ना । वाएसिरी पुत्थयवग्गहत्था, सुहाय सा अम्ह सया पसत्था ॥४॥

(फिर नमुत्थुण कहना)

नमुत्थुण अरिहंताण भगवताण ॥१॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाण ॥२॥ पुरिसुत्तमाण, पुरिससीहाणं, पुरिसवर पुंडरीआण, पुरिसवरगंधहत्थीण ।३। लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआण लोगपईवाण, लोगपज्जोअगराणं ॥४॥ अभयदयाण, चक्खुदयाण, मग्गदयाण सरणदयाण, बोहिदयाण ॥५। धम्मदयाण, धम्म-देसयाणं, धम्म-नायगाण, धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंत चक्कवट्टीणं ॥६॥ अप्पडिहय वरनाण दंसण धराण.

विअट्ट छउमाणं ॥७॥ जिणाणं जावयाण, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाण बोहयाणं, मुत्ताण मोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिव मयल मरुअ मणंत मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति-सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं सपत्ताण, नमो जिणाणं, जिअभयाण ॥९॥ जेअ अईआ सिद्धा, जेअ भविस्संति णागए काले; संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

(यहा पर चार वखत एक एक खमासमण देकर दरेकके अन्त मे नीचे मुताबिक भगवानह आदि कहना)

भगवानहं, आचार्यहं, उपाध्यायहं, सर्वसाधुह.

(फिर)

अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु, पन्नरससु कम्मभूमिसु, जावंत केवि साहू रयहरणगुच्छपडिग्गहधारा पंचमहव्वयधारा अट्ठारससहस्ससीलांगधारा अक्खुयायारचरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥१॥

श्री सीमंधर स्वामीका दुहा.

अनंत चोवीशी जिन नमुं, सिद्ध अनंती कोड;
केवलनाणी थिविर सवि, वंदुं वे कर जोड. ॥१॥
वे कोडी केवलधरा, विहरमान जिन वीश;
सहस कोडी युगल नमुं, साधु सरव निशदिश. ॥२॥

जे चारित्रे निर्मला, ते पंचानन सिंहः
विषय कषायने गंजीया, ते प्रणमु निशदिश, ॥३॥
राक तणीपरे रडवडयो, निरधणीयो निरधारः
श्री सीमंधर साहिबा, तुम विण इणे संसार. ॥३॥

(फिर एक खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन् श्री सीमधरस्वामी आराधनार्थ चैत्यवदन करू "इच्छ" कहके)

श्री सीमंधर स्वामीका चैत्यवंदन.

श्रीसीमंधर वीतराग, त्रिभुवन तुमे उपगारी। श्री श्रेयास पिता कुले, बहु शोभा तुमारी ॥ १ ॥ धन्य धन्य माता सत्यकी, जेणे जाया जयकारी । वृषभलछने विराजमान, वंदे नरनारी ॥२॥ धनुष पाचशे देहडीए, सोहिये सोवन वान। कीर्तिविजय उवज्झायनो, विनय धरे तुम ध्यान ॥३॥

जंकिंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए; जाइं जिण बिंबाइं, ताइं सव्वाइ वंदामि ॥१॥

नमुत्थुण अरिहंताण भगवंताण ॥ १ ॥ अ इगराण, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाण ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाण, पुरिससीहाण, पुरिसवरपुंडरीआण, पुरिसवरगंधहत्थीण ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाण, लोगनाहाण, लोगहिआणं, ॥ लोगपईवाण, लोगपज्जोअगराण, ॥ ४ ॥ अभयदयाण, चक्खुदयाण, मग्गदयाण, सरणदयाण, बोहिदयाण ॥ ५ ॥ धम्मदयाण, धम्मदेसयाण, धम्मनायगाण ॥ धम्मसारहीण, धम्मवर-

चाउरतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाण–दसण–धराणं, निअट्टछउमाण ॥७॥ जिणाण जावयाण, तिन्नाणं तारयाण ॥ बुद्धाण बोहयाण, मुत्ताण मोअगाण ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीण, सिवमयलमरुअमणतमक्खयमव्वाबाहमपुणराविति, सिद्धिगइनामधेयं, ठाण संपत्ताण, नमो जिणाण जिअभयाण ॥ ९ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले ॥ सपइअ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि. ॥ १० ॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ; सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ सताइ ॥१॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वदामि.

जावत केवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ; सव्वेसि तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाण ॥१॥

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः

(ऐसा कहकर स्तवन करना)

श्री सीमंधर स्वामीका स्तवन

पुक्खलवई विजये जयो रे, नयरी पुंडरीगिगी सार ।
श्रीसीमंधर साहिबारे, राय श्रेयांस कुमार ॥

जिणदराय धरजो धर्म सनेह । ए आंकणी ।। १ ।।
म्होटा न्हाना अंतरो रे, गिरुआ नवि दाखंत ।
शशि दरिसण सायर वधे रे, कैरव वन विकसंत । जि० ध० ।।२।।
ठाम कुठाम नवि लेखवेरे, जग वरसंत जलधार ।
कर दोय कुसुमे वासियेरे, छाया सवि आधार । जि० ध० ।।३।।
राय ने रंक सरीखा गणेरे, उद्योते शशि सूर ।
गंगाजल ते बिहुं तणारे, ताप करे सवि दूर । जि० ध० ।।४।।
सरिखा सहुने तारवारे, तिम तुमे छो महाराज ।
मुजशुं अंतर किम करोरे, बाह्य ग्रह्यानी लाज । जि० ध० ।।५।।
मुख देखी टीलुं करे रे, ते नवि होय प्रमाण ।
मुजरो माने सवि तणोरे, साहिबतेह सुजाण । जि० ध० ।।६।।
वृषभलंछन माता सत्यकीरे, नंदन रुकमिणीकंत ।
वाचक जस एम विनवेरे, भयभंजन भगवत । जि० ध० ।।७।।

(फिर दोनो हाथ मस्तक को लगाकर)

जय वीयराय जगगुरु, होउ मम तुह पभावओ भयवं । भवनिव्वेओ मग्गा–णुसारिआ इट्ठफल सिद्धी ।। १ ।। लोग–विरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ–परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो तव्वयण–सेवणा आभवमखंडा ।।२।। वारिज्जइ जइवि निआ–णबंधणं वीयराय तुह समए । तहवि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाण ।। ३ ।। दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, समाहि मरणं च बोहिलाभो अ । संपज्जउ मह एअ, तुह नाः

पणामकरणेणं ॥४॥ सर्वमंगलमागल्यं, सर्वकल्याणकारणं । प्रधान सर्वधम्माणा, जैन जयति शासनम् ॥

अरिहतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं ॥१॥ वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए ॥२॥ सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं, ॥३॥

अन्नत्थ ऊससिएण, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएण, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहि खेलसंचालेहि, सुहुमेहिं दिट्ठिसचालेहि ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहि, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताण नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाण वोसिरामि ॥५॥

(यहा पर एक नवकारका काउस्सग्ग करके फिर नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कहकर एक स्तुति करनी, वह नीचे मुजब है

श्री सीमंधर स्वामीकी स्तुति.

सीमंधर जिनवर, सुखकर साहिब देव ।
अरिहंत सकलनी, भाव धरी करु सेव ॥
सकलागम पारग, गणधरभाषित वाणी ।
जयवती आणा, ज्ञानविमल गुणखाणी ॥१॥

श्री सिद्धाचलजीका दुहा

सिद्धाचल समरु सदा, सोरठदेश मोझार ।
मनुष्य जन्म पामी करी, वंदू वार हजार ॥१॥

एकेकु डगलुं भरे, शेत्रु जा साहमु जेह ।
रिषभ कहे भवकोडना, कर्म खपावे तेह ।
सिद्धाचल सिद्धि वर्या, सिद्ध अनंती कोड ।
ज्या मुनिवर मुक्ते गया, वंदू बे कर जोड ॥२॥

शेत्रु जा समो तीरथ नहीं, रुषभ समो नहि देव ।
गौतम सरिखा गुरु नहि, वळी वळी वंदू तेह ॥४॥

सोरठ देशमा संचर्यों, न चडयो गढ गिरनार ।
शेत्रु जी नदी नाह्यो नहीं, एळे गयो अवतार ॥५॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् श्रीसिद्धगिरि महान् तीर्थ आराधनार्थ चैत्यवंदन करु "इच्छं" ॥

श्री सिद्धाचलजीका चैत्यवंदन.

श्रीशत्रु जय सिद्धक्षेत्र, दीठे दुर्गति वारे ।
भव धरीने जे चडे, तेने भवपार उतारे ॥१॥
अनत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीरथनो राय ।

पूर्व नव्वाणुं ऋषभदेव, ज्यां ठविया प्रभु पाय ॥ २ ॥
सूरजकुण्ड सोहामणो, कवड यक्ष अभिराम ।
नाभिराया कुलमडणो, जिनवर करूं प्रणाम ॥ ३ ॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए, जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥१॥

नमुत्थुणं अरिहंताण भगवंताण ॥१॥ आइगराणं तित्थ-यराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर पु डरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआण, लोहगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनाय-गाण, धम्मसारहीण, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहय वरनाणदंसणधराणं, वियट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाण, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाण, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइना-मधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं, जिअभयाण ॥ ९ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संतिणागए काले; संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिय लोए अ । सव्वाइ ताइं वंदे, इह संतो संताइ ॥-१ ॥

श्री सिद्धाचलजीका दुहा

सिद्धाचल समरुं सदा, सोरठदेश मोझार ।
मनुष्य जन्म पामी करी, वंदू वार हजार ॥१॥

एकेकु डगलुं भरे, शेत्रुजा साहमु जेह ।
रिषभ कहे भवकोडना, कर्म खपावे तेह ।
सिद्धाचल सिद्धि वर्या, सिद्ध अनंती कोड ।
ज्या मुनिवर मुक्ते गया, वंदू बे कर जोड ॥२॥

शेत्रुजा समो तीरथ नहीं, रुषभ समो नहि देव ।
गौतम सरिखा गुरु नहि, वळी वळी वदू तेह ॥४॥

सोरठ देशमा संचर्यों, न चडयो गढ गिरनार ।
शेत्रुजी नदी नाह्यो नहीं, एळे गयो अवतार ॥५॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं.जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् श्रीसिद्धगिरि महान् तीर्थ आराधनार्थ चैत्यवंदन करु "इच्छं" ॥

श्री सिद्धाचलजीका चैत्यवंदन.

श्रीशत्रुजय सिद्धक्षेत्र, दीठे दुर्गति वारे ।
भव धरीने जे चडे, तेने भवपार उतारे ॥१॥
अनत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीरथनो राय ।

पूर्व नवाणुं ऋषभदेव, ज्यां ठविया प्रभु पाय ॥ २ ॥
सूरजकुण्ड सोहामणो, कवड यक्ष अभिराम ।
नाभिराया कुलमडणो, जिनवर करूं प्रणाम ॥ ३ ॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए, जाई जिणबिंबाइ, ताई सव्वाइं वंदामि ॥१॥

नमुत्थुणं अरिहंताण भगवंताण ॥१॥ आइगराणं तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर पु डरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआण, लोहगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं वोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाण, धम्मसारहीण, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहय वरनाणदंसणधराणं, वियट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाण, तिन्नाणं तारयाणं, वुद्धाणं वोहयाण, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वावाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेय ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाण, जिअभयाण ॥ ९ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संतिणागए काले; संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिय लोए अ ।
सव्वाइ ताइं वदे, इह संतो संताइ ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि.

जावंत केवि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ ॥ सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाण ॥ १ ॥

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

(ऐसा कहकर स्तवन कहना)

श्री सिद्धाचलजीका स्तवन.

विमलाचल नितु वंदिये, कीजे एहनी सेवा ।
मानु हाथ ए धर्मनो, शिवतरुफल लेवा । विमला० ॥१॥
उज्ज्वल जिनगृह मंडली, तिहा दीपे उत्तंगा ।
मानु हिमगिरि विभ्रमे, आइ अंबर गंगा । विमला० ॥२॥
कोई अनेरुं जग नहि, ए तीरथ तोले ।
एम श्रीमुख हरि आगले, श्रीसीमधर बोले । विमला० ॥३॥
जे सघला तीरथ कर्यां, यात्रा फल कहिए ।
तेहथी ए गिरि भेटता, शतगणु फल लहिए । विमला० ॥४॥
जनम सफल होय तेहनो, जेह ए गिरि वंदे ।
सुजशविजय संपद लहे, ते नर चिर नंदे । विमला० ॥५॥

(फिर दोनों हाथ मस्तक पर लगाकर)

जय वीयराय ! जगगुरु, होउ ममं तुह पभावओ भयवं; भव निव्वेओ मग्गाणु-सारिआ इट्ठ फलसिद्धी ॥१॥ लोगविरुद्ध

च्चाओ, गुरुजण पूआ परत्थ करण च; सुहगुरुजोगो तव्वयण,-सेवणा आभवमखंडा ॥२॥ वारिज्जइ जइवि निआण, बंधणं वीयराय ! तुह समए, तह वि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥३॥ दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, समाहि मरणं च बोहिलाभो अ; संपज्जउ मह एअं, तुह नाह पणाम करणेण ॥४॥ सर्व मंगल मागल्यं, सर्व कल्याण कारणम्; प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥५॥

अरिहंत चेइआण करेमि काउस्सग्गं, ॥१॥ वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभ-वत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए ॥२॥ सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं. ॥३॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएण, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएण उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, ॥१॥ सुहुमेहिं अंगसचालेहिं, सुहुमेहि खेलसंचालेहिं, सुहु-मेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं, भगवंताण, नमुक्कारेणं न पारेमि ॥५॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेण झाणेण अप्पाण वोसिरामि ॥

एक नवकार का काउस्सग्ग करना, काउस्सग्ग पारके नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ऐसा कह कर स्तुति करनी)

श्री सिद्धाचलजीकी स्तुति

पुडरीकगिरि महिमा आगममा परसिद्ध ।
विमलाचल भेटी लहिए अविचल रिद्ध ॥
पंचमी गति पहोत्या, मुनिवर कोडाकोड ।
एणे तीरथे आवी, कर्म विपाक विछोड ॥१॥

अथ सामायिक पारने की विधि,

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥३॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउ ॥१॥ इरियावहियाए, विराहणाए ॥२॥ गमणागमणे ॥३॥ पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग-पणगदग मट्टी मक्कडा-संताणा-संक्रमणे ॥४॥ जे मे जीवा विराहिया ॥५॥ एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पचिंदिया ॥६॥ अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणसकामिया, जीवियाओ, ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥७॥

तस्स उत्तरीकरणेण, पायच्छित्त करणेणं, विसोहि करणेण, विसल्ली करणेण, पावाण कम्माणं, निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥८॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं, छीएण, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, ॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं, खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताण भगवताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेण मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(एक लोगस्स का काउस्सग्ग करना लोगस्स न आता हो तो चार नवकार का काउस्सग्ग करना काउस्सग्ग पारके प्रगट लोगस्स कहना वह नीचे मुजब है)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म तित्थयरे जिणे; अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभ मजिअं च वंदे, संभव मभिणंदण च सुमइं च; पउमप्पहं सुपासं, जिण च चंदप्पह वंदे ॥२॥ सुविहि च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च; विमल-मणंत, च जिणं, धम्मं संति च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-जिण च; वंदामि रिट्ठनेमि, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला पहीणजर-मरणा; चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा; आरुग्ग बोहिलाभं, समाहि वर मुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा; सागर वर गंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! मुहपत्ति पडिलेहु ? "इच्छं"

(ऐमा कहकर मुहपत्ति पडिलेहनी, फिर खमासमण देना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ? सामायिक पारुं ? 'यथाशक्ति.'

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पार्यु "तहत्ति"

(ऐसा कहकर फिर आसन पर दाहिना हाथ रखके नोचे मुजब बोलना)

नमो अरिहताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं:, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मगलं ॥

(फिर)

सामाइय वयजुत्तो, जाव मणे होइ नियमसंजुत्तो । छिन्नइ असुहं कम्मं, सामाइय जत्तिया वारा ॥१॥ सामाइअमि उ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा । एएण कारणेणं,

बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥२॥

सामायिक विधिसे लिया, विधिसे पारा, विधि करते जो कोई अविधि हुई हो वो सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं । दश मनके, दश वचनके, बारह कायाके, इन बत्तीस दोषों मे जो कोई दोष लगा हो वह सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

सामायिक पारने की विधि संपूर्ण.

अथ देवसिय प्रतिक्रमण विधि.

(प्रथम स्थापना स्थापन करनेके लिए नीचे मुजब बोलना)

नमो अरिहंताणं ॥१॥ नमो सिद्धाणं ॥२॥ नमो आयरियाणं ॥३॥ नमो उवज्झायाणं ॥४॥ नमो लोए सव्वसाहूणं ॥५॥ एसो पंच नमुक्कारो ॥६॥ सव्वपावप्पणासणो ॥७॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥८॥ पढमं हवइ मंगलं ॥९॥

१ आचार्यजी हो तो नवकार पचिंदिय न कहना, न हो तो पुस्तक नवकारवाली प्रमुख की स्थापना करनेके लिये दाहिना हाथ सामने रखके नवकार पचिंदिय कहना ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! मुहपत्ति पडिलेहु ? "इच्छं"

(ऐसा कहकर मुहपत्ति पडिलेहनी. फिर खमासमण देना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ? सामायिक पारुं ? 'यथाशक्ति.'

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पार्यु "तहत्ति"

(ऐसा कहकर फिर आसन पर दाहिना हाथ रखके नीचे मुजब बोलना)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं:, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

(फिर)

सामाइय वयजुत्तो, जाव मणे होइ नियमसंजुत्तो । छिन्नइ असुहं कम्मं, सामाइय जत्तिया वारा ॥१॥ सामाइअमि उ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा । एएण कारणेणं,

बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥२॥

सामायिक विधिसे लिया, विधिसे पारा, विधि करते जो कोई अविधि हुई हो वो सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं । दश मनके, दश वचनके, वारह कायाके, इन बत्तीस दोषों मे जो कोई दोष लगा हो वह सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

सामायिक पारने की विधि संपूर्ण.

अथ देवसिय प्रतिक्रमण विधि.

(प्रथम स्थापना स्थापन करनेके लिए नीचे मुजब बोलना.)

नमो अरिहंताणं ॥१॥ नमो सिद्धाणं ॥२॥ नमो आयरियाणं ॥३॥ नमो उवज्झायाणं ॥४॥ नमो लोए सव्वसाहूणं ॥५॥ एसो पंच नमुक्कारो ॥६॥ सव्वपावप्पणासणो ॥७॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥८॥ पढमं हवइ मंगलं ॥९॥

१ आचार्यजी हो तो नवकार पचिंदिय न कहना, न हो तो पुस्तक नवकारवाली प्रमुख की स्थापना करनेके लिये दाहिना हाथ सामने रखके नवकार पचिंदिय कहना ।

पंचिंदिय संवरणो, तह नवविह बंभचेर गुत्तिधरोः चउविह कसाय मुक्को, इअ अट्ठारस गुणेहि संजुत्तो ।१।। पंच महव्वय जुत्तो, पंच विहायार पालण समत्थोः पंच समिओ तिगुत्तो, छत्तीस गुणो गुरू मज्झ. ।।२।।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियाहिय पडिक्कमामि, इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउं ।।१।। इरियावहिआए विराहणाए ।।२।। गमणागमणे ।।३।। पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग पणग दग, मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे, ।।४।। जे मे जीवा विराहिआ, ।।५।। एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, ।।६।। अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।७।।

तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित्त करणेणं, विसोही करणेणं, विसल्ली करणेण, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ।।८।।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएण. खासिएण, छीएणं, जंभाइएणं,उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए ।।१।। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं.

सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाण वोसिरामि ॥५॥

ऐसा कहकर एक लोगस्सका काउस्सग्ग करना, न आता हो तो चार नवकार गिनके, फिर प्रगट लोगस्स कहना वह नीचे मुताबिक)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म तित्थयरे जिणे; अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभ मजिअं च वंदे, संभव मभिणंदण च सुमइं च; पउमप्पह सुपासं, जिण च चंद-प्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च; पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासु-पुज्जं च; विमल मणतं च जिण, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अर च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिण च; वंदामि रिट्ठनेमि, पासं तह वद्धमाण च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय रय मला पहीण जर मरणा; चउवीसंपि जिणवरा ॥ तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय वंदिय महिया ॥ जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग बोहिलाभं ॥ समाहिवर मुत्तमं दितु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा ॥ आइच्चेसु अहियं पया-सयरा ॥ सागरवर गंभीरा ॥ सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुं ? "इच्छं"

(ऐसा कहकर मुहपत्ति पडिलेहनो, फिर)

इच्छामि खमासमणो वदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक संदिसाहुं ? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक ठाउ ? "इच्छं" ।

(ऐसा कहकर एक नवकार गिनना)

नमो अरिहंताण, नमो सिद्धाण, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूण, एसो पंच नमुकारो, सव्व पावप्पणासणो, मंगलाण च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

इच्छकारी भगवन् ! पसाय करी सामायिक दडक उच्चरावोजी ।

(ऐसा कहकर दोनो हाथ जोडकर करेमि भते उच्चरना वह नीचे मुताबिक)

[1]करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोग पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि ॥१॥ दुविह, तिविहेण, मणेण, वायाए, काएण न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाण वोसिरामि ॥२॥

---

१ यदि चरवला हो तो खडे होकर और न हो तो बैठे बैठे करेमि भते उच्चरना

इच्छामि खमासमणो! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण सदिसह भगवन्! वेसणे संदिसाहु? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो वदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् वेसणे ठाउं? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसोहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय संदिसाहु? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करू? 'इच्छं'।

(ऐसा कहके दोनो हाथ जोडकर नीचे लिखा नवकार मन्त्र तीन वक्त गिनना)

नमो अरिहताणं॥ नमो सिद्धाण ॥२॥ नमो आयरियाणं ॥३॥ नमो उवज्झायाण ॥४॥ नमो लोए सव्वसाहूणं ॥५॥ एसो पंच नमुक्कारो ॥६॥ सव्वपावप्पणासणो ॥७॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥८॥ पढमं हवइ मंगलं ॥९॥

सामायिक लेनेकी विधि सम्पूर्ण

---

*इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-

*यदि चौविहार उपवास किया हो तो मुहपत्ति पडिलेहन नहीं करना और वादणा नहीं लेना, यदि पानी पिया हो तो सिर्फ मुहपत्ति पडिलेहन करना, यदि भोजन किया हो तो मुहपत्ति पडिलेहन कर दो वादण भी लेना,

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुं ? "इच्छं"

(ऐसा कहकर मुहपत्ति पडिलेहनी, फिर)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक संदिसाहुं ? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक ठाउ ? "इच्छं" ।

(ऐसा कहकर एक नवकार गिनना)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

इच्छकारी भगवन् ! पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी ।

(ऐसा कहकर दोनो हाथ जोडकर करेमि भंते उच्चरना वह नीचे मुताबिक)

[1]करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि ॥१॥ दुविहं, तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥२॥

---

१ यदि चरवला हो तो खडे होकर, बैठे बैठे करेमि भंते उच्चरना

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! वेसणे संदिसाहु ? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो वदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदासि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् वेसणे ठाउं ? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसोहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय संदिसाहु ? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करू? 'इच्छं'।

(ऐसा कहके दोनो हाथ जोडकर नीचे लिखा नवकार मन्त्र तीन वक्त गिनना)

नमो अरिहताणं॥ नमो सिद्धाण ॥२॥ नमो आयरियाणं ॥३॥ नमो उवज्झायाण ॥४॥ नमो लोए सव्वसाहूणं ॥५॥ एसो पंच नमुक्कारो ॥६॥ सव्वपावप्पणासणो ॥७॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥८॥ पढमं हवइ मंगलं ॥९॥

सामायिक लेनेकी विधि सम्पूर्ण

---

*इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-

---

*यदि चौविहार उपवास किया हो तो मुहपत्ति पडिलेहन नहीं करना और वादणा नहीं लेना, यदि पानी पिया हो तो सिर्फ मुहपत्ति पडिलेहन करना, यदि भोजन किया हो तो मुहपत्ति पडिलेहन कर दो वादण भी लेना,

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुं ? "इच्छं"

(ऐसा कहकर मुहपत्ति पडिलेहनी, फिर)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक संदिसाहु ? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक ठाउ ? "इच्छं" ।

(ऐसा कहकर एक नवकार गिनना)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

इच्छकारी भगवन् ! पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी ।

(ऐसा कहकर दोनो हाथ जोडकर करेमि भंते उच्चरना वह नीचे मुताबिक)

[1]करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोग पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि ॥१॥ दुविहं, तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥२॥

---

१ यदि चरवला हो तो खडे होकर और न हो तो बैठे बैठे करेमि भंते उच्चरना

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बेसणे संदिसाहु ? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बेसणे ठाउं ? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय संदिसाहु ? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करूं? 'इच्छं'।

(ऐसा कहके दोनो हाथ जोडकर नीचे लिखा नवकार मन्त्र तीन वक्त गिनना)

नमो अरिहंताणं।। नमो सिद्धाणं ।।२।। नमो आयरियाणं ।।३।। नमो उवज्झायाणं ।।४।। नमो लोए सव्वसाहूणं ।।५।। एसो पंच नमुक्कारो ।।६।। सव्वपावप्पणासणो ।।७।। मंगलाणं च सव्वेसिं ।।८।। पढमं हवइ मंगलं ।।९।।

सामायिक लेनेकी विधि सम्पूर्ण

---

*इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-

---

*यदि चौविहार उपवास किया हो तो मुहपत्ति पडिलेहन नहीं करना और वांदणा नहीं लेना, यदि पानी पिया हो तो सिर्फ मुहपत्ति पडिलेहन करना, यदि भोजन किया हो तो मुहपत्ति पडिलेहन कर दो वांदण भी लेना,

आए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पच्चक्खाण मुहपत्ति पडिलेहु ? "इच्छं" ।

(ऐसा कहकर मुहपत्ति पडिलेहनी फिर दो वांदणा देना)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए ॥१॥ अणुजाणह, मे मिउग्गह ॥२॥ निसीहि, अ–हो, का-य, काय,संफास,खमणिज्जो भे किलामो,अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे, दिवसो वइक्कतो ? ॥३॥ ज त्ता भे ? ॥४॥ ज व-णिज्ज च भे ? ॥५॥ खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्म ॥६॥ आवस्सिआए, पडिक्कमामि,खमासमणाण देवसिआए, आसा-यणाए, तित्तीसन्नयराए,जंकिंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए,वय-दुक्कडाए, कायदुक्कडाए; कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ॥१॥ अणुजाणह मे मिउग्गह, ॥२॥ निसीहि, अहो काय काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसु-भेण भे दिवसो वइक्कतो ॥३॥ जत्ता भे ॥४॥ जवणिज्ज च भे ॥ ५ ॥ खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कम्मं ॥६॥ पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्ती-सन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए काय दुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए

सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥७॥

(फिर पच्चक्खाण करना.)

चउविहारका पच्चक्खाण ।

दिवसचरिम पच्चक्खाइ चउव्विहं पि आहार, असणं, पाणं-खाइम, साइम, अन्नत्थणाभोगेण सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरइ × ॥

तिविहारका पच्चक्खाण ।

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ तिविहं पि आहारं, असणं, खाइम, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिआगारेण वोसिरइ ॥

दुविहारका पच्चक्खाण ।

दिवसचरिम पच्चक्खाइ दुविहं पि आहारं, असणं, खाइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेण, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिआगारेण वोसिरइ ॥

पाणहारका पच्चक्खाण ।

पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्खाइ अनत्थणाभोगेणं सहसा-

× खुद पच्चक्खाण करे तो वोसिरामि कहे

१ यदि एकासण, बिआसण व आयबिल निवी तथा तिविहार उपवास किया हो तो पाणहारका पच्चक्खाण करना,

गारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरइ ।

चौदह नियम धारनेवालों को देसावगासियका पच्चक्खाण,

देसावगासिअं उवभोगं परिभोग पच्चक्खाइ अन्नत्थ-णाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिया-गारेणं वोसिरइ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करुं ? 'इच्छं"
(ऐसा कहकर बाया घुटना ऊचा करके चैत्यवदन करना)

अष्टमी का चैत्यवंदन

महासुदि आठमने दिने, विजयासुत जायो ।
तिम फागण सुदि आठमे, संभव चवी आयो ॥ १ ॥
चइतर वदनी आठमे, जन्म्या ऋषभजिणंद ।
दीक्षा पण ए दिन लही, हुआ प्रथम मुनिचंद ॥ २ ॥
माधवसुदि आठम दिने, आठ कर्म कर्या दूर ।
अभिनदन चौथा प्रभु, पाम्या सुख भरपूर ॥ ३ ॥
एही ज आठम ऊजली, जन्म्या सुमति जिणंद ।
आठ जाति कलशे करी, नवरावे सुर इंद्र ॥ ४ ॥
जन्म्या जेठ वदि आठमे, मुनिसुव्रतस्वामी ।

नेम आषाढसुदि आठमे, अष्टमी गति पामी ॥ ५॥
श्रावणवदनी आठमे, नमि जन्म्या जगभाण ।
तिम श्रावणसुदि आठमे, पासजीनुं निरवाण ॥ ६ ॥
भादरवा वदि आठम दिने, चविया स्वामी सुपास ।
जिन उत्तम पद पद्मने, सेव्याथी शिववास ॥ ७ ॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए ।
जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि. ॥ १ ॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥१॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥२॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर-पुंडरीआणं, पुरिसवर गंध हत्थीणं. ॥३॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥४॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं. ॥५॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्म सारहीणं, धम्मवरचाउरंत चक्कवट्टीणं ॥६॥ अप्पडिहय वरनाण-दंसणधराणं; विअट्ट छउमाणं ॥७॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं; बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं, ॥८॥सव्वन्नूणं;सव्वदरिसीणं, सिव-मयल-मरुअ-मणंत-मक्खय मव्वाबाह मपुणराविति सिद्धि-गइ-नामधेय ठाणं-संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥९॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले, संपई अ

वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं ॥१॥ वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए ॥२॥ सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥३॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएण, छीएणं, जभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेण, भमलीए, पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहि अंगसंचालेहि, सुहुमेहिं, खेलसंचालेहिं, सुहुमेहि दिट्ठिसंचालेहि ॥२॥ एवमाइएहि आगारेहि, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाण वोसिरामि ॥५॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग पारके फिर नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कहके प्रगट स्तुति कहना वह नीचे मुताबिक है)

शंखेश्वर पासजी पूजीए, नरभवनो लाहो लीजीए;
मनवांछित पूरण सुरतरु, जय वामासुत अलवेसरु ॥१॥

(फिर)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पह सुपासं, जिणं च चंद-

प्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं, च । विमलमणंतं च जिणं, धम्म संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वय नमिजिणं च; वदामि रिट्ठ नेमि, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयतु ॥६॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥५॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहिय, पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसतु ॥७॥

अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्ग ॥१॥ वंदण वत्तिआए पूअणवत्तिआए सवकारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहि लाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए॥२॥ सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं. ॥३॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहि अंगसंचालेहिं, सुहुमेहि खेलसंचालेहिं, सुहुमेहि दिट्ठिसंचालेहि ॥२॥एवमाइएहि आगारेहिं; अभग्गो अविराहओ; हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताण भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव काय ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके नमो अरिहताण बोल कर पारना, फिर स्तुति कहनी वह नीचे मुजब है)

दोय राता जिनवर अति भला, दोय धोळा जिनवर गुणनीला; दोय नीला दोय शामळ कह्या, सोळे जिन कंचन-वर्ण लह्या. ॥२॥

पुक्खर वरदीवड्ढे, धायई संडे अ जंबूदीवे अ ॥ भरहेर-वय विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥१॥ तम तिमिर पडल विद्ध-सणस्स सुरगण नरिंद महिअस्सः सीमा धरस्स वंदे, पप्फोडिअ मोहजालस्स ॥२॥ जाइ जरामरण सोग पणासण-स्स ॥ कल्लाण पुक्खलविसाल सुहावहस्स ॥ को देव दाणव नरिंदगणच्चिअस्स ॥ धम्मस्स सार मुवलब्भ करे पमायं ॥३॥ सिद्धे भो पयओ णमो जिणमए नंदी सया सजमे ॥ देवं नागसुवन्न किन्नरगण सब्भुअभावच्चिए ॥ लोगो जत्थ पइ-ट्ठिओ जगमिणं तेलुक्क मच्चासुर ॥ धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तर वड्ढउ ॥४॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं ॥१॥ वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए॥ सक्कारवत्ति आए, सम्माणवत्तिआए, वोहिलाभवत्तिआए ॥ निरुवसग्ग-वत्तिआए ॥२॥ सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥३॥

अन्नत्थ ऊससिएण, नीससिएणं, खासिएणं, छीएण, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए॥१॥ सुहुमेहि अंगसंचालेहिं, सुहुमेहि खेलसचालेहिं, सुहुमेहि दिट्ठि-संपालेहिं ॥२॥ एवमाइएहि, आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ;

हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(फिर एक नवकार का कऊस्सग्ग करना नमो, अरिहताण बोलकर काउस्सग्ग पारके एक स्तुति कहनी वह नीचे मुजब)

आगम ते जिनवर भाखीयो, गणधर ते हैडे राखीयो;
तेहनो रस जेणे चाखीयो, ते हुओ शिवसुख साखीयो ॥३॥

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं, परपरगयाणं, लोअग्ग मुवगयाण, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥ जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमसंति, तं देवदेव महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥२॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवर-वसहस्स वद्धमाणस्स । संसार सागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥ उज्जित सेल सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स । तं धम्मचव ट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमसामि ॥४॥ चत्तारि-अट्ठ दस दोय, वदिया जि रा चउव्वीसं; परमट्ठ निट्ठि, अट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥५॥

वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मदिट्ठिसमाहिगराणं करेमि काउस्सग्ग ॥१॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलीए पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं

दिट्ठिसंचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताण भगवताणं नमुक्कारेण न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेण मोणेण झाणेणं अप्पाण वोसिरामि ॥५॥

(एक नवकारका काउस्सग्ग करके पारके नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कहके स्तुति कहनी वह नीचे मुजब है)

धरणीधर राय पद्मावती, प्रभु पार्श्वतणा गुण गावती,
सहु संघना संकट चूरती, नय विमळना वाछित पूरती ॥४॥

(बाया घुटना ऊंचा करके)

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवताणं, ॥१॥ आइगराण, तित्थयराणं, सयसबुद्धाण॥२॥ पुरिसुत्तमाण,पुरिससीहाण,पुरिसवरपुंडरीआण, पुरिसवरगंधहत्थीण ॥३॥ लोगुत्तमाणं. लोगनाहाण, लोगहिआणं, लोगपईवाण, लोगपज्जोअगराण ॥४॥ अभयदयाण, चक्खुदयाण, मग्गदयाण, सरणदयाण, वोहिदयाणं ॥५॥ धम्म-दयाणं, धम्म देसयाणं धम्म नायगाणं धम्म सारहीण, धम्म-वरचाउरंत चक्कवट्टीणं ॥६॥ अप्पडिहय वरनाण दंसण धाराण, विअट्टछउमाणं ॥७॥ जिणाण जावयाणं. तिन्नाणं तारयाण, वुद्धाण वोहयाण, मुत्ताण मोअगाण ॥७॥ सव्वन्नूण. सव्वदरिसीण, सिव मयल मरुअ मणत मक्खयमव्वावाहमपुणराविति-सिद्धिगइ-नामधेयं-ठाण सपत्ताण,नमो

जिणाण, जिअभयाणं ॥९॥ जेअ अईआ सिद्धा, जेअ भविस्संति णागए काले, संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

(फिर)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । भगवानहं ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । आचार्यहं ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । उपाध्यायहं ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वदामि । सर्वसाधुहं ।

इच्छाकारेण सदिसह भगवन् । देवसिय पडिक्कमणे ठाउं? इच्छ, सव्वस्स वि देवसिय दुच्चिंतिय दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ मिच्छामि दुक्कडं ।

करेमि भंते! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वाया ए काएणं न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ।

इच्छामि ठामि काउस्सग्ग जो मे देवसिओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो

अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओअणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्ह गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेण, विसोही करणेणं, विसल्ली करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्ग ॥८॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएण, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं,सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं,सुहुमेहिं दिट्ठिसचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(फिर अतिचार की आठ गाथाका काउस्सग्ग करना यदि न आता हो तो आठ नवकार मंत्र ही गिनना काउस्सग्ग मे गिनने की आठ गाथा नीचे मुजब है)

नाणमि दंसणंमि अ ॥ चरणंमि तवंमि तहय विरियंमि ॥ आयरणं आयारो ॥ इअ एसो पंचहा भणिओ ॥१॥ काले विणए बहुमाणे ॥ उवहाणे तह अनिन्हवणे ॥ वंजण अत्थ

तदुभए ।, अट्ठविहो नाण मायारो ॥२॥ निस्संकिअ निक्कंखिअ ॥ निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी अ ॥ उववूह थिरीकरणे, वच्छल्ल–पभावणे अट्ठ ॥३॥ पणिहाण जोग जुत्तो ॥ पचहिं समिइहिं तिहिं गुत्तीहि ॥ एस चरित्तायारो । अट्ठविहो होइ नायव्वो ॥४॥ बारसविहंमि वि तवे ॥ सब्भितर बाहिरे कुसल दिट्ठे ॥ अगिलाई अणाजीवी ॥ नायव्वो सो तवायारो ॥५॥ अणसण मूणोअरिया ॥ वित्ती संखेवणं रसच्चाओ; कायकिलेसो संलीणया य, बज्झो तवो होइ ॥६॥ पायच्छित्तं विणओ ॥ वेयावच्चं तहेव सज्झाओ; झाणं उस्सग्गोवि अ ॥ अब्भितरओ तवो होई ॥७॥ अणिगूहिअ बल वीरिओ, परक्कमइ जो जहुत्त माउत्तो ॥ जु जइ अ जहा थामं, नायव्वो वीरिआयारो ॥८॥

(काउस्सग्ग पारके लोगस्स कहना, वह नीचे मुजब है.)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे, जिणे; अरिहंते कित्तइस्स, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभ मजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइ च; पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जस वासुपुज्जं च; विमल–मणंत च जिणं, धम्म संतिं च वंदामि॥३॥ कुंथुं अर च मल्लिं, वदे मुणिसुव्वयं नमि–जिण च; वंदामि रिट्ठनेमि, पासं तह वद्धमाण च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय–रय–मला पहीण जर–मरणा; चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु

॥५॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा; आरुग्ग बोहिलाभं, समाहि वर मुत्तम दिंतु ॥६॥ चदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा, सागर वर गभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसन्तु ॥७॥

(फिर तीसरे आवश्यक की मुहपत्ति पडिलेहनी, फिर दो बार वादणा नीचे मुताबिक देना ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ॥१॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं, ॥२॥ निसीहि, अहो कायं काय संफास खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताण बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ॥३॥ जत्ता भे ॥४॥ जवणिज्ज च भे ॥५॥ खामेमिखमासमणो देवसिअं वइक्कमं ॥६॥ आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ॥१॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं ॥२॥ निसीहि अहो काय काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कतो ॥३॥ जत्ता भे ॥४॥ जवणिज्जं च भे ॥५॥ खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कमं ॥६॥ पडिक्कमामि

खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

(फिर खडे होकर)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! देवसिअं आलोउं ?

"इच्छं आलोएमि जो मे देवसिओ अइआरो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो; नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्ह मणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्ह सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं ॥ तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥

(फिर हाथ जोड कर)

सात लाख पृथ्वीकाय ॥ सात लाख अप्काय ॥ सात लाख तेउकाय ॥ सात लाख वाउकाय ॥ दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय ॥ चउद लाख साधारण वनस्पतिकाय ॥ बे लाख बेइंद्रिय, बे लाख तेइंद्रिय, बे लाख चउरिंद्रिय ॥ चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यच पचेंद्रिय ॥

चौद लाख मनुष्य, एवंकारे, चोराशी लाख जीवायोनिमांहे, म्हारे जीवे जे कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतां प्रत्ये अनुमोद्यो होय, ते सवि हु मन वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ॥

पहेले प्राणातिपात, बीजे मृषावाद, त्रीजे अदत्तादान, चोथे मैथुन, पांचमे परिग्रह ॥ छट्ठे क्रोध, सातमे मान, आठमे माया, नवमे लोभ ॥ दसमे राग, अग्यारमे द्वेष, बारमे कलह, तेरमे अभ्याख्यान, चौदमे पैशुन्य, पन्नरमे रति अरति, सोलमे परपरिवाद, सत्तरमे माया मृषावाद, अढारमे मिथ्यात्व शल्य, ए अढार पापस्थानकमांहि महारे जीवे जे कोइ पाप सेव्युं होय, सेवराव्यु होय, सेवता प्रत्ये अनुमोद्युं होय, ते सवि हु मन वचन कायाए करी मिच्छामि दुकडं ॥

सव्वस्सवि देवसिअ दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्? इच्छं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(बाद मे दाहिना घुटना ऊचा करके नीचे मुजब बोलना)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूण । एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगल ॥

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोग पच्चक्खामि, जाव नियम पज्जुवासामि, ॥१॥ दुविह, तिविहेणं, मणेण, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि,

निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि. ॥२॥

इच्छामि पडिक्कमिउ, जो मे देवसिओ अइआरो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं ॥ चउण्हं कसायाणं ॥ पंचण्ह मणुव्वयाण, तिण्हं गुणव्वयाण, चउण्ह सिक्खावयाणं, वारसविहस्स सावग धम्मस्स, जं खंडिअ जं विराहिअ तस्स मिच्छामि दुक्कडं

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ; इच्छामि पडिक्कमिउं, सावग धम्माइआरस्स ॥१॥ जो मे वयाइआरो नाणे तह दसणे चरित्ते अ; सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥२॥ दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे वहुविहे अ आरंभे; कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥३॥ जं वद्ध मिंदिएहिं, चउहि कसाएहि अप्पसत्थेहि; रागेण व दोसेण व, त निंदे त च गरिहामि ॥४॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे; अभिओगे अ नियोगे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥५॥ संका कंख विगिच्छा, पसस तह संथवो कुलिंगीसु; सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥६॥ छक्काय समारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा। अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव त निंदे ॥७॥ पचण्ह--मणुव्वयाणं, गुण--व्वयाणं

चौद लाख मनुष्य, एवंकारे, चोराशी लाख जीवायोनिमांहि, म्हारे जीवे जे कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतां प्रत्ये अनुमोद्यो होय, ते सवि हु मन वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ॥

पहेले प्राणातिपात, बीजे मृषावाद, त्रीजे अदत्तादान, चोथे मैथुन, पाचमे परिग्रह ॥छट्ठे क्रोध, सातमे मान, आठमे माया, नवमे लोभ ॥ दसमे राग, अग्यारमे द्वेष, बारमे कलह, तेरमे अभ्याख्यान, चौदमे पैशुन्य, पन्नरमे रति अरति, सोलमे परपरिवाद, सत्तरमे माया मृषावाद, अढारमे मिथ्यात्व शल्य, ए अढार पापस्थानकमाहि महारे जीवे जे कोइ पाप सेव्युं होय, सेवराव्यु होय, सेवता प्रत्ये अनुमोद्युं होय, ते सवि हु मन वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ॥

सव्वस्सवि देवसिअ दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्? इच्छं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(बाद मे दाहिना घुटना ऊचा करके नीचे मुजब बोलना)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाण, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूण । एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियम पज्जुवासामि, ॥१॥ दुविह, तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि,

निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि. ॥२॥

इच्छामि पडिक्कमिउ, जो मे देवसिओ अइआरो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं ॥ चउण्हं कसायाणं ॥ पंचण्ह मणुव्वयाण, तिण्हं गुणव्वयाण, चउण्ह सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावग धम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअ तस्स मिच्छामि दुक्कडं.

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ; इच्छामि पडिक्कमिउं, सावग धम्माइआरस्स ॥१॥ जो मे वयाइआरो नाणे तह दसणे चरित्ते अ; सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥२॥ दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे; कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥३॥ जं बद्ध मिंदिएहिं, चउहि कसाएहिं अप्पसत्थेहिं; रागेण व दोसेण व, तं निंदे त च गरिहामि ॥४॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे; अभिओगे अ नियोगे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥५॥ संका कंख विगिच्छा, पसस तह संथवो कुलिंगीसु; सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्व ॥६॥ छकाय समारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा । अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव त निंदे ॥७॥ पचण्ह--मणुव्वयाणं, गुण-व्वयाणं

च तिण्ह मइयारे; सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥८॥ पढमे अणुव्वयंमि, थूलग–पाणाइवाय–विरइओ; आय रिय–मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥९॥ वह वंध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए । पढम–वयस्स–इआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्व॥१०॥ वीए अणुव्वयमि,परि थूलग अलीयवयण विरइओ । आयरिअ–मप्पसत्थे, इत्थ पमाय–प्पसंगेणं ॥११॥ सहसा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ । बीअ वयस्स-इआरे, पडिक्कमे देसिअ सव्व ॥१२॥ तइए अणुव्वयमि,थूलग परदव्व–हरण विरइओ । आयरिय–मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्प-संगेण ॥१३॥ तेना हडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्ध गमणे अ, कूडतुल कूडमाणे, पडिक्कमे देसिअं सव्व ॥१४॥ चउत्थे अणुव्वयंमि, निच्चं परदारगमण-विरइओ,आयरिअ-मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेण ॥१५॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणगविवाह तिव्व-अणुरागे । चउत्थ वयस्स इआरे, पडिक्कमे देसिअ सव्व ॥१६॥ इत्तो अणुव्वए पचमंमि, आयरियमप्पसत्थंमि; परिमाण परिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥१७॥ धण धन्न खित्तवत्थु, रुप्प सुवन्ने अ कुविअ परिमाणे । दुपए चउप्पयंमि य, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥१८॥ गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअ च । वुड्ढि सइअ तरद्धा,पढमंमि गुणव्वए निंदे॥१९॥ मज्जंमि अ,मंसमि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ । उवभोग परिभोगे, वीयंमि गुणव्वए निंदे ॥२०॥ सचित्ते पडिबद्धे, अप्पोल दुप्पोलिअ च आहारे; तुच्छोसहि-

भक्खणया, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥२१॥ इगाली-वण-साडी, भाडी फोडी सुवज्जए कम्मं । वाणिज्ज चेव दंत, लक्ख-रस केस-विसविसयं ॥२२॥ एवं खु जंतपिल्लण, कम्मं निल्ल-छणं च दवदाणं । सर-दह-तलाय-सोसं, असई–पोसं च वज्जिज्जा ॥२३॥ सत्थग्गि-मुसल-जंतग, तण कट्ठे–मंत मूल भेसज्जे । दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे देसिअं सव्व ॥२४॥ न्हाणु व्वट्टण वन्नग, विलेवणे सद्द रूव रस-गंधे । वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे देसिअ सव्वं ॥२५॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण भोग अइरित्ते । दंडंमि अणट्ठाए, तइअंमि गुणव्वए निंदे ॥२६॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइ विहूणे । सामाइअ वितहकए, पढमे सिक्खावए निंदे ।२७। आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे । देसावगासिअंमि, बीए सिक्खावए निंदे ॥२८॥ संथारुच्चारविहि, पमाय तह चेव भोयणाभोए । पोसह विहिविवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥२९॥ सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस मच्छरे चेव; कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥३०॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकपा । रागेण व दोसेण व, त निंदे तं च गरिहामि ॥३१॥ साहूसु संविभागो, न कओ तव–चरण–करण जुत्तेसु । संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥३२॥ इहलोए परलोए, जीविअ–मरणे अ आसंसपओगे । पंचविहो अइयारो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते ॥३३॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइ-

अस्स वायाए । मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥३४॥वंदणवयसिक्खा-गारवेसु,सन्ना-कसायदंडेसु। गुत्तीसु अ समिइसु अ, जो अइआरो अ त निंदे ॥३५॥ सम्मदिट्ठी जीवो, जइवि हु पाव समायरे किं चि। अप्पोसि होइ बंधो, जेण न निद्धधसं कुणइ ॥३६॥ तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्प-रिआवं सउत्तरगुणं च। खिप्प उवसामेइ, वाहिव्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥३७॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूल विसारया। विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥३८॥ एवं अट्ठविहं कम्मं, राग दोस-समज्जिअं। आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥३९॥ कयपावोवि मणुस्सो, आलोइअ निंदिअ गुरुसगासे। होइ अइरेग लहुओ, ओहरिअ-भरुव्व भारवहो ॥४०॥ आवस्सएण एएण, सावओ जइवि बहुरओ होइ। दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥४१॥ आलोअणा बहुविहा, नय संभरिआ पडिक्कमण काले। मूलगुण-उत्तर गुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥४२॥ तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स ॥

(इधर खड़ा होकर बोलना)

अब्भुट्ठिओ मि आराहणाए, विरओमि विराहणाए। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥४३॥ जावंति चेइआइ, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ। सव्वाइ ताइं वंदे इह संतो तत्थ संताइ ॥४४॥ जावंत केवि साहू, भरहेरवय महा-विदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं

॥४५॥ चिर संचिय-पावपणासणीइ, भवसय सहस्स महणीए ।
चउवीस-जिण-विणिग्गय-कहाइ, वोलतु मे दिअहा ॥४६॥
मम मंगल मरिहता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ । सम्मदिट्ठी
देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥४७॥ पडिसिद्धाणं करणे,
किच्चाणमकरणे पडिक्कमण । असद्दहणे अ तहा, विवरीय परू-
वणाए अ ॥४८॥ खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमंतु
मे । मित्ती मे सव्वभूएसु. वेरं मज्झ न केणइ ॥४९॥ एवमहं
आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्म । तिविहेण पडि-
क्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥५०॥

(फिर दो वादणा नीचे मुताबिक देना)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहि-
आए ॥१॥ अणुजाणह ॥ मे मिउग्गह ॥२॥ निसीहि,
अ हो कायं का य, संफासं खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकि-
लंताणं, बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ! ॥३॥ जत्ता भे ?
॥४॥ ज-व-णिज्जं च भे ? ॥५॥ खामेमि खमासमणो, देव-
सिअ वइक्कम्मं ॥६॥ आवस्सियाए पडिक्कमामि, खमासमणाणं
देवसिआए आसायणाए; तित्तीसन्नयराए, जंकिंचि मिच्छाए
मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए; कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए,
मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए,
सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ,
तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं
वोसिरामि ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ॥१॥ अणुजाणह—मे मिउग्गह ॥२॥ निसीहि अहो, का—य —का-य संफासं खमणिज्जोभे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसु-भेण, भे दिवसो वइक्कंतो ॥३॥ जत्ताभे ? ॥४॥ ज—वणिज्जं च भे ? ॥५॥ खामेमि खमासमणो, देवसिअं वइक्कम्मं ॥६॥ पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए, आसायणाए, तित्ती-सन्नयराए, जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वका-लिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसा-यणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्-कमामि, निंदामि, गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥७॥

(फिर दाहिना हाथ चरवले पर रख मस्तक झुका कर)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओमि अब्भिन्तर देवसिअं खामेउ? इच्छं, खामेमि देवसिअं, जं किंचि अपत्तिअ परपत्तिअं भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे अतरभासाए उवरिभासाए जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(फिर दो वादणा नीचे मुताबिक देना)

इच्छामि खमासमणो ! वदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ॥ १ ॥ अणुजाणह; मे मिउग्गह ॥ २ ॥ निसीहि, अ-हो,

का यं, काय-संफासं, खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे, दिवसो वइक्कंतो? ॥३॥ जत्ता भे ? ॥४॥ जवणिज्ज च भे ? ॥५॥ खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्म ॥६॥ आवस्सिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ॥१॥ अणुजाणह–मे मिउग्गह ॥२॥ निसीहि अहो, का–यं –का-य संफासं खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण, भे दिवसो वइक्कंतो ॥३॥ जत्ता भे ? ॥४॥ ज–वणिज्जं च भे ? ॥५॥ खामेमि खमासमणो, देवसिअं वइक्कम्म ॥६॥ पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥७॥

(फिर दाहिना हाथ चरवले पर रख मस्तक झुका कर)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओमि अब्भिन्तर देवसिअं खामेउं? इच्छ, खामेमि देवसिअं, जं किंचि अपत्तिअ परपत्तिअं भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे अतरभासाए उवरिभासाए जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह अह न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥

(फिर दो वांदणा नीचे मुताबिक देना)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ॥ १ ॥ अणुजाणह; मे मिउग्गह ॥ २ ॥ निसीहि, अ-हो,

का यं, काय-संफासं,खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे, दिवसो वइक्कंतो?॥३॥ जत्ता भे ? ॥४॥ जवणिज्जं च भे ? ॥५॥ खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्म ॥६॥ आवस्सिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निंदामि,गरिहामि,अप्पाणं वोसिरामि॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ॥१॥ अणुजाणह मे मिउग्गह ॥ २ ॥ निसीहि, अहो कायं काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ॥ ३ ॥ जत्ता भे ॥४॥ जवणिज्जं च भे ॥५॥ खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कम्मं ॥६॥ पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्काडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि, निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

(बाद मे दोनो हाथ जोड मस्तक को लगाकर नीचे का सूत्र बोलना)

आयरिय उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे अ; जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलि करीअ सीसे । सव्व खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥२॥ सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मनिहिअ निअचित्तो । सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥३॥

करेमि भंते ! सामाइय, सावज्जं जोग पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, ॥१॥ दुविह, तिविहेणं, मणेण, वायाए, काएण, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते ! पडिकमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे देवसिओ अइआरो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावग पाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए, तिण्ह गुत्तीणं, चउण्ह कसायाणं, पंचण्ह मणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाण, चउण्ह सिक्खावयाण, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित्तकरणेण, विसोहीकरणेण, विसल्लीकरणेणं, पावाण कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्ग ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएण,

जभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहि अंगसचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसचालेहिं; सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं; अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो, ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ ताव कायं ठाणेणं माणेणं झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(ऐसा कहकर दो लोगस्सका काउस्सग्ग करना, न आता हो तो आठ नवकार गिनके, फिर प्रगट लोगस्स कहना. वह नीचे मुताबिक है)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म तित्थयरे जिणे; अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभ मजिअं च वंदे, संभव मभिणंदण च सुमइं च; पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वदे ॥२॥ सुविहि च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च; विमलमणतं च जिणं, धम्मं संतिं च वदामि ॥३॥ कुंथुं अर च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वय नमिजिणं च; वदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाण च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय रय मला पहीणजरमरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा ॥ तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय, वंदिय, महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ॥ आरुग्ग बोहिलाभं ॥ समाहिवर मुत्तमं दितु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा,

आइच्चेसु अहिय पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥

अरिहंत चेइआणं करेमि काउस्सग्गं॥१॥ वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए ॥२॥ सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्ग ॥३॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएण, जभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं; सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहि अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताण भगवताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(फिर एक लोगस्स या चार नवकारका काउस्सग्ग करना पीछे प्रगट पुक्खरवरदीवड्ढे, कहना सो नीचे मुताबिक है)

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायईसंडे अ जंबूदीवे अ, भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमसामि ॥१॥ तमतिमिरपडलविद्धसणस्स सुरगणनरिंदमहियस्स । सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ मोहजालस्स ॥२॥ जाइ जरा मरण सोग पणासणस्स, कल्लाण पुक्खल विसाल सुहावहस्स । कोदेव दाणव नरिं-

दगणच्चिअस्स, धम्मस्स सारहुवलब्भ करे पमाय ॥३॥ सिद्धे भो पयओ णमो जिणमए नदी सया संजमे, देवं नाग-सुवन्न किन्नरगण सब्भूअ भावच्चिए। लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुर। धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तर वड्ढउ ॥४॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं ॥१॥ वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्मा-णवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए ॥२॥ सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥३॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेल संचालेहिं; सुहु-मेहिं दिट्ठिसंचालेहि ॥२॥ एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ; हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(एक लोगस्सका चदेसु निम्मलयरा तक काउस्सग्ग करना, न आवडे तो चार नवकार गिनना, फिर सिद्धाण बुद्धाणं कहना)

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं, परंपरगयाणं ॥ लोअग्गमु-वगयाण, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥ जो देवाण वि देवो, ज देवा पजली नमंसंति; त देवदेव महिअं, सिरसा

वंदे महावीरं ॥२॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स । संसार सागराओ, तारेइ नर व नारिं वा ॥३॥ उज्जित सेल सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स । तं धम्मचक्कवट्टि, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥४॥ चत्तारि अट्ठ दस-दोय, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं; परमट्ठ निट्ठि अट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥५॥

सुअदेवयाए करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएण, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताण नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके पारके नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कहके स्तुति कहनी वह नीचे मुजब है)

सुअदेवया भगवई, नाणावरणीयकम्मसघायं ।
तेसिं खवेउ सयय, जेसिं सुयसायरे भत्ती ॥१॥

(स्त्रियों को कमलदल की स्तुति कहना चाहिए वह नीचे मुताबिक है)

कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमलगर्भसमगौरी ।
कमले स्थिता भगवती, ददातु श्रुतदेवता सिद्धिं ॥१॥

खित्तदेवयाए करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंगसचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ; हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(फिर एक नवकारका काउस्सग्ग करना, काउस्सग्ग पारके नमोऽर्हत्‌सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कह कर एक स्तुति कहनी वह नीचे मुजब है)

जीसे खित्ते साहू, दसणनाणेहिं चरणसहिएहिं ।
साहंति मुक्खमग्गं, सा देवी हरउ दुरिआइं ॥१॥

(स्त्रियोंको यस्याः क्षेत्र की स्तुति कहनी चाहिये वह नीचे मुजब है)

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया ।
सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥१॥

नमो अरिहंताणं ॥१॥ नमो सिद्धाणं ॥२॥ नमो आयरियाणं ॥३॥ नमो उवज्झायाणं ॥४॥ नमो लोए सव्वसाहूणं ॥५॥ एसो पंच नमुक्कारो ॥६॥ सव्वपावप्पणासणो ॥७॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥८॥ पढमं हवइ मंगलं ॥९॥

(फिर ॰ छट्ठे आवश्यकको मुहपत्ति पडिलेहन करना, मुहपत्तिका पडिलेहन करके फिर दो वादणा देना, वह नीचे मुताबिक है)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ।।१।। अणुजाणह, मे मिउग्गहं ।।२।। निसीहि, अहो कायं, काय-संफासं, खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे, दिवसो वइक्कंतो ? ।।३।। जत्ता भे ।।४।। जवणिज्जं च भे ? ।।५।। खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं ।।६।। आवस्सिआए, पडिक्कमामि, खमासमणाणं देवसिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जंकिंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ।।७।।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ।।१।। अणुजाणह मे मिउग्गहं ।।२।। निसीहि, अहो कायं काय-संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ।।३।। जत्ता भे।।४।। जवणिज्जं च भे ? ।।५।। खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं ।।६।। पडिक्कमामि, खमासमणाणं देवसिआए, आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जंकिंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए कायदु-

कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

सामायिक, चउविसत्थो, वंदन, पडिक्कमणु, काउस्सग्ग, पच्चक्खाण किया है जी।

इच्छामो अणुसट्ठिं नमो खमासमणाणं, नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा । तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ॥१॥ येषां विकचारविन्दराज्या, ज्यायः क्रमकमलावलिं दधत्या । सदृशैरिति संगत प्रशस्यं, कथितं सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥२॥ कषायतापार्दितजन्तुनिर्वृत्ति, करोति यो जैनमुखाम्बुदोद्गतः। स शुक्रमासोद्भववृष्टिसन्निभो, दधातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम् ॥३॥

(यदि स्त्रिया प्रतिक्रमण करती हो तो यहा पर संसार-दावा की त्रग कडी कहे वह नीचे मुताबिक है)

संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरं; माया रसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरं ॥१॥ भावावनाम सुरदानव मानवेन, चूलाविलोलकमलावलिमालितानि; संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराज-

पदानि तानि ॥२॥ बोधागाध सुपदपदवीनीरपूराभिरामं जीवाहिंसाविरललहरी संगमागाहदेह। चूलावेलं गुरु गममणिसंकुल दूरपार, सार वीरागमजलनिधिं सादरं सा सेवे ॥३॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताण ॥१॥ आइगराणं, तित्थ यराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्त- माणं, लोगनाहाणं, लोगहिआण, लोगपईवाणं, लोगपज्जो- अगराण ॥ ४ ॥ अभयदयाणं,चक्खुदयाणं,मग्गदयाणं, सरण दयाणं, बोहिदयाणं ॥५॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्म- नायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहय वरनाण-दंसणधराणं, विअट्टछउमाण ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाण ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीण, सिव मयल मरुअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणराविित्ति-सिद्धि गइनामधेयं ठाण संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥९॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले; संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

(इच्छाकारेण सदिसह भगवन् स्तवन भणुं "इच्छ" कहके)

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

(ऐसा कहके स्तवन कहना)

स्तवन

जगजीवन जगवाल्हो, मरुदेवीनो नंद लालरे;
मुख दीठे सुख उपजे, दर्शन अतिहि आनद लालरे. जग०१
आंखडी अंबुज पांखडी, अष्टमी शशि सम भाल लालरे;
वदन ते शारद चंदलो, वाणी अतिही रसाल लालरे. जग०२
लक्षण अंगे विराजतां, अडहीय सहस उदार लालरे;
रेखा करचरणादिके, अभ्यंतर नहि पार लालरे जग०३
इंद्र चंद्र रवि गिरि तणा, गुण लही घडीयु अंग लालरे;
भाग्य किहां थकी आवीयुं, अचरिज एह उत्तंग लालरे. जग०४
गुण सघळा अंगे कर्या, दूर कर्या सवि दोप लालरे;
वाचक यशविजये थुण्यो, देजो सुखनो पोष लालरे. जग०५

वरकनकशंखविद्रुम,-मरकतघनसन्निभं विगतमोह ।
सप्ततिशतं जिनाना, सर्वामरपूजितं वंदे ॥१॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । भगवानहं ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । आचार्यह ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । उपाध्यायहं ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वदामि । सर्वसाधुहं ।

(फिर दाहिना हाथ चरवले पर रखके मस्तक झूकाकर)

अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु, पन्नरससु कम्मभूमिसु, जावत केवि साहू, रयहरणगुच्छपडिग्गहधारा पंचमहव्वयधारा, अट्ठारससहस्स सीलंगधारा, अक्खुयायारचरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! देवसियपायच्छित्त-विसोहणत्थ काउस्सग्ग करूं? इच्छं, देवसियपायच्छित्तविसोह-णत्थं करेमि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएण, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहि ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाण वोसिरामि ॥५॥

(ऐसा कहकर चार लोगस्सका चदेसु निम्मलयरा तक काउस्सग्ग करना, न आता हो तो सोलह नवकार गिनना, फिर प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे मुताबिक है)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म तित्थयरे जिणे, अरिहंते कित्त-इस्सं, चउवीसपि केवली ॥१॥ उसभ मजिअ च वंदे, संभव-मभिणंदण च सुमइ च; पउमप्पह सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च;

विमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च; वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाण च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला पहीणजर-मरणा; चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा; आरुग्ग बोहिलाभं,समाहि वर मुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा; सागर वर गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय संदिसाहु? "इच्छं"

इच्छामि खमा णो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वदामि.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन! सज्झाय करू? "इच्छं"

नमो अरिहताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूण, एसो पंच नमुकारो, सव्व पावप्पणासणो, मंगलाण च सव्वेसिं, पढमं हवइ मगलं॥

सज्झाय.

आप स्वभावमा रे, अवधु सदा मगन मे रहना। जगत जीव है करमाधीना, अचरिज कछुअ न लीना॥ आप०

॥१॥ तुम नहीं केरा कोई नहिं तेरा, क्या करे मेरा मेरा। तेरा है सो तेरी पासे, अवर सवे अनेरा ॥ आप० ॥ २ ॥ वपू विनाशी तुं अविनाशी, अब है इनकुं विलासी। वपू संग जब दूर निकासी, तब तुम शिवका वासी ॥ आप० ॥३॥ राग ने रीसा दोय खवीसा, ए तुम दुःखका दीसा। जब तुम उनकु दूर करीसा, तब तुम जग का ईसा ॥ आप० ॥४॥ परकी आशा सदा निराशा, ए है जगजन पासा। वो काटनकु करो अभ्यासा, लहो सदा सुखवासा ॥ आप० ॥ ५ ॥ कबहीक काजी कबहीक पाजी, कबहीक हुवा अपभ्राजी। कबहीक जगमें कीर्ति गाजी, सब पुद्गलकी बाजी ॥ आप० ॥ ६ ॥ शुद्ध उपयोग ने समता धारी, ज्ञान ध्यान मनोहारी। कर्मकलंककुं दूर निवारी, जीव वरे शिव नारी ॥ आप० ॥७॥

नमो अरिहंताणं॥१॥नमोसिद्धाणं ॥२॥ नमो आयरियाणं ॥३॥ नमो उवज्झायाणं ॥४॥ नमो लोए सव्वसाहूणं ॥५॥ एसो पंच नमुक्कारो ॥६॥ सव्वपावप्पणासणो ॥७॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥८॥ पढमं हवइ मंगलं ॥९॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! दुक्खक्खय- कम्मक्खय निमित्त काउस्सग्ग करूं ? "इच्छं" दुक्खक्खय कम्मक्खय

निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, निससिएण, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएण, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं, ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिह-ताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव, कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(चार संपूर्ण लोगस्सका काउस्सग्ग करना, न आता हो तो सोलह नवकार गिनना. फिर सब लोग काउस्सग्ग अवस्था मे ही रहे और एक आदमी नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ऐसा कहकर शाति बोले वह नीचे मुताबिक है)

शान्ति शान्तिनिशान्तं, शान्तं शान्ताशिवं नमस्कृत्य । स्तोतुः शान्तिनिमित्त, मंत्रपदैः शान्तये स्तौमि ॥ १ ॥ ओमिति निश्चितवचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम् । शांतिजिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥२॥ सकलातिशेषकमहा,-संपत्तिसमन्विताय शस्याय । त्रैलोक्यपू-जिताय च, नमो नमः शान्तिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वामरसु-समूह- स्वामिकसंपूजिताय न जिताय । भुवनजनपालनोद्यत-तमाय सततं नमस्तस्मै ॥४॥ सर्वदुरितौघनाशन-कराय सर्वाशिवप्रशमनाय । दुष्टग्रहभूतपिशाच-शाकिनीनां प्रमथ-

नाय ॥ ५ ॥ यस्येति नाममंत्र–प्रधानवाक्योपयोगकृततोपा । विजया कुरुते जनहित–मिति च नुता नमत तं शांतिम् ॥६॥ भवतु नमस्ते भगवति ! विजये सुजये परापरैरजिते । अपराजिते जगत्या, जयतीति जयावहे भवति ! ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि च सङ्घस्य, भद्रकल्याणमङ्गलप्रददे । साधूना च सदा शिव–सुतुष्टिपुष्टिप्रदे जीयाः ॥ ८ ॥ भव्यानां कृतसिद्धे ! निर्वृत्तिनिर्वाणजननि सत्त्वानाम् । अभयप्रदाननिरते, नमोऽस्तु स्वस्तिप्रदे तुभ्यम् ॥ ९ ॥ भक्तानां जंतूना, शुभावहे नित्यमुद्यते देवि ! । सम्यग्दृष्टीना धृति, रतिमतिबुद्धिप्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशासननिरताना, शांतिनताना च जगति जनतानाम् । श्रीसंपत्कीर्तियशो–वर्द्धनि जयदेवि ! विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानलविषविषधर–दुष्टग्रहराजरोगरण भयतः । राक्षसरिपुगणमारी–चौरेतिश्वापदादिभ्यः ॥१२॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं- कुरु कुरु शांतिं च कुरु कुरु सदेति । तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वम् ॥१३॥ भगवति गुणवति शिवशांति–तुष्टिपुष्टिस्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम् । ओमिति नमो नमो ह्रॉ ह्रीँ ह्रूँ ह्रः यः क्षः ह्रीँ फुट् फुट् स्वाहा ॥ १४ ॥ एव यन्नामाक्षर–पुरस्सरं संस्तुता जयादेवी । कुरुते शांति नमता, नमो नमः शांतये तस्मै ॥ ॥ १५॥ इति पूर्वसूरिदर्शित–मंत्रपदविदर्भितः स्तवः शान्तेः । सलिलादिभयविनाशी, शान्त्यादिकरश्च भक्ति-

मताम् ॥१६॥ यश्चैनं पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथायोगम्। स हि शांतिपदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यंते विघ्न-वल्लयः। मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥१८॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम्। प्रधानं सर्व,धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥१९॥

(फिर)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे; अरिहंते कित्तइस्स, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभव-मभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंत, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च; विमल मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वय नमिजिणं च; वंदामि रिट्ठ-नेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय रयमला पहीण जरमरणा; चउवीसंपि जिणवरा ॥ तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय वंदिअ महिया। जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ॥ आरुग्ग बोहिलाभ ॥ समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा ॥ आइच्चेसु अहियं पयासयरा ॥ सागर वर गंभीरा ॥ सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

श्री देवसि प्रतिक्रमण में सामायिक पारने की विधि

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए

मत्थएण वदामि.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इरियावहिय पडिक्कमामि ? इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं ॥१॥ इरियावहिआए, विराहणाए ॥२॥ गमणागमणे ॥३॥ पाणक्कमणे, बीयक्कमणे,हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग–पणग दग, मट्टी-मक्कडा-संताणा-संकमणे ॥४॥ जे मे जीवा विराहिआ ॥५॥ एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, ॥६॥ अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥७॥

तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित्त करणेण, विसोही करणेण, विसल्ली करणेणं, पावाणं कम्माणं, निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥८॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएण, उड्डुएणं,वायनिसग्गेण,भमलीए पित्तमुच्छाए।१। सुहुमेहिं अंगसंचालेहि, सुहुमेहिं खेल संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहि आगारेहि, अभग्गो अविराहिओ; हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताण भगवताण नमुक्कारेण न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं, मोणेण, झाणेण, अप्पाण वोसिरामि ॥५॥

(एक लोगस्सका चदेसु निम्मलयरा तक काउस्सग्ग

करना, लोगस्स न आता हो तो चार नवकारका काउस्सग्ग करना। काउस्सग्ग पारके प्रगट लोगस्स कहना वह नीचे मुजब है।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीयल सिज्जंस-वासुपुज्जं च ॥ विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथु अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च ॥ वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय, वंदिय, महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ॥ आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

(फिर बायां घुटना ऊचा करके चउक्कसाय कहना.)

चउक्कसायपडिमल्लुल्लूरणु, दुज्जयमयणबाणमुसुमूरणु। सरसपिअंगुवन्नु गयगामिउ, जयउ पासु भुवणत्तयसामिउ ॥ १ ॥ जसु तणु कंति कडप्प सिणिद्धउ, सोहइ फणिमणि-किरणालिद्धउ। न नवजलहरतडिल्लयलंछिउ, सो जिणु पासु

पयच्छउ वछिउ ॥२॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवताण ॥१॥ आइगराणं, तित्थयराण, सयसबुद्धाण ॥२॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाण, पुरिसवर पुंडरीआण, पुरिसवरगंधहत्थीण ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआण, लोगपईवाण, लोगपज्जोअगराण ॥४॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाण, बोहिदयाण ॥५॥ धम्म-दयाण, धम्म-देसयाण, धम्म नायगाण, धम्म-सारहीण, धम्म वरचाउरत-चक्कवट्टीण ॥६॥ अप्पडिहय वरनाण-दसण-धराणं, दिअट्ट छउमाण ॥७॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाण तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं, ॥८॥ सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिव-मयल-मरुअ मणंत-मवखय-मव्वाबाह-मपुणराविति-सिद्धिगइ-नामधेय-ठाणं-संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥९॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले ॥ संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ; सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥१॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि

जावंत केवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ; सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्यः ।

उवसग्गहर पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं; विसहर विसनिन्नासं, मंगल कल्लाण-आवासं ॥१॥ विसहर फुलिंग-मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ; तस्स-गह रोग मारी, दुट्ठ जरा जंति उवसामं ॥२॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामोवि बहुफलो होइ; नर-तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदो-गच्चं ॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए; पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इअ संथुओ महायस ! भत्तिब्भर निब्भरेण हिअएण; ता देव दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद ॥५॥

(फिर दोनों हाथ मस्तकको लगाकर)

जय वीयराय जगगुरु, होउ ममं तुह पभावओ भयवं । भवनिव्वेओ मग्गा-णुसारिआ इट्ठफल सिद्धी ॥ १ ॥ लोग-विरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ-परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो तव्वयण,-सेवणा आभवमखंडा ॥२॥ वारिज्जइ जइवि निआ-णबंधणं, वीयराय तुह समए । तहवि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥ ३ ॥ दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, समा-हिमरणं च बोहिलाभो अ । संपज्जउ मह एअं, तुह नाह पणा-मकरणेणं ॥४॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणं । प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! मुहपत्ति पडिलेहुं ? "इच्छं"

(ऐसा कहके मुहपत्ति पडिलेहनी, फिर खमासमण देना)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पारुं ? 'यथा-शक्ति' ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पार्युं, "तहत्ति"

(ऐसा कहकर दाहिना हाथ आसन पर रखके नीचे मुजब बोलना)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमु-क्कारो, सव्व पावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

सामाइय वयजुत्तो, जाव मणे होइ नियमसंजुत्तो । छिन्नइ असुहं कम्मं, सामाइय जत्तिया वारा ॥१॥ सामाइ-यंमि उ कए, समणो इव ओ हवइ जम्हा । एएण कारणेणं, बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥२॥

सामायिक विधिसे लिया, विधिसे पारा, विधि

जो क[illegible] अविधि हुई हो वो सब मन वचन कायाकर मिच्छ[illegible]मि दुक्कडं । दश मनके, दश वचनके, बारह कायाके, इन ब[illegible]स दोषोंमे जो कोई दोष लगा हो वह सब मन वचन का[illegible]र मिच्छामि दुक्कडं ॥

सामायिक पारने की विधि संपूर्ण.

यथाविधि क्रम देवसि प्रतिक्रमणं समाप्तम् ।

प्रतिक्रमणमें छींक आइ हो तो उनकी विधि.

समुदायमें किसीको अतिचार बाद छींक आइ हो, तो छेल्ले सज्झाय होने बाद नवकार मंत्र गीन खमासमण दे,फिर इरियावही कर काउस्सग्ग करके प्रगट लोगस्स कहना. पिछे खमासमण देके 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् क्षुद्रोपद्रव उड्डावणार्थं काउस्सग्ग करुं? इच्छं क्षुद्रोपद्रव उड्डावणार्थं करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ कहकर चार लोगस्स का सागरवरगंभीरा तककाउस्सग्ग करना.पिछे एक शक्सने पारकर नीचेकीथोइ कहना. ओर सब काउस्सग्ग में रहे हुए सुने.

सर्वे यक्षाम्बिकाद्या ये, वैयावृत्त्यकरा जिने ।
क्षुद्रोपद्रवसंघात, ते द्रुतं द्रावयन्तु नः ॥१॥

पिछे काउस्सग्ग पारके प्रगट लोगस्स कहकर आगेकी विधि करना यदि अतिचार के पेश्तर आई हो तो प्रतिक्रमण चैत्यवंदन से फिरसे करना.

गुरुवंदन की विधि

१ गुरु के पास आकर पहले दो खमासमण देना.
२ पिछे खडे होकर "इच्छकार सुहराइ" (सुबे बार वजे तक 'सुहराइ' और पिछे साम तक 'सुहदेवसि') पाठ कहना
३ फिर एक खमासमण देकर अब्भुट्ठिओ खाम कर,
४ फिर एक खमासमण देकर यथाशक्ति पच्चक्खाण करना.

चैत्यवन्दन करने की विधि

(पहिले प्रभुस्तुति करके मन्दिरके बीचमे आके प्रथम तीन खमासमण देके बाया घुटना ऊचा करके) इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! चैत्यवदन करु ? इच्छ, कहके नीचे मुताबिक चैत्यवदन कहना)

सकळ कुशळ वल्ली, पुष्करावर्तमेघो;
दुरित तिमिर भानुः, कल्प-वृक्षोपमानः ।
भवजलनिधि-पोतः, सर्व संपत्ति हेतुः,
स भवतु सततं वः श्रेयसे शान्तिनाथः
श्रेयसे पार्श्वनाथः ॥१॥

श्री महावीर स्वामीका चैत्यवन्दन

सिद्धारथ सुत वदिए त्रिशलानो जायोः
क्षत्रियकुडमा अवतर्यो; सुर नरपति गायो ॥१॥
मृगपति लंछन पाउले, सात हाथनी काय ।
बहोतेर वर्षनु आउखुं, श्री वीर जिनेश्वरराय ॥२॥
खीमाविजय जिनरायनो ए, उत्तम गुण अवदात ।
सात बोलथी वर्णव्यो, पद्मविजय विख्यात ॥३॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए; जाइं जिण बिंबाइ,ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ १॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं, ॥ १ ॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं, ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं ॥ लोगपईवाण, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाण, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाण–दंसणधराणं, विअट्टछउमाणं, ॥७॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं ॥ बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताण मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअ-मणंतमक्खय-मव्वाबाहमपुणरावित्ति–सिद्धिगइनामधेय । ठाण संपत्ताण, नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥९॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले॥ संपइ अ वट्टमाणा,सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

जावंति चेइआइ, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ; सव्वाइं ताइ वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥१॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

जावंत केवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ; सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाण ॥१॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय–सर्वसाधुभ्यः

श्री ऋषभदेव स्वामिका स्तवन.

ऋषभदेव हितकारी, जगतगुरु ऋषभदेव हितकारी ।
प्रथम तीर्थंकर प्रथम नरेसर, प्रथम यति व्रतधारी ॥ज०॥१॥
वरसीदान देइ तुम जगमे, ईलती ईति निवारी ।
तैसी काही करतु नाहिं करुना, साहेब बेर हमारी ॥ज०॥२॥
मागत नाहीं हम हाथी घोरे, धन कन कंचन नारी ।
दियो मोही चरण कमलकी सेवा, याही लगत मोहि प्यारी ॥३॥
भवलीला वासित सुर डारे, तो पर सब ही उवारी ॥
मै मेरो मन निश्चय कीनो, तुम आणा शिर धारी ॥ज०॥४॥
ऐसो साहिब कोऊ नहीं जगमे, यासुं होय दिलदारी ।
दिल ही दयाल प्रेम के बिचे, तिहा हठखेचे गमारी ॥ज०॥५॥
तुम हि साहिब मै हूं बंदा, या मत दियो विसारी ।
श्रीनयविजय विबुध सेवक के, तुम होपरम उपकारी ॥ज०॥६॥

(फिर दोनो हाथ मस्तक को लगाकर)

जय वीयराय जगगुरु, होउ ममं तुह पभावओ भयवं ।
भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफल सिद्धी ॥ १ ॥ लोगवि-
रुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ–परत्थकरणं च ॥ सुहगुरुजोगो
तव्वयण, सेवणा आभवमखंडा ॥ वारिज्जइ जइवि निआण-
बधणं, वीयराय तुह समए । तहवि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे
तुम्ह चलणाणं ॥ ३ ॥ दुक्खखओ कम्मखओ, समाहि-
मरणं च वोहिलाभो अ । संपज्जउ मह एअं, तुह नाह

पणाम करणेणं ॥ ४ ॥ सर्वमंगलमांगल्य, सर्वकल्याणकारणं । प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥५॥ खडे होकर.

अरिहंत चेइआणं करेमि काउस्सग्ग ॥१॥वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गव त्तिआए॥२॥सद्धाए मेहाए धिईए-धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं. ॥३॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए ॥१॥सुहुमेहिं अंगसचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेण न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेण मोणेण झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

एक नवकार का काउस्सग्ग करके फिर नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कहके स्तुति कहना, वह नीचे मुजब.)

आदि जिनवर राया, जास सोवन्न काया;
मरुदेवी माया, धोरी लंछन पाया,
जगत स्थिति निपाया, शुद्ध चारित्र पाया;
केवल सिरी राया, मोक्ष नगरे सधाया ॥१॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

श्री ऋषभदेव स्वामिका स्तवन.

ऋषभदेव हितकारी, जगतगुरु ऋषभदेव हितकारी ।
प्रथम तीर्थंकर प्रथम नरेसर, प्रथम यति व्रतधारी ॥ज०॥१॥
वरसीदान देइ तुम जगमे, ईलती ईति निवारी ।
तैसी काही करतु नाहिं करुना, साहेब बेर हमारी ॥ज०॥२॥
मागत नाहीं हम हाथी घोरे, धन कन कंचन नारी ।
दियो मोही चरण कमलकी सेवा, याही लगत मोहि प्यारी ॥३॥
भवलीला वासित सुर डारे, तो पर सब ही उवारी ॥
मैं मेरो मन निश्चय कीनो, तुम आणा शिर धारी ॥ज०॥४॥
ऐसो साहिब कोऊ नहीं जगमे, यासुं होय दिलदारी ।
दिल ही दयाल प्रेम के विचे, तिहा हठखेचे गमारी ॥ज०॥५॥
तुम हि साहिब मैं हूं बंदा, या मत दियो विसारी ।
श्रीनयविजय विबुध सेवक के, तुम होपरम उपकारी ॥ज०॥६॥

(फिर दोनो हाथ मस्तक को लगाकर)

जय वीयराय जगगुरु, होउ ममं तुह पभावओ भयवं ।
भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफल सिद्धी ॥ १ ॥ लोगवि

पणाम करणेणं ॥ ४ ॥ सर्वमंगलमांगल्य, सर्वकल्याणकारणं । प्रधानं सर्व धर्माणा, जैनं जयति शासनम् ॥५॥ खडे होकर.

अरिहंत चेइआणं करेमि काउस्सग्ग ॥१॥ वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गव त्तिआए॥२॥सद्धाए मेहाए धिईए-धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं. ॥३॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए ॥१॥सुहुमेहिं अंगसचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताण नमुक्कारेण न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेण मोणेण झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

एक नवकार का काउस्सग्ग करके फिर नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कहके स्तुति कहना, वह नीचे मुजब.)

आदि जिनवर राया, जास सोवन्न काया;
मरुदेवी माया, धोरी लंछन पाया,
जगत स्थिति निपाया, शुद्ध चारित्र पाया;
केवल सिरी राया, मोक्ष नगरे सधाया ॥१॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

पौषध में लेनेकी विधि.

पौषध में रखनेका उपकरण

पौषधमे १ धोती, १ उत्तरासन, १ कवल, मात्राकी कुडी, पुंजणी, ठल्ला मात्राके लिये १ धोती अलग रखना, दडासन, चरवला, मुहपत्ति, कटासना [बेटका] सूत का कंदोरा इनके सिवाय विशेष उपकरण नहीं रखना।

प्रथम एक खमासमण देकर इरियावही, तस्स उत्तरी, अन्नत्थ कह कर एक लोगस्स (चंदेसु निम्मलयरा तक या चार नवकार) का काउस्सग्ग कर के फिर प्रगट लोगस्स कहना। बादमें एक खमासमण देकर, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पोसह मुहपत्ति पडिलेहू ? इच्छं, कह कर ५० बोल से मुहपत्ति पडिलेहन करना।

फिर खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पोसह संदिसाहू ? इच्छं. फिर खमासमण देकर इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पोसह ठाऊ ? इच्छ. कह कर दोनों हाथ जोड एक नवकार गिनना।

फिर इच्छकारी भगवन् पसाय करी पोसह दडक उच्चरावोजी ? कह कर गुरु महाराज या व्रतधारी के पास पोसह का पच्चक्खाण करना। यदि गुरु या व्रतधारी का योग न हो तो स्वयं नीचेमुताबिक 'करेमि भंते पोसह उच्चरे'।

पौषध का पच्चक्खाण सूत्र

करेमि भंते ! पोसहं, आहार पोसहं देसओ सव्वओ, सरीरसक्कार पोसहं सव्वओ, बंभचेर पोसह सव्वओ, अव्वा-वार पोसहं सव्वओ, चउव्विह पोसहं ठामि, जाव दिवसं[1] अहोरत्त पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि, न कारवेमि तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक मुहपत्ति पडिलेहू ? इच्छं.' कह कर मुहपत्ति पडि-लेहन करके, फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक संदिसाहूं ? इच्छं.' फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसहभगवन्सामायिक ठाऊं । इच्छं,' कहकर.

दोनों हाथ जोड एक नवकार मन्त्र गिन कर । इच्छकारी भगवन् पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी ?[2] कह कर 'करेमि भंते सामाइयं' का पाठ उच्चरना.

फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्

१ दिन का पौषध लेना हो तो 'जाव दिवस' दिन-रात का पौषध लेना हो तो 'जाव अहोरत्त' और सिर्फ शाम का लेना हो तो 'जाव शेष दिवस' कहना ।

२ करेमि भते सामाइय के पाठ मे 'जाव नियम' की अवेज मे 'जाव पसह' कहना ।

बेसणे सदिसाहूं ? इच्छं.' फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बेसणे ठाऊं ? इच्छं.' फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय संदिसाहूं ? इच्छं.' फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण सदिसह भगवन् सज्झाय करूं ! इच्छं,' फिर हाथ जोडकर तीन नवकार मंत्र गिनना. फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बहुवेल सदिसाहू ? इच्छ.' फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बहुवेल करशुं ? इच्छं'

सुबह को पौषध पडिलेहण विधि

१ पौषध के साथ ही साथ क्रिया करना हो तो एक खमासमण देकर 'इच्छाकारेण सदिसह भगवन्पडिलेहण करूं ? इच्छं.' कहकर मुहपत्ति, चरवला, कटासणा, धोती और कंदोरा) पाच वस्त्र पडिलेहण करना। ये पडिलेहण कर के खडे हो जाना.

२ पिछे खमासमण देकर 'इच्छकारी भगवन् पसाय करके पडिलेहणा पडिलेहावोजी ! इच्छं,' कह के—

३ पिछे खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् उपधि मुहपत्ति पडिलेहू ? इच्छं' कहकर मुहपत्ति पडिलेहण करना. फिर खमासमण देके 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् उपधि संदिसाहूं ? इच्छं' फिर खमासमण देकर

'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् उपधि पडिलेहू ? इच्छं'. कह के बाकी के वस्त्र का पडिलेहण करना.

४ (पीछे दंडासन जाच के इरियावही कर के दंडासन से काजा लेकर एक स्थान पर इकट्ठा कर देख कर सुपडी मे भरना, फिर भरनेवाला स्थापनाचार्यजी के सामने 'इरियावही पडिक्कम के निर्जीव स्थान पर जा के 'अणुजाणह जस्सुग्गहो' कह के परठव दे. पीछे तीन वक्त 'वोसिरे वोसिरे वोसिरे' कहना.

५ पीछे आकर खमासमण देकर 'इरियावही, तस्स उत्तरी, अन्नत्थ कह के एक लोगस्स(चंदेसु निम्मलयरा तक)या तो चार नवकारका काउस्सग्ग करके फिर लोगस्स कहना.

सुबे पौषधमें श्री देववंदन विधि

१ प्रथम खमासमण देकर इरियावही, तस्स उत्तरी, अन्नत्थ कहकर एक लोगस्स (चंदेसु निम्मलयरा तक)या चार नवकार का काउस्सग्ग कर के लोगस्स कहना। पिछे उत्तरासन डाल के 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करूं ? इच्छं,' कहके चैत्यवंदन कहकर, पिछे जंकिंचि नमुत्थुणं, कह के आभवमखण्डा तक जयवीयराय कहना

२. फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करूं ? इच्छ,' कहके चैत्यवंदन कहकर जंकिंचि, नमुत्थुणं कह खडे हो के अरिहंत चेइयाणं, अन्नत्थ कह के

एक नवकार का काउस्सग्ग कर पिछे नमोऽर्हत्० कह के चार थुइ के जोडे मे से पहली थुइ कहना ।

३. फिर लोगस्स कह सव्वलोए अरिहतचेइआणं, अन्नत्थ कह के एक नवकार का काउस्सग्ग करना । फिर दूसरी थुइ कह के पुक्खरवरदी सुअस्स भगवओ, करेमि काउस्सग्ग वदणवत्तिआए० अन्नत्थ कह एक नवकार का काउस्सग्ग कर तीसरी थुइ कह के पारना ।

४. फिर सिद्धाणं बुद्धाण, वेयावच्चगराणं० अन्नत्थ कह एक नवकार का काउस्सग्ग कर 'नमोऽर्हत्०कह के चोथी थुइ कहना । पिछे वैठ के 'नमुत्थुण' कह खडे हो के अरिहत चेइआणं अन्नत्थ कहके एक नवकार का काउस्सग्ग कर पिछे नमोऽर्हत्०कह के चार थुइमे से पहली थुइ कहना,

५ फिर लोगस्स कह सव्वलोए अरिहंतचेइआणं, अन्नत्थ कह के एक नवकार का काउस्सग्ग करना । फिर दूसरी थुइ कह के पुक्खरवरदी, सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्ग वंदणवत्तिआए० अन्नत्थ कह एक नवकार का काउस्सग्ग कर तीसरी थुइ कह के पारना । फिर सिद्धाणं बुद्धाण, वेयावच्चगराण० अन्नत्थ कह एक नवकार का काउस्सग्ग कर 'नमोऽर्हत्० कह के चौथी थुइ कहना । पिछे वैठ के नमुत्थुणं, जावंति चेइआइं, खमासमण, देकर पिछे जावंत केवि साहू, नमोऽर्हत् कह स्तवन कहना । फिर आधा जयवीयराय आभवमखण्डा तक कहना ।

---

६ फिर खमासमण देकर, 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करु? इच्छं, कह कर चैत्यवंदन करना, पिछे जंकिंचि, नमुत्थुणं कह के संपूर्ण जयवीयराय कहना। पिछे एक खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करुं? इच्छं', फिर एक नवकार गिन कर नीचे मुताविक मन्नह जिणाणं की सज्झाय करना.

मन्नह जिणाणं की सज्झाय,

मन्नह जिणाणं आणं, मिच्छं परिहरह धरह सम्मत्तं।
छव्विह आवस्सयंमि, उज्जुत्तो होइ पइदिवसं ॥१॥
पव्वेसु पोसहवयं, दाणं सीलं तवो अ भावो अ।
सज्झाय नमुक्कारो, परोवयारो अ जयणा अ ॥२॥
जिणपूआ जिणथुणणं, गुरुथुअ साहम्मिआण वच्छल्लं ॥
ववहारस्स य सुद्धी, रहजत्ता तित्थजत्ता य ॥३॥
उवसम विवेग संवर, भासासमिई छजीव करुणा य।
धम्मिअजणसंसग्गो, करणदमो चरणपरिणामो ॥४॥
संघोवरि वहुमाणो, पुत्थयलिहणं पभावणा तित्थे।
सड्ढाण किच्चमेयं, निच्च सुगुरूवएसेणं ॥५॥

अथ पोरिसी मुहपत्ति विधि

पोसहवालोंने छ घडी दिन गये वाद (सुवह के नौ वजे लगभग) स्थापनाजी के सामने खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् वहु पडिपुन्ना पोरिसी? इच्छं'

कहके फिर खमासमण देकर इरियावही, तस्स उत्तरी, अन्नत्थ कह एक लोगस्स (चंदेसु निम्मलयरा तक) या चार नवकार का काउस्सग्ग कर पारके प्रगट लोगस्स कहना. फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पडिलेहण करुं ? इच्छं' कहके ५० बोलसे मुहपत्ति पडिलेहण करना.

राइ मुहपत्ति की विधि

गुरु महाराज हो, व उनकी साथ प्रतिक्रमण प्रातः काल में नहीं किया हो तो यह विधि करनी.

१ खमासमण देकर इरियावही से लोगस्स तक कहना. पिछे

२ खमासमण देके 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् राइ मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं' कहके मुहपत्ति पडिलेहण करना

३ पिछे खडे होके दो वांदणा देना फिर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् राइअं आलोउं ? इच्छं' कहके 'इच्छ आलोएमि जो मे राइओ अइआरो' सूत्र कहना.

४ फिर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् गमणागमणे आलोउं ? इच्छं' कहके गमणागमणे का पाठ कहना, पिछे 'सव्वस्सवि राइअ,' पाठ कहके (पन्यासजी हो तो दो वादणा देना, न हो तो) खमासमण देकर 'इच्छकार सुहराइ, अब्भुट्ठिओ सूत्र कहके फिर दो वांदणा देकर पच्चक्खाण करना.

गमणागमणे का सूत्र.

इरिया समिति, भाषा समिति, एषणा समिति, अदान भंडमत्त निक्षेपणा समिति, पारिष्ठापनिका समिति, मनगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति यह पाँच समिति, तीन गुप्ति आठों प्रवचन माता अच्छी तरह पाली नहीं, पौषध सामायिक चारित्र में जो कुछ विराधना हुई हो, वह सब मन वचन काया करके मिच्छामि दुक्कडं ॥

अथ पौषधमें शामकी पडिलेहण विधि

१ प्रथम खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् वहुपडिपुन्ना पोरिसि ? इच्छ.' फिर 'खमासमण' दे के 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरियावहिय पडिक्कमामि ? इच्छ. इच्छामिपडिक्कमिउं' कहके इरियावही से लोगस्स तक कहना. पिछे खमासमण दे के 'गमणागमणे आलोउं' का पाठ कहना.

२ फिर खमासमण दे के 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पडिलेहण करु ? इच्छं' कह के फिर 'खमासमण' देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पोसहशाला प्रमार्जु ? इच्छं' कह के वैठ के मुहपत्ति पडिलेहण करना । पीछे चरवला, वेटका, कंदोरा, धोती (उपवास किया हो तो मुहपत्ति, चरवला, कटासना ये तीन चीज और खाया हो तो पाचों) पडिलेहण करना.

३ पिछे खमासमण देकर (खाया हो तो) इरियावही कर के और न खाया हो तो वैसे ही खमासमण देकर 'इच्छकारी भगवन् पसाय कर के पडिलेहणा पडिलेहावोजी ? इच्छं' कह के (व्रतधारी का, या बडे आदमी का) एक उनी कपडा पडिलेहण करना

४ पिछे खमासमण देकर 'इच्छाकारेण सदिसह भगवन् उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं' कह के मुहपत्ति पडिलेहना। फिर खमासमण दे के 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करुं ? इच्छं' कह के एक नवकार मंत्र गीन के 'मन्नहजिणाणं' की सज्झाय कहना

५ फिर खाया हो तो वादणा देकर, न खाया हो तो वैसे ही खमासमण देकर 'इच्छकारी भगवन् पसाय कर के पच्चवखाण की आज्ञा देनाजी' फिर पच्चवखाण करना

६ फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् उपधि संदिसाहुं ? इच्छ' फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् उपधि पडिलेहुं ? इच्छं कह के बाकी के सब पडिलेहन करना

७ पिछे काजा लेकर निर्जीव स्थान पर डाल कर खमासमण देना पिछे इरियावही से लोगस्स तक कह के देववंदन करना. (अत मे सज्झाय नहीं ः

रात्रि पौषधवालों को करने के मांडले.

यह छ मांडले सथारे के पास करने के है ।

१ आघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ।

२ अघाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे ।

३ आघाडे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे ।

४ आघाडे मज्झे पासवणे अणहियासे ।

५ आघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ।

६ आघाडे दूरे पासवणे अणहियासे ।

(दाहिने हाथ मे चरवला रख, बांये हाथ तरफ फलिया रख, चरवला हिलाते रहना.)

यह छ माडले उपाश्रय के द्वार के अदर करने के हैं ।

७ आघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ।

८ आघाडे आसन्ने पासवणे अहियासे ।

९ आघाडे मज्झे उच्चारे पासवणे अहियासे ।

१० आघाडे मज्झे पासवणे अहियासे ।

११ आघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ।

१२ आघाडे दूरे पासवणे अहियासे ।

(दाहिने हाथ तरफ फलिया रहे ऐसे चरवला हिलाना)

यह छ माडले उपाश्रय के द्वार के बाहर करने के है

१३ अणाघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ।

१४ अणाघाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे ।

१५ अणाघाडे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे ।

१६ अणाघाडे मज्झे पासवणे अणहियासे ।

१७ अणाघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ।

१८ अणाघाडे दूरे पासवणे अणहियासे ।

(दाहिने हाथ के पिछे फलिया रहे वैसे चरवला हिलाना) यह छ मांडले उपाश्रय से सौ हाथ के अदाज दूर करने के हैं (बाये हाथ के पिछे फलिया रहे वैसे चरवला हिलाना)

१९ अणाघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ।

२० अणाघाडे आसन्ने पासवणे अहियासे ।

२१ अणाघाडे मज्झे उच्चारे पासवणे अहियासे ।

२२ अणाघाडे मज्झे पासवणे अहियासे ।

२३ अणाघाडे दूर उच्चारे पासवणे अहियासे ।

२४ अणाघाडे दूरे पासवणे अहियासे ।

पौषध पारने का सूत्र

सागरचंदो कामो, चंदवडिंसो सुदसणो धन्नो ।
जेसिं पोसह पडिमा अखंडिआ जीविअंते वि ॥ ॥१॥
धन्ना सलाहणिज्जा, सुलसा आणंद कामदेवा य ।
जास पसंसइ भयवं, दढव्वयत्तं महावीरो ॥२॥

पौषध विधि से लीया, विधि से पारा, विधि में कुछ अविधि आशातना हुइ वह सब मन वचन कायाएकरी मिच्छामि दुक्कडं

रात्रि पौषधवालों का संथारा पोरिसी की विधि.

(रात को नौ बजे करना.)

१ खमासमण दे कर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बहु पडिपुन्ना पोरिसी' फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउ, कह के इरियावही, तस्स उत्तरी, अन्नत्थ कह एक लोगस्स (चंदेसु निम्मलयरा तक) या चार नवकार का काउस्सग्ग कर के लोगस्स कहना। फिर खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बहुपडिपुन्ना पोरिसी राइअ संथारए ठामि ? इच्छं,' कह के 'चउकसाय' का चैत्यवन्दन, नमुत्थुण, जावंति चेइआइं, खमासमण देकर जावंत केवि साहू, नमोऽर्हत्, उवसग्गहरं और जय वीयराय कहना, फिर एक खमासमण देकर,

२ 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्, संथारा पोरिसि विधि पढने के लिये मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं,' कह के मुहपत्ति पडिलेहन कर के संथारा पोरिसीका पाठ नीचे मुताबिक कहना.

संथारा पोरिसी का पाठ.

निसीहि निसीहि निसीहि, नमो खमासमणाणं गोयमाईण महामुणीणं ॥

(फिर नवकार, करेमि भंते, कह के फिर दूसरी वक्त ऊपर मुताबिक 'निसीहि' का पाठ कहकर नवकार, करेमि भंते

सूत्र कह के फिर तीसरी ववत 'निसीहि' का पाठ उपर मुताबिक कह कर नवकार मंत्र, करेमि भंते कहना, इस तरह तीन वक्त कहना पीछे दूसरी गाथाएं नीचे मुताबिक कहना)

अणुजाणह जिट्ठिज्जा ! अणुजाणह, परमगुरू !
गुरुगुण रयणेहिं मडियसरीरा ! वहुपडिपुन्ना
पोरिसी, राइय संथारए ठामि ॥ १ ॥
अणुजाणह संथारं, वाहुवहाणेणं वामपासेण ।
कुक्कुडि पायपसारण, अतरंत पमज्जए भूमिं ॥ २ ॥
सकोइअ संडासा, उव्वट्टते अ कायपडिलेहा ।
दव्वाइ उवओगं, ऊसासनिरूंभणाऽऽलोए ॥ ३ ॥
जइ मे हुज्ज पमाओ, इमस्स देहस्सिमाइ रयणीय ।
आहार मुवहि देह, सव्व तिविहेण वोसिरिअं ॥ ४ ॥
चत्तारि मगलं, अरिहंता मंगलं सिद्धा मगलं ।
साहू मंगल, केवलिपन्नत्तो धम्मो मंगलं ॥ ५ ॥
चत्तारि लोगुत्तमा अरिहता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा ।
साहू लोगुत्तमा, केवलिपन्नत्तो, धम्मो लोगुत्तमो ॥ ६ ॥
चत्तारि सरण पवज्जामि—अरिहंते सरणं पवज्जामि ।
सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि,
केवलिपन्नत्तं धम्म सरणं पवज्जामि ॥ ७ ॥
पाणाइवायमलियं चोरिक्क मेहुणं दविणमुच्छं ।
कोहं माणं मायं लोभ पिज्ज तहा दोसं ॥ ८ ॥

कलहं अब्भक्खाणं, पेसुन्नं रइ-अरइ समाउत्तं ।
परपरिवायं माया, -मोसं मिच्छत्तसल्लं च ॥ ९ ॥
वोसिरिसु इमाइ, मुक्खमग्गसंसग्गविग्घभूयाइं ।
दुग्गइ-निबंधणाइं, अट्ठारस पावठाणाइं ॥ १० ॥
एगोऽहं नत्थि मे कोई, नाहमन्नस्स कस्सई ।
एवं अदीणमणसो, अप्पाणमणुसासइ ॥ ११ ॥
एगो मे सासओ अप्पा, नाणदंसणसंजुओ ।
सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्खणा ॥ १२ ॥
संजोगमूला जीवेण, पत्ता दुक्खपरंपरा ।
तम्हा संजोगसम्बंधं, सव्वं तिविहेण वोसिरअं ॥ १३ ॥
*अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ।
जिणपन्नत्तं तत्तं, इअ सम्मत्तं मए गहिअं ॥ १४ ॥
खमिअ खमाविअ मइ खमह, सव्वह जीवनिकाय ।
सिद्धह साख आलोयणह, मुज्झह वइर न भाव ॥ १५ ॥
सव्वे जीवा कम्मवस, चउदह राज भमंत ।
ते मे सव्व खमाविआ, मुज्झ वि तेह खमंत ॥ १६ ॥
जं जं मणेण बद्धं, जं जं वाएण भासिअं पावं ।
जं जं कायेण कयं, मिच्छामि दुक्कडं तस्स ॥ १७ ॥

---

* (तीन वक्त यह गाथा कहना और सात नवकार गिनना पीछे नीचे की गाथाए कहना)

पच्चक्खाणो.

१ ॥ नमुक्कार सहिअं का पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे नमुक्कार सहिअं, मुट्ठिसहिअ पच्चक्खाइ चउव्विहं पि आहारं, असण पाण खाइमं साइम, अन्नत्थाभोगेण, सहसागारेण महत्तरागारेण, सव्वसमाहिवत्तिआगारेण– वोसिरइ.[1]

२ ॥ पोरिसी साड्ढपोरिसीका पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे, नमुक्कार सहिअं, पोरिसिं, साढ पोरिसिं, मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे चउव्विहं पि आहारं, असणं पाण खाइमं साइमं, अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेण, पच्छन्नकालेण, दिसामोहेण, साहुवयणेण, महत्तरागारेण सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरइ.

३ ॥ पुरिमड्ढ अवड्ढ का पच्चक्खाण ॥

सूरे उग्गए पुरिमड्ढ, अवड्ढ मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ चउव्विहपि आहार असण, पाण, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेण, पच्छन्नकालेण, दिसामोहेणं, साहुवयणेण, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिआगारेण, वोसिरइ.

---

१ पच्चक्खाण मे जहाँ पच्चक्खाइ शब्द आवे वहाँ पर पच्चक्खाण लेनेवाला मनमे पच्चक्खामि कहे

२ जहाँ पर वोसिरइ आवे वहाँ वोसिरामि क..

४ ॥ एकासणा बिआसणा का पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे नमुक्कार सहिअं, पोरिसिं, साढ पोरिसिं, मुट्ठिसहिअ पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं, असण, पाणं, खाइम, साइमं, अन्नत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्न कालेण, दिसामोहेण, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं, विगइओ पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेण, गिहत्थसंसट्ठेण उक्खित्तविवेगेण पडुच्चमक्खिएणं, पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, बिआसणं पच्चक्खाइ (एकासणा करना हो तो एकासणं पच्चक्खाइ) तिविहंपि आहार असणं पाण खाइम साइमं अन्नत्थाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारिआगारेण, आउंटणपसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा वोसिरइ.

५ ॥ आयंबिल का पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे, नमुकारसहिअं, पोरिसिं साढपोरिसिं मुट्ठिसहिअ, पच्चक्खाइ. उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहार, असणं पाण खाइमं,साइम,अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं आयंबिलं पच्चक्खाइ अन्नथणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेण, गिहत्थससट्ठेण, उक्खितविवेगेण, पारिट्ठावणिया-

गारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं एगासणं पच्चक्खाइ तिविहंपि आहारं, असण, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, आउंटणपसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेण, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेण, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं,पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा, वोसिरइ

६ ॥ तिविहार उपवास का पच्चक्खाण ॥

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ तिविहंपि आहारं असणं, खाइमं, साइमं अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ॥ पाणहार पोरिसिं, साढ पोरिसि, पुरिमड्ढं मुट्ठिसहिअ पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेण पच्छन्नकालेण दिसामोहेण, साहुवयणेण महत्तरागारेण सव्वसमाहिवत्तियागारेण । पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा, वोसिरइ ॥

७ ॥ चौविहार उपवास का पच्चक्खाण ॥

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ, चउव्विहंपि आहारं असणं, पाण, खाइम, साइमं, अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेणं पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ.

८ ॥ पाणहार का पच्चक्खाण ॥

पाणहार पोरिसिं साढपोरिसिं परिमुड्ढ मुट्ठिसहियं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिया - गारेण। पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वोसिरइ.

शामका पच्चक्खाणे

---

१ ॥ पाणहार का पच्चक्खाण ॥

पाणहार दिवस चरिम पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहि वत्तियागारेणं वोसिरइ,

२ ॥ चोविहार का पच्चक्खाण ॥

दिवस चरिमं पच्चक्खाइ, चउव्विहंपि आहार, असणं, पाणं, खाइम साइम, अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेण, महत्त-रागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ

३ ॥ तिविहार का पच्चक्खाण ॥

दिवस चरिमं पच्चक्खाइ तिविहंपि आहारं असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरा-गारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरइ.

४ ॥ दुविहार का पच्चक्खाण ॥

दिवस चरिम पच्चक्खाइ दुविहपि आहारं, असणं, खाइमं अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेण सव्वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरइ

५ ॥ देसावगासिक का पच्चक्खाण ॥

देसावगासियं उवभोगं परिभोगं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेण, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ.

६ ॥ अभिग्रह का पच्चक्खाण ॥

अभिग्गहं पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरइ.

चैत्यवंदन—संग्रह

---

१ श्री आदिनाथजिन चैत्यवंदन

प्रथम नमुं श्री आदिनाथ, शत्रुञ्जयगिरि सोहे;
नाभिराया मरुदेवी नंद, त्रिभुवन मन मोहे ॥१॥
लाख चोराशी वरस आयु, सुवर्ण समकाय;
राणी सुनंदा सुमगळा, तस कंत सोहाय ॥२॥
लंछन वृषभ विराजतो ए, धनुप पाचसे देहः
विनिता नगरीनो धणी, रूप कहे गुणगेह ॥३॥

२. श्री महवोरस्वामीनुं चैत्यवंदन,

सिद्धारथ सुत वदीए, त्रिशलानो जायो;
क्षत्रियकुंडमा अवतर्यो, सुरनरपति गायो ॥१॥
मृगपति लंछन पाउले, सात हाथनी काय;
बहोंतेर वर्षनुं आउखुं, श्री वीर जिनेश्वरराय ॥२॥
क्षमाविजय जिन राजना ए, उत्तम गुण अवदात;
सात बोलथी वर्णव्यो, पद्मविजय विख्यात ॥३॥

३. श्री सीमंधर स्वामीनु चैत्यवंदन,

श्री सीमंधर जगधणी, आ भरते आवो;
करुणावंत करुणा करी, अमने वंदावो ॥१॥
सकल भक्त तुमे धणी, जो होवे अम नाथ;
भवोभव हूं छुं ताहरो, नहि मेलुं हवे साथ ॥२॥
सयल संग छंडी करी, चारित्र लेईशु;
पाय तुमारा सेवीने, शिव रमणी वरीशुं ॥३॥
ए अळजो मुजने घणो ए, पूरो सीमंधर देव;
इहा थकी हु विनवु, अवधारो मुज सेव ॥४॥
कर जोडी ऊभो रहु सामो रही ईशान ।
भाव जिनेश्वर भाणने देजो समकित दान ॥५॥

४. श्री सिद्धाचलजीनु चैत्यवंदन

श्री शत्रुजय सिद्धक्षेत्र, दीठे दुर्गति वारे;
भाव धरीने जे चढे, तेने भव पार उतारे ॥१॥
अनंत सिध्धनो एह ठाम, सकल तीरथनो राय,
पूर्व नवाणुं रीखवदेव, ज्या ठवीया प्रभु पाय ॥२॥

सूरजकुंड सोहामणो, कवड जक्ष अभिराम;
नाभिराया कुळ मडणो, जिनवर करु प्रणाम ॥३॥

५. श्री सिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन

विमल केवल ज्ञान कमला, कलित त्रिभुवन हितकर;
सुरराज संस्तुत चरण पंकज, नमो आदि जिनेश्वर ॥१॥
विमल गिरिवर शृंग मंडण, प्रवर गुण गण भूधरं;
सुर असुर किन्नर कोडि सेवित; नमो आदि जिनेश्वरं ॥२॥
करती नाटक किन्नरी गण, गाय जिन गुण मनहरं;
निर्जरावळी नमे अहर्निश, नमो आदि जिनेश्वर ॥३॥
पुंडरीक गणपति सिद्धि साधी, कोडी पण मुनि मनहरं,
श्री विमल गिरिवर शृग सिद्ध्या, नमो आदि जिनेश्वरं ॥४॥
निज साध्य साधक सुर मुनिवर, कोटीअनत ए गिरवरं;
मुक्ति रमणी वर्या रंगे, नमो आदि जिनेश्वर ॥५॥
पाताळ नर सुर लोकमाहि, विमळ गिरिवर तो पर;
नहि अधिक तीरथ तीर्थपति कहे, नमो आदि जिनेश्वरं ।,६॥
विमळ गिरिवर शिखर मंडण, दुःख विहडण ध्याइए;
निज शुद्ध सत्ता साधनार्थं, परम ज्योति निपाइए ॥७॥
जित मोह कोह विछोह निद्रा, परम पद स्थित जयकर;
गिरिराज सेवा करण तत्पर, पद्मविजय सुहितकर ॥८॥

६. श्री पर्युषण पर्वनुं चैत्यवंदन

नव चौमासी तप कर्या, त्रण मासी दोय,
दोय दोय अढीमासी तेम, दोढ मासी होय ॥१॥

बहोंतेर मासक्षमण कर्या, मासखमण कर्या बार;
षड्द्विमासी तप आदर्यो, बार अठम तप सार ॥ २ ॥
षड्मासी एक तप कर्यो, पचदिन उण षट्मास;
बसो ओगणत्रीश छठ्ठ भला, दिक्षा दिन एक खास ॥ ३ ॥
भद्र प्रतिमा दोय भली, महाभद्र दिन चार;
दश सर्वतोभद्रना, लागट निरधार ॥ ४ ॥
विण पाणी तप आदर्यो, पारणादिक जास;
द्रवाहारे पारणा कर्या, त्रणसो ओगणपचाश ॥ ५ ॥
छद्मस्थ एणीपरे रह्या ए, सह्या परीसह घोर;
शुक्लध्यान अनले करी, बाळ्या कर्म कठोर ॥ ६ ॥
शुक्लध्यान अंते रह्या ए, पाम्या केवलज्ञान;
पद्मविजय कहे प्रणमता, लहीए नित्य कल्याण ॥ ७ ॥

७ श्री पार्श्वनाथनुं चैत्यवंदन

ॐ नमः पार्श्वनाथाय, विश्व चिंतामणीयते;
ह्रीं धरणेंद्र वैरोटया, पद्मादेवी युताय ते ॥ १ ॥
शांति तुष्टि, महा पुष्टि, धृति कीर्ति विधायिने,
ॐ ह्रीं द्विड्व्याल वैताल, सर्वाधि व्याधि नाशिने ॥ २ ॥
जया जिताख्या विजया,—ख्यापराजितयान्वितः;
दिशांपालैर्ग्रहै र्यक्षै, र्विद्यादेवी—भिरन्वितः ॥ ३ ॥
ॐ असिया उसाय उसाय नम, स्तत्र त्रैलोक्य नाथतां:
चतुष्पष्टिः सुरेंद्रास्ते, भासंते छत्र चामरैः ॥ ४ ॥

श्री शखेश्वर मंडन पार्श्वजिन, प्रणत कल्प तरु कल्प;
चूरय दुष्ट व्रांतं, पूरय मे वांछि तं नाथ ॥ ५ ॥

८ सामान्य जिन चैत्यवंदन

तुज मूरतिने निरखवा, मुज नयणा तरसे;
तुज गुणगणने बोलवा, रसना मुज हरसे ॥ १ ॥
काया अति आनंद मुज, तुम युग पद फरसे;
तो सेवक तार्या विना, कहो किम हवे सरशे? ॥ २ ॥
एम जाणीने साहिवा ए, नेक नजर मोहि जोय;
ज्ञानविमल प्रभु (सु)नजरथी, ते शुं जे नवि होय ? ॥ ३ ॥

स्तुति संग्रह

---

१. श्री सिद्धचक्रनी स्तुति

अह ऊठी वंदुं, सिद्धचक्र सदाय,
जपीए नवपदनो, जाप सदा सुखदायः;
विधि पूर्वक ए तप, जे करे थइ उजमाळ,
ते सवि सुख पामे, जिम मयणा श्रीपाल ॥ १ ॥
मालवपति पुत्री, मयणा अति गुणवंत,
तस कर्म संयोगे, कोढी मळीयो कंत,
गुरु वयणे तेणे आराध्यु तप एह,
सुख संपदा वरीया, तरीया भवजल तेह ॥ २ ॥

आंबील ने उपवास, छट्ठ वळी अट्ठम,
दस, अट्ठाइ, पंदर, मास छ मास विशेष;
इत्यादिक तप बहु, सहुमांहि शिरदार,
जे भवियण करशे, ते तरशे संसार ॥ ३ ॥
तप सांनिध्य करशे, श्रीविमळेश्वर यक्ष;
सहु संघना संकट, चूरे थइ प्रत्यक्ष;
पुंडरीक गणधार, कनकविजय बुध शिष्य,
बुद्ध दर्शन विजय कहे, पहोंचे सकळ जगीश ॥ ४ ॥

२. आदिनाथ स्वामीकी स्तुति

आदि जिनवर राया, जास सोवन्न काया,
मरुदेवी माया, धोरी लंछन पाया;
जगत् स्थिति निपाया, शुद्ध चारित्र पाया,
केवलसिरी राया, मोक्ष नगरे सिधाया ॥ १ ॥
सवि जिन सुखकारी, मोह मिथ्या निवारी,
दुर्गति दुःख भारी, शोक संताप वारी;
श्रेणी क्षपक सुधारी, केवलानंत धारी,
नमिये नरनारी, जेह विश्वोपकारी ॥ २ ॥
समवसरण बेठा, लागे जे जिनजी मीठा,
करे गणप पइट्ठा, इंद्र चंद्रादि दीठा;
द्वादशांगी वरिट्ठा, गुंथता टाळे रिट्ठा,
भविजन होय हिट्ठा, देखी पुन्ये गरिट्ठा ॥ ३ ॥

श्री शखेश्वर मंडन पार्श्वजिन, प्रणत कल्प तरु कल्प;
चूरय दुष्ट व्रातं, पूरय मे वांछि तं नाथ ॥ ५ ॥

८ सामान्य जिन चैत्यवंदन

तुज मूरतिने निरखवा, मुज नयणा तरसे;
तुज गुणगणने बोलवा, रसना मुज हरसे ॥ १ ॥
काया अति आनंद मुज, तुम युग पद फरसे;
तो सेवक तार्यां विना, कहो किम हवे सरशे? ॥ २ ॥
एम जाणीने साहिवा ए, नेक नजर मोहि जोय;
ज्ञानविमल प्रभु (सु)नजरथी, ते शुं जे नवि होय ? ॥ ३ ॥

स्तुति संग्रह

---

१. श्री सिद्धचक्रनी स्तुति

अह ऊठी वंदुं, सिद्धचक्र सदाय,
जपीए नवपदनो, जाप सदा सुखदायः;
विधि पूर्वक ए तप, जे करे थइ उजमाळ,
ते सवि सुख पामे, जिम मयणा श्रीपाल ॥ १ ॥
मालवपति पुत्री, मयणा अति गुणवंत,
तस कर्म संयोगे, कोढी मळीयो कंत,
गुरु वयणे तेणे आराध्युं तप एह,
सुख संपदा वरीया, तरीया भवजल तेह ॥ २ ॥

आंबील ने उपवास, छट्ठ वळी अट्ठम,
दस, अट्ठाइ, पंदर, मास छ मास विशेष;
इत्यादिक तप बहु, सहुमांहि शिरदार,
जे भवियण करशे, ते तरशे संसार ॥ ३ ॥
तप सांनिध्य करशे, श्रीविमळेश्वर यक्ष;
सहु संघना संकट, चूरे थइ प्रत्यक्ष;
पुंडरीक गणधार, कनकविजय बुध शिष्य,
बुद्ध दर्शन विजय कहे, पहोंचे सकळ जगीश ॥ ४ ॥

२. आदिनाथ स्वामीकी स्तुति

आदि जिनवर राया, जास सोवन्न काया,
मरुदेवी माया, धोरी लंछन पाया;
जगत् स्थिति निपाया, शुद्ध चारित्र पाया,
केवलसिरी राया, मोक्ष नगरे सिधाया ॥ १ ॥
सवि जिन सुखकारी, मोह मिथ्या निवारी,
दुर्गति दुःख भारी, शोक संताप वारी;
श्रेणी क्षपक सुधारी, केवलानंत धारी,
नमिये नरनारी, जेह विश्वोपकारी ॥ २ ॥
समवसरण बेठा, लागे जे जिनजी मीठा,
करे गणप पइट्ठा, इंद्र चंद्रादि दीठा;
द्वादशांगी वरिट्ठा, गुंथतां टाळे रिट्ठा,
भविजन होय हिट्ठा, देखी पुन्ये गरिट्ठा ॥ ३ ॥

सुर समकितवंता, जेह ऋद्धे महंता,
जेह सज्जन संता, टालिये मुज चिंता;
जिनवर सेवंता, विघ्न वारे दूरंता,
जिन उत्तम थुणंता, पद्मने सुख दिंता ॥ ४ ॥

३ श्री शान्तिनाथ जिन स्तुति

वंदो जिन शान्ति, जास सोवन्न कांति,
टाळे भव भ्रांति, मोह मिथ्यात्व शांति;
द्रव्य भाव अरि पांति, तास करता निकांति,
धरता मन खांति, शोक संताप वांति ॥ १ ॥
दोय जिनवर नीला, दोय धोळा सुशीला,
दोय रक्त रंगीला, काढता कर्म कीला;
न करे कोइ हीला, दोय श्याम सलीला,
सोळे स्वामीजी पीला, आपजो मोक्ष लीला ॥ २ ॥
जिनवरनी वाणी, मोह–वल्ली–कृपाणी,
सूत्रे देवाणी, साधुने योग्य जाणी;
अरथे गुंथाणी, देव मनुष्य प्राणी,
प्रणमो हित आणी, मोक्षनी ए निसानी ॥ ३ ॥
वागीश्वरी, देवी, हर्ष हियडे धरेवी,
जिनवर पय सेवी, सार श्रद्धा वरेवी,
जे नित्य समरेवी, दुःख तेहना हरेवी,
पद्म विजय कहेवी, भव्य संताप खेवी ॥ ४ ॥

४. श्री नेमिनाथ जिननी स्तुति

राजुल वर नारी, रूपथी रति हारी;
तेहना परिहारी, बाळथी ब्रह्मचारी,
पशुआ उगारी, हुआ चारित्र धारी,
केवल सिरी सारी, पामीआ घाती वारी ॥ १ ॥

त्रण ज्ञान संयुता, मातनी कुखे हुंता;
जनमे पुरुहुता, आवी सेवा करंता;
अनुक्रमे व्रत धरंता, पंच समिति धरंता;
महीयल विचरंता, केवलश्री वरंता ॥ २ ॥

सवि सुरवर आवे, भावना चित्त लावे,
त्रिगडु सोहावे, देवछंदो बनावे:
सिंहासन ठावे, स्वामीना गुण गावे,
तिहा जिनवर आवे, तत्त्व वाणी सुणावे ॥ ३ ॥

शासन सुरी सारी, अंबिका नाम धारी,
जे समकिती नरनारी, पाप संताप वारी;
प्रभु सेवाकारी, जाप जपीये सवारी,
संघ दुरित निवारी पद्मने जेह प्यारी ॥४॥

५. श्री पार्श्वनाथ भगवाननी स्तुति

भीलडीपुर मंडन, सोहीए पार्श्व जिणंद,
तेने तमे पूजो, नरनारीना वृंद;

धरणीधर राय पद्मावती, प्रभु पार्श्वतणा गुण गावती;
सहु संघनां संकट चूरती, नयविमळनां वांछित पूरती ॥४॥

७ श्री पर्युषण पर्वनी स्तुति

पुण्यनुं पोषण पापनुं शोषण, पर्व पर्युषण पामीजी,
कल्प घरे पधरावो स्वामी, नारी कहे शिर नामीजी;
कुंवर गयवर खंध चडावी, ढोल निशान वजडावोजी,
सद्गुरु संगे चडते रंगे, वीर चरित्र सुणावोजी ॥ १ ॥
प्रथम वखाणे धर्म सारथी पद, बीजे सुपनां चारजी,
त्रीजे सुपन पाठक वळी चोथे, वीर जन्म अधिकारजी;
पांचमे दीक्षा छट्ठे शिवपद, सातमे जिन त्रेवीसजी,
आठमे थीरावळी संभळावी, पीउडा पुरो जगीशज ॥ २ ॥
छट्ठ अट्ठम अट्ठाइ कीजे, जिनवर चैत्य नमीजेजी,
वरसी पडिक्कमणुं मुनिवंदन, संघ सयल खामीजेजी
आठ दिवस लगे अमर पळावी, दान सुपात्रे दीजेजी,
भद्रबाहु गुरु वयण सुणीने, ज्ञान सुधारस पीजेजी ॥ ३ ॥
तीरथमां विमळाचल गिरिमां, मेरु महीधर जेमजी
मुनिवर मांही जिनवर मोटा, पर्व पर्युषण तेमजी;
अवसर पामी स्वामी वच्छल, बहु पकवान वडाइजी,
खीमाविजयजिन देवी सिद्धाइ, दिनदिन अधिक वधाइजी ॥४॥

८ श्री पर्युषण पर्वनी स्तुति

मणि रचित सिंहासन, बेठा जगदाधार,
पर्युषण केरो, महिमा अगम अपार,

निज मुखथी दाखी, साखी सुरनर वृंद,
ए पर्व पर्वमा, जेम तारामां चंद ॥ १ ॥
नागकेतुनी परे, कल्प साधना कीजे,
व्रत नियम आखडी, गुरु मुख अधिकी लीजे,
दोय भेदे पूजा, दान पच प्रकार,
कर पडिकमणां धर. शीयल अखंडित धार ॥ २ ॥
जे त्रिकरण शुद्धे, आराधे नव वार,
भव सात आठ नव, शेप तास संसार,
सहु सूत्र शिरोमणी, कल्पसूत्र सुखकार,
ते श्रवण सुणीने, सफळ करो अवतार ॥ ४ ॥
सहु चैत्य जुहारी, खमत खामणा कीजे,
करी साहमी वत्सल, कुगति द्वार पट दीजे,
अट्ठाइ महोत्सव, जिदानंद चित्त लायी,
एम करता संघने, शासन देवी सहायी ॥ ४ ॥

स्तवन संग्रह

१ श्री ऋषभदेव स्वामीनुं स्तवन

जगजीवन जगवाल्हो, मरुदेवीनो नंद लालरे;
मुख दीठे सुख उपजे, दर्शन अतिहि आनंद लालरे. जग० १
आखडी अंबुज पाखडी, अष्टमी शशि सम भाल लालरे;
वदन ते शारद चदलो, वाणी अतिही रसाल लालरे. जग० २

लक्षण अंगे विराजतां, अडहीय सहस उदार लालरे
रेखा कर चरणादिके, अभ्यंतर नहि पार लालरे. जग० ३
इंद्र चंद्र रवि गिरि तणा, गुण लही घडीयुं अंग लालरे,
भाग्य किहा थकी आवीयुं, अचरिज एव उत्तग लालरे. जग०४
गुण सघळा अंगे कर्या, दूर कर्या सवि दोष लालरे,
वाचक यशविजये थुण्यो, देजो सुखनो पोष लालरे. जग० ५

२ श्री नेमिनाथ जिन स्तवन

आनंदका डंका दुनियामे, बजवा दिया नेमि वालेने,
ब्रह्मचर्य पराक्रम यादवमे, बतला दिया नेमि वालेने;
प्रभु आयुधशाळामे जा करके, पचायन शंखको पूर दिया,
सुनतेही गिरधर आन खडे, बजवा दिया नेमि वालेने आ०१
श्री नेमिके बलको देखनको, श्रीकृष्णने लंबा हाथ किया,
गोपीयनके सन्मुख गिरधरको, शर्मा दिया नेमि वालेने. आ.२
फिर जान चढी आडंबरसे, तोरण से रथ को फेर दिया;
पशुअनके कारण राजुलको, छटका दिया नेमि वालेने आ.३
दीक्षाका अवसर जान प्रभु, निज मातपितादि को समझाया;
एक वर्ष लगे दान कांचनका, दिलवा दिया नेमि वालेने.आ.४
एक सहस्र पुरुष संग संजम ले, सर्वज्ञ पदको प्राप्त किया;
कर्मोका लश्कर जीत लीया, शिवपदका नेमि वालेने आ०५
पृथ्वीतलको पावन करके, प्रभु शाश्वत सुखको प्राप्त किया;
परतिरिया परधन नहीं लेना, फर्मा दिया नेमि वालेने. आ०६

३ श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन

अंतरजामी सुण अलवेसर, महिमा त्रिजग तुमारो,
साभळीने आव्यो हुं तीरे, जनम मरण दुःख वारो;
सेवक अरज करे छे राज, अमने शिव सुख आपो,
आपो आपोने जिनराज, अमने मोक्ष सुख आपो. १

सहुकोना मनवांछित पूरो, चिंता सहुनी चूरो,
एहवुं बिरुद छे राज तमारुं, केम राखो छो दूरे. सेवक० २

सेवकने वलवलतो देखी, मनमां महेर न धरशो,
करुणा सागर केम कहेवाशो, जो उपकार न करशो. सेवक ३
लटपटनुं हवे काम नहि छे, प्रत्यक्ष दरिशन दीजे,
धुंआडे धीजु नहि साहिब, पेट पड्या पतीजे सेवक० ४
श्री शंखेश्वर मंडन साहिब विनतडी अवधारो,
कहे जिन हर्ष मया करी मुजने. भवसायरथी तारो सेवक ५

४ श्री महावीर स्वामीनुं स्तवन

गिरुआरे गुण तुम तणा, श्री वर्द्धमान जिनरायारे,
सुणता श्रवणे अमी झरे, महारी निर्मळ थाए कायारे. गिरु० १
तुम गुण गण गंगाजळे, हुं झीलीने निर्मळ थाउरे,
अवर न धंधो आदरु, निशदिन तोरा गुण गाउरे गिरु० २
झील्या जे गंगाजळे, ते छील्लर जळ नवि पेसे रे;
जे मालती फूले मोहीया, ते बावल जइ नवि बेसेरे गिरु० ३

एम अमे तुम गुण गोठशुं, रंगे राच्याने वळी माच्यारे,
ते केम पर सुर आदरे ! जे परनारी वश राच्यारे. गिरु० ४
तुं गति तुं मति आशरो, तुं आलंबन मुज प्यारोरे,
वाचक यश कहे माहरे, तुं जीव जीवन आधारोरे गिरु० ५

५ श्री सीमंधर स्वामीनुं स्तवन

सुणो चंदाजी, सीमंधर परमातम पासे जाजो,
मुज विनतडी प्रेम धरीने, एणी पेरे तुमे संभळावजो,
जे त्रण भुवनना नायक छे, जस चोसठ इंद्र पायक छे,
नाण दरिसण जेहने खायक छे सुणो० १
जेनी कंचनवरणी काया छे, जस धोरी लंछन पाया छे,
पुंडरीगिणी नगरीनो राया छे. सुण० २
बार परपदामांही विराजे छे, जस चोत्रीस अतिशय छाजे छे,
गुण पात्रीस वाणीए गाजे छे. सुणो० ३
भविजनने जे पडिबोहे छे, तुम अधिक शीतलगुण सोहे छे,
रूप देखी भविजन मोहे छे. सुणो० ४
तुम सेवा करवा रसियो छुं, पण भरतमां दूरे वसीयो छुं;
महा मोहराय कर फसियो छुं सुणो० ५
पण साहिब चित्तमा धरीयो छे, तुम आणा खडग कर ग्रहीयो छे
तो काइक मुजथी डरीयो छे. सुणो० ६
जिन उत्तम पुंठ हवे पूरो, कहे पद्मविजय थाउं शूरो,
तो वाधे मुज मन अति नूरो सुणो० ७

६ श्री सीमंधर स्वामीनुं स्तवन

पुक्खलवई विजये जयोरे, नयरी पुंडरीगिणी सार,
श्री सीमंधर साहेबा रे, राय श्रेयांस कुमार,
जिणंदराय धरजो धर्म स्नेह. १
मोटा नाना अंतरो रे, गिरुआ नवि दाखंत,
शशी दरिसण सायर वधे रे, कैरव वन विकसंत. जिणंद० २
ठाम कुठाम नवि लेखवे रे, जग वरसंत जळधार,
कर दोय कुसुमे वासिये रे, छाया सवि आधार. जिणंद० ३
राय ने रंक सरिखा गणे रे, उद्योते शशी शूर,
गंगाजळ के बिहुं तणा रे, ताप करे सवि दुर जिणंद० ४
सरिखा सहुने तारवा रे, तेम तुमे छो महाराज,
मुजशुं अंतर केम करो रे ? बाह्य ग्रह्यानी लाज जिणंद० ५
मुख देखी टीलुं करे रे, ते नवि होय प्रमाण,
मुजरो माने सवि तणो रे, साहिब तेह सुजाण. जिणंद० ६
वृषभ लंछन माता सत्यकी रे, नंदन रुक्मिणीकंत,
वाचकयश एम विनवे रे, भय भंजन भगवंत. जिणंद० ७

७ श्री सिद्धाचळजीनुं स्तवन

सिद्धाचळगिरि भेटया रे, धन्य भाग्य हमारा,
ए गिरिवरनो महिमा मोटो, कहेता न आवे पारा,
रायण ऋषभ समोसर्या स्वामी, पूरव नवाणुं वारा रे धन्य० १
मूळ नायक श्री आदि जिनेश्वर, चउमुख प्रतिमा चार,
अष्ट द्रव्यशुं पूजो भावे, समकित मूळ आधारा रे धन्य० २

भाव भक्तिशुं प्रभु गुण गावे, अपना जन्म सुधारा;
यात्रा करी भविजन शुभ भावे, नरक तिर्यंच वारारे धन्य ३
दूर देशांतरथी हुं आव्यो, श्रवणे सुणी गुण तोरा,
पतित उद्धारण बिरुद तमारुं, ए तीरथ जग सारारे. धन्य० ४
संवत अढार त्यासी मास आषाढे, वदि आठम भोमवारा;
प्रभुजीकेचरणे प्रतापके संघमें, खिमारतनप्रभुप्यारारे धन्य० ५

८ श्री सिद्धचक्रजीनु स्तवन

ओ भवि प्राणीरे सेवो, सिद्धचक्र ध्यान समो नहि मेवो;
जे सिद्धचक्रने आराधे, तेनी किरती जगमा वाधे. ओ० १
पहेले पदे रे अरिहंत, बीजे सिद्ध बुद्ध ध्यान महंत,
त्रीजे पदे रेसूरीश्वर, चोथे उवज्झाय ने पांचमे मुनीश ओ. २
छट्ठे दरिशन कीजे, सातमे ज्ञानथी शिवसुख लीजे;
आठमे चारित्र पाळो, नवमे तपथी मुक्ते जावो ओ० ३
ओळी आंबेलनी कीजे, नवकारवाळी वीश गणीजे;
त्रणे टंकना रे देव, पडेवण पडिक्कमणां आवेल ओ० ४
गुरु मुख किरियारे कीजे, देवगुरु भक्ति चित्तमा धरीजे,
एम कहे रामनो शिष्य, ओळी उजवजो जगीश ओ० ४

९ श्रीदिवाळी पर्वनुं स्तवन

मारे दिवाळीरे थइ आज, प्रभु मुख जोवाने,
सर्यां सर्यां रे सेवकना काज, भवदुःख खोवाने;

महावीर स्वामी मुगते पहोंच्या, गौतम केवळज्ञान रे;
धन्य अमावास्या धन्य दिवाळी,महावीर प्रभुनिरवाण, जि० १
चारित्र पाळी निरमळुंरे, टाळ्या विषय कषाय रे;
एवा मुनिने वंदीए जे. ऊतारे भवपार जिन० २
बाकुळा वहोर्या वीरजिने, तारी चंदनबाळरे:
केवळ लइ प्रभु मुगते पहोच्या, पाम्या भवनो पार, जिन० ३
एवा मुनिने वंदीए जे, पंच ज्ञानने धरता रे,
समवसरण देइ देशना प्रभु, तार्या नर ने नार, जिन० ४
चोवीशमा जिनेश्वरु ने मुक्ति तणा दातार रे:
करजोडी कवि एम भणे प्रभु, दुनिआ फेरो टाळ. जिन० ५

१० श्रीपर्युषण पर्वनुं स्तवन

सुणजो साजन संत पजुसण आव्या रे,
तमे पुन्य करो पुन्यवंत भविक मन भाव्यां रे;
वीर जिनेसर अति अलवेसर,वाला मारा परमेश्वर एम बोले रे.
पर्वमाहे पजुसण म्होटा, अन्य न आवे तस तोलेरे पजु० १
चौपदमा जेम केसरी मोटो,वाला० खगमा गरुड ते कहीए रे,
नदीमाहे जेम गंगा मोटी, नगमा मेरु लहीए रे पजु० २
भूपतिमां भरतेसर भाख्यो, वाला० देवमाहे सुर इन्द्र रे:
तीरथमा शेत्रुंजो दाख्यो, ग्रहगणमा जेम चंद्ररे. पजु० ३
दशरा दिवाळी ने वळी होळी, वाला० अखात्रीज दीवासोरे;
बळेव प्रमुख बहुला छेबीजा,पणनहिमुक्तिनोवासोरे.पजु० ४

ते माटे तमे अमर पळावो, वाला० अट्ठाइ महोत्सव कीजेरे:
अट्ठम तप अधिकाए करीने, नरभव लाहो लीजेरे पजु० ५
ढोल ददामा भेरी नफेरी, वाला० कल्पसूत्रने जगावोरे०:
झांझरना झमकार करीने, गोरीनी ठोळी मळी आवोरे. पजु० ६
सोनारूपाने फूलडे वधावो, वाला० कल्पसूत्रने पूजो रे :
नव वखाण विधिए साभलता, पाप मेवासी भ्रजेरे पजु० ७
एम अट्ठाइ महोत्सव करता, वाला. बहु जीव जग उद्धरियारे,
विबुद्ध विमळवर सेवक एहथी, नवनिधि ऋद्धिसिद्धि वरीयारे.

सज्झाय संग्रह

---

१. बाहुबलीनी सज्झाय.

राज तणारे अति लोभीया, भरत बाहुबली झूझे रे,
मुठी उपाडीरे मारवा, वाहुवली प्रतिबूझे रे:
वीरा मोरा गज थकी उतरो, गज चढे केवळ न होय रे. १
ऋषभ जिनेश्वरे मोकली, बाहुबलीनी पासे रे,
वीरा मोरा गज थकी उतरो, ब्राह्मी सुंदरी इम भाषे रे.वीरा. २
लोच करी चारित्र लीओ, वळी आयो अभिमानो रे:
लधु बंधव वांदुं नहीं, काउस्सग्ग रह्या शुभ ध्यानो रे. वीरा० ३
वरस दिवस काउस्सग्ग रह्या, वेलडीये वींटाणा रे:
पक्षीये माळा घालिया, ताप शीते सूकाणा रे वीरा० ४

साधवी वचन सुणी करी, चमक्यो चित्त मोझारो रे:
हय गय रथ सहु परिहर्या,वळी आव्यो अहंकारो रे वीरा० ५
वैरागे चित्त वाळीयो रे, मूकी निज अभिमान रे;
पग उपाड्यो रे वादवा, उपन्युं केवल ज्ञान रे वीरा० ७
पहोता केवळी परखदा, बाहुबळी ऋषिराया रे;
अजरामर पदवी लही, समयसुन्दर वन्दे पाया रे. वीरा० ७

२ प्रसन्नचद्रमुनिनी सज्झाय

प्रणमुं तुमारा पाय, प्रसन्नचंद्र प्रणमुं तुमारा पाय,
राज छोडी रळीआमणुं रे, जाणी अथिर संसार,
वैरागे मन वाळीयुं रे, लीयो संजम भार. प्रसन्न० १
शमशाने काउस्सग्ग रही रे, पग उपर पग चढाय,
बाहु बे उंचा करी रे, सूरज सामी दृष्टि लगाय. प्रसन्न०
दुर्मुख दूत वचन सुणी रे, कोप चढ्यो तत्काल:
मनशुं संग्राम माडीयो रे, जीव पड्यो जंजाळ. प्रसन्न०२
श्रेणिक प्रश्न पूछे ते समे रे, स्वामी एहनी कुण गति थाय:
भगवंत कहे हमणा मरे तो, सातमी नरके जाय. प्रसन्न० ४
क्षण एक आतरे पूछीयुं रे, सर्वार्थ सिद्ध विमान,
वाजी देवनी दुन्दुभी रे, मुनि पाम्या केवळ्ज्ञान. प्रसन्न० ५
मननी जीते जीतवुं रे, मननी हारे हार,
मन लइ जावे मोक्षमा रे, मन हीय नरक मोझार. प्रसन्न० ६

प्रसन्नचंद्र ऋषि मुगते गया रे, श्री महावीरना शिष्य;
रूपविजय कहे धन्य धन्य, जोया शास्त्र प्रत्यक्ष. प्रसन्न० ७

३ विनयनी सज्झाय

पवयणदेवी चित्त धरीजी, विनय वखाणीश सार,
जंबूने पूछये कह्योजी, श्री सोहम गणधार,
भविकजन विनय वहो सुखकार. १
पहिले अध्ययने कह्योजी, उत्ताराध्ययन मझार,
सघळा गुणमा मूलगोजी, जे जिनशासन सार. भवि० २
नाण विनयथी पामीएजी, नाणे दरिसण शुद्ध,
चारित्र दरिसणथी हुएजी, चारित्रथी पूर्ण सिद्ध. भवि० ३
गुरूनी आज्ञा सदा धरेजी, जाणे गुरूनो भाव,
विनयवंत गुणरागीओजी, ते मुनि सरल स्वभाव, भवि० ४
कणनुं कुंडुं परिहरीजी विष्टाशुं मन राग,
गुरूद्रोही ते जाणवाजी, सुअर उपमा लाग. भवि० ५
कोह्या काननी कुतरीजी, ठाम न पामीरे जेम,
शीले हीण अकह्यागराजी, आदर न लहे तेम भवि० ६
चंदनणी पेरे उजळीजी किरती तेह लहंत,
विपय कपाय जीती करीजी, जे नर शील वहंत, भवि० ७
विजयदेव गुरू पाटवीजी, श्री विजयसिंह सुरींद,
शिष्य उदय वाचक भणेजी, वियय सयळ सुखकंद भवि० ८

साधवी वचन सुणी करी, चमक्यो चित्त मोझारो रे:
हय गय रथ सहु परिहर्या,वळी आव्यो अहंकारो रे वीरा० ५
वैरागे चित्त वाळीयो रे, मूकी निज अभिमान रे;
पग उपाडयो रे वादवा, उपन्युं केवल ज्ञान रे वीरा० ७
पहोता केवळी परखदा, बाहुबळी ऋषिराया रे;
अजरामर पदवी लही, समयसुन्दर वन्दे पाया रे. वीरा० ७

२ प्रसन्नचंद्रमुनिनी सज्झाय

प्रणमुं तुमारा पाय, प्रसन्नचंद्र प्रणमुं तुमारा पाय,
राज छोडी रळीआमणुं रे, जाणी अथिर संसार,
वैरागे मन वाळीयुं रे, लीयो संजम भार. प्रसन्न० १
श्मशाने काउस्सग्ग रही रे, पग उपर पग चढाय,
बाहु बे उंचा करी रे, सूरज सामी दृष्टि लगाय. प्रसन्न०
दुर्मुख दूत वचन सुणी रे, कोप चढयो ततकाल:
मनशुं संग्राम माडीयो रे, जीव पडयो जंजाळ. प्रसन्न०२
श्रेणिक प्रश्न पूछे ते समे रे, स्वामी एहनी कुण गति थाय:
भगवंत कहे हमणा मरे तो, सातमी नरके जाय. प्रसन्न० ४
क्षण एक आतरे पूछीयुं रे, सर्वार्थ सिद्ध विमान,
वाजी देवनी दुन्दुभी रे, मुनि पाम्या केवळज्ञान. प्रसन्न० ५
मननी जीते जीतवुं रे, मननी हारे हार,
मन लइ जावे मोक्षमा रे, मन दीय नरक मोझार. प्रसन्न० ६

प्रसन्नचंद ऋषि मुगते गया रे, श्री महावीरना शिष्य;
रूपविजय कहे धन्य धन्य, जोया शास्त्र प्रत्यक्ष. प्रसन्न० ७.

३ विनयनी सज्झाय

पवयणदेवी चित्त धरीजी, विनय वखाणीश सार,
जंबूने पूछये कह्योजी, श्री सोहम गणधार,
भविकजन विनय वहो सुखकार. १
पहिले अध्ययने कह्योजी, उत्तराध्ययन मझार,
सघळा गुणमा मूलगोजी, जे जिनशासन सार. भवि० २
नाण विनयथी पामीएजी, नाणे दरिसण शुद्ध,
चारित्र दरिसणथी हुएजी, चारित्रथी पूर्ण सिद्ध. भवि० ३
गुरूनी आज्ञा सदा धरेजी, जाणे गुरूनो भाव,
विनयवंत गुणरागीओजी, ते मुनि सरल स्वभाव, भवि० ४
कणनुं कुंडुं परिहरीजी विष्टाशुं मन राग,
गुरूद्रोही ते जाणवाजी, सुअर उपमा लाग. भवि० ५
कोह्या काननी कुतरीजी, ठाम न पामीरे जेम,
शीले हीण अकह्यागराजी, आदर न लहे तेम भवि० ६
चंद्रतणी पेरे उजळीजी किरती तेह लहंत,
विषय कषाय जीती करोजी, जे नर शील वहंत, भवि० ७
विजयदेव गुरू पाटवीजी, श्री विजयसिंह सुरींद,
शिष्य उदय वाचक भणेजी, विनय सयल सुखकंद भवि० ८

४ मन भमरानी सज्झाय

भूल्यो मन भमरा तुं क्या भम्यो, भम्यो दिवस ने रात,
मायानो बांध्यो प्राणीओ, भमे परिमल जात. भूल्यो० १
कुंभ काचोरे काया कारमी, तेनो करोरे जतन्न,
विणसतां वार लागे नहीं, निर्मल राखोरे मन्न. भूल्यो०२
केना छोरु ने केना वाछरू, केना माय ने बाप,
अन्त समय जाशे एकलो, साथे पुण्य ने पाप. भूल्यो० ३
आशा तो डुंगर जेवडी, मरवुं पगलारे हेठ,
धन संची संची काइ करो, देहनी वेठ. भूल्यो० ४
धन्धो करी धन जोडीयो, लाखो उपर क्रोड,
मरतानी वेळा मानवी, लीधो कंदोरो छोड, भूल्यो० ५
मुरख कहे धन माहरो, धोके धान न खाय,
वस्त्र विना जइ पोढवुं, लखपति लाकडा माय, भूल्यो० ६
उवट मारग चालता, जावुं पेलेरे पार,
आगळ हाट न वाणीयो, शंबल लेजोरे सार. भूल्यो० ७
परदेशी परदेशसे, कुणशुं करोरे स्नेह,
आया कागळ उठचल्यो, न गणे आंधी ने मेह. भूल्यो० ८
केइ चाल्या ने चालशे, केइ चालणहार,
केइ बेठारे बुढा बापडा, जाये नरक मझार. भूल्यो० ९
जिण घर नोबत वागती, थाता छत्रीस राग,
खंडेर थइ खाली पडया, बेठण लाग्या छे काग. भूल्यो० १०

भमरो आव्योरे कमळमां, लेवा कमळनुं नूर,
कमलनी मांछाए मांहे रह्यो, जिम आथमते सूर. भूल्यो० ११
सद्गुरु कहे वस्तु वहोरियेरे, जे कोइ आवे रे साथ;
आपणो लाभ उगारीये, लेखुं साहिब हाथ. भूल्यो० १२

छंद-संग्रह

१. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिन छंद

(राग प्रभातो)

पास शंखेश्वरा सार कर सेवका, देव का एवडो वार लागे;
कोडीकर जोडी दरबारआगे खडा, ठाकुरा चाकुरा मानमागे. १
प्रगट था पासजी मेली पडदो परो, मोडअसुराननेआप छोडो;
मुज महिराण मंजुसमा पेसोने, खलकना नाथजीबंध खोलो. २
जगतमा देव जगदीश तुं जागतो, एम शुं आज जिनराज उंघे,
मोटा दानेश्वरी तेहने दाखीए, दान दे जेह जग काळ मोंघे ३
भीड पडी जादवा जोर लागी जरा, तत्क्षण त्रिकमे तुज संभार्यो,
प्रगटपाताळथीपलकमांते प्रभु, भक्तजन तेहनोभय निवार्यो. ४
आदि अनादि अरिहंत तुं एक छे, दीनदयाळ छे कोण दूजो,
उदयरत्न कहे प्रगट प्रभु पासजी, पामी भयभंजनोएहपूजो ५

२. श्री गौतमस्वामी का छंद

वीर जिनेश्वर केरो शिष्य, गौतम नाम जपो निशदिश;
जो कीजे गौतमनुं ध्यान, तो घर विलसे नवे निधान. १

गौतम नामे गिरिवर चडे, मनवांछित हेला संपजे,
गौतम नामे नावे रोग, गौतम नामे सर्व संजोग. २
जे वैरी विरुआ वंकडा, तस नामे नावे ढुंकडा;
भूत प्रेत नवि छंडे प्राण, ते गौतमनां करुं वखाण ३
गौतम नामे निर्मळ काय, गौतम नामे वाधे आय,
गौतम जिनशासन शणगार, गौतम नामे जयजयकार. ४
शाल, दाल सुरहा घृत गोळ, मनवांछित कापड तंबोळ,
घरे सुघरणी निर्मळ चित्त, गौतम नामे पुत्र विनीत. ५
गौतम उदयो अविचळ भाण, गौतम नाम जपो जग जाण
मोटा मंदिर मेरु समान, गौतम नामे सफल विहाण. ६
घर मयगल घोडानी जोड, वारु पहोंचे वंछित कोड,
महियल माने महोटा राय, जो तुठे गौतमना पाय. ७
गौतम प्रणम्या पातक टळे, उत्तम नरनी संगत मळे,
गौतम नामे निर्मळ ज्ञान, गौतम नामे वाधे वान. ८
पुण्यवंत अवधारो सहु, गुरु गौतमना गुण छे बहु,
कहे लावण्यसमय कर जोड, गौतम तुठे संपत्ति कोड. ९



॥ श्री विधिसहित पाक्षिक प्रतिक्रमण ॥

(सामायिक लेनेकी विधि)

पुस्तक नवकारवाली प्रमुखकी स्थापना करने के लीये दाहिना हाथ सामने करके नवकार पचिंदिय नीचे मुताबिक कहना ।

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं,नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंचनमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगळाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगल ।

[1]पंचिंदिय संवरणो, तह नवविह बंभचेर गुत्तिधरो; चउविह कसाय मुक्को, इअ अट्ठारस गुणेहिं संजुत्तो. ॥१॥ पच्च महव्वय जुत्तो, पंच विहायार पालण समत्थो; पंच समिओ तिगुत्तो, छत्तीस गुणो गुरु मज्झ. ॥२॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहिय पडिक्कमामि ? इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउं ॥१॥ इरियावहिआए, विराहणाए, ॥२॥ गमणागमणे ॥३॥ पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग पणग दग, मट्टी मक्कडा ताणा संसक्कमणे. ॥४॥ जे मे जीवा विराहिआ. ॥५॥ एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया चउरिंदिया, पंचिंदिया. ॥६॥ अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं. ॥७॥

---

१. आचार्यजी हो तो नवकार पंचिंदिय न कहना

गौतम नामे गिरिवर चडे, मनवांछित हेला संपजे,
गौतम नामे नावे रोग, गौतम नामे सर्व संजोग २

जे वैरी विरुआ वंकडा, तस नामे नावे ढुंकडा;
भूत प्रेत नवि छंडे प्राण, ते गौतमनां करुं वखाण ३

गौतम नामे निर्मळ काय, गौतम नामे वाधे आय,
गौतम जिनशासन शणगार, गौतम नामे जयजयकार. ४

शाल, दाल सुरहा घृत गोळ, मनवांछित कापड तंबोळ,
घरे सुघरणी निर्मळ चित्त, गौतम नामे पुत्र विनीत. ५

गौतम उदयो अविचळ भाण, गौतम नाम जपो जग जाण
मोटा मंदिर मेरु समान, गौतम नामे सफल विहाण. ६

घर मयगळ घोडानी जोड, वारु पहोंचे वंछित कोड,
महियल माने महोटा राय, जो तुठे गौतमना पाय. ७

गौतम प्रणम्या पातक टळे, उत्तम नरनी संगत मळे,
गौतम नामे निर्मळ ज्ञान, गौतम नामे वाधे वान. ८

पुण्यवंत अवधारो सहु, गुरु गौतमना गुण छे बहु,
कहे लावण्यसमय कर जोड, गौतम तुठे संपत्ति कोड. ९



॥ श्री विधिसहित पाक्षिक प्रतिक्रमण ॥

(सामायिक लेनेकी विधि)

पुस्तक नवकारवाली प्रमुखकी स्थापना करने के लीये दाहिना हाथ सामने करके नवकार पंचिदिय नीचे मुताबिक कहना ।

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंचनमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगळाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगल ।

[1]पंचिदिय संवरणो, तह नवविह बंभचेर गुत्तिधरो; चउविह कसाय मुक्को, इअ अट्ठारस गुणेहिं संजुत्तो. ॥१॥ पच महव्वय जुत्तो, पंच विहायार पालण समत्थो; पंच समिओ तिगुत्तो, छत्तीस गुणो गुरु मज्झ. ॥२॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउं ॥१॥ इरियावहिआए, विराहणाए, ॥२॥ गमणागमणे ॥३॥ पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग पणग दग, मट्टी मक्कडा ताणा संकमणे. ॥४॥ जे मे जीवा विराहिआ. ॥५॥ एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया चउरिंदिया, पंचिंदिया ॥६॥ अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं. ॥७॥

१. आचार्यजी हो तो नवकार पंचिंदिय न कहना

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेण, विसल्ली करणेणं पावाणं, कम्माणं, निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥८॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएण, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहि, सुहुमेहि खेल संचालेहि, सुहुमेहि दिट्ठि संचालेहि ॥२॥ एवमाइएहि आगारेहि, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(एक लोगस्सका चंदेसु निम्मलयरा तक काउस्सग्ग करना. न आता हो तो चार नवकार गिनना. फिर नीचे मुताबिक कहना.)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च; पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पह वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंत, सीयल सिज्जंस वासुपुज्जं च, विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथु अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं चः वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एव मए अभिथुआ, विहुय-रय मला पहीण जरमरणा; चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय वंदिय

महिया, जेए, लोगस्स उत्तमा सिद्धा; आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दितु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा, सागर वर गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुं ? "इच्छं"

(ऐसा कहकर मुहपत्ति पडिलेहनी० फिर)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक संदिसाहुं ? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक ठाउं ? "इच्छं" ?

(ऐसा कहकर दोनों हाथ जोड के नीचे मुताबिक एक नवकार गिनना)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंच नमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥ फिर—

इच्छकारी भगवन् ! पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी।

१ यदि चरवला हो तो खडे होकर और न हो तो बैठे बैठे करेमि भंते उच्चरना

(ऐसा कहकर दोनो हाथ जोडकर करेमि भंते उच्चरना, वह नीचे मुताबिक)

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, ॥१॥ दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाण वोसिरामि ॥२॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाय, निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बेसणे संदिसाहुं ? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बेसणे ठाउं ? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय संदिसाहुं ? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थेएण वंदामि इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करूं ? 'इच्छं'

(ऐसा कहकर दोनों हाथ जोडकर नीचे मुताबिक तीन नवकार गिनना)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंचनमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

सामायिक लेनेकी विधि संपूर्ण.

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पच्चक्खाण मुहपत्ति पडिलेहु ? "इच्छं"

(ऐसा कहकर मुहपत्ति पडिलेहनी फिर दो वांदणा देना.)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ॥१॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं ॥२॥ निसीहि अहो, कायं काय संफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ॥३॥ जत्ता भे ॥४॥ जवणि ज्जं च भे ॥५॥ खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कमं ॥६॥ आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ॥१॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं ॥२॥ निसीहि अहो, कायं, काय-संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलं-

यदि चौविहार उपवास किया हो तो मुहपत्ति पडिलेहन नहिं करना और वांदणा नहीं लेना यदि पानी पिया हो तो सिर्फ मुहपत्ति पडिलेहन करना यदि भोजन किया हो तो मुहपत्ति पडिलेहन कर दो वांदणा भी लेना

(ऐसा कहकर दोनों हाथ जोडकर करेमि भंते उच्चरना, वह नीचे मुताबिक)

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, ॥१॥ दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाण वोसिरामि ॥२॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाय, निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बेसणे संदिसाहुं ? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बेसणे ठाउं ? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय संदिसाहुं ? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थेएण वंदामि इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करूं ? 'इच्छं'

(ऐसा कहकर दोनों हाथ जोडकर नीचे मुताबिक तीन नवकार गिनना)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पचनमुकारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसि, पढमं हवइ मंगलं ॥

सामायिक लेनेकी विधि संपूर्ण.

*इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पच्चक्खाण मुहपत्ति पडिलेहु ? "इच्छं"

(ऐसा कहकर मुहपत्ति पडिलेहनी फिर दो वादणा देना.)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ॥१॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं ॥२॥ निसीहि अहो, कायं काय संफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ॥३॥ जत्ता भे ॥४॥ जवणि ज्जं च भे ॥५॥ खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कमं ॥६॥ आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ॥१॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं ॥२॥ निसीहि अहो, कायं, काय-संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलं-

---

यदि चौविहार उपवास किया हो तो मुहपत्ति पडिलेहन नहि करना और वादणा नहीं लेना यदि पानी पिया हो तो सिर्फ मुहपत्ति पडिलेहन करना यदि भोजन किया हो तो मुहपत्ति पडिलेहन कर दो वादणा भी लेना

ताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ॥३॥ जत्ता भे ॥४॥ जवणिज्जं च भे, ॥५॥ खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कमं ॥६॥ पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

(फिर पच्चक्खाण करना)

चउविहारका पच्चक्खाण ।

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, चउव्विहं पि आहार, असणं, पाणं, खाइम साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरइ × ॥

तिविहारका पच्चक्खाण ।

दिवसचरिम पच्चक्खाइ, तिविहंपि आहारं—असणं खाइमं-साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरइ ॥

दुविहारका पच्चक्खाण ।

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, दुविहं पि आहारं, असणं, खाइमं,

× खुद पच्चक्खाण करे तो वोसिरामि कहे

अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरइ ॥

[1]पाणहारका पच्चक्खाण ।

पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरइ ॥

देसावगासिकका पच्चक्खाण।

देसावगासिअं, उवभोग परिभोगं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

(ऐसा कहकर बाया घुटना ऊंचा करके चैत्यवन्दन करना)

चैत्यवंदन

सकलार्हत्प्रतिष्ठान,–मधिष्ठानं शिवश्रियः ।
भूर्भुवःस्वस्त्रयीशान,–मार्हन्त्यं प्रणिदध्महे ॥१॥

नामाकृतिद्रव्यभावैः,–पुनतस्त्रिजगज्जनं ।
क्षेत्रे काले च सर्वस्मि,–न्नर्हतः समुपास्महे ॥२॥

आदिमं पृथिवीनाथ,–मादिमं निष्परिग्रहं ।
आदिमं तीर्थनाथं च,–ऋषभस्वामिनं स्तुमः ॥३॥

---

१ यदि एकासण, बिआसण व आयंबिल निवी तथा तिविहार उपवास किया हो तो पाणहारका पच्चक्खाण करना

अर्हन्तमजित विश्व,–कमलाकरभास्करम् ।
अम्लान–केवलादर्श,–संक्रान्त जगतं स्तुवे ॥४॥
विश्वभव्यजनाराम,–कूल्यातुल्या जयन्ति ताः ।
देशनासमये वाचः,–श्रीसम्भवजगत्पतेः ॥५॥
अनेकान्तमताम्भोधि,–समुल्लासनचन्द्रमाः ।
दद्यादमन्दमानन्दं,,–भगवानभिनन्दनः ॥ ६ ॥
द्युसत्किरीटशाणाग्रो,–त्तेजिताङ्घ्रिनखावलिः ।
भगवान् सुमतिस्वामी,–तनोत्वभिमतानि वः ॥७॥
पद्मप्रभप्रभोर्देह, भासः पुष्णन्तु वः श्रियम् ।
अन्तरङ्गारिमथने, कोपाटोपादिवारुणाः ॥८॥
श्रीसुपार्श्वजिनेन्द्राय, महेन्द्रमहिताङ्घ्रये ।
नमश्चतुर्वर्णसङ्घ,–गगनाभोगभास्वते ॥९॥
चन्द्रप्रभप्रभोश्चन्द्र,–मरीचिनिचयोज्ज्वला ।
मूर्तिर्मूर्तसितध्यान,–निर्मितेव श्रियेऽस्तु वः ॥१०॥
करामलकवद्विश्व, कलयन् केवलश्रिया ।
अचिन्त्यमाहात्म्यनिधिः,–सुविधिर्बोधयेऽस्तु वः ॥११॥
सत्त्वाना परमानन्द,–कन्दोद्भेदनवाम्बुदः ।
स्याद्वादामृतनिस्यन्दी,–शीतलः पातु वो जिनः ॥१२॥
भवरोगार्तजन्तूना–मगदंकारदर्शनः ।
निःश्रेयसश्रीरमणः–श्रेयासः श्रेयसेऽस्तु वः ॥१३॥
विश्वोपकारकीभूत,–तीर्थकृत्कर्मनिर्मितिः ।
सुरासुरनरैः पूज्यो, वासुपूज्यः पुनातु वः ॥१४॥

विमलस्वामिनो वाचः; कतकक्षोदसोदराः ।
जयन्ति त्रिजगच्चेतो, जलनैर्मल्यहेतवः ॥१५॥
स्वम्भूरमणस्पर्धि,–करुणारसवारिणा ।
अनन्तजिदनन्ता वः, प्रयच्छतु सुखश्रियम् ॥१६॥
कल्पद्रुमसधर्म्माण,–मिष्टप्राप्तौ शरीरिणाम् ।
चतुर्धा धर्म–देष्टारं,–धर्मनाथमुपास्महे ॥१७।
सुधासोदरवाग्ज्योत्स्ना, निर्म्मलीकृतदिङ्मुखः ।
मृगलक्ष्मा तमःशान्त्यै, शान्तिनाथजिनोऽस्तु वः ॥१८॥
श्रीकुन्थुनाथो भगवान्,–सनाथोऽतिशयर्द्धिभिः ।
सुरासुरनृनाथाना,–मेकनाथोऽस्तु वः श्रिये ॥१९॥
अरनाथस्तु भगवां,–श्चतुर्थारनभोरविः ।
चतुर्थपुरुषार्थश्री,–विलासं वितनोतु वः ॥ २० ॥
सुरासुरनराधीश,–मयूरनववारिदम् ।
कर्मद्रून्मूलने हस्ति,–मल्लं मल्लीमभिष्टुमः ॥ २१ ॥
जगन्महामोहनिद्रा,–प्रत्यूषसमयोपमम् ।
मुनिसुव्रतनाथस्य, देशनावचनं स्तुमः ॥ २२ ॥
लुठन्तो नमता मूर्ध्नि, निर्मलीकारकारणम् ।
वारिप्लवा इव नमेः, पान्तु पादनखांशवः ॥ २३ ॥
यदुवंशसमुद्रेन्दुः, कर्मकक्षहुताशनः ।
अरिष्टनेमिर्भगवान्, भूयाद्वोऽरिष्टनाशनः ॥ २४ ॥
कमठे धरणेंद्रे च, स्वोचित कर्म कुर्वति ।
प्रभुस्तुल्यमनोवृत्तिः, पार्श्वनाथः श्रियेऽस्तु वः ॥२५॥

श्रीमते वीरनाथाय, सनाथायाद्भुतश्रिया ।
महानन्दसरोराज,-मरालायार्हते नमः ॥२६॥
कृतापराधेऽपि जने, कृपामन्थरतारयोः ।
ईषद्बाष्पार्द्रयोर्भद्र, श्रीवीरजिननेत्रयोः ॥२७॥
जयति विजितान्यतेजाः, सुरासुराधीशसेवितः श्रीमान् ।
विमलस्त्रासविरहित,-स्त्रिभुवनचूडामणिर्भगवान् ॥२८॥
वीरः सर्वसुरासुरेन्द्रमहितो वीर, बुधाः संश्रिताः ।
वीरेणाभिहतः स्वकर्मनिचयो, विराय नित्यं नमः ॥
वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं, वीरस्य घोरं तपो ।
वीरेश्रीधृतिकीर्तिकान्तिनिचयः,श्रीवीर!भद्रंदिश ॥२९॥
अवनितलगताना, कृत्रिमाकृत्रिमाना,
वरभवनगतानां, दिव्यवैमानिकानाम् ।
इह मनुजकृताना, देवराजार्चिताना,
जिनवरभवनाना, भावतोऽहं नमामि ॥३०॥
सर्वेषा वेधसामाद्य,-मादिमं परमेष्ठिनाम् ।
देवाधिदेव सर्वज्ञं. श्रीवीर प्रणिदध्महे ॥३१॥
देवोऽनेकभवार्जितोर्जितमहा-पापप्रदीपानलो ,
देवः सिद्धिवधूविशालहृदया-लङ्कारहारोपमः ॥
देवोऽष्टादशदोषसिन्धुरघटा-निर्भेदपञ्चाननो ।
भव्यानाविदधातुवाञ्छितफल, श्रीवितरागोजिनः॥३२॥
ख्यातोऽष्टापदपर्वतो गजपदः सम्मेतशैलाभिधः ।
श्रीमान् रैवतकः प्रसिद्धमहिमा शत्रुञ्जयो मण्डपः ॥

वैभारः कनकाचलोऽर्बुदगिरिः श्रीचित्रकूटादय-
स्तत्र श्रीऋषभादयो जिनवराः कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥३३॥

जंकिंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए; जाइं जिण बिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ १ ॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं ॥ लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाण-दंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥७॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं ॥ बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअ मणंतमक्खय मव्वाबाहमपुणराविति, सिद्धिगइनामधेयं । ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले ॥ संपइ अ वट्टमाणा सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

(चरवला हो तो खडे होकर या घुटना नीचे करके.)

श्रीमते वीरनाथाय, सनाथायाद्भुतश्रिया ।
महानन्दसरोराज,-मरालायार्हते नमः ॥२६॥
कृतापराधेऽपि जने, कृपामन्थरतारयोः ।
ईषद्बाष्पार्द्रयोर्भद्र, श्रीवीरजिननेत्रयोः ॥२७॥
जयति विजितान्यतेजाः, सुरासुराधीशसेवितः श्रीमान् ।
विमलस्त्रासविरहित,-स्त्रिभुवनचूडामणिर्भगवान् ॥२८॥
वीरः सर्वसुरासुरेन्द्रमहितो वीरं, बुधाः संश्रिताः ।
वीरेणाभिहतः स्वकर्मनिचयो, विराय नित्यं नमः ॥
वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं, वीरस्य घोर तपो ।
वीरेश्रीधृतिकीर्तिकान्तिनिचयः,श्रीवीर भद्रंदिश ॥२९॥
अवनितलगताना कृत्रिमाकृत्रिमाना,
वरभवनगताना, दिव्यवैमानिकानाम् ।
इह मनुजकृताना, देवराजार्चिताना,
जिनवरभवनाना, भावतोऽहं नमामि ॥३०॥
सर्वेषा वेधसामाद्य,-मादिम परमेष्ठिनाम् ।
देवाधिदेव सर्वज्ञ, श्रीवीर प्रणिदध्महे ॥३१॥
देवोऽनेकभवार्जितोर्जितमहा-पापप्रदीपानलो ,
देवः सिद्धिवधूविशालहृदया-लङ्कारहारोपमः ॥
देवोऽष्टादशदोषसिन्धुरघटा-निर्भेदपञ्चाननो ।
भव्यानाविदधातुवाछितफल, श्रीवितरागोजिनः॥३२॥
ख्यातोऽष्टापदपर्वतो गजपदः सम्मेतशैलाभिधः ।
श्रीमान् रैवतकः प्रसिद्धमहिमा शत्रुञ्जयो मण्डपः ॥

वैभारः कनकाचलोऽर्बुदगिरिः श्रीचित्रकूटादय-
स्तत्र श्रीऋषभादयो जिनवराः कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥३३॥

जंकिंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए; जाइं जिण बिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ १ ॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं ॥ लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर-चाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाण-दंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥७॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं ॥ बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअ मणंतमक्खय मव्वाबाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइनामधेयं । ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले ॥ संपइ अ वट्टमाणा सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

(चरवला हो तो खडे होकर या घुटना नीचे करके.)

अरिहंत चेइआणं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं.

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहि अगसंचालेहि, सुहुमेहि खेलसंचालेहि, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहि ॥२॥ एवमाइएहि आगारेहि, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग पारके फिर नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कहके स्तुति कहना, वह नीचे मुताबिक है)

स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे शच्या विभोः शैशवे ।
रूपालोकनविस्मयाहृतरसभ्रान्त्या भ्रमच्चक्षुषा ॥
उन्मृष्ट नयनप्रभाधवलितं क्षीरोदकाशङ्कया ।
वक्त्रं यस्य पुनः पुनः स जयति श्रीवर्द्धमानो जिनः ॥१

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च; पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंद-

प्पह वदे ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वदामि ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वदामि रिठ्ठ-नेमिं, पासं तह वद्धमाण च । एवं मए अभिथुआ, विहुयरय-मला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दितु ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहिय पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥

अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्ग वंदणवत्तिआए पूअण-वत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्ति-आए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं.

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेण, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकारका काउस्सग्ग करके पारके फिर स्तुति कहनी वह नीचे मुताबिक है)

हंसांसाहतपद्मरेणुकपिशक्षीरार्णवाम्भोभृतैः ।
कुम्भैरप्सरसा पयोधरभरप्रस्पर्धिभिः काञ्चनैः ॥१॥
येषां मंदररत्नशैलशिखरे जन्माभिषेकः कृतः ।
सर्वैः सर्वसुरासुरेश्वरगणैस्तेषां नतोऽहं क्रमान् ॥२॥

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायईसंडे अ जंबूदीवे अ; भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपडलविद्धंसणस्स सुरगणनरिंदमहियस्स । सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ मोहजालस्स ॥ २ ॥ जाइ जरा मरण सोग पणासणस्स, कल्लाण पुक्खल विसाल सुहावहस्स । को देव दाणव नरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धे भो पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देव नाग सुवन्न किन्नरगण स्सब्भूअ भावच्चिए । लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं । धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥ ४ ॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलीए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं, अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ

हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकारका काउस्सग्ग करके नीचे लीखो स्तुति कहना)

अर्हद्वक्त्रप्रसूत गणधररचितं द्वादशागं विशालं ।
चित्रं वह्वर्थयुक्तं मुनिगणवृषभैर्धारितं बुद्धिमद्भिः ॥
मोक्षाग्रद्वारभूतं व्रतचरणफलं ज्ञेयभावप्रदीपं ।
भक्त्या नित्यं प्रपद्ये श्रुतमहमखिलं सर्वलोकैकसारम् ॥३॥

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं, परंपरगयाण ॥ लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति; तं देवदेव महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ १ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरसहस्स वद्धमाणस्स । संसार सागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥ उज्जित सेल सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स । तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥४॥ चत्तारि अट्ठ दस-दोय, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं; परमट्ठ निट्ठि अट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥५॥

वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मदिट्ठिसमाहिगराणं करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए॥१॥

हंसासाहतपद्मरेणुकपिशक्षीरार्णवाम्भोभृतैः ।
कुम्भैरप्सरसा पयोधरभरप्रस्पर्धिभिः काञ्चनैः ॥१॥
येषां मंदररत्नशैलशिखरे जन्माभिषेकः कृतः ।
सर्वैः सर्वसुरासुरेश्वरगणैस्तेषां नतोऽहं क्रमान् ॥२॥

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायईसंडे अ जंबूदीवे अ; भरहेरवय-विदेहे, धम्माइगरे नमसामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपडलविद्ध-सणस्स सुरगणनरिंदमहियस्स । सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ मोहजालस्स ॥ २ ॥ जाइ जरा मरण सोग पणासणस्स, कल्लाण पुक्खल विसाल सुहावहस्स । को देव दाणव नरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धे भो पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देव नाग सुवन्न किन्नरगण स्सब्भूअ भावच्चिए । लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं । धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥ ४ ॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलीए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं, अंगसचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ

हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकारका काउस्सग्ग करके नीचे लीखी स्तुति कहना)

अर्हद्वक्त्रप्रसूत गणधररचितं द्वादशांगं विशालं ।
चित्रं बह्वर्थयुक्तं मुनिगणवृषभैर्धारितं बुद्धिमद्भिः ॥
मोक्षाग्रद्वारभूतं व्रतचरणफलं ज्ञेयभावप्रदीपं ।
भक्त्या नित्यं प्रपद्ये श्रुतमहमखिलं सर्वलोकैकसारम् ॥३॥

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं, परंपरगयाण ॥ लोअग्ग-मुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति; तं देवदेव महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ १ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरसहस्स वद्धमाणस्स । संसार सागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥ उर्जिजत सेल सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स । तं धम्मचक्कवट्टि, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥४॥ चत्तारि अट्ठ दस-दोय, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं; परमट्ठ निट्ठि अट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥५॥

वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मद्दिट्ठिसमाहिगराणं करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए॥१।

सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेल संचालेहिं; सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ; हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके फिर नमोऽर्हत्-सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य कहके स्तुति कहनी, वह नीचे मुजब)

निष्पंकव्योमनीलद्युतिमलसदृशं बालचन्द्राभदंष्ट्रं ।
मत्तं घंटारवेण प्रसृतमदजलं पूरयन्तं समन्तात् ॥
आरूढो दिव्यनागं विचरति गगने कामदः कामरूपी ।
यक्षः सर्वानुभूतिर्दिशतु मम सदा सर्वकार्येषु सिद्धिम् ॥४॥

नमुत्थणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥६॥ अप्पडिहय वरनाण दंसणधराणं, वियट्टछउमाणं ॥७॥ जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं,

मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरूअ मणंतमक्खय मव्वाबाहमपुणराविति सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥९॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भवस्संति णागए काले; संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । भगवानहं ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । आचार्यहं ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । उपाध्यायहं ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । सर्वसाधुहं ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! देवसिय पडिक्कमणे ठाउं ?

(फिर दाहिना हाथ चरवले पर रख मस्तक झुका कर)

इच्छं, सव्वस्स वि देवसिय दुच्चिंतिय दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ मिच्छामि दुक्कड ।

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि

अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्ह सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहि, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(फिर पंचाचार की आठ गाथाका काउस्सग्ग करना यदि न आता हो तो आठ नवकार मंत्र हो गिनना काउस्सग्ग मे गिनने की आठ गाथा नीचे मुजब है,)

नाणंमि दंसणंमि अ ॥ चरणंमि तवमि तहय वीरियंमि ॥ आयरणं आयारो ॥ इअ एसो पंचहा भणिओ ॥ १ ॥ काले विणए बहुमाणे ॥ उवहाणे तह अनिन्हवणे ॥ वंजण अत्थ तदुभए ॥ अट्ठविहो नाण मायारो ॥ २ ॥ निस्संकिअ निक्कंखिअ ॥ निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी अ ॥ उववूह थिरीकरणे, वच्छल-पभावणे अट्ठ ॥ ३ ॥ पणिहाण जोग जुत्तो ॥ पचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तीहिं ॥ एस चरित्तायारो ॥ अट्ठविहो होइ नायव्वो ॥ ४ ॥ बारसविहंमि वि तवे ॥ सब्भिंतर बाहिरे कुसलदिट्ठे ॥ अगिलाई अणाजीवी ॥ नायव्वो सो तवायारो ॥ ५ ॥ अणसण मुणोअरिया ॥ वित्तीसंखेवणं रसच्चाओ; कायकिलेसो संलीणया य, बज्झो तवो होइ ॥६॥ पायच्छित्तं विणओ ॥ वेयावच्चं तहेव सज्झाओ; झाणं उस्सग्गोवि अ ॥ अब्भिंतरओ तवो होइ ॥ ७ ॥ अणिगूहिअ बल विरिओ, परक्कमइ जो जहुत्त-माउत्तो ॥ जुंजइ अ जहाथामं, नायव्वो वीरिआयारो ॥ ८ ॥

(काउस्सग्ग पारके लोगस्स कहना, वह नीचे मुजब है)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे; अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभ मजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च; पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च; विमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च; वंदामि

अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(फिर पंचाचार की आठ गाथाका काउस्सग्ग करना यदि न आता हो तो आठ नवकार मंत्र ही गिनना काउस्सग्ग मे गिनने की आठ गाथा नीचे मुजब है.)

नाणंमि दंसणंमि अ ॥ चरणंमि तवमि तहय वीरियंमि ॥ आयरणं आयारो ॥ इअ एसो पंचहा भणिओ ॥ १ ॥ काले विणए बहुमाणे ॥ उवहाणे तह अनिन्हवणे ॥ वंजण अत्थ तदुभए ॥ अट्ठविहो नाण मायारो ॥ २ ॥ निस्संकिअ निक्कं-खिअ ॥ निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी अ ॥ उववूह थिरीकरणे, वच्छल-पभावणे अट्ठ ॥ ३ । पणिहाण जोग जुत्तो ॥ पचहिं समिईहिं त्तिहिं गुत्तीहिं ॥ एस चरित्तायारो ॥ अट्ठविहो होइ नायव्वो ॥ ४ ॥ बारसविहंमि वि तवे ॥ सब्भितर बाहिरे कुसलदिट्ठे ॥ अगिलाई अणाजीवी ॥ नायव्वो सो तवायारो ॥ ५ ॥ अणसण मुणोअरिया ॥ वित्तीसंखेवणं रसच्चाओ; कायकिलेसो संलीणया य, वज्झो तवो होइ ॥६॥ पायच्छित्तं विणओ ॥ वेयावच्चं तहेव सज्झाओ; झाणं उस्सग्गोवि अ ॥ अब्भितरओ तवो होइ ॥ ७ ॥ अणिगूहिअ बल विरिओ, परक्कमइ जो जहुत्त-माउत्तो ॥ जुंजइ अ जहाथामं, नायव्वो वीरिआयारो ॥ ८ ॥

(काउस्सग्ग पारके लोगस्स कहना, वह नीचे मुजब है)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे;अरिहंते कित्त-इस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभ मजिअं च वंदे, संभव-मभिणंदणं च सुमइं च; पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च; विमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च; वंदामि

रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय रय-मला पहीण-जर-मरणा; चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा; आरुग्ग बोहिलाभं, समाहि वरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा. सागरवर गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

(फिर तीसरे आवश्यक की मुहपत्ति पडिलेहनी, फिर दो बार वादणा नीचे मुजब देना)

इच्छामि खमाससणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ॥ १ ॥ अणुजाणह ॥ मे मिउग्गहं ॥ २ ॥ निसीहि, अ-हो का-यं का-य, संफासं,खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं, वहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ! ॥ ३ ॥ जत्ता भे ॥ ४ ॥ ज-व-णिज्जं च भे ? ॥ ५ ॥ खामेमि खमासमणो, देवसिअ वइक्कमं ॥६॥ आवस्सिआए; पडिक्कमामि, खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए; तित्तीसन्नयराए, जंकिंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए; , वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो । पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए

अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो कायं काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे दिवसो चइक्कंतो जत्ता भे जावणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कम पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥२॥

(चरवला हो तो खडे होकर हाथ जोडकर नीचे मुजब बोले)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! देवसिअं आलोउं ?

"इच्छं" आलोएमि जो मे देवसिओ अइआरो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ, उस्सुत्तो उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो; नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए, सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पचण्ह मणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

सात लाख पृथ्वीकाय ॥ सात लाख अप्काय ॥ सात लाख तेउकाय ॥ सात लाख वाउकाय ॥ दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय ॥ चउदलाख साधारण वनस्पतिकाय ॥ बे

लाख बेइंद्रिय, बे लाख तेइंद्रिय, बे लाख चउरिंद्रिय ॥ चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेन्द्रिय ॥ चौद लाख मनुष्य, एवंकारे, चोरासी लाख जीवायोनिमांहि, म्हारे जीवे जे कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतां प्रत्ये अनुमोद्यो होय, ते सवि हु मन वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं

पहेले प्राणातिपात, बीजे मृषावाद, त्रीजे अदत्तादान, चौथे मैथुन, पांचमे परिग्रह ॥ छट्ठे क्रोध, सातमे मान, आठमे माया, नवमे लोभ ॥ दसमे राग, अग्यारमे द्वेष, बारमे कलह, तेरमे अभ्याख्यान, चौदमे पैशुन्य, पन्नरमे रति-अरति, सोलमे पर परिवाद, सत्तरमे माया मृषावाद, अढारमे मिथ्यात्वशल्य, ए अढार पापस्थानक मांहि, म्हारे जीवे जे कोइ पाप सेव्युं होय, सेवराव्युं होय, सेवता प्रत्ये अनुमोद्युं होय, ते सवि हु मन वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ॥

सव्वस्सवि देवसिअ दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्? इच्छं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(बाद मे दाहिना घुटना ऊंचा करके नीचे मुजब बोलना)

नमो अरिहंताणं ॥१॥ नमो सिद्धाणं ॥२॥ नमो आयरियाणं ॥३॥ नमो उवज्झायाणं ॥४॥ नमो लोए सव्वसाहूणं ॥५॥ एसो पंच नमुक्कारो ॥६॥ सव्वपावप्पणासणो ॥७॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥८॥ पढमं हवइ मंगलं ॥९॥

करेमि भंते! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव नियमं पज्जुवासामि ॥१॥ दुविहं, तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥२॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते सुए, सामाइए. तिण्ह गुत्तीणं ॥ चउण्हं कसायाणं ॥ पचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं, सिक्खावयाणं, बारस विहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं.

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ; इच्छामि पडिक्कमिउं, सावग धम्माइआरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ; सुहुमो त बायरो व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥२॥ दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे; कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥३॥ जं बद्ध मिंदिएहि, चउहिं कसाएहिं; अप्पसत्थेहिं; रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ।४॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे; अभियोगे अ नियोगे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥५॥ संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु । सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअ सव्वं ॥६॥ छक्काय समा-

रंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा । अत्तट्ठा, य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥७॥ पंचण्ह–मणुव्वयाणं, गुण–व्वयाणं च तिण्ह मइयारे; सिक्खाणं च चउण्हं, पडिकमे देसिअं सव्वं. ॥८॥ पढमे अणुव्वयंम्मि, थूलग–पाणाइवाय–विरइओ; आयरिय–मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥९॥ वह बंध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए; पढम–वयस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥१०॥ बीए अणुव्वयंमि, परिथूलग अलीयवयण विरइओ । आयरिय मप्पसत्थे, इत्थ पमाय–प्पसंगेणं ॥११॥ सहसा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ; बीय वयस्सइआरे, पडिकमे देसिअं सव्वं ॥१२॥ तइए अणुव्वयंमि, थूलग परदव्व-हरण विरइओ; आयरिय-मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥१३॥तेनाहडप्पओगे. तप्पडिरूवे विरुद्धगमणे अ; कूडतुल कूडमाणे, पडिकमे देसिअं सव्वं ॥१४॥ चउत्थे अणुव्वयंमि, निच्चं परदारगमण–विरइओ, आयरिय मप्पसत्थे, इत्थ पमाय प्पसंगेणं ॥१५॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंगविवाह तिव्व-अणुरागे । चउत्थ-वयस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ।१६। इत्तो अणुव्वए, पंचमंमि, आयरिअमप्पसत्थंमि; परिमाण परिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥१७॥ धण धन्न खित्त-वत्थू, रुप्प सुवन्ने अ कुविअ परिमाणे । दुपए चउप्प–यंमि य, पडिक्कमे देसिअं सव्वं॥१८॥ गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च । वुड्ढि सइअंतरद्धा,पढममि गुणव्वए निंदे ॥१९॥ मज्जंमि अ मंसंमि अ.पुप्फे अ फले अ

गंधमल्ले अ। उवभोग परिभोगे,बीयंमि गुणव्वए निंदे।२०। सचित्ते पडिबद्धे, अप्पोलि दुप्पोलिअं च आहारे। तुच्छोसहि-भक्खणया, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥२१॥ इंगाली-वण साडी, भाडी फोडीसु वज्जए कम्मं। वाणिज्जं चेव दंत, लक्ख रस केस-विसविसयं ॥२२॥एवं खु जंतपिल्लण, कम्मं निल्लछणंच दवदाणं। सर दह-तलाय-सोसं, असई पोसं च वज्जिज्जा ॥२३॥ सत्थग्गि मुसल जंतग, तण कट्ठे मंत-मूल-भेसज्जे। दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे देसिअं सव्वं॥२४॥ न्हाणु व्व ट्टण वन्नग, विलेवणे सद्द-रूव रस-गंधे। वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥२५॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण भोग अइरित्ते। दंडंमि अणट्ठाए, तइअंमि गुणव्वए निंदे ॥२६॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइविहूणे। समाइअ वितहकए, पढमे सिक्खावए निंदे।२७। आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे। देसावगासिअंमि, बीए सिक्खावए निंदे ॥२८॥ संथारुच्चारविही, पमाय तह चेव भोयणाभोए। पोसह विहिविवरीए,तइए सिक्खावए निंदे ॥२९॥ सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस मच्छरे चेव। कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा। रागेण व दोसेण व, त निंदे त च गरिहामि ॥३१॥ साहूसु संविभागो, न कओ तव-चरण-करण जुत्तेसु। संते फासुअ-दाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इहलोए परलोए,

जीविअ-मरणे अ आसंसपओगे। पंचविहो अइआरो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते ॥३३॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए। मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥३४॥ वंदण वयसिक्खा गारवेसु, सन्ना कसायदंडेसु। गुत्तीसु अ समिइसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥३५॥ सम्मदिट्ठी जीवो, जइवि हु पावं समायरे किंचि। अप्पोसि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥३६॥ तं पि हु सपडिक्कमण, सपरिआवं सउत्तरगुणं च। खिप्पं उवसामेइ, वाहिव्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥३७॥ जहा विसं कुट्ठगयं मंतमूल विसारया। विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥३८॥ एव अट्ठविहंकम्मं, राग-दोस-समज्जिअं। आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्प हणइ सुसावओ ॥३९॥ कयपावोवि मणुस्सो, आलोइअ निंदिअ गुरुसगासे। होइ अइरेग लहुओ, ओहरिअ-भरुव्व भारवहो ॥४०॥ आवस्सएण एएण, सावओ जइवि बहुरओ होइ। दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥४१॥ आलोअणा बहुविहा, नय संभरिआ पडिक्कमण काले। मूलगुण-उत्तर गुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥४२॥ तस्स धम्मस्स केवलि-पन्नत्तस्स, अब्भुट्ठिओमि आराहणाए। विरओमि विराहणाए, तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥४३॥ जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोएअ। सव्वाइ ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥४४॥ जावंत केवि साहू, भरहेरवय महा-

विदेहे अ । सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं. ॥४५॥ चिर संचिय-पावपणासणीइ, भवसय सहस्स महणीए चउवीस-जिण-निग्गिय-कहाइ, वोलंतु मे दिअहा ॥४६॥ मम मंगल मरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ ।सम्मदिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥४७॥ पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं । असद्दहणे अ तहा, विवरीअ परूवणाए अ ॥४८॥ खामेमि सव्व जीवे, सव्वेजीवा खमंतु मे। मित्ति मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणइ ॥४९॥ एवमहं-आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं । तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥५०॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । देवसिअ आलोइअ पडिक्कंता इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खी मुहपत्ति पडिलेहुंजी ? इच्छं'

(ऐसा कहकर मुहपत्ति पडिलेहनी)

(फिर दो वादणा देना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ॥१॥ अणुजाणह-मे मिउग्गहं ॥ २ ॥ निसीहि, अहो, का-यं-का-य संफासं खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताण बहुसुभेण, भे पक्खो वइक्कंतो॥३॥जत्ता भे ? ॥४॥ जवणिज्ज च भे ? ॥५॥ खामेमि खमासमणो, पक्खिअं वइक्कमं आवस्सिआए ॥६॥ पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खिआए,

आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जंकिंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए: जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ॥ १ ॥ अणुजाणह: मे मिउग्गहं ॥ २ ॥ निसीहि, अ-हो, का यं, का-य संफासं, खमणिज्जो मे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण, भे, पक्खो वइक्कंतो ?॥३॥ ज-त्ता भे ? ॥४॥ जवणिज्जं च भे ? ॥५॥ खामेमि खमासमणो ! पक्खिअं वइक्कमं पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खिआए आसायणाए तित्ती-सन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालि-आए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।७॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवान् ! सम्बुद्धा खामणेणं अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर पक्खिअ खामेउं ! "इच्छ" खामेमि पक्खिअं एकपक्खस्स पन्नरसदिवसाणं, पन्नरसराईआण, जंकिंचि अपत्तिअं. परपत्तिअ, भत्ते, पाणे, विणए वेया--वच्चे, आलावे, सलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए,

उवरिभासाए, जंकिंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खिअं आलोउं ? "इच्छं" आलोएमि जो मे पक्खिओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छियव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खि अतिचार आलोउ ? "इच्छ" ऐसा कहके पाक्षिक अतिचार कहना. वह नीचे मुताबिक है.)

पाक्षिक अतिचार.

नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि तहय वीरियंमि । आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ ॥१॥ ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार, इन पांच आचारोंमे जो कोई अतिचार पक्ष दिवसमे सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते, लगा हो, वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं ।

तत्र ज्ञानाचारे आठ अतिचार 'काले विणए बहुमाणे,

आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जंकिंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए; जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ॥ १ ॥ अणुजाणह; मे मिउग्गहं ॥ २ ॥ निसीहि, अ–हो, का यं, का-य संफासं, खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण, भे, पक्खो वइक्कंतो ? ॥३॥ ज-त्ता भे ? ॥४॥ जवणिज्जं च भे ? ॥५॥ खामेमि खमासमणो ! पक्खिअं वइक्कमं पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।७॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवान् ! सम्बुद्धा खामणेणं अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर पक्खिअं खामेउं ! "इच्छं" खामेमि पक्खिअं एकपक्खस्स पन्नरसदिवसाणं, पन्नरसराईआणं, जंकिंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणए वेया-वच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए,

उवरिभासाए, जंकिंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खिअं आलोउं ? "इच्छं" आलोएमि जो मे पक्खिओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खि अतिचार आलोउ ? "इच्छं" ऐसा कहके पाक्षिक अतिचार कहना वह नीचे मुताविक है.)

पाक्षिक अतिचार.

नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि तहय वीरियंमि । आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ ॥१॥ ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार, इन पांच आचारोंमे जो कोई अतिचार पक्ष दिवसमे सूक्ष्म या वादर जानते, अजानते, लगा हो, वह सब मन, वचन, काया कर मिच्छामि दुक्कडं ।

तत्र ज्ञानाचारे आठ अतिचार 'काले विणए बहुमाणे,

उवहाणे तह अनिन्हवणे । वजण अत्थ तदुभए, अट्ठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥ ज्ञान नियमित वक्तमे पढा नहीं, अकाल वक्तमे पढा । विनयरहित, बहुमानरहित. योगोपधानरहित पढा । ज्ञान जिससे पढा उससे अतिरिक्तको गुरु माना, या कहा । देववंदन, गुरुवंदन करते हुए तथा प्रतिक्रमण सज्झाय करते पढते, गुणते, अशुद्ध अक्षर कहा. लगमात्र न्यूनाधिक कहा, अथवा सूत्र अर्थ दोनों असत्य कहे, पढकर भूला, असज्झायके समयमे थिविरावलि प्रतिक्रमण उपदेशमाला आदि सिद्धात पढा । अपवित्र स्थान मे पढा, विना साफ किये घृणित भूमिपर रखा। ज्ञानके उपकरण तखती, पोथी, ठवणी, कवली, माला पुस्तक रखने की रील, कागज, कलम, दवात आदि के पैर लगा, थूक लगा अथवा थूंकसे अक्षर मिटाया । ज्ञान के उपकरण को मस्तक के नीचे रखा, अथवा पास मे लिये हुए आहार निहार किया । ज्ञान द्रव्य भक्षण करनेवाले की उपेक्षा की, ज्ञानद्रव्य की सार संभाल न की, उलटा नुकसान किया । ज्ञानवंतके उपर द्वेष किया, इर्षा की तथा अवज्ञा आशातना की । किसीको पढने गुनने मे विघ्न डाला । अपने जानपने का मान किया, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान और केवलज्ञान, इन पाचों ज्ञानों मे श्रद्धा न की, गुंगे तोतलो की हासी की, इत्यादि ज्ञानाचार सवन्धी जे कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या

पडिलेहण न हुई हो, गुरु के वचन को मान न दिया हो, इत्यादि दर्शनाचार संबंधी जो कोई अतिचार पक्षदिवस मे सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन वचन कायाकर भिच्छामि दुक्कडं ॥

चारित्राचार के आठ अतिचार–"पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहिं समिइहिं तिहि गुत्तीहिं । एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो ॥४॥" इर्यासमिति, भाषा समिति, एषणा-समिति, आदानभंडमत्तनिक्षेपणासमिति, पारिष्ठापनिकास-मिति, मनोगुप्ति,वचनगुप्ति,कायगुप्ति.यहअष्ट प्रवचनमाता सामायिक पौषधादिक मे अच्छी तरह पाली नहीं. चारित्रा-चार संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस मे सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

विशेषतः श्रावकधर्म संबंधी श्रीसम्यक्त्वमूल बारह व्रत, सम्यक्त्व के पाच अतिचार–"संका कंख विगिच्छा" शंका—श्रीअरिहत प्रभु के बल. अतिशय, ज्ञान, लक्ष्मी, गांभीर्यादिकगुण, शाश्वती प्रतिमा, चरित्रवान के चारित्र मे तथा जिनेश्वर देव के वचन मे संदेह किया, आकाक्षा ब्रह्मा. विष्णु, महेश, क्षेत्रपाल, गरुड, गणेश, गूगा, दिक्पाल, पादर देवता, गोत्रदेवता, ग्रहपूजा, गणेश, हनुमान, सुग्रीव, वाली, माता, भैरव भवानी, मसानी, आदिक तथा देश,

नगर, ग्राम, गोत्र के जुदे जुदे देवादिकों का प्रभाव देख-कर शरीर मे रोगातक कष्टादिके आने पर इसलोक, पर-लोक के लिये पूजा मानता की. बौद्ध, सांख्यादिक संन्यासी, भगत, लिंगिये, योगी, फकीर, पीर, इत्यादि अन्यदर्शनियो के मंत्र तंत्र चमत्कार को देखकर, बिना परमार्थ जाने मोहित हुआ, कुशास्त्र पढा, सुना, श्राद्ध, संवत्सरी, होली, राखडीपूनम, राखी, अजाएकम, प्रेतदूज, गौरीतीज, गणेश-चौथ, नागपंचमी, झीलणषष्ठी, सीलसप्तमी, दुर्गाष्टमी, रामनवमी, विजयादशमी, व्रत एकादशी, वत्सद्वादशी, धन-तेरश, अनंतचौदश, शिवरात्री, कालीचौदश, अमावास्या, आदित्यवार, उत्तरायण, याग, भोगादि किये, कराये, करते को भला माना. पीपल मे पानी डाला, डलवाया. कुवा, तलाव, नदी, द्रह, बावडी, समुद्र, कुण्ड उपर पुण्य निमित्त स्नान और दान किया, कराया, अनुमोदन किया, शनिश्चर, माघ–मास, नवरात्रिका स्नान किया नवरात्रिव्रत किया, अज्ञानियों के माने हुए व्रतादि किये, कराये,। वितिगिच्छा धर्मसंबंधी फलका सन्देह किया, जिन वीतराग अरिहंत भगवान धर्म के आगर, विश्वोपकार सागर, मोक्ष मार्गदातार इत्यादि गुणयुक्त जान कर पूजा नहीं इसलोक परलोक संबंधी भोग-वांछा के लिये पूजा की. रोगआतक कष्ट के आने पर क्षीण वचन बोला. मानता मानी, महात्मा महासती के आहार,

पडिलेहण न हुई हो, गुरु के वचन का मान न दिया हो, इत्यादि दर्शनाचार संबंधी जो कोई अतिचार पक्षदिवस मे सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

चारित्राचार के आठ अतिचार—"पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहिं समिइहिं तिहि गुत्तीहिं । एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो ॥४॥" इर्यासमिति, भाषा समिति, एषणासमिति, आदानभंडमत्तनिक्षेपणासमिति, पारिष्ठापनिकासमिति, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति. यहअष्ट प्रवचनमाता सामायिक पौषधादिक मे अच्छी तरह पाली नहीं. चारित्राचार संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

विशेषतः श्रावकधर्म संबंधी श्रीसम्यक्त्वमूल बारह व्रत, सम्यक्त्व के पाच अतिचार—"संका कंख विगिच्छा" शंका—श्रीअरिहंत प्रभु के बल. अतिशय, ज्ञान, लक्ष्मी, गाम्भीर्यादिकगुण, शाश्वती प्रतिमा, चरित्रवान के चारित्र मे तथा जिनेश्वर देव के वचन मे संदेह किया, आकांक्षा ब्रह्मा, विष्णु, महेश, क्षेत्रपाल, गरुड, गणेश, गूगा, दिक्पाल, पादर देवता, गोत्रदेवता, ग्रहपूजा, गणेश, हनुमान, सुग्रीव, वाली, माता, भैरव भवानी, मसानी, आदिक तथा देश,

पानी, मलिन वस्त्र आदिकी निंदा की, कुचारित्री को देखकर चारित्रवान पर अभाव हुआ. मिथ्यादृष्टि की पूजा प्रभावना देख कर प्रशंसा की, दाक्षिण्यता से उसका धर्म माना, मिथ्यात्व को धर्म कहा। इत्यादि श्रीसम्यक्त्व व्रत संबंधी जो कोई अतिचार, पक्ष दिवस मे सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो वो सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

पहले स्थूल प्राणातिपातविरमणव्रत के पांच अतिचार—'वह वध छविच्छेए' द्विपद, चतुष्पद आदि जीव को क्रोधवश ताडन किया, घाव लगाया, जकड कर बाधा, अधिक बोझ डाला, निर्लांछन कर्म नासिका विंधवाई, कर्णछेदन करवाया, खसी किया, दाना घास, पानी के समय सारवार न की लेणदेण मे किसी के वदले किसी को भूखा रखा. पास मे खडा होकर मरवाया, कैद करवाया। सडे हुए धान को विना शोधे काम मे लिया, अनाज विना शोधे पिसवाया, धूप मे सुकाया। पानी यतना से न छाना, इंधन, लकडी, उपले, गोहे आदि विना देखे बाले. उस मे सर्प, विच्छु, कानखजूरा, किडी, मकौडी आदि जीवका नाश हुआ। किसी जीवको अच्छी जगह पर न रखा। चिल्ह, काग, कवूतर आदि के रहने की जगह का नाश किया. घौंसले तोडे। चलते फिरते या अन्य कुछ काम,

करते निर्दयपना किया, भली प्रकार जीवरक्षा न की। बिना छाने पानी से स्नानादि कामकाज किया, कपडे धोये. यतनापूर्वक कामकाज न किया। चारपाइ, खटोला, पीढा पीढी आदि धूप में रखे, डंडे आदि से झडकाये. जीव संसक्त जमीन को लींपी, दलते-कूटते, लिपते, या अन्य कुछ कामकाज करते यतना न की. अष्टमी-चौदश आदि तिथी का नियम तोडा, धूनी करवाई। इत्यादि पहले स्थूल प्राणातिपातविरमणव्रत संबधी जो कोई अतिचार, पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

दूसरे स्थूल मृषावाद विरमणव्रतके पाच अतिचार, 'सहसा रहस्स दारे' सहसात्कारे बिना विचारे एकदम किसी को अयोग्य आल, कलंक दिया। स्वस्त्री संबंधी गुप्त बात प्रगट की, अथवा अन्य किसीका मंत्रभेद मर्म प्रगट किया। किसी को दुःखी करने के लिये खोटी सलाह दी, झूठा लेख लिखा, झूठी साक्षी दी, अमानत में खयानत की, किसीकी धरोड वस्तु पीछी न दी, कन्या, गौ, भूमि संबंधी लेन देन में लडते-झगडते वादविवाद में मोटा झूठ बोला. हाथ पैर आदि की गाली दी. इत्यादि स्थूल मृषावाद विरमणव्रत संबंधी जो कोई अतिचार, पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

पानी, मलिन वस्त्र आदिकी निंदा की, कुचारित्री को देखकर चारित्रवान पर अभाव हुआ, मिथ्यादृष्टि की पूजा प्रभावना देख कर प्रशंसा की, दाक्षिण्यता से उसका धर्म माना, मिथ्यात्व को धर्म कहा। इत्यादि श्रीसम्यक्त्व व्रत संबंधी जो कोई अतिचार, पक्ष दिवस मे सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो वो सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

पहले स्थूल प्राणातिपातविरमणव्रत के पांच अतिचार—'वह बध छविच्छेए' द्विपद, चतुष्पद आदि जीव को क्रोधवश ताडन किया, घाव लगाया, जकड कर बांधा, अधिक बोझ डाला, निर्लांछन कर्म नासिका विंधवाई, कर्णछेदन करवाया, खसी किया, दाना, घास, पानी के समय सारवार न की लेणदेण मे किसी के बदले किसी को भूखा रखा. पास मे खडा होकर मरवाया, कैद करवाया। सडे हुए धान को विना शोधे काम में लिया, अनाज विना शोधे पिसवाया, धूप में सुकाया। पानी यतना से न छाना, इंधन, लकडी, उपले, गोहे आदि विना देखे वाले. उस मे सर्प, विच्छु, कानखजूरा, किडी, मकौडी आदि जीवका नाश हुआ। किसी जीवको अच्छी जगह पर न रखा। चिल्ह, काग, कबूतर आदि के रहने की जगह का नाश किया. घौसले तोडे। चलते फिरते या अन्य कुछ काम,

तृतीय स्थूल अदत्तादान विरमणव्रत के पाच अतिचार, "तेनाहडप्पओगे" घर, बाहिर, खेत, खला में विना मालिक के भेजे वस्तु ग्रहण की, अथवा विना आज्ञा अपने काम मे ली, चोरी की वस्तु ली, चौर को सहायता दी. राज्य विरुद्ध कर्म किया, अच्छी बुरी, सजीव, निर्जीव, नई पुरानी वस्तु का भेल संभेल किया जकात की चोरी की, लेते देते तराजू की दंडी चढाई. अथवा देते हुए कमती दिया, लेते हुए अधिक लिया, रिश्वत खाई, विश्वासघात किया, ठगी की, हिसाव किताव मे किसी को घोखा दिया। माता, पिता, पुत्र, मित्र, स्त्री आदि के साथ ठगी कर किसी को दिया, अथवा पुंजी अलाहदा रखी, अमानत रखी हुई वस्तु से इनकार किया। किसी को हिसाव किताव मे ठगा. पडी हुई चीज उठाई–इत्यादि स्थूल अदत्तादान विरमण व्रत संवंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस मे सूक्ष्म या वादर जानते, अजानते लगा हो, वह सव मन वचन काया कर मिच्छामि दुक्कडं ॥

चौथे स्वदारासंतोप परस्त्रीगमन विरमण व्रत के पांच अतिचार, 'अप्परिग्गहियाइत्तर' परस्त्रीगमन किया, अविवाहिता, कुमारी, विधवा, वेश्यादिक से गमन किया, अनंगक्रीडा की, काम आदि की विशेप जाग्रति की। अभिलापा से सरागवचन कहा। अष्टमी, चौदश आदि पर्व-

तिथि का नियम तोडा, स्त्री के अंगोपांग देखे, तीव्र अभि-लाषा की, कुविकल्प चितवन किया, पराये नाते जोडे; गुडडे गुड्डीयों का विवाह किया, वा कराया; अतिक्रम; व्यतिक्रम अतिचार, अनाचार, स्वप्न, स्वप्नातर हुआ, कुस्वप्न आया, स्त्री, नट, विट, भाड, वेश्यादिक से हास्य किया, स्वस्त्री में संतोष न किया, इत्यादि स्वदारा संतोष परस्त्रीगमन विरमण व्रत संबंधी जो कोई अतिचार, पक्ष दिवस मे सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

पाचमे स्थूल परिग्रह परिमाण व्रत के पांच अति-चार "धण धन्न खित्त वत्थु" धन, धान्य, क्षेत्र, वास्तु, सोना चांदी, बर्तन आदि द्विपद दास, दासी नौकर चतुष्पद—गौ बेल घोडादि नव प्रकार के परिग्रह का नियम न लिया; लेकर बढाया, अथवा अधिक देखकर, मूर्छावश माता, पिता, पुत्र, स्त्री के नाम किया, परिग्रह का प्रमाण किया नहीं, करके भुलाया, याद न किया० इत्यादि स्थूल परिग्रह परिमाण व्रत संबंधी जो कोई अतिचार, पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर, जानते, अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

छट्ठे दिक्परिमाण व्रत के पांच अतिचार, "गमणस्स उ परिमाणे" ऊर्ध्वदिशी, अधोदिशी, तिर्यग्दिशी,

जाने आने के नियमित प्रमाण उपरांत भूल से गया, नियम तोडा, प्रमाण उपरांत सासारिक कार्य के लिये अन्य देश से वस्तु मंगवाई, अपने पास से वहाँ भेजी, नौका जहाजादि द्वारा व्यापार किया, वर्षाकाल में एक गाम से दूसरे गाम मे गया. एक दिशा प्रमाण को कम करके दूसरी दिशा के प्रमाण को अधिक किया। इत्यादि छट्ठे दिक्परिमाण व्रत संबंधी जो कोई अतिचार, पक्ष दिवस मे सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

सातमे भोगोपभोग परिमाण व्रत के भोजन आश्री पाच और कर्मआश्री पंद्रह अतिचार, "सचित्ते पडिवद्धे" सचित्त खानपान की वस्तु नियम से अधिक अंगीकार की, सचित्त से मिली हुइ खार, तुच्छ औषधि का भक्षण किया। अपक्व आहार, दुपक्व आहार किया, कोमल इमली, बुंट, भुट्टे, फलिया आदि वस्तु खाइ

सचित्त १ दव्व २ विगई ३ वाणह ४ तंबोल ५ वत्थ ६ कुसुमेसु ७। वाहण ८ सयण ९ विलेवण १० बंभ ११ दिसी १२ न्हाण १३ भत्तेसु १४ ॥१॥

यह चौदह नियम लिये नहीं, लेकर भुलाये, वड, पीपल, पिलंखण, कट्ठवर, गूलर, यह पाच फल, मदिरा, मांस, शहद, मक्खन यह चार महाविगई, बरफ, ओले,

कच्ची मिट्टी, रात्रिभोजन, बहुबीजफल, आचार, घोलवडे, द्विदल, बैंगण, तुच्छफल, अजानाफल, चलितरस, अनन्तकाय, यह बावीस अभक्ष्य, सूरन, जिमिकंद, कच्ची हलदी, सतावरी, कच्चा नरकचूर, अदरख, गुवारपाठा, थोर, गिलोर, लसन, गाजर, गटा, प्याज, गोगलुं, कोमलफल, फूल, पात्र, थेगी, हरामोत्था, अमृतवेल, मूली, पदवहेडा, आलु, कचालु, रतालु, पिंडालु, आदि अनंतकायका भक्षण किया. सूर्योदय से पहेले भोजन किया.

तथा कर्मतः पंद्रह कर्मादान—इंगालकम्मे, वणकम्मे, साडिकम्मे, भाडिकम्मे, फोडिकम्मे. यह पाच कर्म। दंतवाणिज्ज, लक्खवाणिज्ज, रसवाणिज्ज, केसवाणिज्ज, विसवाणिज्ज, यह पाचवाणिज्ज। जंतपिल्लणकम्म, निल्लंछनकम्म, दवग्गिदावणया, सरदहतलायसोसणया, असईपोसणया यह पाच सामान्य, एवं पांच कर्म, पाच वाणिज्य, पांच सामान्य कुल पंद्रह कर्मादान, महा आरम्भ किये, कराये, करते को अच्छा समझा; रंगने का व कोलसा आदिक का काम किया, इट निभाडा पकाये, फूले, चणा, पक्वान कर वेचे. वासी मक्खन तपाया, फागुन मास उपरांत तिल रखा। श्वान, बिल्ली आदि पोषे, पाले, महासावद्य पापकारी कठोर काम किया। इत्यादि सातमे भोगोपभोग व्रतसंबंधीजो कोई अतिचार, पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते, लगा हो, वह सब मन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

आठमे अनर्थदंड विरमण व्रत के पांच अतिचार, "कंदप्पे कुक्कुइए" कंदर्प–कामाधीन होकर नट, विट, वेश्यादिक से हास्य, खेल, क्रीडा, कुतुहल किया, पुरुष के हावभाव रूप शृङ्गार संबंधी वार्ता की, विषयरसपोषक कथा की, स्त्रीकथा, देशकथा, राजकथा, भक्तकथा, यह चार विकथा की. पराई भाजगड की, किसीकी चुगलचोरी की, आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान ध्याया खाडा, कटार, काश, कुहाडी, रथ, उखल, मुसल, अग्नि, चक्की आदिक वस्तु दाक्षिण्यता वश से किसी को मागी दी पापोपदेश किया अष्टमी, चतुर्दशी के दिन दलने पिसने का नियम तोडा मूर्खता से असंबद्ध वाक्य बोला, प्रमादाचरण सेवन किया, घी, तैल, दूध, दहीं, गुड, छास, आदिका भाजन खुला रखा, उस मे जीवादिकका नाश हुआ. वासी माखन रखा, और तपाया, न्हाते, धोते, दातण करते जीव अकुलित मोरी मे पानी डाला झुले मे झूला, जुआ खेला, नाटक आदि देखा, ढोर ढंगर खरीद-वाये, कर्कश वचन कहा, किचकिची ली. ताडना तर्जना की, मत्सरता धारण की, श्राप दिया, भैंना, मेढा, मुरगा, कुत्ते, आदिक लडवाये, या इनकी लडाई देखी, ऋद्धिमान की ऋद्धि देख इर्षा की. मिट्टी, नमक, धान, विनोले विना कारण मसले, हरी वनस्पति खुंदी. शस्त्रादिक बनवाये, राग मोह वश से एक का भला चाहा, एक का बुरा चाहा.

मृत्यु की वांछा की, मैना, तोते, कबुतर, बटेर, चकोरादि पक्षियों को पींजरे में डाला इत्यादि आठमे अनर्थदंड विरमणव्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

नवमे सामायिक व्रत के पाच अतिचार, "तिविहे दुप्पणिहाणे" सामायिक में संकल्प, विकल्प किया; चित्त स्थिर न रखा, सावद्य वचन बोला, प्रमार्जन किये विना शरीर हलाया, इधर उधर किया शक्तिके होते हुए सामायिक न किया. सामायिक में खुले मुंह बोला, नींद ली, विकथा की, घर संबंधी विचार किया, दीपक या बिजली का प्रकाश शरीर पर पडा, सचित्त वस्तु का संघट्टा हुआ. स्त्री, तिर्यंच आदि का निरंतर परपर संघट्टा हुआ, मुहपत्ति संघट्टी, सामायिक अधुरा पारा, विना पारे उठा । इत्यादि नवमे सामायिक व्रत संबंधी को कोई अतिचार, पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते, लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कड ॥

दशवे देशावगासिक व्रत के पाच अतिचार, 'आणवणे पेसवणे आणवणप्पओगे, पेसवणप्पओगे, सद्दाणुवाई, रूवाणुवाई, बहियापुग्गलपक्खेवे नियमित भूमि में बाहिर से वस्तुएं मंगवाई अपने पास से अन्यत्र भिजवाई, खुंखारादि शब्द

कर के, रूप दिखा के वा कंकरादि फेककर, अपना होना मालूम किया । इत्यादि दशमे देवशागासिक व्रतसंबधी जो कोई अतिचार,पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते,अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काय।कर मिच्छामि दुक्कडं ॥

ग्यारहवों पौषधोपवास व्रत केपांच अतिचार,"संथारूच्चार विहि" अप्पडिलेहिअ दूप्पडिलेहिअ सिज्जासंथारए अप्पडि लेहिअ,दूप्पडिलेहिअ उच्चारपासवण भूमि, पौषध लेकर सोने की जगह पर बिना पुजे प्रमार्जे सोया । स्थडिलादि की भूमि भली प्रकार शोधी नहीं । लघुनीति करने या परठने समय "अणुजाणह जस्सुग्गह' न कहा परठे बाद तीन बार वोसिरे वोसिरे न कहा, जिनमंदिर और उपाश्रय में प्रवेश करते हुए निसीहि और बाहिर निकलते आवस्सही तीन बार न कही. वस्त्रादि उपधि की पडिलेहणा न की । पृथ्वी-काय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय का संघट्टा हुआ । संथारा पोरिसी पढनी भुलाई बिना संथारे जमीन पर सोया पोरिसी में निद्द ली । पारणादि की चिंता की. समय पर देववंदन न किया. पौषध देरी से लिया और जल्दी से पारा. पर्वतिथि को पौषध न लिया । इत्यादि ग्यारहवे पौषधव्रत सबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस मे सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

बारहवे अतिथिसंविभाग व्रत के पांच अतिचार,'सच्चित्ते निक्खिवणे' सचित्त वस्तु के संघट्टेवाला अकल्पनीय आहारपाणी साधु,साध्वी को दिया,देने की इच्छा से सदोष वस्तु को निर्दोष कही, देने की इच्छा से पराई वस्तु को अपनी कही, न देने की इच्छा से निर्दोष वस्तु को सदोष कही. न देने की इच्छा से अपनी वस्तु को पराई कही, गोचरी के वक्त इधर उधर हो गया, गोचरी का समय टाला. बेवक्त साधुमहाराज की प्रार्थना की, आये हुए गुणवान की भक्ति न की, शक्ति के होते हुए स्वामीवात्सल्य न किया, अन्य किसी धर्मक्षेत्र (पाठशाला, लाइब्रेरी, गुरुकुल, पांजरापोल आदि) को पडता देख मदद न की; दीन दुःखी की अनुकंपा न की, इत्यादि बारहवे अतिथि संविभाग व्रत संबंधी जो कोई अतिचार, पक्ष दिवस मे सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते, लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

संलषणा के पांच अतिचार, "इहलोए परलोए" इहलोगासंसप्पओगे, परलोगासंसप्पओगे, जीविआसंसप्पओगे, मरणासंसप्पओगे, कामभोगासंसप्पओगे। धर्म के प्रभाव से इहलोक संबंधी राजऋद्धि भोगादि की वांछा की। परलोक में देवदेवेन्द्र, विद्याधर, चक्रवर्ती आदि पदवी की इच्छा की. सुखी अवस्था में जीने की इच्छा की। दुःख आने

पर मरने की वांछा की। कामभोग की वाछा की। इत्यादि संलेषणा व्रत संबंधी जो कोई अतिचार, पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो; वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

तपाचार के बारह भेद, छ बाह्य, छ अभ्यंतर, "अणसण मूणोयरिया" अनशन–शक्ति के होते हुए पर्वतिथि को उपवासादि तप न किया। ऊनोदरी दो चार ग्रास कम न खाये। वृत्तिसंक्षेप–द्रव्य खाने की वस्तुओं का संक्षेप न किया, रस–विगय त्याग न किया। कायक्लेश–लोचादि कष्ट सहन न किया, संलीनता–अंगोपाग संकोच न किया. पच्चक्खाण तोडा, भोजन करते समय एकासणा आविल प्रमुख मे चौकी पटडा, अखलादि हिलता ठीक न किया. पच्चक्खण पारना भूलाया, बेठते नवकार न पढा, उठते पच्चक्खान न किया. निवि, आविल, उपवासादि तप में भूलसे कच्चा पानी पिया. वमन हुआ. इत्यादि बाह्य तप संबंधी जो कोई अतिचार, पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो, वह सब मन, बचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

अभ्यंतर तप "पायच्छित्तं विणओ" शुद्धांतःकरण–पूर्वक गुरु महाराज से आलोचना न ली, गुरु की दी हुई आलोचना संपूर्ण न की. देव, गुरु, संघ, साधर्मी का विनय न

क्रिया. बाल, वृद्ध, ग्लान, तपस्वी आदि की वेयावच्च न की. वाचना, पृच्छना, परावर्तना, अनुप्रेक्षा, धर्मकथा लक्षण पांच प्रकार का स्वाध्याय न किया. धर्मध्यान, शुक्लध्यान ध्याया नहीं. आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान ध्याया, दुःखक्षय, कर्मक्षय निमित्त दस, वीस, लोगस्स का काउस्सग्ग न किया. इत्यादि अभ्यंतर तप संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस मे सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते, लगा हो, वह सव मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

वीर्याचार के तीन अतिचार, पढते, गुणते, विनय, वेयावच्च, देवपूजा, सामायिक, पौषध, दान, शील, तप, भावनादिक धर्मकृत्य मे मन, वचन, काया का बल-वीर्य-पराक्रम फोरा नहीं, विधिपूर्वक पंचाग खमासमण न दिया. द्वादशावर्त्त वंदन का विधि भली प्रकार न किया. अन्यचित्त निरादर से बैठा. देववंदन, प्रतिक्रमण में जल्दी की। इत्यादि वीर्याचार संबंधी जो कोई अतिचार, पक्ष दिवस मे सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, कायाकार मिच्छामि दुक्कड ॥

नाणाई अट्ठपइवय, सम्मसंलेहण पण पन्नर कम्मेसु ।
बारस तप विरिअतिगं, चउव्वीसं सयं अइयारा ॥१॥

"पडिसिद्धाण करणे" प्रतिषेध अभक्ष, अनंतकाय, वहुवीजभक्षण, महारंभ, परिग्रहादि किया, देवपूजा, षट्कर्म,

सामायिकादि छ आवश्यक, विनयादिक अरिहंत की भक्ति-प्रमुख करणीय कार्य किये नहीं. जीवजीवादिक सूक्ष्म विचार की सद्दहणा न की. अपनी कुमति से उत्सूत्रप्ररूपणा की तथा प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्या-ख्यान, पैशुन्य, रति अरति, परपरिवाद, मायामृषावाद, मिथ्यात्वशल्य यह अठारह पापस्थान किये, कराये, अनुमोदे. दिन कृत्य, प्रतिक्रमण, विनय, वैयावृत्य न किया, और भी जो कुछ वीतराग की आज्ञा से मैंने विरुद्ध किया, कराया, करते को भला जाना, इन चार प्रकार के अतिचार मे जो कोई अतिचार, पक्ष दिवस मे सूक्ष्म बादर जानते, अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कड ॥

एवंकारे श्रावकधर्ममे सम्यक्त्वमूल बारह व्रत संबंधी एक सो चौवीस अतिचारों में जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते, अजानते लगा हो, वह सब मन, वचन, कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ॥

(पाक्षिक अतिचार)

नाणम्मि दंसणम्मि अ, चरणम्मि तवम्मि तहय वीरीयम्मि, आयरणं अयारो, इअ एसो पंचहा भणियो. (१) ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार, ए पंचविध आचारमांहि अनेरो जे कोई अतिचार+पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बादर, जाणता अजाणता हुओ होय, ते सविहुं मन, वचन, कायाये करी मिच्छामि दुक्कडं (१)

तत्र 'ज्ञानाचारे' आठ अतिचार, काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहअनिन्हवणे; वंजण अत्थ तदुभए, अट्ठविहो नाणमायारो (१) ज्ञानकालवेलाये भण्यो गुण्यो नहीं, अकाळे भण्यो, विनय-हीन बहुमान हीन; योग-उपधान-हीन, अनेरा कने भणी अनेरो गुरु कह्यो। देव-गुरु वांदणे, पडिक्कमणे, सज्झाय करता, भणतां, गणता, कूडो अक्षर काने मात्राये अधिको ओछो भण्यो, सूत्र कूडुं कह्युं, अर्थ कूडो कह्यो। तदुभय कूडां कह्यां, भणीने विसार्यां, साधुतणे धर्मे काजो अणउद्धर्ये, दाडो अणपडिलेह्ये, वसति अणशोधे,

+अहिं चउमासी पडिक्कमणामा-'चउमासी दिवसमांही' अने सवच्छरी पडिक्कमणामा 'सवच्छरी दिवसमांही' बोलवु ए प्रमाणे दरेक ठेकाणे जाणवु'

अणपवेसे, असज्झाय अणोज्झाय माहे श्री दशवैकालिक प्रमुख सिद्धात भण्यो गण्यो, श्रावकतणे धर्मे, स्थविरावलि, पडिक्कमणा उपदेशमाला प्रमुख सिद्धात भण्यो गण्यो, काळवेळा काजो अणउद्धर्यें पढयो, ज्ञानो-पगरण-पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकारवाली, सापडा, सापडी, दस्तरी, वही, ओलिया प्रमुख प्रत्ये पग लाग्यो, थुकं लाग्युं, थुंके करी अक्षर माज्यो, ओशीसे धर्यों, कने छता आहार नीहार कीधो, ज्ञानद्रव्य भक्षता उपेक्षा कीधी, प्रज्ञापराधे विणाश्यो, विणसतां उवेख्यो; छती शक्तिए सार-संभाळ न कीधी, ज्ञानवंत प्रत्ये द्वेष मत्सर चिंतव्यो । अवज्ञा आशातना कीधी । कोई प्रत्ये भणता गणता अन्तराय कीधो । आपणा जाणपणातणो गर्व चिंतव्यो । मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनः पर्यवज्ञान, केवलज्ञान, ए पंचविध ज्ञानतणी असद्दहणा कीधी । कोई तोतडो बोबडो देखी हस्यो, वितकर्यो अन्यथा प्ररूपणा कीधी । ज्ञानाचार विषईओ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमाहि, सूक्ष्म वादर जाणता, अजाणता हुओ होय, ते सविहुं मन, वचन, कायाए करी, तस्स मिच्छामि दुक्कडं (१) ।

दर्शनाचारे आठ अतिचार, निस्संकिय निक्कंखिय, निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी अ, उववूह थिरीकरणे, वच्छल्लप्पभावणे अट्ठ (१) । देव-गुरू-धर्म तणे विषे निःशंकपणु न कीधु, तथा एकात निश्चय न कीधो. धर्मसंवधीया फलतणे विषे निःसंदेह बुद्धि धरी नहीं । साधु साध्वीना मल-मलीन गात्र

देखी दुगंछा निपजावी, कुचारित्रिया देखी चारित्रिया उपर अभाव हुओ। मिथ्यात्वीतणी पूजा प्रभावना देखी मूढदृष्टिपणुं कीधुं। तथा संघमाहे गुणवंततणीअनुपवृंहणा कीधी। अस्थिरीकरण, अवात्सल्य, अप्रीति, अभक्ति निपजावी। अबहुमान कीधुं। तथा देवद्रव्य, गुरुद्रव्य, ज्ञानद्रव्य, साधारणद्रव्य, भक्षित उपेक्षित प्रज्ञापराधे विणाश्यां, विणसतां उवेख्या, छती शक्तिए सार संभाळ न कीधी। तथा साधर्मिक साथे कलह कर्मबंध कीधो। अधोती, अष्टपड-मुखकोश पाखे देवपूजा कीधी। बिंबप्रत्ये वासकुंपी, धूपधाणुं, कळशतणो ठवको लाग्यो, बिम्ब हाथ थकी पाडयुं। उसास निःसास लाग्यो। देहरे उपाश्रये मलश्लेष्मादिक लोह्युं। देहरा माहे हास्य, खेल, केलि, कुतुहल आहार निहार कीधा। पान, सोपारी, निवेदीया खाधां। ठवणायरिय हाथ थकी पाड्या; पडिलेहवा विसार्या, जिनभवने चोराशी आशातना, गुरु गुरूणी प्रत्ये तेत्रीश आशातना कीधी होय। गुरुवचन 'तहत्ति' करी पडिवज्युं नहीं, दर्शनाचार विषईयो अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमाहि, सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणता हुओ होय, ते सविहु मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं (२)

चारित्राचारे आठ अतिचार ॥ पणिहाण जोगजुत्तो, पचहिं समिइहि तीहिं गुत्तीहिं; एस चरित्तायारो, अट्ठविहो, होइ नायव्वो। (१) ईर्यासमिति ते अणजोये हिंड्या। भाषा-

समिति ते सावद्य वचन बोल्या। एषणा समिति ते-तृण डगल, अन्न, पाणी, असूझतु लीधुं.आदानभडंमत्तनिक्खेवणा-समिति ते-आसन, शयन, उपकरण, मातरूं प्रमुख अणपुंजी जीवाकुल भूमिकाए मूक्युं-लीधु ,पारिष्ठापनिकासमिति ते-मल, मूत्र,श्लेष्मादिक अणपुंजी जीवाकुल भूमिकाए परठव्युं, मनोगुप्ति मनमा आर्त्त-रौद्रध्यान ध्यायां,वचनगुप्ति सावद्य वचन बोल्या। कायगुप्ति-शरीर अणपडिलेह्यु हलाव्युं, अणपुंजे बेठा। ए अष्ट प्रवचन माता ते (साधुतणे धर्मे सदैव अने) श्रावकतणे धर्मे सामायिक पोसह लीधे, रूडी पेरे पाळ्या नहीं, खंडणा विराधना हुई। चारित्राचार विषइयो अनेरो जे कोई अतिचार, पक्ष दिवसमाहि सूक्ष्म बादर जाणता अजाणता हुओ होय, ते सविहु मन, वचन, कायाए करी, तस्स मिच्छामि दुक्कडं (३).

विशेषतः-श्रावकतणे धर्मे श्रीसम्यक्त्व मूल बार व्रत, सम्यक्त्वतणा पाच अतिचार ॥ संका कंख विगिच्छा० ॥ शंका-श्रीअरिहंततणा बळ, अतिशय, ज्ञानलक्ष्मी, गांभीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा, चारित्रियाना चारित्र, श्री जिन-वचन तणो संदेह कीधो, आकाक्षा-ब्रह्मा. विष्णु, महेश्वर, क्षेत्रपाल, गोगो,आसपाल, पादरदेवता, गोत्रदेवता, ग्रहपूजा। विनायक, हनुमत, सुग्रीव, वाली, नाह, इत्येवमादिक देश, नगर, गाम, गोत्र, नगरी, जुजुआ, देव देहराना प्रभाव देखी रोग आतंक कष्ट आव्ये इहलोक परलोकार्थे पूज्या, मान्या,

सिद्ध विनायक जीराउलाने मान्युं-इच्छ्युं । बौद्ध-साख्यादिक संन्यासी, भरडा, भगत, लिंगिया, जोगिया, जोगी, दरवेश अनेरा दर्शनीया तणो कष्ट, मंत्र, चमत्कार देखी, परमार्थ जाण्या विना भूलाव्या, मोह्या । कुशास्त्र शीख्या । साभळ्या. श्राद्ध, संवत्सरी, होळी, बळेव, माहिपूनम, अजा-पडवो, प्रेतबीज, गौरीत्रीज, विनायक-चोथ, नाग-पचमी, झीलणा छट्ठी, सील-सातमी, ध्रुव आठमी, नौली-नवमी, अहवा दशमी, व्रत-अग्यारशी, वत्स-बारशी, धन-तेरशी, अनंत-चउदशी, अमावास्या, आदित्यवार, उत्तरायण, नैवेद्य कीधा । नवोदक, याग भोग उतारणां कीधा, कराव्यां, अनुमोद्या. पींपळे पाणी घाल्या, घलाव्या, घर बाहिर क्षेत्रे, खळे, कुवे, तळावे, नदीए, द्रहे, वावीए, समुद्र, कुडे, पुन्य-हेतु स्नान कीधा. कराव्या, अनुमोद्या, दान दीधा । ग्रहण शनिश्चर, मह्रा मासे नवरात्री न्हाया । अजाणना थाप्यां. अनेराइ व्रतव्रतोला कीधा कराव्या. 'वितिगिच्छा' धर्म संबधीया फलतणे विषे संदेह कीधो । जिन अरिहंत धर्मना आगर, विश्वोपकारसागर, मोक्षमार्गना दातार इस्या. गुण भणी न मान्या, न पूज्या । महासती, महात्मानी इहलोक परलोक संबंधीया भोगवाछित पूजा कीधी । रोग, आतंक कष्ट आव्ये खीण वचन भोग मान्या, महात्मानां भात, पाणी, मल, शोभातणी निंदा कीधी । कुचारित्रिया देखी चारित्रिया उपर कुभाव हुओ । मिथ्यात्वी तणी पूजा प्रभावना देखी प्रशंसा कीधी; प्रीति

माडी; दाक्षिण्य लगे तेहनो धर्म मान्यो कीधो ॥ श्रीसम्यक्-त्वव्रत-विषइओ अनेरो जे कोई अतिचार, पक्ष दिवसमाहि, सूक्ष्म वादर जाणता अजाणता हुओ होय, ते सविहु मन वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं (१).

पहेले स्थूल प्राणातिपात-विरमणव्रते पांच अतिचार ॥ वहबंध-छविच्छेए० (१) द्विपद चतुष्पद प्रत्ये रीसवशे गाढो घाव घाल्यो। गाढे बंधने बान्ध्यो। अधिक भार घाल्यो। निर्लाछन कर्म कीधा। चारा पाणी तणी वेळाये सार-संभाळ न कीधी। लेहणे देहणे किणही प्रत्ये लंघाव्यो। तेणे भूख्ये आपणे जम्या, कन्हे रही मराव्यो। बंदीखाने घलाव्यो। सळ्यां धान्य तावडे नाख्या, दळाव्या भरडाव्या, शोधी न वावर्या। इंधण, छाणा अणशोध्या बाळ्या, ते माहि साप, विछी, खजुरा; सरवला, माकड, जुआ, गिगोडा, साहता मुआ, दुहव्या, रुडे स्थानके न मूक्या. कीडी, मंकोडी ना इंडा विछोह्या, लिख फोडी, उदेही, कीडी मंकोडी, धीमेल, कातरा, चुडेल, पतंगीया, देडकां, अळसीया, इयळ, कुंता, डास, मसा, वगतरा, माखी, तीड प्रमुख जीव विणट्ठा। माळा हलावता, चलावता पंखी चकला, कागतणां इंडा फोड्या, अनेरा एकेंद्रियादिक जीव विणास्या, चाप्या, दुहव्या, कांई हलावता, चलावता. पाणी छाटता अनेरा काइ कामकाज करता निर्ध्वंसपणुं कीधुं। जीवरक्षा रुडी न कीधी! संखारो

सुकव्यो । रुडुं गळणुं न कीधुं, अणगल पाणी वापर्युं, रुडी जयणा न कीधी, अणगल पाणीए झील्या । लुगडा धोया । खाटला तावडे नाख्या, झाटक्या । जीवाकुल भूमि लीपी । वाशी गार राखी । दळणे, खाडणे लीपणे रुडी जयणा न कीधी । आठम चउदशना नियम भाग्या, धुणी करावी ॥ पहेले स्थूल प्राणातिपात विरमण–व्रत विषइओ अनेरो जे कोई अतिचार, पक्ष दिवसमाहि सूक्ष्म वादर जाणता. अजाणता हुओ होय, ते सविहु मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुकडं (१).

बीजे स्थूल–मृषावाद–विरमणव्रते पांच अतिचार । सहसा रहस्सदारे ॥ सहसात्कारे कुणहि प्रत्ये अजुगतुं आल–अभ्याख्यान दीधुं । स्वदारा–मंत्रभेद कीधो । अनेरा कुणहीनो मंत्र आलोच मर्म प्रकाश्यो । कुणहीने अनर्थ पाडवा कूडी बुद्धि दीधी. कूडो लेख लख्यो, कूडी साख भरी, थापण–मोसो कीधो । कन्या, गौ, ढोर, भूमिसंबंधी लेहणे देहणे व्यवसाये वाद वढवाड करतां मोटकुं जूठ्ठुं बोल्या । हाथ–पग–तणी गाळ दीधी । कडकडा मोड्या, मर्म वचन बोल्या ॥ बीजे स्थूल–मृषावाद–विरमणव्रत विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार, पक्ष-दिवसमाहि, सूक्ष्म बादर जाणता, अजाणता हुओ होय, ते सविहु मन, वचन, कायाए करी, तस्स मिच्छामि दुकडं (२).

त्रीजे स्थूल–अदत्तादान–विरमणव्रते पाच अतिचार ॥

तेनाहडप्पओगे० (३) घर, बाहिर, क्षेत्र, खळे पराई वस्तु अणमोकली लीधी, वावरी, चोराइ वस्तु वहोरी। चोर धाड प्रत्ये संकेत कीधो, तेहने संबल दीधुं। तेहनी वस्तु लीधी। विरुद्ध राज्यातिक्रम कीधो। नवा पुराणा, सरस, विरस, सजीव, निर्जीव वस्तुना भेल-संभेल कीधा। कूडे काटले, तोले, माने, मापे, वहोर्या, दाणचोरी कीधी। कुणहीने लेखे वरास्यो। साटे लाच लीधी, कूडो करहो काढ्यो विश्वासघात कीधो, परवंचना कीधी। पासंग कूडा कीधा। दाडी चढावी। लहके त्रहके कूडा काटला, मान मापा कीधा। माता, पिता, पुत्र, मित्र, कलत्र, वंची कुणहीने दीधुं। जुदी गाठ कीधी। थापण ओळवी। कुणहीने लेखे पलेखे भूलव्युं। पडी वस्तु ओळवी लीधी॥ त्रीजे स्थूल-अदत्तादान-विरमणव्रत विषइओ अनेरो जे कोई अतिचार, पक्ष दिवस-माहि, सूक्ष्म बादर जाणता, अजाणता हुओ होय ते सविहु मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं। (३).

चोथे स्वदारा-संतोष, परस्त्री-गमन, विरमण-व्रते पाच अतिचार। अपरिग्गहिया-ईत्तर० (४)। अपरिगृहीतागमन, ईत्वरपरिगृहीतागमन कीधु। विधवा, वेश्या, परस्त्री, कुलागना, स्वदारा, शोक्तणे विषे दृष्टि-विपर्यास कीधो। सराग वचन बोल्या। आठम चउदश, अनेरी पर्व-तिथिना नियम लई भाग्या; घरघरणा कीधा, कराव्या, वर-वहू वखाण्या। कुविकल्प चिंतव्यो। अनंगक्रीडा कीधी।

स्त्रीना अंगोपाग निरख्या । पराया विवाह जोड्या । ढिंगला ढिंगली परणाव्या, कामभोगतणे विषे तीव्र अभिलाष कीधो । अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार सुहणे स्वमातरे हुआ. कुस्वप्न लाध्या । नट, विट, स्त्रीशुं हासु कीधुं ॥ चोथे, स्व-दारा-संतोष,-परस्त्रीगमनविरमण व्रत विषइओ अनेरो जे अतिचार, पक्ष दिवसमाहि सूक्ष्म बादर जाणता, अजाणता हुओ होय, ते सविहु मन, वचन, कायाए करी, तस्स मिच्छामि दुक्कडं (४).

पाचमे-परिग्रह-परिमाग-व्रते पाच अतिचार ॥ धण-धन्न-खित्तवत्थु० ॥ धन, धान्य, क्षेत्र, वास्तु, रूप्य, सुवर्ण, कुप्य; द्विपद, चतुष्पद ए नवविध परिग्रहतणा नियम उपरात वृद्धि देखी, मूर्छा लगे संक्षेप न कीधो, माता, पिता, पुत्र, स्त्री तणे लेखे कीधो । परिग्रह परिमाण लीधुं नहि, लइने पढियुं नहि, पढवु विसार्यु, अलीधुं, मेल्यु, नियम विसार्या ॥ पाचमे परिग्रह परिमाण व्रत विषइओ अनेरो जे कोई अतिचार, पक्ष दिवसमाहि सूक्ष्म बादर जाणता अजाणता हुओ होय, ते सविहु मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कड । (५).

छट्ठे दिग् परिमाण व्रते पाच अतिचार ॥ गमणस्स उ परिमाणे० ऊर्ध्व-दिशि, अधोदिशि, तिर्यग्-दिशिए जावा आववा तणा नियम लई भाग्या । अनाभोगे विस्मृत लगे अधिक भूमि गया । पाठवणी आधी पाछी मोकली । वहाण-

व्यवसाय कीधो, वर्षाकाळे गामतरु कीधुं । भूमिका एक गमा संक्षेपी. बीजी गमा वधारी ॥ छट्ठे दिग् परिमाणव्रत विषइओ अनेरो जे कोई अतिचार, पक्ष दिवसमाहि सूक्ष्म बादर जाणता, अजाणता हुओ होय ते सविहु मन, वचन, कायाए करी, तस्स मिच्छामि दुक्कडं । (६).

सातमे भोगोपभोग–परिमाणव्रते भोजन आश्रयी पाच अतिचार अने कर्महुंती पंदर अतिचार, एवं वीश अतिचार ॥ सचित्ते पडिवद्धे० सचित्त नियम लीधे अधिक सचित्त लीधुं ॥ अपक्वाहार, दुष्पक्वाहार, तुच्छोषधितणुं भक्षण कीधुं । ओळा, उंबी. पोकपापडी खाधा ।

सचित्त–दव्व–विगई,–वाणह तंबोल–वत्थ–कुसुमेसुः वाहण–सयण-विलेवण,बंभ –दिसि–न्हाण भत्तेसु (१). ए चौद नियम दिनगत, रात्रिगत लीधा नही, लइने भाग्या । बावीश अभक्ष्य, बत्रीश अनंतकाय माहि आदु, मूळा, गाजर, पिंड, पिंडालु, कचूरो, सूरण, कुणी आवली, गळो वाघरडा खाधा । वासी कठोळ, पोली रोटली, त्रण दिवसनुं ओदन लीधु मधु-महुडा, माखण,माटी, वेंगण. पीलु. पीचुं. पंपोटा. विष. हिम, करहा, घोलवडा, अजाण्या फल, टिंबरुं गुंदा, म्होर. बोळ-अथाणुं, आम्बलवोर, काचु मीठुं, तिल,खसखस, कोठिंवडा,-खाधा । रात्रिभोजन कीधा । लगभग वेळाए वाळु कीधुं । दिवस विण ऊगे शीराव्या । तथा कर्मतः पन्नर कर्मादानः इंगालकम्मे, वणकम्मे,साडि-कम्मे. भाडि कम्मे, फोडी-कम्मे.

ए पांच कर्म ॥ दंत-वाणिज्य, लक्ख-वाणिज्य, रस-वाणिज्य, केस-वाणिज्य, विष-वाणिज्य, ए पाच वाणिज्य ॥ जंत-पिल्लण कम्मे, निल्लंछण कम्मे, दवग्गिदावणया, सरदहतलायसोसणया, असई पोसणया, ए पाच सामान्य । ए पाच कर्म, पाच वाणिज्य, पाच सामान्य, एवं पन्नर कर्मादान बहुसावद्य महारंभ, रागण, लोहाला, कराव्या । ईंट निभाडा पचाव्या । धाणी, चणा, पक्वान्न करी वेच्या । वासी माखण तवाव्या । तिल वहोर्या, फागण मास उपरात राख्या, दलीदो कीधो । अंगीठा कराव्या, श्वान, बीलाडा, सुडा, सालही पोष्या । अनेरा जे काई बहु सावद्य खर-कर्मादिक समाचर्या । वाशी गार राखी, लींपणे, गुंपणे, महारंभ कीधो । अणशोध्या चुला संधुक्या । घी, तेल, गोळ छाशतणा भाजन उघाडा मूक्यां । ते माहि माखी, कुंति, उंदर, गीरोली पडी । कीडी चडी, तेनी जयणा न कीधो । सातमे भोगोपभोग-परिमाणव्रत विषइओ अनेरो जे कोई अतिचार, पक्ष दिवसमांहि, सूक्ष्म बादर जाणता अजाणता हुओ होय ते सविहु मन, वचन, कायाए करी, तस्स मिच्छामि दुक्कडं (७).

आठमे अनर्थ-दंड विरमण-व्रते पाच अतिचार ॥ कंदप्पे कुक्कुइए० कंदर्प लगे विट-चेष्टा, हास्य, खेल, कुतूहल कीधा । पुरुष, स्त्रीना हावभाव, रूपश्रृङ्गार, विषयरस वखाण्या, राजकथा, भक्तकथा, देशकथा, स्त्रीकथा कीधी, पराइ तात कीधी, तथा

व्यवसाय कीधो, वर्षाकाले गामतरु कीधुं । भूमिका एक गमा संक्षेपी. वीजी गमा वधारी ॥ छट्ठे दिग् परिमाणव्रत विषइओ अनेरो जे कोई अतिचार, पक्ष दिवसमाहि सूक्ष्म बादर जाणता, अजाणता हुओ होय ते सविहु मन, वचन, कायाए करी, तस्स मिच्छामि दुक्कडं । (६).

सातमे भोगोपभोग-परिमाणव्रते भोजन आश्रयी पाच अतिचार अने कर्महुंती पंदर अतिचार, एवं वीश अतिचार ॥ सचित्ते पडिबद्धे० सचित्त नियम लीधे अधिक सचित्त लीधुं ॥ अपक्वाहर, दुष्पक्वाहार, तुच्छौषधितणुं भक्षण कीधुं । ओळा, उंबी, पोंकपापडी खाधा ।

सचित्त-दव्व-विगई,-वाणह तंबोल-वत्थ-कुसुमेसु; वाहण-सयण-विलेवण,बंभ-दिसि-न्हाण भत्तेसु (१). ए चौद नियम दिनगत, रात्रिगत लीधा नहीं, लइने भाग्या । बावीश अभक्ष्य, बत्रीश अनंतकाय माहि आदु. मूळा, गाजर, पिंड, पिंडालु, कचूरो, सूरण, कुणी आंवली, गळो वाघरडा खाधा । वासी कठोळ, पोली रोटली, त्रण दिवसनुं ओदन लीधु मधु-महुडा, माखण,माटी, वेंगण. पीलु. पीचुं. पंपोटा. विष. हिम, करहा, घोलवडा, अजाण्या फल. टिंबरुं गुंदा, महोर. बोळ-अथाणुं, आम्बलबोर, काचु मीठुं, तिल,खसखस, कोठिंवडा,-खाधा । रात्रिभोजन कीधा । लगभग वेळाए वाळु कीधुं । दिवस विण ऊगे शीराव्या । तथा कर्मतः पन्नर कर्मादान; इंगालकम्मे, वणकम्मे,साडि-कम्मे. भाडि कम्मे, फोडी-कम्मे,

ए पांच कर्म ॥ दंत-वाणिज्य, लक्ख-वाणिज्य, रस-वाणिज्य, केस-वाणिज्य, विष-वाणिज्य, ए पाच वाणिज्य ॥ जंत-पिल्लण कम्मे, निल्लंछण कम्मे, दवग्गिदावणया, सरदहतलायसोसणया, असई पोसणया, ए पाच सामान्य । ए पाच कर्म, पाच वाणिज्य, पाच सामान्य, एवं पन्नर कर्मादान बहुसावद्य महारंभ, रागण, लीहाला, कराव्या । ईंट निंभाडा पचाव्या । धाणी, चणा, पक्वान्न करी वेच्या । वासी माखण तपाव्या । तिल वहोर्या, फागण मास उपरात राख्या, दलीदो कीधो । अंगीठा कराव्या, श्वान, बीलाडा, सुडा, सालही पोष्या । अनेरा जे काई बहु सावद्य खर-कर्मादिक समाचर्या । वासी गार राखी, लींपणे, गुंपणे, महारंभ कीधो । अणशोध्या चुला संधुक्या । घी, तेल, गोळ छाशतणां भाजन उघाडा मूक्यां । ते माहि माखी, कुंति, उंदर, गीरोली पडी । कीडी चडी, तेनी जयणा न कीधी । सातमे भोगोपभोग-परिमाणव्रत विषइओ अनेरो जे कोई अतिचार, पक्ष दिवसमाहि, सूक्ष्म बादर जाणता अजाणता हुओ होय ते सविहु मन, वचन, कायाए करी, तस्स मिच्छामि दुक्कडं (७).

आठमे अनर्थ-दंड विरमण-व्रते पाच अतिचार ॥ कंदप्पे कुक्कुइए० कंदर्प लगे विट चेष्टा, हास्य, खेल, कुतूहल कीधां । पुरुष, स्त्रीना हावभाव, रूपशृङ्गार, विषयरस वखाण्या, राजकथा, भक्तकथा, देशकथा, स्त्रीकथा कीधी, पराइ तात कीधी, तथा पैशुन्यपणु कीधुं, आर्तरौद्रध्यान ध्याया । खाडा, कटार,

लीधे संथारातणी भूमि न पुंजी, बाहिरलां लहुडा वडा स्थंडिले दिवसे गोध्या नहिं, पडिलेह्या नहीं, मातरूं अणपुंज्युं हलाव्युं, अणपुंजी भूमिकाए परठव्युं, परठवता 'अणुजाणह जस्सुग्गहो' न कह्यो। परठव्या पुंठे वार त्रण 'वोसिरे वोसिरे' न कह्यो, पौषधशालामाहि पेसता 'निसीहि' निसरता 'आवस्सहि' वार त्रण भणी नहि। पुढवी, अप्, तेऊ, वाऊ, वनस्पति त्रसकायतणा संघट्ट, परिताप, उपद्रव हुआ, संथारा-पोरिसि तणो विधि भणवो विसार्यो, पोरिसीमाहि ऊंघ्या, अविधे संथारो पाथर्यो, पारणादिकतणी चिंता कीधी, काळवेळाए देव न वांद्या, पडिक्कमणुं न कीधु, पोसह[2] असुरो लीधो,[3] सवेरो पार्यो। पर्वतीथे पोसह लीधो नहि॥ अग्यारमे पौषधोपवासव्रत विषइओ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमाहि सूक्ष्म बादर जाणता अजाणता हुओ होय ते सविहु मन, वचन, कायाए करी, तस्स मिच्छामि दुक्कड (११).

वारमे अतिथि-संविभाग-व्रते पाच अतिचार॥ सचित्ते निक्खिवणे०॥ सचित्त वस्तु हेठ उपर छता [4]महात्मा महासती भत्ये असूझतुं दान दीधु, देवानी बुद्धे असूझतु फेडी सुझतु कीधुं, परायुं फेडी आपणु कीधु, अण देवानी बुद्धे सुझतुं फेडी असुझतुं कीधु, आपणु फेडी परायुं कीधुं, वहोरवा वेळा टाळी रह्या। असुर करी

१ लघुनीति-पेशाव अने वडीनीति झाडो ए बन्नेनो जग्या
२ मोडं ३. वहेलो ४. साधु-साध्वीने न खपे तेवु-अशुद्ध

महात्मा तेड्या । मत्सर धरी दान दीधुं, गुणवंत आव्ये भक्ति न साचवी । छती शक्तिए स्वामीवात्सल्य न कीधुं, अनेरा धर्मक्षेत्र [1]सीदाता छती शक्तिए उद्धर्या नहि । [2]दीन क्षीण प्रत्ये अनुकंपादान न दीधुं ॥ बारमे अतिथि-संविभाग व्रत विषइयो अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमाहि सूक्ष्म बार जाणता अजाणता हुओ होय ते सविहु मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं. (१२).

संलेषणा तणा पाच अतिचार० इहलोएसं परलोए० इह-लोगासंसप्पओगे, परलोगासंसप्पओगे, जीविआसंसप्पओगे, मरणासंसप्पओगे, कामभोगाससप्पओगे ॥ इहलोके—धर्मना प्रभाव लगे राजऋद्धि, सुख, सौभाग्य, परिवार वाछ्या. परलोके देव, देवेन्द्र, विद्याधर चक्रवर्ती तणी पदवी वांछी, सुख आव्ये जीवितव्य वाछ्युं, दुःख आव्ये मरण वाछ्युं, कामभोगतणी वाछा कीधी. संलेषणा व्रत विषइयो अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमाहि सूक्ष्म बादर जाणता अजाणता हुओ होय, ते सविहु मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं. (१३).

तपाचार बार भेद, छ बाह्य, छ अभ्यंतर ॥ अणसण मणोअग्गिआ० अणसण भणी उपवास विशेष पर्वतिथे छती शक्तिए कीधो नहीं. ऊणोदरी व्रत ते कोळिया पाच सात

[1] निर्धन [2] दुःखी.

लीधे संथारातणो भूमि न पुंजी, बाहिरलां लहुडां वडा स्थंडिल दिवसे शोध्यां नहिं, पडिलेह्यां नहीं, मातरूं अणपुंज्युं हलाव्युं, अणपुंजी भूमिकाए परठव्युं, परठवता 'अणुजाणह जस्सुग्गहो' न कह्यो। परठव्या पुंठे वार त्रण 'वोसिरे वोसिरे' न कह्यो, पौषधशालामांहि पेसता 'निसीहि' निसरता 'आवस्सहि' वार त्रण भणी नहि। पुढवी, अप्, तेऊ, वाऊ, वनस्पति. त्रसकायतणा संघट्ट, परिताप, उपद्रव हुआ, संथारा-पोरिसि तणो विधि भणवो विसार्यो, पोरिसीमांहि ऊंघ्या, अविधे सथारो पाथर्यो, पारणादिकतणी चिंता कीधी, काळवेळाए देव न वांद्या, पडिक्कमणुं न कीधुं, पोसह[2] असुरो लीधो,[3] सवेरो पार्यो। पर्वतीथे पोसह लीधो नहि॥ अग्यारमे पौषधोपवासव्रत विषइओ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणता हुओ होय ते सविहु मन, वचन, कायाए करी, तस्स मिच्छामि दुक्कड (११).

बारमे अतिथि-संविभाग-व्रते पाच अतिचार॥ सचित्ते निक्खिवणे०॥ सचित्त वस्तु हेठ उपर छता [4] महात्मा महासती प्रत्ये असूझतुं दान दीधुं, देवानी बुद्धे असूझतु फेडी सुझतुं कीधुं, परायुं फेडी आपणु कीधु, अण देवानी बुद्धे सुझतुं फेडी असुझतुं कीधुं, आपणुं फेडी परायुं कीधुं, वहोरवा वेळा टाळी रह्या। असुर करी

१ लघुनीति-पेशाव अने वडीनीति झाडो ए बन्नेनो जग्या
२ मोडा. ३. वहेलो ४. साधु-साध्वीने न खपे तेवुं-अशुद्ध

महात्मा तेड्या । मत्सर धरी दान दीधुं, गुणवत आव्ये भक्ति न साचवी । छती शक्तिए स्वामीवात्सल्य न कीधुं, अनेरा धर्मक्षेत्र [1]सीदाता छती शक्तिए उद्धर्या नहि । [2]दीन क्षीण प्रत्ये अनुकंपादान न दीधुं ॥ बारमे अतिथि-संविभाग व्रत विषइयो अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बार जाणता अजाणता हुओ होय ते सविहु मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं. (१२).

संलेषणा तणा पाच अतिचार० इहलोएसं परलोए० इह-लोगासंसप्पओगे, परलोगासंसप्पओगे, जीविआसंसप्पओगे, मरणासंसप्पओगे, कामभोगाससप्पओगे ॥ इहलोके-धर्मना प्रभाव लगे राजऋद्धि, सुख, सौभाग्य, परिवार वाछ्या. परलोके देव, देवेन्द्र, विद्याधर चक्रवर्ती तणी पदवी वाछी, सुख आव्ये जीवितव्य वाछ्युं, दुःख आव्ये मरण वाछ्युं, कामभोगतणी वाछा कीधी. संलेषणा व्रत विषइयो अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणता अजाणता हुओ होय, ते सविहु मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं. (१३).

तपाचार बार भेद, छ बाह्य, छ अभ्यंतर ॥ अणसण मूणोअरिआ० अणसण भणी उपवास विशेष पर्वतिथे छती शक्तिए कीधो नहीं. ऊणोदरी व्रत ते कोळिया पांच सात

[1] निर्धन [2] दुखी.

उणा रह्या नहीं. वृत्तिसंक्षेप ते द्रव्य भणी सर्व वस्तुओनो संक्षेप कीधो नहीं, रसत्याग ते विगयत्याग न कीधो, काय-क्लेश लोचादिक कष्ट सहन कर्या नहीं. संलीनता–अंगोपांग संकोची राख्या नहीं, पच्चक्खाण भाग्या, पाटलो डगडगतो फेडयो नहीं. गंठसी, पोरिसि, साढपोरिसि पुरिमड्ढ, एका-सणुं, बेआसणुं, नीवि, आयंबिल प्रमुखपच्चक्खाण पारवुं विसार्युं, बेसता नवकार न भण्यो. उठता पच्चक्खाण करवु विसार्यु. गंठसीयुं भाग्युं, नीवि, आंबिल उपवासादिक तप करी काचुं पाणी पीधु, वमन हुओ ॥ बाह्य तप विषइयो अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवस माहि सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सविहु मन, वचन, कायाए करी, तस्स मिच्छामि दुक्कडं. (१४)

अभ्यतर तप ॥ पायच्छित्तं विणओ० ॥ मनशुद्धे गुरु-कन्हे आलोअण लीधी नहिं, गुरुदत्त–प्रायश्चित्त तप लेखा-शुद्धे पहोचाडयो नहिं; देव, गुरु, संघ, साहम्मि प्रत्ये विनय साचव्यो नहि, बाल, वृद्ध, ग्लान, तपस्वी प्रमुखनु वेयावच्च न कीधु । वाचना पृच्छना, परावर्तना, अनुप्रेक्षा. धर्मकथा, लक्षण पंचविध स्वाध्याय न कीधो, धर्मध्यान शुक्लध्यान न ध्याया, आर्तध्यान रौद्रध्यान ध्याया । कर्मक्षय–निमित्ते लोगस्स दश–वीशनो काउस्सग्ग न कीधो ॥ अभ्यंतर तप विषइओ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवस माहि सूक्ष्म बादर जाणता अजाणता हुओ होय, ते सविहु मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कड (१५).

उणा रह्या नहीं. वृत्तिसक्षेप ते द्रव्य भणी सर्व वस्तुओनो संक्षेप कीधो नहीं, रसत्याग ते विगयत्याग न कीधो, कायक्लेश लोचादिक कष्ट सहन कर्या नहीं. संलीनता–अंगोपांग संकोची राख्या नहीं, पच्चक्खाण भाग्या, पाटलो डगडगतो फेड्यो नहीं. गंठसी, पोरिसि, साढपोरिसि पुरिमड्ढ, एकासणुं, बेआसणुं, नीवि, आयंबिल प्रमुख पच्चक्खाण पारवुं विसार्युं, बेसता नवकार न भण्यो. उठता पच्चक्खाण करवु विसार्यु. गंठसीयुं भाग्युं, नीवि, आंबिल उपवासादिक तप करी काचुं पाणी पीधु, वमन हुओ ॥ बाह्य तप विषइयो अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवस माहि सूक्ष्म बादर जाणता अजाणता हुओ होय, ते सविहु मन, वचन, कायाए करी, तस्स मिच्छामि दुक्कडं. (१४)

अभ्यतर तप ॥ पायच्छित्तं विणओ० ॥ मनशुद्धे गुरुकन्हे आलोअण लीधी नहिं, गुरुदत्त-प्रायश्चित्त तप लेखाशुद्धे पहोचाड्यो नहि; देव, गुरु, संघ, साहम्मि प्रत्ये विनय साचव्यो नहि, बाल, वृद्ध, ग्लान, तपस्वी प्रमुखनु वेयावच्च न कीनु । वाचना पृच्छना, परावर्तना, अनुप्रेक्षा. धर्मकथा, लक्षण पंचविध स्वाध्याय न कीधो, धर्मध्यान शुकलध्यान न ध्याया, आर्तध्यान रौद्रध्यान ध्याया । कर्मक्षय–निमित्ते लोगस्स दश–वीशनो काउस्सग्ग न कीधो ॥ अभ्यंतर तप विषइओ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवस माहि सूक्ष्म बादर जाणता अजाणता हुओ होय, ते सविहु मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं (१५).

वीर्याचारना त्रण अतिचार ॥ अणिगूहिअ बलविरिओ० ॥ पढवे, गुणवे, विनय, वेयावच्च, देवपूजा, सामायिक, पोसह, दान, शील, तप, भावनादिक धर्मकृत्यने विषे मन वचन काया तणुं छतुं [1]बळ छतुं [2]वीर्य गोपव्युं । रुडा पंचाग खमासमण न दीधा । वादणातणा आवर्त विधि साचव्या नहीं । [3]अन्यचित्त निरादरपणे बेठा । उतावळुं देववदन, पडिक्कमणुं कीधुं ॥ वीर्याचार विषइओ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवस माहि सूक्ष्म बादर जाणता अजाणता हुओ होय, ते सविहु मन, वचन, कायाए करी, तस्स मिच्छामि दुक्कडं (१६).

नाणाईअट्ठ पईवय, सम्मसंलेहण पण पन्नरकम्मेसु ॥ बारस तप विरिअतिगं चउव्वीससयं अइयारा ॥१॥ पडिसिद्धाणं करणे० ॥ प्रतिषेध अभक्ष्य अनंतकाय बहुबीजभक्षण, महारंभ परिग्रहादिक कीधा । जीवाजीवादिक सूक्ष्म विचार सद्दह्या नही, आपणी कुमति लगे उत्सूत्र प्ररुपणा कीधी । तथा प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन,

१ इन्द्रियो अने शरीरनी शक्ति । २ आत्मानी शक्ति । ३ शून्य चित्ते

+ ज्ञानादिना पटले ज्ञानाचार, दर्शनाचार अने चारित्राचारना आठ आठ, ते (२४) प्रत्येक व्रतना एटले श्रावकना बार व्रतना दरेकना पाच पाच ते, (६०) सम्यक्त्व अने संलेषणाना पाच पाच ते (१०) कर्मादानना (१५) तपाचारना (१२) अने वीर्याचारना (३) एम सर्व मळी १२४ अतिचार ।

परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, रति–अरति, पर–परिवाद, माया मृषावाद, मिथ्यात्वशल्य ए अढार पापस्थानक कीधा, कराव्या;, अनुमोद्या होय, दिनकृत्य-प्रतिक्रमण, विनय, वेयावच्च न कीधा। अनेरूं जे काई वीतरागनी आज्ञा–विरूद्ध कीधुं, कराव्युं, अनुमोधुं होय, ए [1]चिहुं प्रकारमाहे अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमाहि सूक्ष्म, वादर जाणता अजाणता हुओ होय ते सविहु मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं (१७).

श्रावकना —पक्खी—(चोमासी–संवच्छरी)

अतिचार समाप्त।

एवंकारे श्रावकतणे धर्म श्रीसम्यक्त्व मूल वार व्रत एकसो चोवीस अतिचार माहि अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमाहि सूक्ष्म वादर जाणता अजाणता हुओ होय ते सविहु; मन, वचन, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

सव्वस्सवि, पक्खिअ दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्? इच्छं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं। इच्छकारि भगवन्! पसाय करी पक्खीतप प्रसाद करशोजी

चउत्थेण एक उपवास, दो आंबिल, तीन नीवि, चार एकासणा, आठ बेआसणा, दो हजार सज्झाय, यथाशक्ति

---

१ प्रतिषिद्ध वस्तुनु करवु। करवा योग्य अनुष्ठाननु न करवु ३ वीतरागना वचननी अश्रद्धा करवी अने ४ विपरीत प्ररूपणा करवी ए चार प्रकार.

तप करके पहोंचानाजी (तप किया हो तो " पइट्ठिओ " कहे और करने का हो तो " तहत्ति " कहे और न करने का हो तो यथाशक्ति कहना या मात्र मौने रहना) ॥

(फिर नीचे मुताबिक दो वादणा देना)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ॥ १ ॥ अणुजाणह ॥ मे मिउग्गहं ॥ २ ॥ निसीहि, अहो का-यं का-य संफासं खमणिज्जो भे किलामो, अप्प किलंताणं, बहुसुभेण भे पक्खो वइक्कंतो ! ॥ ३ ॥ जत्ता भे ॥ ४ ॥ ज—व—णिज्जं च भे ? ॥ ५ ॥ खामेमि खमासमणो, पक्खिअं वइकमं ॥ ६ ॥ आवस्सिआए पडिक्कमामि, खमासमणाणं पक्खिआए आसायणाए; तित्तीसन्नयराए, जंकिंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए. सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ ७ ॥

इच्छमि खामासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ॥१॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं ॥२॥ निसीहि अहो कायं काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे पक्खो वइक्कंतो ॥३॥ जत्ता भे ॥४॥ जवणिज्जं च भे ॥५॥ खामेमि खमासमणो पक्खिअं वइक्कमं ॥६॥ पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए

वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ ७ ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवान् ! पत्तेअ खामणेणं अब्भुट्ठिओहं अब्भितर पक्खिअ खामेउं ? "इच्छं" खामेमि पक्खिअं, एगपक्खस्स पन्नरसदिवसाणं, पन्नरसराइआणं, जंकिंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणए, वेयावच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जंकिंचि मज्झ विणय परिहीणं सुहुमं वा बायर वा तुब्भे जाणह अहं न याणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए

(इसके बाद साधु—साध्वी—श्रावक-श्राविका चतुर्विध सघ के साथ खमत खामणा करना)

(फिर दो वादणा नीचे मुताबिक देना)

॥ १ ॥ अणुजाणह—मे मिउग्गहं ॥ २ ॥ निसीहि, अहो, कायं, का—य संफासं खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताण बहुसुभेण, भे पक्खो वइक्कतो ॥ ३ ॥ जत्ता भे ? ॥ ४ ॥ जवणिज्ज च मे ? ॥५॥ खामेमि खमासमणो, पक्खिअ वइक्कमं ॥६॥ आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जंकिंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए,

मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्व-धम्माइक्कमणाए, आसायणाए; जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ॥१॥ अणुजाणह—मे मिउग्गह ॥२॥ निसीहि, अहो, का-यं, काय संफासं, खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण, भे पक्खो वइक्कंतो ? ॥३॥ ज—त्ता भे ! ॥४॥ जवणिज्ज च भे ! ॥५॥ खामेमि खमासमणो ! पक्खिअं वइक्कमं ॥६॥ पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

देवसिअ आलोइअ पडिक्कंता इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पक्खिअं पडिक्कमुं !, "'इच्छं'' सम्म पडिक्कमामि ।

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि ॥१॥ दुविहं, तिविहेणं. मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि. ॥२॥

इच्छामि पडिकमिउ, जो मे पक्खि ओ अइआरो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उमग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ,अणायारो अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं ॥ चउण्ह कसायाणं ॥ पंचण्ह-मणुव्वयाणं, तिण्ह गुणव्वयाण, चउण्ह, सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावग धम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं

इच्छामि खमासमणो! वदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पक्खी सूत्र पढुं ? "इच्छं"

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो, मगलाणं च सव्वेसिं, पढम हवइ मंगलं ॥

(यह नवकार तीन दफे गिनना, फिर साधु हो तो वह पक्खिसूत्र कहे और न होवे तो श्रावक वंदित्तासूत्र कहे वह नीचे मुताबिक है ।)

वदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिएअ सव्व साहू अ; इच्छामि पडिकमिउं सावग धम्माइआरस्स ॥१॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ, सुहुमो अ वायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥२॥ दुविहे परिग्गहमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे; कारावणे अ करणे, पडिकमे पक्खिअं सव्वं ॥३॥ जं

बद्ध मिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं; रागेण व दोसेण व, त निंदे त च गरिहामि ॥४॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे; अभिओगे अनिओगे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्व ॥५॥ संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु । सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ ६ ॥ छकाय समारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा । अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥७॥ पंचण्ह-मणुव्वयाणं, गुण-व्वयाणं च तिण्ह मइयारे; सिक्खाण च चउण्ह, पडिक्कमे पक्खिअं सव्व ॥८॥ पढमे अणुव्वयं मि, थूलग-पाणाइवाय-विरइओ; आयरिय--मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥९॥ वह बंध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए । पढमवयस्स -इआरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥१०॥ बीए अणुव्वयंमि, परि थूलग अलीयवयण विरइओ । आयरिय मप्पसत्थे, इत्थ पमाय--प्पसंगेणं ॥११॥ सहसा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ । बीअ वयस्स-इआरे; पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥१२॥ तइए अणुव्वयंमि, थूलग परदव्व-हरण विरइओ । आयरिअ-मप्पसत्थे, इत्थपमायप्पसंगेणं ॥१३॥ तेना हडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्ध गमणे अ । कूडतुल कूडमाणे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्व ॥१४॥ चउत्थे अणुव्वयंमि, निच्चं परदारगमण-विरइओ आयरिअ मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥१५॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंगविवाह तिव्व-अणुरागे । चउत्थ वयस्सइआरे, पडिक्कमे

पक्खिअं सव्वं ॥१६॥ इत्तो अणुव्वए पंचमंमि, आयरियम-प्पसत्थंमि। परिमाण परिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥१७॥ धण धन्न खित्तवत्थु, रूप्प सुवन्ने अ कुविअ परिमाणे। दुपए चउप्पयमि य, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥१८॥ गम-णस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च। वुड्ढि सइअंतरद्धा, पढमंमि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ। उवभोग परि-भोगे, बीयंमि गुणव्वए निंदे ॥२०॥ सचित्ते पडिबद्धे, अप्पोलि दुप्पोलिअं च आहारे। तुच्छोसहि-भक्खणया, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥२१॥ इंगाली-वण- साडी, भाडी फोडी सुवज्जए कम्मं। वाणिज्जं चेव दंत लक्ख-रस केस-विसविसय ॥२२॥ एवं खु जंतपिल्लण, कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं। सर--दह-तलाय-सोसं, असई--पोसं च वज्जिज्जा ॥२३॥ सत्थग्गि-मुसल-जंतग, तण कट्ठे मंत-मूल-भेसज्जे। दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥२४॥ न्हाणु-व्वट्टण-वन्नग, विलेवणे सद्द-रूव-रस गंधे। वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥२५॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण भोग अइरित्ते। दंडंमि अणट्ठाए, तइअंमि गुणव्वए निंदे ॥२६॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइविहूणे। सामाइअ वितहकए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥२७॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे। देसावगासिअंमि, बीए सिक्खावए निंदे ॥२८॥ संथारुच्चारविहि, पमाय तह

चेव भोयणाभोए। पोसहविहि विवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥ २९ ॥ सचित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस मच्छरे चेव; कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥३०॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ. जा मे अस्संजएसु अणुकंपा। रागेण व दोसेण व, त निंदे तं च गरिहामि ॥३१॥ साहूसु संविभागो, न कओ तव-चरण-करण जुत्तेसु। संते फासुअ-दाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इहलोए परलोए, जीविअ-मरणे अ आससपओगे। पंचविहो अइयारो, मा मज्झं हुज्ज मरणंते ॥३३॥ कारण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए। मणसा। माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥३४॥वंदण वयसिक्खा-गारवेसु, सन्ना-कसायदंडेसु। गुत्तीसु अ समिइसु अ, जो अइयारो अ तं निंदे ॥३५॥ सम्मदिट्ठी जीवो, जइवि हु पावं समायरे किंचि। अप्पोसि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥३६॥ तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परि-आवं सउत्तरगुणं च। खिप्पं उवसामेइ, वाहिव्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥३७॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूल विसारया। विज्जा हणंति मंतेहि, तो त हवइ निव्विसं ॥३८॥एवअट्ठविहं कम्मं, राग-दोस-समज्जिअं। आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥ ३९ ॥ कयपावोवि मणुस्सा, आलोइअ निंदिअ गुरुसगासे। होइ अइरेग लहुओ, ओहरिअ-भरुव्व भारवहो ॥ ४० ॥ आवस्सएण एएण, सावओ जइवि बहुरओ होइ।

दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण॥४१॥ आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमण काले । मूलगुण उत्तर गुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥४२॥ तस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स अब्भुट्टिओमि आराहणाए । विरओमि विराहणाए, तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥४३॥ जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ । सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ।४४॥ जावत केवि साहू, भरहेरवय महा विदेह अ । सव्वेसि तेसि पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं. ॥४५॥ चिर संचिय–पावपणासणीइ, भवसय–सहस्स महणीए। चउवीस-जिण-विणिग्गय--कहाइ, वोलंतु मे दिअहा॥ ४६ ॥ मम मंगल मरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ । सम्मदिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥ ४७॥ पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं; असद्दहणे अ तहा, विवरीय परूवणाए अ ॥४८॥ खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे । मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणइ॥ ४९ ॥ एवमहं—आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं । तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ५० ॥

(फिर सुअदेवयाकी नीचे मुताबिक स्तुति कहनी)

सुअदेवया भगवई, नाणावरणीयकम्मसंघायं ॥ तेसिं खवेउ सययं, जेसिं सुयसायरे भत्ती ॥

(फिर नीचे बैठ दाहिना घूटना खडाकर नीचे मुनाबिक कहना)

नमो अरिहंताणं ॥१॥ नमो सिद्धाणं ॥२॥ नमो आयरियाणं ॥३॥ नमो उवज्झायाणं ॥४॥ नमो लोए सव्वसाहूणं ॥५॥ एसो पंचनमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पणासणो ॥७॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥ पढम हवइ मंगलं ॥ ९ ॥

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि ॥१॥ दुविहं, तिविहेणं, मणेणं, वायाए काएणं न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे पक्खिओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ, उस्सुत्तो उमग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो च नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहियं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ। इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥१॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ। सुहुमो अ वायरोवा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे। कारावणे अ करणे, पडिक्कमे पक्खिअं

सव्वं ॥ ३ ॥ जं बद्धमिंदिएहिं, चउहि कसाएहिं अप्पसत्थेहिं। रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे; अभिओगे अनियोगे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ ५ ॥ संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु । सम्मत्तस्स इआरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्व ॥ ६ ॥ छक्काय समारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा । अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचण्ह मणुव्वयाणं, गुणव्वयाण च तिण्हमइआरे । सिक्खाण च चउण्हं, पडिक्कमे पक्खिअंत सव्वं ॥ ८ ॥ पढमे अणुव्वयंमि थूलगपाणाइवायविरइओ । आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वहबंधछविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए । पढमवयस्स इआरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ १० ॥ बीए अणुव्वयमि, परिथूलग अलीयवयणविरइओ । आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेण ॥ ११ ॥ सहसा रहस्य दारे, मोसुवएस अ कूडलेहे अ । बीयवयस्स इआरे, पडिक्कमे पक्खिअ सव्वं ॥ १२ ॥ तइए अणुव्वयंमि, थूलगपरदव्वहरण विरइओ । आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्धगमणे अ । कूडतुल कूडमाणे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥१४॥ चउत्थे अणुव्वयमि, निच्चपरदारगमणविरइओ । आयरियमप्पसत्थे, इत्थे पमायप्पसंगेण ॥ १५ ॥ अपरिग्ग-

हिआ इत्तर, अणंगविवाह तिव्व अणुरागे। चउत्थवयस्स इयारे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥१६॥ इत्तो अणुव्वए पंचमम्मि, आयरियमप्पसत्थंमि। परिमाण परिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेण ॥१७॥ धण धन्न खित्तवत्थु, रूप्प सुवन्ने अ कुविअ परिमाणे। दुपए चउप्पयंमिय, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥१८॥ गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढ अहे अ तिरिअं च। वुड्ढि सइ अंतरद्धा, पढमंमि गुणव्वए निंदे ॥१९॥ मज्जंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ। उवभोग परिभोगे, बीअंमि गुणव्वए निंदे ॥२०॥ सच्चित्ते पडिबद्धे अप्पोलि दुप्पोलिअं च आहारे। तुच्छोसहिभक्खणया, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥२१॥ इंगाली वण-साडी, भाडी फोडीसु वज्जए कम्मं। वाणिज्जं चेव दंत लक्खरसकेसविसविसयं ॥२२। एवं खु जंतपिल्लण, कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं। सरदहतलायसोसं, असईपोसं च वज्जिज्जा ॥२३॥ सत्थग्गि मुसल जंतग, तण क` मंत मूल भेसज्जे। दिन्ने दवाविए वा पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥२४॥ न्हाणुवट्टण वन्नग, विलेवणे सद्दरूवरसगंधे। वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥२५॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण भोगअइरित्ते। दंडंमि अणट्ठाए, तइअंमि गुणव्वए निंदे ॥२६॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइविहुणे। सामाइय वितह-कए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥२७॥ आणवणे पेसवणे,

सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे । देसावगासिअम्मि, बीए सिक्खा-वए निंदे ॥२८॥ संथारुच्चारविही, पमाय तह चेव भोयणा भोए । पोसहविहि विवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥२९॥ सचित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस मच्छरे चेव । काला-इक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥३०॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा । रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूस संविभागो, न कओ तवचरणकरणजुत्तेसु । संते फासुअदाणे; तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इहलोए परलोए, जीविअमरणे अ आसंसपओगे । पंचविहो अइआरो, मा मज्झं हुज्ज मर-णंते ॥३३॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए । मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदण वयसिक्खागारवेसु, सन्ना कसाय दंडेसु । गुत्तीसु अ समि-इसु अ, जो अइयारो अ त निंदे ॥३५॥ सम्मदिट्ठी जीवो, जइवि हु पावं समायरे किंचि । अप्पोसि होई बंधो, जेण न निद्धधसं कुणई ॥३६॥ तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआव सउत्तरगुणं च । खिप्प उवसामेइ, वाहिव्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया । विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥ एव अट्ठविहं कम्मं, रागदोससमज्जिअं । आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणाइ सुसावओ ॥ ३९ ॥ कयपावोवि मणुस्सो,

आलोइअ निंदिय गुरुसगासे । होइ अइरेग लहुओ, ओहरिअ-भरुव्व ॥ ४० ॥ आवस्सएण एएण, सावओ जइवि बहुरओ होइ । दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमणकाले । मूलगुण, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स, अब्भुट्ठिओमि आराहणाए । विरओमि विराहणाए, तिविहेण पडिक्कतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ । सव्वाइं ताइं वंदे. इह संतो तत्थ संताइं ॥ ४४ ॥ जावत केऽवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ । सव्वेसि तेसि पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥ ४५ ॥ चिरसंचियपावपणासणीइ, भवसयसहस्स महणीए । चउवीस जिणविणिग्गयकहाइ, वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगलमरिहंता; सिद्धा साहू सुअ च धम्मो अ । सम्मदिट्ठी देवा. दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥ ४७ ॥ पडिसिद्धाण करणे किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं । असद्दहणे अ तहा, विवरीय परूवणाए अ ॥ ४८ ॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे । मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई ॥ ४९ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं । तिविहेण पडिक्कंतो वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ५० ॥

सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे । देसावगासिअमि, बीए सिक्खावए निंदे ॥२८॥ संथारूच्चारविही, पमाय तह चेव भोयणाभोए । पोसहविहि विवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥२९॥ सचित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस मच्छरे चेव । कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥३०॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा । रागेण च दोसेण व, तं निंदे तं चं गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूस संविभागो, न कओ तवचरणकरणजुत्तेसु । संते फासुअदाणे; तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इहलोए परलोए, जीविअमरणे अ आसंसपओगे । पंचविहो अइआरो, मा मज्झं हुज्ज मरणंते ॥३३॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए । मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइयारस्स ॥ ३४ ॥ वंदण वयसिक्खागारवेसु, सन्ना कसाय दंडेसु । गुत्तीसु अ समिइसु अ, जो अइयारो अ त निंदे ॥३५॥ सम्मदिट्ठी जीवो, जइवि हु पावं समायरे किंचि । अप्पोसि होई बंधो, जेण न निद्धधसं कुणई ॥३६॥ तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआव सउत्तरगुणं च । खिप्प उवसामेइ, वाहिव्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया । विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥ एवं अट्ठविहं कम्मं, रागदोससमज्जिअं । आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥ ३९ ॥ कयपावोवि मणुस्से

(फिर बाहर लोगस्स का चंदेसुनिम्मलयरा तक काउस्सग्ग करना, न आता हो तो अडतालीस नवकार गिनना, पीछे नीचे मुताबिक प्रगट लोगस्स कहना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म तित्थयरे जिणे; अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभ मजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च, पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंद-प्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंत, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च; विमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संति च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि—जिणं च वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एव मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला पहीण जर-मरणा; चउवीसपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा; आरुग्ग बोहिलाभं, समाहि वर मुत्तम दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा, सागर वर गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

(फिर मुहपत्ति पडिलेहण करना)

(फिर दो वांदणा नीचे मुताबिक देना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो काय काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे पक्खो वइक्कंतो, जत्ता भे, जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो पक्खिअं वइक्कमं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाण

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं, तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि, निंदामि गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि.

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे पक्खिओ अइआरो, कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झात्तो दुव्विचिंतिओ अणायारोअणिच्छि अव्वो आसावगपाउग्गे नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्ह कसायाण पंचण्हमणुव्वयाण तिण्हं गुण-व्वयाण चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं ज विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं, निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं, अंगसंचालेहिं, खेलसंचाहिं, सुहुमेहिर दिट्ठिसंचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिंआगारेहिं, अभग्गो अविरा-हिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥

(फिर बाहर लोगस्स का चंदेसुनिम्मलयरा तक काउस्सग्ग करना, न आता हो तो अडतालीस नवकार गिनना, पीछे नीचे मुताबिक प्रगट लोगस्स कहना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म तित्थयरे जिणे; अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभ मजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च, पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंद-प्पहं वंदे ॥२॥ सुविहि च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च; विमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लि, वंदे मुणिसुव्वयं नमि—जिणं च वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला पहीण जर-मरणा; चउवीसपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा; आरुग्ग बोहिलाभं, समाहि वर मुत्तम दितु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा, सागर वर गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

(फिर मुहपत्ति पडिलेहण करना)

(फिर दो वादणा नीचे मुताबिक देना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो काय काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे पक्खो वइक्कंतो, जत्ता भे, जवणिज्जं च मे खामेमि खमासमणो पक्खिअं वइक्कमं आवस्सिआए पडिकमामि खमासमणाणं

पक्खिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मण दुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए माया लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।।१।।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो कायं काय संफासं खमणिज्जो मे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण मे पक्खो वइक्कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च मे खामेमि खमासमणो पक्खिअं वइक्कमं पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।।२।।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! समाप्त खामणेणं अब्भुट्ठिओमि अब्भितर पक्खिअं खामेउं! "इच्छं" खामेमि पक्खिअ, एकपक्खस्स पन्नरस्सदिवसाणं, पन्नसराईआणं, जंकिंचि अपत्तिअ, परपत्तिअ, भत्ते, पाणे, विणए, वेयावच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जंकिंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह अहं जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कड ।।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पक्खी खामणा खामु ! "इच्छं"

(ऐसा कहके प्रत्येक खामणा के पहले एक खमासमण देकर दाहिना हाथ चरवला या आसन पर रख सिर झूकाकर साधु न होवे तो नीचे मुताबिक चार खामणा देना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि.

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंचनमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥ सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए मत्थएण वंदामि.

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंचनमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो; मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं. सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥ २ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि.

- नमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ नमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ नमो आय-

रियाणं ॥३॥ नमो उवज्झायाण ॥४॥ नमो लोए सव्वसाहूणं ॥५॥ एसो पंच नमुक्कारो ॥६॥ सव्वपावप्पणासणो ॥७॥ मंगलाणं च सव्वेसि ॥८॥ पढमं हवइ मंगलं ॥९॥ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ३ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो; मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥ ४ ॥

इच्छामो अणुसट्ठि नमो खमासमणाणं पक्खिअं सम्मत्तं देवसिअं भणामि (पडिक्कमामि) कहेवु.

(फिर दो वादणा देना)

इच्छामि खमासमणो : वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ॥ १ ॥ अणुजाणह; मे मिउग्गहं ॥ २ ॥ निसीहि, अ–हो, का यं का-य संफास, खमणिज्जो मे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण, भे दिवसो वइक्कंतो ?॥३॥ ज–त्ता भे ॥४॥ ज-वणिज्जं च भे ? ॥५॥ खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कमं आवस्सियाएपडिक्कमामिखमासमणाणंदेवसियाएआसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालि-

आए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो कायं, कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कमं पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥२॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओमि अब्भितर देवसिअं खामेउं ! "इच्छं" खामेमि देवसिअं, जंकिंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणए, वेयावच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जंकिंचि मज्झ विणय परिहीणं सुहुमं वा वायरं वा तुब्भे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(फिर दो वांदणा नीचे मुताबिक देना)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसी-

हिआए ॥१॥ अणुजाणह ॥ मे मिउग्गहं ॥२॥ निसीहि, अहो का यं, का-य संफासं, खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलताणं, वहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ! ॥३॥ जत्ता भे ॥४॥ ज-व-णिज्जं च भे ? ॥५॥ खामेमि खमासमणो, देवसिअ वइक्कमं ॥६॥ आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए; तित्तीसन्नयराए, जंकिंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ॥ १ ॥ अणुजाणह ॥ मे मिउग्गहं ॥ २ ॥ निसीहि अ-हो का-य, का-य संफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं, वहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ! ॥३॥ जत्ता भे ॥ ४ ॥ ज-व-णिज्जं च भे ? ॥ ५ ॥ खामेमि खमासमणो, देवसिअ वइकम ॥ ६ ॥ पडिक्मामि, खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए;तित्तीसन्नयराए,जंकिंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए,वयदुक्कडाए,कायदुक्कडाए, कोहाए,माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए,आसायणाए,जो मे अइआरो कओ,तस्स

खमासमणो । पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥७॥

(बाद में दोनों हाथ जोड मस्तक से लगाकर नीचेका सूत्र बोलना)

आयरिय उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुल गणे अ। जे मे केई कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलिं करिअ सीसे । सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मनिहिअ निअचित्तो । सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ ३ ॥

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेण वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि.

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे देवसिओ अइआरो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उमग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो, नाणे, दंसणे, चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं ॥ चउण्ह कसायाणं ॥ पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअ, जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं

तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित्त करणेणं, विसोही करणेणं, विसल्ली करणेणं, पावाणं कम्माणं, निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंग संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल संचालेहिः सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं; अभग्गो अविराहिओ; हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि। ४॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(दो लोगस्स 'चंदेसु निम्मलयरा' तक या आठ नवकारका काउस्सग्ग करके लोगस्स कहना।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे; अरिहंते कित्त-इस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभ मजिअं च वंदे, संभव-मभिणंदणं च सुमइं च; पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पह वंदे ॥ २ ॥ सुविहि च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च. विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लि, वदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च; वंदामि रिट्ठनेमि. पास तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय–रय–मला पहीण जरमरणा; चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु. ॥५॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा; आरुग्ग वोहिलाभं, समाहि वरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्म-

लयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा, सागरवर गंभीरा, सिद्धा-सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

सव्वलोए अरिहंतचेइआणं, करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोही लाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं.

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंग संचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(एक लोगस्स 'चंदेसुनिम्मलयरा' तक या चार नवकार का काउस्सग्ग करके पुक्खरवरदीवड्ढे सूत्र नीचे मुताबिक कहना.)

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायईसंडे अ जंबूदीवे अ; भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमसामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपडलविद्धंसणस्स सुरगणनरिंदमहियस्स । सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअमोहजालस्स ॥ २ ॥ जा जरा मरण सोग पणासणस्स, कल्लाण पुक्खल विसाल सुहावहस्स । को देव दाणव नरिंद-

गणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमाय ॥ ३ ॥ सिद्धे भो पयओ, णमो जिणमए नदी सया संजमे, देव नाग सुवन्न किन्नरगण सब्भूअ भावच्चिए। लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं। धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥ ४ ॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं, वदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्ग।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएण जभाइएण उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलीए पित्तमुच्छाए सुहुमेहि अंगसंचालेहि, सुहुमेहि खेलसंचालेहि, सुहुमेहि दिट्ठिसचालेहिं, एवमाइएहि आगारेहि अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेण अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक लोगस्स 'चदेसुनिम्मलयरा' तक या चार नवकार का काउस्सग्ग करके सिद्धाणं बुद्धाण सूत्र नीचे मुताबिक कहना)

सिद्धाण बुद्धाणं, पारगयाणं, परपरगयाण, ॥ लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमसंति; त देवदेव महिअं सिरसा

वंदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवर वसहस्स वद्धमाणस्स । संसार सागराओ, तारेइ नरं नारि वा ॥ ३ ॥ उज्जिंत सेल सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स । तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि-अट्ठ-दश दोय, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं: परमट्ठ निट्ठि अट्ठा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥ ५ ॥

भुवणदेवयाए करेमि काउस्सग्गं०

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं, खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलीए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहि खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं, एवमाएहि आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कहके एक स्तुति कहनी वह नीचे मुजब है)

ज्ञानादिगुणयुतानां, नित्यं स्वाध्यायसंयमरतानाम् ।
विदधातु भुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥ १ ॥

खित्त देवयाए करेमि काउस्सग्गं०

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलीए पित्तमुच्छाए

गणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमाय ॥ ३ ॥ सिद्धे भो पयओ, णमो जिणमए नदी सया संजमे, देव नाग सुवन्न किन्नरगण सब्भूअ भावच्चिए। लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगम्मिणं तेलुक्कमच्चासुरं। धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥ ४ ॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं, वदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्ग।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जभाइएण उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलीए पित्तमुच्छाए सुहुमेहि अंगसंचालेहि, सुहुमेहि खेलसंचालेहि, सुहुमेहि दिट्ठिसचालेहिं, एवमाइएहि आगारेहि अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेण मोणेणं झाणेण अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक लोगस्स 'चदेसुनिम्मलयरा' तक या चार नवकार का काउस्सग्ग करके सिद्धाणं बुद्धाण सूत्र नीचे मुताबिक कहना)

सिद्धाण बुद्धाणं, पारगयाणं, परपरगयाण, ॥ लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमसंति; त देवदेव महिअ सिरसा

वंदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवर वसहस्स वद्धमाणस्स । संसार सागराओ, तारेइ नरं नारि वा ॥ ३ ॥ उज्जित सेल सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स । तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि-अट्ठ-दस दोय, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं; परमट्ठ निट्ठि अट्ठा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥ ५ ॥

भुवणदेवयाए करेमि काउस्सग्गं०

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं, खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलीए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं, एवमाएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कहके एक स्तुति कहनी वह नीचे मुजब है)

ज्ञानादिगुणयुताना, नित्यं स्वाध्यायसंयमरतानाम् ।
विदधातु भुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥ १ ॥
खित्त देवयाए करेमि काउस्सग्गं०

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलीए पित्तमुच्छाए

सुहुमेहिं अगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव काय ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग पारके फिर नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कहके स्तुति कहना, वह नीचे मुताबिक है।)

यस्याः क्षेत्र समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया।
सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्न सुखदायिनी ॥ १ ॥

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरिआणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

(छट्ठे आवश्यककी मुहपत्ति पडिलेहन करना ।)

(फिर नीचे मुताबिक दो वादणा देना ।)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह—मे मिउग्गहं निसीहि, अहो कायं काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो, जत्ता भे, जवणिज्जं च भे, खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कमं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वध-

म्माइक्क माणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।१।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहो कायं काय संफासं खमणिज्जो भे फिलामो अप्पकिलताण वहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो, जत्ता मे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कमं पडिक्कमामि ।समणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खामासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ २ ॥

सामायिक, चउव्विसत्थो, वंदन, पडिक्कमण, काउस्सग्ग. पच्चक्खाण किया है जी । (फिर)

इच्छामो अणुसट्ठिं नमो खमासमणाणं, नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

नमोऽस्तु वर्द्धमानाया, स्पर्द्धमानाय कर्मणा । तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ॥ १ ॥ येषां विकचारविन्दराज्या, ज्यायः क्रमकमलावलि दधत्या । सदृशैरिति संगत प्रशस्यं, कथितं संतु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कषायतापार्दितजंतुनिर्वृति, करोति यो जैनमुखाम्बुदोद्गतः । स शुक्रमासोद्भववृष्टिसन्निभो, दधातु तुष्टि मयि विस्तरो गिराम् ।३।

(यदि स्त्रियाँ प्रतिक्रमण करती हो तो यहा पर संसार दावा की त्रण गाथा कहे वह नीचे मुजब है)

संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरं, माया-रसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरीसारधीरं ॥१॥ नावा-वनामसुरदानवमानवेन, चूलाविलोलकमलावलिमालितानि; संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि, कामंनमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २॥ बोधागाधं सुपदपदवी नीरपूराभिरामं, जीवाहिंसाविरललहरी संगमागाहदेहं । चूलावेल गुरुगममणिसकुलं दूरपारं, सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआण, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआण, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाण, सरणदयाण. बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाण, धम्मदेसआणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीण, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ।६। अप्पडिहय वरनाण दंसणधराणं, वियट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं; मुत्ताण मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअ मणतमक्खय मव्वाबाहमपुणराविति सिद्धिगइनामधेयं ठाण संपत्ताण, नमो जिणाण, जिअभयाणं ॥ ९ ॥

जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले, संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवान् ! स्तवन भणुं ? इच्छं ।

(ऐसा कहकर अजितशांतिका स्तवन बोलना)

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

अजिअं जिअसव्वभयं, संतिं च पसंतसव्वगयपावं । जयगुरु संतिगुणकरे, दो वि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥ ॥ गाहा ॥ ववगयमंगुलभावे, तेऽहं विउलतवनिम्मलसहावे । निरुवममहप्पभावे. थोसामि सुदिट्ठसब्भावे ॥ २॥ गाहा॥ सव्वदुक्खप्पसंतीणं, सव्वपावप्पसंतीणं । सया अजिअसंतीणं, नमो अजिअसंतीणं ॥ ३ ॥ सिलोगो ॥ अजिअजिण सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तमनामकित्तणं । तह य धिइमइप्पवत्तणं, तव य जिणुत्तम संतिकित्तणं ॥ ४ ॥ मागहिआ ॥ किरिआविहिसंचिअकम्मकिलेसविमुक्खयरं ॥ अजिअं निचिअं च गुणेहि महामुणिसिद्धिगयं । अजिअस्स य संतिमहामुणिणो वि अ संतिकरं, सययं मम निव्वुइकारणयं च नमंसणयं ॥५॥ ॥आलिंगणय॥ पुरिसा जइ दुक्खवारणं, जइ य विमग्गह सुक्खकारणं । अजिअं संतिं च भावओ, अभयकरे सरणं पवज्जहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अरइरइतिमिरविरहिअमुवरयजरमरणं, सुरअसुरगरुलभुयगवइपययपणिवइयं । अजियमहमवि अ सुनयनयनिउणमभयकरं, सरणमुवसरिअ भुविदिविजम-

हिअं सयममुवणमे ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तं च जिणुत्तममुत्तमनित्तमसत्तधरं. अज्जवमद्दवखंतिविमुत्तिसमाहिनिहिं, संतिकर पणमामि दमुत्तमतित्थयरं, संतिमुणी मम संतिसमाहिवरं दिसउ ॥८॥ सोवाणय ॥ सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वरहत्थिमत्थयपसत्थविच्छिन्नसंथियं थिरसरिच्छवच्छं मयगललीलायमाणवरगंधहत्थि पत्थाणपत्थियं संथवारिह । हत्थि हत्थबाहुं धतकणगरुअगनिरुवहयपिंजरं पवरलक्खणोवचियसोमचारुरूव सुइसुहमणाभिरामपरमरमणिज्जवरदेवदुंदुहिनिनायमहुरयरसुहगिर ॥९॥ वेड्ढओ ॥ अजिअं जिआरिगणं, जिअसव्वभयं भवोहरिउ । पणमामि अहं पयओ, पावं पसमेउ मे भयवं ॥१०॥ रासालुद्धओ ॥ कुरुजणवयहत्थिणाउरनरीसरो पढमं तओ महाचक्कवट्टिभोए महप्पभावो, जो बावत्तरिपुरवरसहस्सवरनगरनिगमजणवयवइ बत्तीसारायवरसहस्साणुयायमग्गो । चउदसवररयणनवमहानिहिचउसट्ठिसहस्स पवरजुवईण सु दरवइ, चुलसी इयगयरहसयसहस्ससामो छन्नवइगामकोडीसामी आस जो भारहंमि भयव ॥ ११ ॥

॥ वेड्ढओ ॥ तं संतिं संतिकर, संतिण्णं सव्वभया । संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे ॥ १२ ॥ रासानंदिअयं ॥ इक्खाग विदेहनरीसर नरवसहा मुणिवसहा, नवसारयससिसकलाणण विगयतमा विहुअरया । अजिउत्तम तेअगुणेहिं महामुणि अमिअबला विउलकुला, पणमामि ते

भवभयमूरण जगसरणा मम सरणं ॥ १३ ॥ चित्तलेहा ॥
देवदाणविंदचंदसुरवंदहट्ठतुट्ठजिट्ठपरम–लट्ठरूवधंतरुप्पपट्टसेय-
सुद्धनिद्धधवल–दंतपंतिसंतिसत्तिकित्तिमुत्तिजुत्तिगुत्तिपवर ।
दित्ततेअ वंदधेअ सव्वलोअभाविअप्पभावणेअ पइस मे
समाहिं ॥ १४ ॥ नारायओ । विमलससिकलाइरेअसोमं,
वितिमिरसूरकराइरेअतेअं । तिअसवइगणाइरेअरूवं, धरणि-
धरप्पवराइरेअसारं ॥ १५ ॥ कुसुमलया । सत्ते अ सया
अजिअं सारीरे अ बले अजिअं । तवसंजमे अ अजिअं, एस
थुणामि जिणं अजिअं ॥ १६ ॥ भुअगपरिरिंगिअं ॥ सोम-
गुणेहिं पावइ न तं नवसरयससी, तेअगुणेहिं पावइ न तं नव-
सरयरवी । रूवगुणेहिं पावइ न तं तिअसगणवई, सार-
गुणेहिं पावई न तं धरणिधरवई ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं ॥
तित्थवरपवत्तयं तमरयरहिअं, धीरजणथुअच्चिअं चुअकलि-
कलुसं । संतिसुहपवत्तय तिगरणपयओ संतिमहं महामुणिं
सरणमुवणमे ॥ १८ ॥ ललिअयं ॥ विणओणयसिररइअंजलि-
रिसिगणसंथुअं थिमिअं, विबुहाहिवधणवइ नरवइथुअमहिअ-
च्चिअं बहुसो । अइरुग्गयसरयदिवायरसमहियसप्पभं तवसा,
गयणंगणवियरणसमुइयचारणवंदिअं सिरसा ॥ १९ ॥ किसल-
यमाला ॥ असुरगरुलपरिवंदिअं, किन्नरोरगनमंसिअं । देव-
कोडिसयसंथुअं, समणसंघपरिवंदिअं ॥ २० ॥ सुमुहं ॥ अभयं
अणहं, अरयं अरुयं । अजिअं, अजिअं, पयओ पणमे ॥२१॥

विज्जुविलसिअं ॥ आगया वरविमाण दिव्वकणगरहतुरयपह-करसएहि हुलिअं । ससंभमोअरण खुभिअलुलिअचलकुंडलंगय-तिरीडसोहंतमउलिमाला ॥२२॥वेड्ढओ॥ जं सुरसंघा सासुर-संघा,वेरविउत्ताभत्ति सुजुत्ता,आयारभूसिअ संभमपिंडिअ,सु-ट्ठुसुविम्हिअ सव्वबलोघ । उत्तमकंचणरयणपरूविय भासुर-भूसणभासुरिअ गा गायसमोणयभत्तिवसागय, पंजिलिपेसियसी-सपणामा ॥२३॥ रयणमाला ॥ वंदिऊण थोऊण तो जिणं, तिगुणमेव य पुणो पयाहिणं । पणमिऊण य जिणं सुरासुरा, पमुइआ सभवणाइं तो गया ॥ २४ ॥ खित्तयं ॥ तं महा-मुणिमहंपि पंजली, रागदोसभयमोहवज्जिअं । देवदाणवनरिं-दवंदिअं संतिमुत्तमं महातवं नमे ॥ २५ ॥ खित्तयं ॥ अंबरं-तरविआरणिआहिं, ललिअहंसवहुगामिणिआहिं पीणसो-णिथणसालिणिआहि. सकलकमलदललोअणि आहिं ॥२६॥ दीवयं ॥ पीणनिरन्तरथणभरविणमियगायलयाहिं, मणिकं-चणपसिढिलमेहलसोहिअसोणितडाहि । वरखिंखिणीनेऊरस-तिलयवलयविभूसणियाहिं,रइकरचउरमणोहरसुन्दरदंसणिआहिं ॥ २७ ॥ चित्तक्खरा ॥ देवसुन्दरीहिं पायवंदिआहिं वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा, अप्पणो । निडालएहिं मंडणोड्डण-प्पगारएहिं केहिं केहिं वि अवंगतिलयपत्तलेहनामएहिं चिल्ल-एहिं संगयंगयाहिं भत्तिसन्निविट्ठवंदणागयाहि हुंति ते वंदिआ पुणो पुणो ॥ २८ ॥ नारायओ ॥ तमहं जिणचंदं, अजिअं

जिअमोहं । धुयसव्वकिलेसं, पयओ पणमामि ॥ २९ ॥
नंदिअयं । थुअवंदिअयरसा रिसिगणदेवगणेहिं. तो देववहूहि
पयओ पणमिअस्सा । जस्स जगुत्तमसासण अस्सा भत्तिव-
सागयपिंडिअयाहिं । देववरच्छरसा वहुआहिं, सुरवररइगुण
पंडिअआहिं ॥ ३० ॥ भासुरयं ॥ वससद्दतंतीतालमेलिए,
तिउक्खराभिरामसद्दमीसएकएअ, सुइसमाणणे अ सुद्धसज्जगी-
अपायजालघंटिआहिं वलयमेहलाकलावनेउराभिरामसद्दमीसए
कए अ । देवनट्टिआहिं हावभावविब्भमप्पगारएहिं नच्चिऊण
अंगहारएहि वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा, तयं तिलोयस-
व्वसत्तसंतिकारयंपसंतसव्वपावदोसमेसहंनमामि संत्तिमुत्तमं जिणं
॥३१॥ नारायओ ॥ छत्तचामरपडागजूअजवमंडिआ, झयवरम-
गरतुरयसिरिवच्छसुलंछणा । दीवसमुद्दमंदरदिसागयसोहिआ,
सत्थिअवसहसीहरहचक्कवरंकिया ॥३२॥ ललिअयं । सहा-
वलट्ठा, समप्पइट्ठा, अदोसदुट्ठा गुणेहिं जिट्ठा । पसायसिट्ठा
तवेण पुट्ठा, सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा ॥ ३३ ॥ वाणवा-
सिआ ॥ ते तवेण धुअसव्वपावया, सव्वलोअहिअमूलपावया ।
संथुआ अजिअसंतिपायया, हुंतु मे सिवसुहाण दायया ॥३४॥
अपरांतिका ॥ एवं तवबलविउलं, थुअं मए अजिअसंति-
जिणजुअलं । ववगयकम्मरयमलं, गइं गयं सासयं विउलं
॥३५॥ गाहा ॥ तं वहुगुणप्पसायं, मुक्खसुहेण परमेण
अविसायं । नासेउ मे विसायं, कुणउ अ परिसावि अ प्पसायं

॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं मोएउ अ नंदि, पावेउ अ नंदिसेणमभिनंदिं । परिसावि अ सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥३७॥ गाहा ॥ पक्खिअचाउम्मासिअ, संवच्छरिए अवस्स भणिअव्वो; सोअव्वो सव्वेहिं उवसग्गनिवारणो एसो ॥३८॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, उभओ कालंपि अजिअसंतिथयं । न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्नावि नासंति ॥३९॥ जइ इच्छह परमपयं, अहवा कित्तिं सुवित्थडं भुवणे । ता तेलुक्कुद्धरणे, जिणवयणे आयरं कुणह ॥४०॥ इति ॥

वरकनकशंखविद्रुम,–मरकतघनसन्निभं विगतमोहं । सप्ततिशतं जिनाना, सर्वामरपूजित वंदे ॥१॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । भगवानहं । इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । आचार्यहं । इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । उपाध्यायहं । इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि सर्वसाधुहं ।

(फिर दाहिना हाथ चरवले पर रखकर शिर झूकाकर)

अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु, पनरससु कम्मभूमिसु, जावंत केवि साहू, रयहरणगुच्छपडिग्गहधारा, पंचमहव्वयधारा, अट्ठारससहस्स सीलंगधारा, अक्खुयायारचरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! देवसियपायच्छित्त-विसोहणत्थं काउस्सग्ग करूं ?, इच्छं, देवसियपायच्छित्त-विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहि, सुहुमेहि दिट्ठिसचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहि आगारेहि, अभग्गो अविरा-हिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥४॥

ऐसा कहकर चार लोगस्स चदेसुनिम्मलयरा तक काउस्सग्ग करना न आता हो तो सोलह नवकार गिनना. फिर प्रगट लोग-स्स कहना वह नीचे मुताबिक है ।)

लोगस्स उज्जोअगरे,धम्म तित्थयरे जिणे;अरिहंते कित्त-इस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभ मजिअं च वंदे, संभव मभिणंदणं च सुमइं च; पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहि च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च, विमल–मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि–जिणं च; वंदामि

॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं मोएउ अ नंदिं, पावेउ अ नंदिसेणम-भिनंदिं । परिसावि अ सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥३७॥ गाहा ॥ पक्खिअचाउम्मासिअ, संवच्छरिए अवस्स भणिअव्वो; सोअव्वो सव्वेहिं उवसग्गनिवारणो एसो ॥३८॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, उभओ कालंपि अजिअसंतिथयं । न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्नावि नासंति ॥३९॥ जइ इच्छह परमपयं, अहवा कित्तिं सुवित्थडं भुवणे । ता तेलुक्कु-द्धरणे, जिणवयणे आयरं कुणह ॥४०॥ इति ॥

वरकनकशंखविद्रुम,–मरकतघनसन्निभं विगतमोहं । सप्त-तिशतं जिनाना, सर्वामरपूजित वंदे ॥१॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । भगवान्हं । इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । आचार्यहं । इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । उपाध्यायहं । इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि सर्वसाधुहं ।

(फिर दाहिना हाथ चरवले पर रखकर शिर झूकाकर)

अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु, पनरससु कम्मभूमिसु, जावं-त केवि साहू, रयहरणगुच्छपडिग्गहधारा, पंचमहव्वयधारा, अट्ठारससहस्स सीलंगधारा, अक्खुयायारचरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! देवसियपायच्छित्त-विसोहणत्थं काउस्सग्ग करूं ?, इच्छं, देवसियपायच्छित्त-विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएण उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहि खेलसंचालेहि, सुहुमेहिं दिट्ठिसचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहि आगारेहि, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥४॥

ऐसा कहकर चार लोगस्स चदेसुनिम्मलयरा तक काउस्सग्ग करना न आता हो तो सोलह नवकार गिनना। फिर प्रगट लोगस्स कहना वह नीचे मुताबिक है ।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म तित्थयरे जिणे; अरिहते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभ मजिअं च वंदे, सभव मभिणंदणं च सुमइं च; पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहि च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च, विमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लि, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च; वंदामि

रिट्ठनेमि, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला पहीण-जर-मरणा; चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयतु ॥५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा; आरुग्ग बोहिलाभं, समाहि वर मुत्तमं दितु ॥६॥ चदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा, सागरवर गम्भीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि.

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय संदिसाहुं "इच्छं"
इच्छामि खमासमणो ! वदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करूं? "इच्छं"
नमो अरिहताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं,नमो लोए सव्वसाहूणं,एसो पंच नमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसि, पढम हवइ मंगल ॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं । विसहर-विसनिन्नास, मंगलकल्लाण आवासं ॥१॥ विसहर फुलिगमंत, कंठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्स गह रोगमारी-दुट्ठ जरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो,तुज्झ पणामो वि

बहुफलो होइ । नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोगच्चं ॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायव-ब्भहिए। पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुओ महायस ! भत्तिब्भर निब्भरेण हियएण । ता देव दिज्ज बोहि, भवे भवे पास जिणचंद ॥५॥

संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरं, माया-रसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरं ॥१॥ भावा-वनाम सुरदानवमानवेन, चूलाविलोलकमलावलिमालितानि, संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि,काम नमामि जिनराजपदानि तानि ॥२॥बोधागाधं सुपदपदवी नीरपूराभिरामं, जीवाहिंसा-विरललहरीसंगमागाहदेहं।चूलावेलं गुरुगममणिसंकुलं दूरपारं, सारं वीरागमजलनिधि सादरं साधु सेवे ॥३॥ आमूलालोल-धूलीबहुलपरिमलालीढ–लोलालिमाला,झंकारारावसारामलदल-कमलागारभूमिनिवासे । छायासंभारसारे वरकमलकरे तारहा-राभिरामे,वाणीसंदोहदेहे भवविरहवर देहि मे देवि सारं॥४॥

नमो अरिहंताणं,नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंचनमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो; मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं। इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् दुक्खक्खय कम्मक्खय

निमित्तं काउस्सग्ग करु ! "इच्छं" दुक्खक्खय कम्मक्खय निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंगसचालेहि, सुहुमेहि खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहि आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(फिर संपूर्ण चार लोगस्स अथवा सोलह नवकारका काउस्सग्ग करना बाद मे नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कह कर वडी शान्ति नीचे मुताबिक कहना)

बृहत् शान्ति

भो भो भव्याः शृणुत वचनं प्रस्तुत सर्वमेतद्, ये यात्राया त्रिभुवनगुरोरार्हता भक्तिभाजः। तेषा शातिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा,-दारोग्य श्री धृति मति करी क्लेशविध्वंसहेतुः ॥१॥

भो भो भव्य लोका इह हि भरतैरावत-विदेह संभवाना, समस्त तीर्थकृता जन्मन्यासन-प्रकम्पानन्तरमवधिना विज्ञाय, सौधर्माधिपतिः सुघोषा-घण्टा-चालनानन्तरसकल सुरासुरेन्द्रैः सह समागत्य, सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकाद्रिशृङ्गे, विहित-जन्माभिषेकःशान्तिमुद्घोषयति, यथा ततोऽहं

कृतानुकारमिति कृत्वा,महाजनो येन गतः स पन्था इति भव्यजनैः सह समेत्य स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय शान्तिमुद्घोषयामि; तत्पूजायात्रास्नात्रादिमहोत्सवानंतरमितिकृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा ॥

ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्तां प्रीयन्ता भगवन्तोऽर्हन्त सर्वज्ञाःसर्वदर्शिन–स्त्रिलोकनाथा–स्त्रिलोकमहिता-स्त्रिलोक–पूज्या–स्त्रिलोकेश्वरा–स्त्रिलोकोद्योतकराः ॥

ॐ ऋषभ–अजित–संभव–अभिनन्दन–सुमति–पद्मप्रभ सुपार्श्व-चन्द्रप्रभ–सुविधि–शीतल–श्रेयांस–वासुपूज्य–विमल अनन्त धर्म शान्ति-कुन्थु अर-मल्लि-मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व-वर्द्धमानान्ता जिनाः शान्ताःशान्तिकरा भवन्तु स्वाहा ।

ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविजयदुर्भिक्षकान्तारेषु दुर्ग-मार्गेषु रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्री-धृति-मति-कीर्ति–कान्ति बुद्धि–लक्ष्मी–मेधा –विद्या–साधन–प्रवेश निवेशनेषु सुगृहीत–नामानो जयन्तु ते जिनेंद्राः ।

ॐ रोहिणी–प्रज्ञप्ति–वज्रशृङ्खला–वज्राकुशी—अप्रति-चक्रा–पुरुषदत्ता–काली–महाकाली–गौरी–गांधारी–सर्वास्त्रा-महाज्वाला–मानवी–वैरोट्या– अच्छुप्ता–मानसी–महामानसी षोडश विद्यादेव्यो रक्षन्तु वो नित्य स्वाहा ।

ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्णस्य श्रीश्रमणसंघस्य

शान्तिर्भवतु तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ।

ॐ ग्रहाश्चंद्र–सूर्याङ्गारकबुध–बृहस्पति शुक्र–शनैश्चर-राहु-केतुसहिताःसलोकपालाःसोम यम–वरुण–कुवेर–वासवादित्य स्कन्द–विनायकोपेताः, ये चान्येऽपि ग्राम-नगर क्षेत्रदेवता-दयस्ते सर्वे प्रीयन्तां प्रीयन्ता अक्षीणकोश कोष्ठागारा नरपत-यश्च भवन्तु स्वाहा ।

ॐ पुत्र–मित्र–भ्रातृ–कलत्र सुहृद्–स्वजन–सबंधिवन्धु-वर्गसहिताःनित्यंचामोदप्रमोदकारिणःअस्मिंश्च भूमण्डलेआय-तननिवासि साधु साध्वी श्रावक-श्राविकाणा रोगोपसर्गव्याधि दुःखदुर्भिक्ष दौर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्भवतु ।

ॐ तुष्टि–पुष्टि–ऋद्धि–वृद्धि–मागल्योत्सवाः ।

सदा प्रादुर्भूतानि, पापानि शाम्यन्तु दुरितानि, शत्रवः पराङ्मुखा भवन्तु स्वाहा ।

श्रीमते शान्तिनाथाय, नमः शान्तिविधायिने । त्रैलो-क्यस्यामराधीश,–मुकुटाभ्यर्चिताग्रये ॥१॥ शान्तिः शान्ति-करः श्रीमान, शान्ति दिशतु मे गुरुः । शान्तिरेव सदा तेपा, येपा शान्तिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ उन्मृष्टरिष्टदुष्टग्रहगति-दुःस्वप्नदुर्निमित्तादि । संपादितहितसंप,–न्नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥३॥ श्रीसंघजगज्जनपद, राजाधिपराजसन्निवेशा नाम् । गौष्ठिकपुरमुख्याणा, व्याहरणैर्व्याहरेच्छान्तिम् ॥४॥ श्रीश्रमणसघस्य शान्तिर्भवतु, श्रीजनपदाना शान्तिर्भवतु,

श्रीराजाधिपानां शान्तिर्भवतु, श्रीराजसन्निवेशानां शान्तिर्भवतु, श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्भवतु, श्रीपौरमुख्याणां शान्तिर्भवतु, श्रीपौरजनस्य शान्तिर्भवतु श्रीब्रह्मलोकस्य शान्तिर्भवतु, ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा ।
एषा शांतिः प्रतिष्ठायात्रास्नात्राद्यवसानेषु शांतिकलशं गृहीत्वा, कुंकुमचन्दनकर्पूरागरुधूपवासकुसुमाञ्जलिसमेतः स्नात्रचतुष्किकायां श्रीसंघसमेतः शुचिशुचिवपुः पुष्पवस्त्रचंदनाभरणाऽलंकृतः पुष्पमालां कंठे कृत्वा शांतिमुद्घोषयित्वा, शांतिपानीयं मस्तके दातव्यमिति ।

नृत्यंति नृत्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजंति गायंति च मंगलानि । स्तोत्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान्, कल्याणभाजो हि जिनाभिषेके ॥१॥

शिवमस्तु सर्व जगतः, परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः । दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखीभवतु लोकः ॥ २ ॥ अहं तित्थयरमाया, सिवादेवी तुम्ह नयरनिवासिनी । अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, असिवोवसमं सिवं भवतु स्वाहा ॥३॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः । मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥४॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् । प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥५॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरेजिणे; अरिहंते कित्तइस्सं चउवीसंपि केवली ॥ १॥ उसभमजिअं च वंदे, संभव

मभिणंदणं च सुमइं च; पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च; विमल–मणंत च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च; वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एव मए अभिथुआ, विहुय–रय-मला पहीण जर–मरणा; चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय–वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा; आरुग्ग बोहिलाभं, समाहि वर मुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा; सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

अथ संतिकरं स्तवन

संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिरीइ दायारं। समरामि भत्तपालग -निव्वाणीगरुडकयसेव ॥ १ ॥ ॐ स-नमोविप्पोसहि–पत्ताणं संतिसामिपायाणं। झ्रौं स्वाहामंतेणं, सव्वासिवदुरिअहरणाणं ॥२॥ ॐ संतिनमुक्कारो, खेलोसहि-माइलद्धिपत्ताण। सौं ह्रीं नमो सव्वोसहिपत्ताण च देइ सिरि ॥३॥ वाणी तिहुअणसामिणी, सिरिदेवी जक्खरायगणि-पिडगा। गहदिसिपालसुरिंदा, सयावि रक्खंतु जिणभत्ते ॥४॥ रक्खंतु मम रोहिणी, पन्नत्ती वज्जसिखला य सया। वज्जंकुसी चक्केसरो, नरदत्ता काली महाकाली ॥५॥ गोरी तह गंधारी, महजाला माणवी अ वइरुट्टा। अच्छुत्ता माण-

सिआ, महामाणसिआउ देवीओ ॥ ६ ॥ जक्खा गोमुह महजक्ख, तिमुह जक्खेस तुंबरू कुसुमो । मायंगविजय-अजिआ, बंभो मणुओ सुरकुमारो ॥ ७ ॥ छम्मुह पयाल किन्नर, गरूलो गंधव्व तह य जक्खिंदो । कूबर वरुणो भिउडी, गोमेहो पास मायगा ॥८॥ देवीओ चक्केसरी, अजिआ, दुरिआरि काली महाकाली । अच्चुअ संता जाला सुतारयाऽसोअ सिरिवच्छा ॥९॥ चंडा विजयंकुसि, पन्नइत्ति निव्वाणि अच्चुआ धरणी । वइरुट्टछुत्त गंधारी, अंबपउमावई सिद्धा ॥१०॥ इअ तित्थरक्खणरया, अन्नेवि सुरासुरी य चउहावि । वतरजोइणीपमुहा, कुणंतु रक्खं सया अम्हं ॥११॥ एवं सुदिट्ठिसुरगण-सहिओ संघस्स संतिजिणचंदो । मज्झवि करेउ रक्खं, मुणिसुन्दरसूरिथुअमहिमा ॥१२॥ इअ संति-नाहसम्म-द्दिट्ठिरक्खं सरइ तिकालं जो । सव्वोवद्दवरहिओ, स लहइ सुहसंपयं परम ॥१३॥ तवगच्छगयणदिणयर-जुगवर-सिरिसोमसुन्दरगुरूणं । सुपसायलद्धगणहर विज्जासिद्धि भणइ सीसो ।१४॥

॥ पाक्षिक प्रतिक्रमण विधि समाप्त ॥

॥ सामायिक पारने की विधि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरियावहियं पडिक्कमामि ?

इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहिआए विराहणाए, गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे, ओसा उत्तिग पणग दग, मट्टी मक्कडा संताणा सक्रमणे, जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोही करणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं, निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥८॥

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएण वायनिसग्गेणं भमलीए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवताणं नमुक्कारेण न पारेमि ताव काय ठाणेणं मोणेणं झाणेणअप्पाणंवोसिरामि ॥

(एक लोगस्स चदेसुनिम्मलयरा तकका काउस्सग्ग करना न आता हो तो चार नवकार गिनना फिर लोगस्स नीचे मुताबिक कहना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म तित्थयरे जिणे; अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभ मजिअं च वंदे, संभव मभिणंदणं च सुमइं च; पउमप्पहं सुपास, जिणं च चंद

प्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च, विमल मणतं च जिण, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च; वंदामि रिट्ठनेमिं, पास तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय रय मला पहीण जर मरणा; चउवीसंपि जिणवरा ॥ तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ॥ आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ॥ सागर वर गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

(फिर दाया घुटना ऊचा करके चउक्कसाय नीचे मुताविक कहा)

चउक्कसायपडिमल्लुल्लूरणु दुज्जयमयणवाणमुसुमूरणु । सरसपिअंगुवन्नु गयगामिउ, जयउ पासु भुवणत्तयसामिउ ॥१॥ जसुतणु कंतिकडप्पसिणिद्धउ, सोहइ फणिमणिकिरणालिद्धउ । नं नवजलहरतडिल्लयलंछिउ, सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउ ॥२॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाण ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, ॥ लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं ॥४॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं, ॥५॥ धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं ॥ धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतच-

क्कवट्टीणं ॥६॥ अप्पडिहयवरनाण–दंसणधराणं, विअट्टछउ-माणं ॥७॥ जिणाणं जावयाण, तिन्नाणं तारयाणं ॥ बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणराविति, सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥९॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले ॥ संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ, सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

जावंत केवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ; सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं; विसहर-विसनिन्नासं, मंगलकल्लाण–आवासं ॥ १ ॥ विसहरफुलिंग-मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्स गहरोगमारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ । नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए । पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुओ

महायस, भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण। ता देव दिज्ज' बोहिं, भवे भवे पासजिणचंद ॥ ५ ॥

(फिर दोनों हाथ मस्तक को लगाकर)

जय वीयराय जगगुरु, होउ ममं तुह पभावओ भयवं। भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफल सिद्धी ॥ १ ॥ लोग-विरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ–परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो तव्वयण, सेवणा आभवमखंडा ॥२॥ वारिज्जइ जइवि निआ-णबंधण वीयराय तुह समए। तहवि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥ ३ ॥ दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, समा-हिमरणं च बोहिलाभो अ।संपज्जउ मह एअं, तुह नाह पणाम-करणेणं ॥ ४ ॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणं। प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! मुहपत्ति पडिलेहुं ? "इच्छं"

(एसा कहके मुहपत्ति पडिलेहनी, फिर खमासमण देना)

इच्छामि ासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पारुं ? 'यथाशक्ति'

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पार्युं. "तहत्ति"

कवट्टीणं ॥६॥ अप्पडिहयवरनाण–दंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥७॥ जिणाणं जावयाण, तिन्नाणं तारयाणं ॥ बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वावाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले ॥ संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ, सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

जावंत केवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ; सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं; विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाण–आवासं ॥ १ ॥ विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्स गहरोगमारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ । नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए । पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुओ

महायस, भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण। ता देव दिज्ज' वोहिं, भवे भवे पासजिणचंद ॥ ५ ॥

(फिर दोनों हाथ मस्तक को लगाकर)

जय वीयराय जगगुरु, होउ ममं तुह पभावओ भयवं। भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफल सिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ-परत्थकरणं च। सुहगुरुजोगो तव्वयण, सेवणा आभवमखंडा ॥२॥ वारिज्जइ जइवि निआणवंधण वीयराय तुह समए। तहवि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥ ३ ॥ दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, समाहिमरणं च वोहिलाभो अ।संपज्जउ मह एअं, तुह नाह पणामकरणेणं ॥ ४ ॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणं। प्रधानं सर्वधर्माणा, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वदामि

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! मुहपत्ति पडिलेहुं ? "इच्छं"

(एसा कहके मुहपत्ति पडिलेहनी, फिर खमासमण देना)

इच्छामि ासमणो ! वदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पारुं ? 'यथाशक्ति'

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पार्यु. "तहत्ति"

(ऐसा कहे के आसन पर दाहिना हाथ रखके नीचे मुताबिक बोलना)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंचनमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं॥

सामाइय वयजुत्तो, जाव मणे होइ नियमसंजुत्तो। छिन्नइ असुहं कम्म, सामाइय जत्तिया वारा ॥ १ ॥ सामाइयंमि उ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा। एएण कारणेणं, बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥ १ ॥ सामायिक विधिसे लिया, विधिसे पारा, विधि करते जो कोई अविधि हुई हो वो सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं। दश मनके, दश वचनके, बारह कायाके, इन बत्तीस दोषों मे जो कोई दोष लगा हो वह सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं।

अथ चउमासिक प्रतिक्रमण विधि

पाक्षिक प्रतिक्रमणकी विधिमे नीचे मुताबिक फेरफार समझना.

(१) पाक्षिक प्रतिक्रमणमे वांदणामे जिस जिस जगह 'पक्खो वइक्कंतो, पक्खिअं वइक्कमं' और 'पक्खिआए आसायणाए' ऐसा कहते है उस जगह 'चउमासी वइक्कंता, 'चउमासिअ वइक्कम' और 'चउमासिआए आसायणाए' ऐसा कहना.

(२) वंदित्तासूत्रमें 'पडिक्कमे पक्खिअ सव्वं' की जगह 'पडिक्कमे चउमासिअं सव्वं' ऐसा कहना.

(३) अतिचार में 'पाक्षिक अतिचार पढुं ? पक्ष दिवस मे जो कोई अतिचार लगा हो' इसके जगह 'चउमासिअ अतिचार पढुं ?' और चउमासी दिवस में जो कोई अतिचार लगा हो' ऐसा कहना

(४) पाक्षिक प्रतिक्रमण मे 'पत्तेयखामणेणं, संबुद्धा खामणेणं, सम्मत्तखामणेणं' इन प्रत्येक मे 'एक-पक्खाणं, पन्नरस दिवसाणं, पन्नरस राइआणं' कि जगह 'चार मासाणं, आठ पक्खाणं, एक सो वीस राइदिनसाणं' ऐसा कहना और पक्खिअं खामुं ?' कि जगह 'चउमासिअ खामु !' ऐसा कहना.

(५) पाक्षिक प्रतिक्रमण मे 'पक्खितप प्रसाद करोजी' चउत्थेणं एक उपवास, दो आयंबिल, तीन निवि, चार एकासना, आठ बेआसना, दो हजार सज्झाय यथाशक्ति तप कर के पहोंचाना' कि जगह 'छट्टेणं, दो उपवास, चार आयंबिल, छह निवि, आठ एकासना' सोलह बिआसना, चार हजार सज्झाय यथाशक्ति तप करके पहोचाना ऐसा कहना.

(६) 'पक्खिसूत्र पढुं ?' कि जगह 'चउमासी सूत्र पढु ? ऐसा कहना.

(७) पाक्षिक-प्रतिक्रमण मे बारह लोगस्स के काउस्सग्ग की जगह यहां पर वीस लोगस्स का काउस्सग्ग करना.

(८) फिर 'इच्छामि ठामि' वगैरह सूत्रों में जहा जहा

(ऐसा कहे के आसन पर दाहिना हाथ रखके नीचे मुताबिक बोलना)

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंचनमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसि, पढमं हवइ मंगलं॥

सामाइय वयजुत्तो, जाव मणे होइ नियमसंजुत्तो । छिन्नइ असुहं कम्म, सामाइय जत्तिया वारा ॥ १ ॥ सामाइयंमि उ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा । एएण कारणेणं, बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥ १ ॥ सामायिक विधिसे लिया, विधिसे पारा, विधि करते जो कोई अविधि हुई हो वो सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं। दश मनके, दश वचनके, बारह कायाके, इन बत्तीस दोषों मे जो कोई दोष लगा हो वह सब मन वचन कायाकर मिच्छामि दुक्कडं ।

अथ चउमासिक प्रतिक्रमण विधि

पाक्षिक प्रतिक्रमणकी विधिमे नीचे मुताबिक फेरफार समझना.

(१) पाक्षिक प्रतिक्रमणमे वांदणामे जिस जिस जगह 'पक्खो वइक्कंतो, पक्खिअं वइक्कमं' और 'पक्खिआए आसायणाए' ऐसा कहते है उस जगह 'चउमासी वइक्कंता, 'चउमासिअं वइक्कमं' और 'चउमासिआए आसायणाए' ऐसा कहना.

(२) वंदित्तासूत्रमें 'पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं' की जगह 'पडिक्कमे चउमासिअं सव्वं' ऐसा कहना.

(३) अतिचार में 'पाक्षिक अतिचार पढ़ुं ? पक्ष दिवस मे जो कोई अतिचार लगा हो' उसके जगह 'चउमासिअ अतिचार पढ़ुं ?' और चउमासी दिवस मे जो कोई अतिचार लगा हो' ऐसा कहना.

(४) पाक्षिक प्रतिक्रमण मे 'पत्तेयखामणेणं, संबुद्धा खामणेणं, सम्मत्तखामणेणं' इन प्रत्येक मे 'एक-पक्खाणं, पन्नरस दिवसाणं, पन्नरस राइआणं' कि जगह 'चार मासाणं, आठ पक्खाणं, एक सो वीस राइदिवसाणं' ऐसा कहना और पक्खिअं खामुं ?' कि जगह 'चउमासिअ खामु !' ऐसा कहना.

(५) पाक्षिक प्रतिक्रमण मे 'पक्खितप प्रसाद करोजी' चउत्थेणं एक उपवास, दो आयंबिल, तीन निवि, चार एकासना, आठ बेआसना, दो हजार सज्झाय यथाशक्ति तप कर के पहोंचाना' कि जगह 'छट्ठेणं, दो उपवास, चार आयंबिल, छह निवि, आठ एकासना' सोलह बिआसना, चार हजार सज्झाय यथाशक्ति तप करके पहोचाना ऐसा कहना.

(६) 'पक्खिसूत्र पढ़ुं ?' कि जगह 'चउमासी सूत्र पढु ? ऐसा कहना.

(७) पाक्षिक-प्रतिक्रमण मे बारह लोगस्स के काउस्सग्ग की जगह यहा पर वीस लोगस्स का काउस्सग्ग करना.

(८) फिर 'इच्छामि ठामि' वगैरह सूत्रों में जहा जहा

'पक्खिअं' शब्द आता है वहां वहां चउमासिअं शब्द बोलना.

संवत्सरी प्रतिक्रमण विधि

पक्खी प्रतिक्रमण विधि मे नीचे मुताबिक फेरफार समझना.

१ जिस जगह "पक्खिअं" है उस जगह "संवच्छरिअं" कहना.

२ पक्खि प्रतिक्रमण मे "पत्तेअखामणेणं, संबुद्धा खामणेणं, समत्तखामणेणं" कहते हैं वहां संवच्छरि प्रतिक्रमण में बारह मासाणं, चौवीस पक्खाणं, तिनसो साठ राइदिवसाणं" ऐसा पाठ कहना।

३ "पक्खि तप प्रसाद करोजी" की जगह "संवच्छरी तप प्रसाद करोजी" एसा कहके फिर "अट्ठमभत्तेणं तीन उपवास, छह आयंबिल, नव निवि, बारह एकासना, चोवीस बेआसना और छह हजार सज्झाय यथाशक्ति तप कर के पहोचाना" ऐसा कहना।

४ पक्खि प्रतिक्रमण के बारह लोगस्स के काउस्सग्ग की जगह यहा पर चालीस लोगस्स और एक नवकारका काउस्सग्ग करना। लोगस्स न आता हो तो एक सो साठ नवकार गिनना।

५ हरेक सूत्र मे जहा जहा "पक्खिअं" बोलने का हो वहां वहां "संवच्छरिअं" बोलना ॥ इति ॥

श्री संवत्सरी आदि प्रतिक्रमण विधि समाप्त.

अथ नव स्मरणानि ।

---

१. नवकार (नमस्कार) सूत्र.

नमो अरिहंताणं ॥१॥ नमो सिद्धाणं ॥२॥ नमो आयरियाणं ॥३॥ नमो उवज्झायाणं ॥४॥ नमो लोए सव्वसाहूणं ॥५॥ एसो पंच नमुक्कारो ॥६॥ सव्वपावप्पणासणो ॥७॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥८॥ पढमं हवइ मंगलं ॥९॥

---

२. उवसग्गहर स्तोत्रम्.

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ।
विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाण आवासं ॥१॥
विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।
तस्स गहरोगमारी–दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥२॥
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ ।
नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥३॥
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहिए ।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥
इअ संथुओ महायस !, भत्तिब्भरनिब्भरेण हियएण ।
ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास ! जिणचंद ! ॥५॥

'पक्खिअं शब्द आता है वहां वहां चउमासिअं शब्द बोलना.

संवत्सरी प्रतिक्रमण विधि

पक्खी प्रतिक्रमण विधि मे नीचे मुताबिक फेरफार समझना.

१ जिस जगह "पक्खिअं" है उस जगह "संवच्छरिअं" कहना.

२ पक्खि प्रतिक्रमण मे "पत्तेअखामणेणं, संबुद्धा खामणेणं, समत्तखामणेणं" कहते हैं वहां संवच्छरि प्रतिक्रमण में बारह मासाणं, चौवीस पक्खाणं, तिनसो साठ राइदिवसाणं" अैसा पाठ कहना।

३ "पक्खि तप प्रसाद करोजी" की जगह "संवच्छरी तप प्रसाद करोजी" एसा कहके फिर "अट्ठमभत्तेणं तीन उपवास, छह आयंबिल, नव निवि, बारह एकासना, चोवीस बेआसना और छह हजार सज्झाय यथाशक्ति तप कर के पहोंचाना" ऐसा कहना।

४ पक्खि प्रतिक्रमण के बारह लोगस्स के काउस्सग्ग की जगह यहा पर चालीस लोगस्स और एक नवकारका काउस्सग्ग करना। लोगस्स न आता हो तो एक सो साठ नवकार गिनना।

५ हरेक सूत्र में जहा जहा "पक्खिअं" बोलने का हो वहां वहा "संवच्छरिअं" बोलना ॥ इति ॥

श्री संवत्सरी आदि प्रतिक्रमण विधि समाप्त.

अथ नव स्मरणानि ।

---

१. नवकार (नमस्कार) सूत्र.

नमो अरिहंताणं ॥१॥ नमो सिद्धाणं ॥२॥ नमो आयरियाणं ॥३॥ नमो उवज्झायाणं ॥४॥ नमो लोए सव्वसाहूणं ॥५॥ एसो पंच नमुक्कारो ॥६॥ सव्वपावप्पणासणो ॥७॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥८॥ पढमं हवइ मंगलं ॥९॥

---

२. उवसग्गहर स्तोत्रम्.

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ।
विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाण आवासं ॥१॥
विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।
तस्स गहरोगमारी–दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥२॥
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ ।
नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥३॥
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहिए ।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥
इअ संथुओ महायस !, भत्तिब्भरनिब्भरेण हियएण ।
ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास ! जिणचंद ! ॥५॥

'पक्खिअं शब्द आता है वहां वहां चउमासिअं शब्द बोलना.

संवत्सरी प्रतिक्रमण विधि

पक्खी प्रतिक्रमण विधि मे नीचे मुताबिक फेरफार स ना.

१ जिस जगह "पक्खिअं" है उस जगह "संवच्छरिअं" कहना.

२ पक्खि प्रतिक्रमण मे "पत्तेअखामणेणं, संबुद्धा खामणेणं, समत्तखामणेणं" कहते हैं वहां संवच्छरि प्रतिक्रमण में बारह मासाणं, चौवीस पक्खाणं, तिनसो साठ राइदिवसाणं" ऐसा पाठ कहना।

३ "पक्खि तप प्रसाद करोजी" की जगह "संवच्छरी तप प्रसाद करोजी" एसा कहके फिर "अट्ठमभत्तेणं तीन उपवास, छह आयंबिल, नव निवि, बारह एकासना, चोवीस बेआसना और छह हजार सज्झाय यथाशक्ति तप कर के पहोंचाना" ऐसा कहना।

४ पक्खि प्रतिक्रमण के बारह लोगस्स के काउस्सग्ग की जगह यहा पर चालीस लोगस्स और एक नवकारका काउस्सग्ग करना। लोगस्स न आता हो तो एक सो साठ नवकार गिनना।

५ हरेक सूत्र मे जहा जहा "पक्खिअं" बोलने का हो वहां वहा "संवच्छरिअं" बोलना ॥ इति ॥

श्री संवत्सरी आदि प्रतिक्रमण विधि समाप्त.

अथ नव स्मरणानि ।

---

१. नवकार (नमस्कार) सूत्र.

नमो अरिहंताणं ॥१॥ नमो सिद्धाणं ॥२॥ नमो आयरियाणं ॥३॥ नमो उवज्झायाणं ॥४॥ नमो लोए सव्वसाहूणं ॥५॥ एसो पंच नमुक्कारो ॥६॥ सव्वपावप्पणासणो ॥७॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥८॥ पढमं हवइ मंगलं ॥९॥

---

२. उवसग्गहर स्तोत्रम्.

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ।
विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाण आवासं ॥१॥
विसहरफुलिंगमंत, कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।
तस्स गहरोगमारी–दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥२॥
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ ।
नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥३॥
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहिए ।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥
इअ संथुओ महायस !, भत्तिब्भरनिब्भरेण हियएण ।
ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास ! जिणचंद ! ॥५॥

---

३. संतिकरं स्तोत्रम्

संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिरीइ दायारं ।
समरामि भत्तपालग, निव्वाणीगरूडकयसेवं ॥१॥
ॐ सनमो विप्पोसहि–पत्ताणं संतिसामिपायाणं ।
झ्रौं स्वाहा मंतेणं, सव्वासिवदुरियहरणाणं ॥२॥
ॐ संतिनमुक्कारो, खेलोसहिमाइलद्धिपत्ताणं ।
सौं ह्रीं नमो सव्वो–सहिपत्ताणं च देइ सिरिं ॥३॥
वाणीतिहुअणसामिणी–सिरिदेवीजक्खरायगणिपिडगा।
गहदिसिपालसुरिंदा, सया वि रक्खंतु जिणभत्ते ॥४॥
रक्खंतु मम रोहिणी, पन्नत्ती वज्जसिखला य सया ।
वज्जंकुसी चक्केसरी, नरदत्ता काली महाकाली ॥५॥
गोरी तह गंधारी, महजाला माणवी अ वइरुट्टा ।
अच्छुत्ता माणसिआ, महामाणसिआउ देवीओ ॥६॥
जक्खा गोमुह महजक्ख, तिमुह जक्खेस तुंबरु कुसुमो ।
मायंगविजयअजिआ, बंभो मणुओ सुरकुमारो ॥७॥
छम्मुह पयाल किन्नर गरुडो गधव्व तह य जक्खिदो ।
कूबर वरुणो भिउडी, गोमेहो पास मायंगा ॥८॥
देवीओ चक्केसरी, अजिआ दुरिआरी काली महाकाली ।
अच्चुअ संता जाला, सुतारयाऽसोय सिरिवच्छा ॥९॥
चंडा विजयंकुसी, पन्नइत्ति निव्वाणी अच्चुआ धरणी ।
वइरुट्टछुत्त (दत्त) गंधारी, अंब पउमावई सिद्धा ॥१०॥

इअ तित्थरक्खणरया, अन्नेऽवि सुरा सुरी य चउहावि ।
वतरजोइणीपमुहा, कुणतु रक्खं सया अम्हं ॥ ११ ॥
एवं सुदिट्ठिसुरगण-सहिओ संघस्स संतिजिणचंदो ।
मज्झ वि करेउ रक्खं, मुणिसुंदरसूरिथुअमहिमा ॥१२॥
इअ संतिनाहसम्म-द्दिट्ठी रक्खं सरइ तिकालं जो ।
सव्वोवद्दवरहिओ, स लहइ सुहसंपय परमं ॥१३॥
तवगच्छगयणदिणयर-जुगवरसिरिसोमसुंदरगुरूणं ।
सुपसायलद्धगणहर-विज्जासिद्धी भणइ सीसो ॥१४॥

---

४. तिजयपहुत्त स्तोत्रम्.

तिजयपहुत्तपयासय-अट्ठमहापाडिहेरजुत्ताणं ।
समयक्खित्तठिआणं, सरेमि चक्कं जिणिंदाणं ॥१॥
पणवीसा य असीआ, पनरस पन्नास जिणवरसमूहो ।
नासेउ सयलदुरिअं, भविआणं भत्तिजुत्ताणं ॥२॥
वीसा पणयाला विय, तीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा ।
गहभूअरक्खसाइणि-घोरुवसग्गं पणासंतु ॥३॥
सत्तरि पणतीसा वि य, सट्ठी पंचेव जिणगणो एसो ।
वाहिजलजलणहरिकरि—चोरारिमहाभयं हरउ ॥४॥
पणपन्ना य दसेव य पन्नट्ठी तह य चेव चालीसा ।
रक्खंतु मे सरीरं, देवासुरपणमिआ सिद्धा ॥५॥
ॐ हरहुंहः सरसुंसः, हरहुंहः तहय चेव सरसुंसः ।
आलिहियनामगब्भं, चक्कं किर सव्वओभद्दं ॥६॥

३. संतिकरं स्तोत्रम्.

संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिरीइ दायारं ।
समरामि भत्तपालग, निव्वाणीगरुडकयसेवं ॥१॥
ॐ सनमो विप्पोसहि-पत्ताणं संतिसामिपायाणं ।
झ्रौं स्वाहा मंतेणं, सव्वासिवदुरियहरणाणं ॥२॥
ॐ संतिनमुक्कारो, खेलोसहिमाइलद्धिपत्ताणं ।
सौ ह्रीं नमो सव्वो-सहिपत्ताणं च देइ सिरिं ॥३॥
वाणीतिहुअणसामिणी-सिरिदेवीजक्खरायगणिपिडगा।
गहदिसिपालसुरिंदा, सया वि रक्खंतु जिणभत्ते ॥४॥
रक्खंतु मम रोहिणी, पन्नत्ती वज्जसिखला य सया ।
वज्जंकुसी चक्केसरी, नरदत्ता काली महाकाली ॥५॥
गोरी तह गंधारी, महजाला माणवी अ वइरुट्टा ।
अच्छुत्ता माणसिआ, महामाणसिआउ देवीओ ॥६॥
जक्खा गोमुह महजक्ख, तिमुह जक्खेस तुंवरु कुसुमो ।
मायंगविजयअजिआ, बंभो मणुओ सुरकुमारो ॥७॥
छम्मुह पयाल किन्नर गरुडो गधव्व तह य जक्खिदो ।
कूवर वरुणो भिउडी, गोमेहो पास मायगा ॥८॥
देवीओ चक्केसरी, अजिआ दुरिआरी काली महाकाली ।
अच्चुअ संता जाला, सुतारयाऽसोय सिरिवच्छा ॥९॥
चंडा विजयंकुसी, पन्नइत्ति निव्वाणी अच्चुआ धरणी ।
वइरुट्टछुत्त (दत्त) गंधारी, अंव पउमावई सिद्धा ॥१०॥

इअ तित्थरक्खणरया, अन्नेऽवि सुरा सुरी य चउहावि ।
वतरजोइणीपमुहा, कुणतु रक्खं सया अम्हं ॥ ११ ॥
एवं सुदिट्ठिसुरगण-सहिओ संघस्स संतिजिणचंदो ।
मज्झ वि करेउ रक्खं, मुणिसुंदरसूरिथुअमहिमा ॥१२॥
इअ संतिनाहसम्म-द्दिट्ठी रक्खं सरइ तिकालं जो ।
सव्वोवद्दवरहिओ, स लहइ सुहसंपयं परमं ॥१३॥
तवगच्छगयणदिणयर-जुगवरसिरिसोमसुंदरगुरूणं ।
सुपसायलद्धगणहर-विज्जासिद्धी भणइ सीसो ॥१४॥

---

४ तिजयपहुत्त स्तोत्रम्.

तिजयपहुत्तपयासय-अट्ठमहापाडिहेरजुत्ताणं ।
समयक्खित्तठिआणं, सरेमि चक्कं जिणिंदाणं ॥१॥
पणवीसा य असीआ, पनरस पन्नास जिणवरसमूहो ।
नासेउ सयलदुरिअं, भविआणं भत्तिजुत्ताणं ॥२॥
वीसा पणयाला वियं, तीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा ।
गहभूअरक्खसाइणि-घोरुवसग्गं पणासंतु ॥३॥
सत्तरि पणतीसा वि य, सट्ठी पंचेव जिणगणो एसो ।
वाहिजलजलणहरिकरि—चोरारिमहाभयं हरउ ॥४॥
पणपन्ना य दसेव य पन्नट्ठी तह य चेव चालीसा ।
रक्खंतु मे सरीरं, देवासुरपणमिआ सिद्धा ॥५॥
ॐ हरहुंहः सरसुंसः, हरहुंहः तहय चेव सरसुंसः ।
आलिहियनामगब्भं, चक्कं किर सव्वओभद्द ॥६॥

ॐ रोहिणी पन्नत्ती, वज्जसिंखला तहय वज्जअंकुसिआ ।
चक्केसरी नरदत्ता, काली महाकाली तह गोरी ॥७॥
गंधारी महज्जाला, माणवी वइरुट्ट तहय अच्छुत्ता ।
माणसी महामाणसिआ, विज्जादेवीओ रक्खंतु ॥८॥
पंचदसकम्मभूमिसु, उप्पन्नं सत्तरि जिणाण सयं ।
विविहरयणाइवन्नो—वसोहिअं हरउ दुरिआइं ॥९॥
चउतीस अइसयजुआ, अट्ठमहापाडिहेरकयसोहा ।
तित्थयरा गयमोहा, झाएअव्वा पयत्तेणं ॥१०॥
ॐ वरकणयसंखविद्दुम—मरगयघणसंनिहं विगयमोहं ।
सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वामरपूइअं वंदे ॥११॥ स्वाहा ॥
ॐ भवणवइवाणवंतर—जोइसवासी विमाणवासी अ ।
जे के वि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु ममं ॥१२॥ स्वाहा ॥
चंदणकप्पूरेणं, फलए लिहिऊण खालिअं पीअं ।
एगंतराइगहभूअ—साइणिमुग्ग पणासेइ ॥१३॥
इअ सत्तरिसय जंतं, सम्मं मंतं दुवारि पडिलिहिअं ।
दुरिआरिविजयवंतं, निब्भंतं निच्चमच्चेह ॥१४॥

---

५. नमिऊण स्तोत्रम्.

नमिऊण पणयसुरगण—चूडामणीकिरणरंजिअं मुणिणो ।
चलणजुअलं महाभय—पणासणं संथवं वुच्छं ॥१॥
सडियकरचरणनहमुह, निवुड्डनासा विवन्नलायन्ना ।
कुट्ठमहारोगानल—फुलिंगनिद्दड्ढसव्वंगा ॥२॥

ॐ रोहिणी पन्नत्ती, वज्जसिंखला तहय वज्जअंकुसिआ ।
चक्केसरी नरदत्ता, काली महाकाली तह गोरी ॥७॥
गधारी महज्जाला, माणवी वइरुट्ट तहय अच्छुत्ता ।
माणसी महामाणसिआ, विज्जादेवीओ रक्खंतु ॥८॥
पंचदसकम्मभूमिसु, उप्पन्नं सत्तरि जिणाण सयं ।
विविहरयणाइवन्नो—वसोहिअं हरउ दुरिआइं ॥९॥
चउतीस अइसयजुआ, अट्ठमहापाडिहेरकयसोहा ।
तित्थयरा गयमोहा, झाएअव्वा पयत्तेणं ॥१०॥
ॐ वरकणयसंखविद्दुम—मरगयघणसंनिहं विगयमोहं ।
सत्तरिसय जिणाणं, सव्वामरपूइअं वंदे ॥११॥ स्वाहा ॥
ॐ भवणवइवाणवंतर—जोइसवासी विमाणवासी अ ।
जे के वि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु ममं ॥१२॥ स्वाहा ॥
चंदणकप्पूरेणं, फलए लिहिऊण खालिअं पीअं ।
एगंतराइगहभूअ—साइणीमुग्ग पणासेइ ॥१३॥
इअ सत्तरिसय जंतं, सम्म मंतं दुवारि पडिलिहिअं ।
दुरिआरिविजयवंत, निब्भंत निच्चमच्चेह ॥१४॥

---

५. नमिऊण स्तोत्रम्.

नमिऊण पणयसुरगण—चूडामणीकिरणरंजिअं मुणिणो ।
चलणजुअलं महाभय—पणासणं संथवं वुच्छं ॥१॥
सडियकरचरणनहमुह, निवुड्डनासा विवन्नलायन्ना ।
कुट्ठमहारोगानल—फुलिंगनिद्दड्ढसव्वंगा ॥२॥

ते तुह चलणाराहण-सलिलंजलिसेयवुड्ढियच्छाया ।
वणदवदड्ढा गिरिपा-यव व्व पत्ता पुणो लच्छिं ॥३॥
दुव्वायखुभिअ जलनिहि, उब्भडकल्लोलभीसणारावे ।
संभंतभयविसंठुल---निज्जामयमुक्कवावारे ॥४॥
अविदलिअजाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं ।
पासजिणचलणजुअलं, निच्चं चिअ जे नमंति नरा ॥५॥
खरपवणुद्धूयवणदव-जालावलिमिलिअसयलदुमगहणे ।
डज्झंतमुद्धमयवहु--भीसणरवभीसणम्मि वणे ॥६॥
जगगुरुणो कमजुअलं, निव्वाविअसयलतिहुअणाभोअं ।
जे संभरंति मणुआ, न कुणइ जलणो भयं तेसिं ॥७॥
विलसंतभोगभीसण-फुरिआरुणनयणतरलजीहालं ।
उग्गभुअंग नवजलय--सत्थहं भीसणायारं ॥८॥
मन्नति कीडसरिसं, दूरपरिच्छूढविसमविसवेगा ।
तुह नामक्खरफुडसि-द्धमंतगुरुआ नरा लोए ॥९॥
अडवीसु भिल्लतक्कर--पुलिंदसद्दूलसद्दभीमासु ।
भयविहुरवुन्नकायर--उल्लूरियपहियसत्थासु ॥१०॥
अविलुत्तविहवसारा, तुह नाह पणाममत्तवावारा ।
ववगयविग्घा सिग्घं, पत्ता हिअइच्छियं ठाणं ॥११॥
पज्जलिआनलनयणं, दूरवियारियमुहं महाकायं ।
नहकुलिसघायविअलिअ-गइंदकुंभत्थलाभोअं ॥१२॥

पणयससंभमपत्थिव–नहमणिमाणिक्कपडिअपडिमस्स ।
तुह वयणपहरणधरा, सीह कुद्धं पि न गणंति ॥१३॥
ससिधवलदंतमुसलं, दीहकरुल्लालवुड्ढिउच्छाहं ।
महुपिंगनयणजुअलं, ससलिलनवजलहरारावं ॥१४॥
भीम महागइंदं, अच्चासन्नं पि ते न वि गणंति ।
जे तुम्ह चलणजुअलं, मुणिवइ तुंगं समल्लीणा ॥१५॥
समरंमि तिक्खखग्गा–भिग्घायपविद्धउद्धुयकबंधे ।
कुंतविणिभिन्नकरिकलह–मुक्कसिक्कारपउरम्मि ॥१६॥
निज्जिअदप्पुद्धररिउ–नरिंदनिवहा भडा जसं धवलं ।
पावंति पावपसमिण, पासजिण तुह प्पभावेण ॥१७
रोगजलजलणविसहर––चोरारिमइंदगयरणभयाइं ।
पासजिणनामसंकित्तणेण, पसमंति सव्वाइं ॥१८॥
एवं महाभयहरं, पासजिणिंदस्स संथवमुआरं ।
भविअजणाणंदयरं, कल्लाणपरंपरनिहाणं ॥१९॥
रायभयजक्खरक्खस–कुसुमिणदुस्सउणरिक्खपीडासु ।
संझासु दोसु पंथे, उवसग्गे तह य रयणीसु ॥२०॥
जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणतुंगस्स ।
पासो पावं पसमेउ, सयलभुवणच्चियचलणो ॥२१॥
उवसग्गंते कमठा–सुरम्मि झाणाउ जो न संचलिओ ।
सुरनरकिन्नरजुवईहिं, संथुओ जयउ पासजिणो ॥२२॥
एअस्स मज्झयारे, अट्ठारसअक्खरेहिं जो मंतो ।
जो जाणइ सो झायइ, परमपयत्थं फुडं पासं ॥२३॥

पासह समरण जो कुणइ, संतुट्ठे हियएण ।
अट्ठुत्तरसयवाहिभय, नासइ तस्स दूरेण ॥४२॥

इति श्री भयहर स्तोत्रम्

६. श्री अजितशांति स्तवन.

अजिअं जिअसव्वभयं, संतिं च पसंतसव्वगयपावं । जयगुरु संतिगुणकरे, दो वि जिणवरे पणिवयामि ॥ गाहा ॥१॥ ववगयमंगुलभावे, ते हं विउलतवनिम्मलसहावे । निरुवम महप्पभावे, थोसामि सुदिट्ठसब्भावे ॥ गाहा ॥२॥ सव्वदुक्ख-प्पसंतीणं, सव्वपावप्पसंतीणं । सया अजिअसंतीणं, नमो अजिअसंतीणं ॥ सिलोगो ॥ ३ ॥ अजिअजिण ! सुहप्पवत्तणं तव पुरिसुत्तम नामकित्तण । तह य धिइमइप्पवत्तणं, तव य जिणुत्तम ! संति ! कित्तणं ॥ मागहिआ ॥४ ॥ किरियाविहि-संचिअकम्मकिलेसविमुक्खयरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणिसिद्धिगयं । अजिअस्स य संतिमहामुणिणो वि अ संतिकरं, सययं मम निव्वुइकारणयं च नमंसणय ॥ आलिंगणयं ॥ ५ ॥ पुरिसा ! जइ दुक्खवारणं, जइ य विमग्गह सुक्ख-कारणं । अजिअं संतिं च भावओ, अभयकरे सरणं पवज्जहा ॥ मागहिआ ॥ ६ ॥ अरइरइतिमिरविरहिअमुवरयजरमरणं, सुरअसुरगरुलभुयगवइपययपणिवइयं । अजिअमहमवि अ सुनयनयनिउणमभयकरं, सरणमुवसरिअ सुविदिविजमहियं सययमुवणमे ॥ संगययं ॥ ७॥ तं च जिणुत्तममुत्तम–नित्तम

पणयससंभमपत्थिव-नहमणिमाणिक्कपडिअपडिमस्स ।
तुह वयणपहरणधरा, सीह कुद्धं पि न गणंति ॥१३॥
ससिधवलदंतमुसलं, दीहकरुल्लालवुड्ढिउच्छाहं ।
महुपिंगनयणजुअलं, ससलिलनवजलहरारावं ॥१४॥
भीम महागइंदं, अच्चासन्नं पि ते न वि गणंति ।
जे तुम्ह चलणजुअलं, मुणिवइ तुंगं समल्लीणा ॥१५॥
समरंमि तिक्खखग्गा-भिग्घायपविद्धउध्धुयकबंधे ।
कुंतविणिभिन्नकरिकलह-मुक्कसिक्कारपउरम्मि ॥१६॥
निज्जिअदप्पुद्धररिउ-नरिंदनिवहा भडा जसं धवलं ।
पावंति पावपसमिण, पासजिण तुह प्पभावेण ॥१७॥
रोगजलजलणविसहर--चोरारिमइंदगयरणभयाइं ।
पासजिणनामसंकित्तणेण, पसमंति सव्वाइं ॥१८॥
एवं महाभयहरं, पासजिणिंदस्स संथवमुआरं ।
भविअजणाणंदयरं, कल्लाणपरंपरनिहाणं ॥१९॥
रायभयजक्खरक्खस-कुसुमिणदुस्सउणरिक्खपीडासु ।
संझासु दोसु पंथे, उवसग्गे तह य रयणीसु ॥२०॥
जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणतुंगस्स ।
पासो पावं पसमेउ, सयलभुवणच्चियचलणो ॥२१॥
उवसग्गंते कमठा-सुरम्मि झाणाउ जो न संचलिओ ।
सुरनरकिन्नरजुवईहिं, संथुओ जयउ पासजिणो ॥२२॥
एअस्स मज्झयारे, अट्टारसअक्खरेहिं जो मंतो ।
जो जाणइ सो झायइ, परमपयत्थं फुडं पासं ॥२३॥

पासइ समरण जो कुणइ, संतुट्ठे हियएण ।
अट्ठुत्तरसयवाहिभय, नासइ तस्स दूरेण ॥४२॥

इति श्री भयहर स्तोत्रम्

६. श्री अजितशांति स्तवन.

अजिअं जिअसव्वभयं, संतिं च पसंतसव्वगयपावं । जयगुरु संतिगुणकरे, दो वि जिणवरे पणिवयामि ॥ गाहा ॥१॥ ववगयमंगुलभावे, ते हं विउलतवनिम्मलसहावे । निरुवम महप्पभावे, थोसामि सुदिट्ठसब्भावे ॥ गाहा ॥२॥ सव्वदुक्ख-प्पसंतीणं, सव्वपावप्पसंतीणं । सया अजिअसंतीणं, नमो अजिअसंतीणं ॥ सिलोगो ॥ ३ ॥ अजिअजिण ! सुहप्पवत्तणं तव पुरिसुत्तम नामकित्तण । तह य धिइमइप्पवत्तणं, तव य जिणुत्तम ! संति ! कित्तणं ॥ मागहिआ ॥४ ॥ किरियाविहि-संचिअकम्मकिलेसविमुक्खयरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणिसिद्धिगयं । अजिअस्स य संतिमहामुणिणो वि अ संतिकरं, सययं मम निव्वुइकारणयं च नमंसणय ॥ आलिंगणयं ॥ ५ ॥ पुरिसा ! जइ दुक्खवारणं, जइ य विमग्गह सुक्ख-कारणं । अजिअं संतिं च भावओ, अभयकरे सरणं पवज्जहा ॥ मागहिआ ॥ ६ ॥ अरइरइतिमिरविरहिअमुवरयजरमरणं, सुरअसुरगरुलभुयगवइपययपणिवइयं । अजिअमहमवि अ सुनयनयनिउणमभयकरं, सरणमुवसरिअ भुविदिविजमहिअं सययमुवणमे ॥ संगययं ॥ ७॥ तं च जिणुत्तममुत्तम-नित्तम

पणयससंभमपत्थिव-नहमणिमाणिक्कपडिअपडिमस्स ।
तुह वयणपहरणधरा, सीह कुद्धं पि न गणंति ॥१३॥
ससिधवलदंतमुसलं, दीहकरुल्लालवुड्ढिउच्छाहं ।
महुपिंगनयणजुअलं, ससलिलनवजलहरारावं ॥१४॥
भीमं महागइंदं, अच्चासन्नं पि ते न वि गणंति ।
जे तुम्ह चलणजुअलं, मुणिवइ तुंगं समल्लीणा ॥१५॥
समरंमि तिक्खखग्गा-भिग्घायपविद्धउद्धुयकबंधे ।
कुंतविणिभिन्नकरिकलह-मुक्कसिक्कारपउरम्मि ॥१६॥
निज्जिअदप्पुद्धररिउ-नरिंदनिवहा भडा जसं धवलं ।
पावंति पावपसमिण, पासजिण तुह प्पभावेण ॥१७॥
रोगजलजलणविसहर--चोरारिमइंदगयरणभयाइं ।
पासजिणनामसंकित्तणेण, पसमंति सव्वाइं ॥१८॥
एवं महाभयहरं, पासजिणिंदस्स संथवमुआरं ।
भविअजणाणंदयरं, कल्लाणपरंपरनिहाणं ॥१९॥
रायभयजक्खरक्खस-कुसुमिणदुस्सउणरिक्खपीडासु ।
संझासु दोसु पंथे, उवसग्गे तह य रयणीसु ॥२०॥
जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणतुंगस्स ।
पासो पावं पसमेउ, सयलभुवणच्चियचलणो ॥२१॥
उवसग्गंते कमठा-सुरम्मि झाणाउ जो न संचलिओ ।
सुरनरकिन्नरजुवईहिं, संथुओ जयउ पासजिणो ॥२२॥
एअस्स मज्झयारे, अट्ठारसअक्खरेहिं जो मंतो ।
जो जाणइ सो झायइ, परमपयत्थं फुडं पासं ॥२३॥

पासह समरण जो कुणइ, संतुट्ठे हियएण ।
अट्ठुत्तरसयवाहिभय, नासइ तस्स दूरेण ॥४२॥

इति श्री भयहर स्तोत्रम्

६. श्री अजितशांति स्तवन.

अजिअं जिअसव्वभयं, संतिं च पसंतसव्वगयपावं । जयगुरु संतिगुणकरे, दो वि जिणवरे पणिवयामि ॥ गाहा ॥१॥ ववगयमंगुलभावे, ते हं विउलतवनिम्मलसहावे । निरुवम महप्पभावे, थोसामि सुदिट्ठसब्भावे ॥ गाहा ॥२॥ सव्वदुक्ख-प्पसंतीणं, सव्वपावप्पसंतीणं । सया अजिअसंतीणं, नमो अजिअसंतीणं ॥ सिलोगो ॥ ३ ॥ अजिअजिण ! सुहप्पवत्तणं तव पुरिसुत्तम नामकित्तण । तह य धिइमइप्पवत्तणं, तव य जिणुत्तम ! संति ! कित्तणं ॥ मागहिआ ॥४ ॥ किरियाविहि-संचिअकम्मकिलेसविमुक्खयरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणिसिद्धिगयं । अजिअस्स य संतिमहामुणिणो वि अ संतिकरं, सययं मम निव्वुइकारणयं च नमंसणय ॥ आलिंगणयं ॥ ५ ॥ पुरिसा ! जइ दुक्खवारणं, जइ य विमग्गह सुक्ख-कारणं । अजिअं संतिं च भावओ, अभयकरे सरणं पवज्जहा ॥ मागहिआ ॥ ६ ॥ अरइरइतिमिरविरहिअमुवरयजरमरणं, सुरअसुरगरुलभुयगवइपययपणिवइयं । अजिअमहमवि अ सुनयनयनिउणमभयकरं, सरणमुवसरिअ भुविदिविजमहियं सययमुवणमे ॥ संगययं ॥ ७॥ तं च जिणुत्तममुत्तम-नित्तम

सत्तधरं,अज्जवमद्दवखंतिविमुत्तिसमाहिनिहिं,संतिकरं पणमामि दमुत्तमतित्थयरं,संतिमुणी मम संतिसमाहिवरं दिसउ। सोवाणयं ॥८॥ सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वरहत्थिमत्थयपसत्थविच्छिन्न-संथियं,थिरसरिच्छवच्छं मयगललीलायमाणवरगंधहत्थिपत्था-णपत्थिय संथवारिह हत्थिहत्थवाहुं धंतकणगरुअगनिरुवहय-पिंजरं पवरलक्खणोवचिअसोमचारुरूवं,सुइसुहमणाभिरामपरम-रमणिज्जवरदेवदुंदुहिनिनायमहुरयरसुहगिरं ॥ वेड्ढओ ॥९॥ अजिअं जिआरिगणं, जिअसव्वभयं भवोहरिउं। पणमामि अहं पयओ, पावं पसमेउ मे भयवं ! ॥ रासालुद्धओ ॥१०॥ कुरुजणवयहत्थिणाउरनरीसरो पढमं तओ महाचक्कवट्टिभोए महप्पभावो, जो बावत्तरिपुरवरसहस्सवरनगरनिगमजणवयवई-बत्तीसारायवरसहस्साणुयायमग्गो। चउदसवररयणनवमहा-निहिचउसट्ठीसहस्सपवरजुवईण सुन्दरवई, चुलसीहयगयरहस-यसहस्स सामी छन्नवइगामकोडिसामी आसी जो भारहंमि भयवं ॥ वेड्ढओ ॥११॥ तं संतिं संतिकरं, संतिण्णं सव्वभया। संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे ॥ रासानंदिअय ॥१२॥ इक्खाग विदेहनरीसर नरवसहा मुणिवसहा, नवसारयससि-सकलाणण विगयतमा विहुअरया। अजिउत्तम तेअगुणेहिं महामुणि अमिअबला विउलकुला, पणमामि ते भवभयमूरण जगसरणा मम सरणं ॥ चित्तलेहा ॥१३॥ देवदाणविंदचंदसूरवंद हट्ठतुट्ठजिट्ठपरम,लट्ठरूव धंतरूप्पपट्टसेयसुद्धनिद्धधवल, दंतपंति-संति सत्तिकित्तिमुत्तिजुत्तिगुत्तिपवर,दित्ततेअवंदधेअ सव्वलोअ-

भाविअप्पभाव-णेअ पइस मे समाहिं ॥नारायओ॥१४॥ विमल-
ससिकलाइरेअसोम, वितिमिरसूरकराइरेअतेअं । तिअसवइ
गणाइरेअरूव, धरणिधरप्पवराइरेअसारं ॥ कुसुमलया ॥१५॥
सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अ बले अजिअं। तवसंजमे अ
अजिअं, एस थुणामि जिणं अजिअं ॥ भुअगपरिरिंगिअयं
॥ १६ ॥ सोमगुणेहिं पावइ न तं नवसरयससी, तेअगुणेहिं
पावइ न तं नवसरयरवी । रूवगुणेहिं पावइ न तं तिअसगणवई,
सारगुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवई ॥ खिज्जिअयं ॥१७॥
तित्थवरपवत्तयं तमरयरहियं,धीरजणथुअच्चिअं चुअकलिकलुसं।
संतिसुहप्पवत्तयं तिगरणपयओ, संतिमहं महामुणि सरणमुवणमे
॥ललिअय ॥ १८ ॥ विणओणयसिररइअंजलिरिसिगणसंथुअं
थिमिअं, विबुहाहिवधणवइनरवइथुअमहिअच्चिअं बहुसो ।
अइरुग्गयसरयदिवायरसमहिअसप्पभं तवसा,गयणंगणवियरण-
समुइअचारणवंदिअं सिरसा ॥किसलयमाला ॥ १९ ॥ असुर-
गरुलपरिवंदिअं, किन्नरोरगनमंसिअं । देवकोडिसयसंथुअं,
समणसंघपरिवंदिअं ॥ सुमुहं ॥ २० ॥ अभयं अणहं, अरयं
अरुयं । अजिअं,अजिअं,पयओ पणमे॥विज्जुविलसिअं॥२१॥
आगयावरविमाणदिव्वकणगरहतुरयपहकरसएहिं हुलिअं ।ससं-
भमोअरणखुभियलुलियचल.कुंडलंगयतिरीडसोहंतमउलिमाला
॥वेड्ढओ ॥२२॥ जं सुरसंघा सासुरसंघा वेरविउत्ता भत्तिसु-
जुत्ता,आयरभूसिअसंभमपिंडिअसुट्ठुसुविम्हिअसव्वबलोघा ।

सत्तधरं,अज्जवमद्दवखंतिविमुत्तिसमाहिनिहिं,संतिकरं पणमामि दमुत्तमतित्थयरं,संतिमुणी मम संतिसमाहिवरंदिसउ। सोवाणयं ॥८॥ सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वरहत्थिमत्थयपसत्थविच्छिन्न-संथियं,थिरसरिच्छवच्छं मयगललीलायमाणवरगंधहत्थिपत्था-णपत्थिय संथवारिह हत्थिहत्थबाहुं धंतकणगरुअगनिरुवहय-पिंजरं पवरलक्खणोवचिअसोमचारुरूवं,सुइसुहमणाभिरामपरम-रमणिज्जवरदेवदुंदुहिनिनायमहुरयरसुहगिरं ॥ वेड्ढओ ॥९॥ अजिअं जिआरिगणं, जिअसव्वभयं भवोहरिउं। पणमामि अह पयओ, पावं पसमेउ मे भयवं! ॥ रासालुद्धओ ॥१०॥ कुरुजणवयहत्थिणाउरनरीसरो पढमं तओ महाचक्कवट्टिभोए महप्पभावो, जो बावत्तरिपुरवरसहस्सवरनगरनिगमजणवयवई-बत्तीसारायवरसहस्साणुयायमग्गो। चउदसवररयणनवमहा-निहिचउसट्ठीसहस्सपवरजुवईण सुन्दरवई, चुलसीहयगयरहस-यसहस्स सामी छन्नवइगामकोडिसामी आसी जो भारहंमि भयवं ॥ वेड्ढओ ॥११॥ तं संतिं संतिकरं, संतिण्णं सव्वभया। संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे ॥ रासानदिअय ॥१२॥ इक्खाग विदेहनरीसर नरवसहा मुणिवसहा, नवसारयससि-सकलाणण विगयतमा विहुअरया। अजिउत्तम तेअगुणेहिं महामुणि अमिअबला विउलकुला, पणमामि ते भवभयमूरण जगसरणा मम सरणं ॥ चित्तलेहा ॥१३॥ देवदाणविंदचंदसूरवंद हट्ठतुट्ठजिट्ठपरम,लट्ठरूव धंतरुप्पपट्टसेयसुद्धनिद्धधवल, दंतपंति-संति सत्तिकित्तिमुत्तिजुत्तिगुत्तिपवर,दित्ततेअवंदधेअ सव्वलोअ-

सुद्धसज्जगीअपायजालघंटिआहि।वलयमेहलाकलावनेउराभिराम-
मसद्दमीसए कए अ, देवनट्टिआहिं हावभावविब्भमप्पगारएहि।
नच्चिऊण अंगहारएहि वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा,
तयं तिलोयसव्वसत्तसंतिकारयं पसंतसव्वपावदोसमेस हं नमामि
संतिमुत्तमं जिणं ॥ नारायओ ॥३१॥ छत्तचामरपडागजूअ-
जवमंडिआ, झयवरमगरतुरयसिरिवच्छसुलंछणा। दीवसमुद्दमंद-
रदिसागयसोहिआ, सत्थिअवसहसीहरहचक्कवरंकिआ॥ ललिअयं
॥३२॥ सहावलट्ठा समप्पइट्ठा, अदोसदुट्ठा गुणेहिं जिट्ठा।
पसायसिट्ठा तवेण पुट्ठा, सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा॥ वाणवा-
सिआ ॥३३॥ ते तवेण धुअसव्वपावया, सव्वलोअहिअमूलपा-
वया। संथुआ अजिअसंतिपायया, हुंतु मे सिवसुहाण दायया
॥अपरांतिका ॥ ३४॥ एवं तववलविउलं, थुअं मए अजिअ-
संतिजिणजुअलं। ववगयकम्मरयमलं, गइं गयं सासयं विउलं
॥ गाहा ॥ ३५ ॥ तं वहुगुणप्पसायं, मुक्खसुहेण परमेण
अविसायं। नासेउ मे विसायं, कुणउ अ परिसा वि अ प्पसायं
॥ गाहा ॥३६॥ तं मोएउ अ नंदिं, पावेउ अ नंदिसेणमभि-
नंदिं। परिसा वि अ सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं
॥ गाहा ॥३७॥ पक्खिअ चाउम्मासिअ–संवच्छरिए अवस्स
भणिअव्वो। सोअव्वो सव्वेहिं, उवसग्गनिवारणो एसो
॥३८॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, उभओ कालं पि अजिअसं-
तिथअं। न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना वि नासंति॥

उत्तमकंचणरयणपरूवियभासुरभूसणभासुरिअंगा, गायसमोणयभत्तिवसागयपंजलिपेसियसीसपणामा ॥ रयणमाला ॥२३॥ वंदिऊण थोऊण तो जिणं, तिगुणमेव य पुणो पयाहिणं । पणमिऊण य जिणं सुरासुरा, पमुइआ सभवणाइं तो गया ॥ खित्तयं ॥२४॥ तं महामुणिमहं पि पंजली, रागदोसभयमोहवज्जिअं । देवदाणवनरिंदवंदिअं, संतिमुत्तमं महातवं नमे ॥ खित्तयं ॥२५॥ अंबरंतरविआरणिआहिं, ललिअहंसवहुगामिणिआहिं । पीणसोणिथणसालिणिआहिं, सकलकमलदललोअणिआहिं ॥दीवयं ॥२६॥ पीणनिरंतरथणभरविणमिअगायलआहिं, मणिकंचणपसिढिलमेहलसोहिअसोणितडाहिं । वरखिंखिणीनेउरसतिलयवलयविभूसणिआहिं, रइकरचउरमणोहरसुंदरदंसणिआहिं ॥ चित्तक्खरा ॥ २७ ॥ देवसुंदरीहिं पायवंदिआहिं, वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा, अप्पणो निडालएहिं, मंडणोड्डणप्पगारएहिं केहिं केहिं वि । अवंगतिलयपत्तलेहनामएहिं चिल्लएहिं संगयंगयाहिं, भत्तिसंनिविट्ठवंदणागयाहिं हुंति ते वंदिआ पुणो पुणो ॥ नारायओ ॥२८॥ तमहं जिणचंदं, अजिअं जिअमोहं । धूयसव्वकिलेसं, पयओ पणमामि नंदिअयं ॥२९॥ थुअवंदिअयस्सा रिसिगणदेवगणेहिं, तो देववहूहिं पयओ पणमिअस्सा । जस्स जगुत्तमसासणअस्सा, भत्तिवसागयपिंडिअयाहिं । देववरच्छरसाबहुआहिं, सुरवररइगुणपंडिअयाहिं ॥ भासुरयं ॥३०॥ वंससद्दतंतिताल मेलिए, तिउक्खराभिरामसद्दमीसए कए अ, सुइसमाणणे अ

सुद्धसज्जगीअपायजालघंटिआहि।वलयमेहलाकलावनेउराभिरा-
मसद्दमीसए कए अ,देवनट्टिआहि हावभावविब्भमप्पगारएहि।
नच्चिऊण अंगहारएहि वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा,
तयं तिलोयसव्वसत्तसंतिकारयं पसंतसव्वपावदोसमेस ह नमामि
संतिमुत्तमं जिणं ॥ नारायओ ॥३१॥ छत्तचामरपडागजूअ-
जवमंडिआ,झयवरमगरतुरयसिरिवच्छसुलंछणा। दीवसमुद्दमंद-
रदिसागयसोहिआ,सत्थिअवसहसीहरहचक्कवरंकिआ॥ललिअय
॥३२॥ सहावलट्ठा समप्पइट्ठा, अदोसदुट्ठा गुणेहि जिट्ठा।
पसायसिट्ठा तवेण पुट्ठा, सिरीहि इट्ठा रिसीहि जुट्ठा॥ वाणवा-
सिआ ॥३३॥ ते तवेण धुअसव्वपावया,सव्वलोअहिअमूलपा-
वया। संथुआ अजिअसंतिपायया, हुंतु मे सिवसुहाण दायया
॥अपरांतिका ॥ ३४॥ एवं तवबलविउलं, थुअं मए अजिअ-
संतिजिणजुअलं। ववगयकम्मरयमलं, गइं गयं सासयं विउलं
॥ गाहा ॥ ३५ ॥ त बहुगुणप्पसायं, मुक्खसुहेण परमेण
अविसायं। नासेउ मे विसाय, कुणउ अ परिसा वि अ प्पसायं
॥ गाहा ॥३६ ॥ तं मोएउ अ नंदिं, पावेउ अ नंदिसेणमभि-
नंदिं। परिसा वि अ सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं
॥ गाहा ॥३७॥ पक्खिअ चाउम्मासिअ-संवच्छरिए अवस्स
भणिअव्वो। सोअव्वो सव्वेहिं, उवसग्गनिवारणो एसो
॥३८॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, उभओ कालं पि अजिअसं-
तिथअं। न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना वि नासंति

॥ ३९ ॥ जइ इच्छह परमपयं, अहवा किर्त्ति सुवित्थडं भुवणे
ता तेलुक्कुद्धरणे, जिणवयणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥

इति श्री अजितशांति स्तवन

---

७. श्री भक्तामरस्तोत्रम्

भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा-
मुद्‌द्योतकं दलितपापतमोवितानम् ।
सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा-
वालम्बनं भवजले पततां जनानाम् ॥ १ ॥
यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा-
दुद्‌भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ।
स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारैः,
स्तोष्ये किलाहमपि त प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥२॥
बुद्ध्या विनाऽपि विबुधार्चितपादपीठ !
स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम् ।
बालं विहाय जलसंस्थितमिन्दुबिम्ब-
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥३॥
वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र ! शशाङ्ककान्तान्,
कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ।
कल्पान्तकालपवनोद्धतनक्रचक्रं,
को वा तरितुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ॥ ४ ॥

सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश !
कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः
प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं,
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ? ॥५॥
अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम,
त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् ।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चारुचूतकलिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥
त्वत्संस्तवेन भवसंततिसंनिबद्धं,
पापं क्षणात् क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ।
आक्रान्तलोकमलिनीलमशेषमाशु,
सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥ ७ ॥
मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनुधियाऽपि तव प्रभावात् ।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु,
मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिन्दुः ॥८॥
आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं,
त्वत्संकथाऽपि जगतां दुरितानि हन्ति ।
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि ॥ ९ ॥
नात्यद्भुतं भुवनभूषणभूतनाथ,
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः ।

तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥ १० ॥
दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलोकनीयं,
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ।
पीत्वा पयः शशिकरद्युतिदुग्धसिन्धोः,
क्षारं जलं जलनिधेरशितु क इच्छेत् ॥ ११ ॥
यैः शान्तरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं,
निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत ! ।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां,
यत्ते समानमपर न हि रूपमस्ति ॥ १२ ॥
वक्त्र क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि,
निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानम् ।
बिम्बं कलङ्कमलिनं क्व निशाकरस्य,
यद्वासरे भवति पाण्डुपलाशकल्पम् ॥ १३ ॥
संपूर्णमण्डलशशाङ्ककलाकलाप-
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवन तव लङ्घयन्ति ।
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर ! नाथमेकं,
कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम् ॥ १४ ॥
चित्र किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभि-
र्नीत मनागपि मनो न विकारमार्गम् ।
कल्पान्तकालमरुता चलिताचलेन,
किं मन्दराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥ १५ ॥

निर्धूमवर्त्तिरपवर्जिततैलपूरः
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां,
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः ॥१६॥
नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः,
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति ।
नाम्भोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः,
सूर्यातिशायिमहिमाऽसि मुनीन्द्र ! लोके ॥ १७ ॥
नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारं,
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति,
विद्योतयज्जगदपूर्वशशाङ्कबिम्बम् ॥ १८ ॥
किं शर्वरीषु शशिनाऽह्नि विवस्वता वा,
युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमस्सु नाथ !
निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके,
कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ॥ १९ ॥
ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं,
नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ।
तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं,
नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥ २० ॥
मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ।

किं वीक्षितेन भवता भुवि येन्य नान्यः,
कश्चिन्मनो हरति नाथ! भवान्तरेऽपि ॥ २१ ॥
स्त्रीणा शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता ।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मि,
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥ २२॥
त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात् ।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं,
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र पन्थाः ॥ २३ ॥
त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसङ्ख्यमाद्यं,
ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनङ्गकेतुम् ।
योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं,
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥ २४ ॥
बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित-बुद्धिबोधात्;
त्वं शङ्करोऽसि भुवनत्रयशंकरत्वात्,
धाताऽसि धीर शिवमार्गविधेर्विधानात्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥२५॥
तुभ्य नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ,
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः पमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन भवोदधिशोषणाय ॥ २६ ॥

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै-
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ।
दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः,
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥ २७ ॥
उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख-
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् ।
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं,
बिम्बं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ॥ २८ ॥
सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ।
बिम्बं वियद्विलसदंशुलतावितानं,
तुङ्गोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥
कुन्दावदातचलचामरचारुशोभं,
विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम् ।
उद्यच्छशाङ्कशुचिनिर्झरवारिधार-
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥ ३० ॥
छत्रत्रयं तव विभाति शशाङ्ककान्त-
मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकरप्रतापम् ।
मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं,
प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥ ३१ ॥
उन्निद्रहेमनवपङ्कजपुञ्जकान्ती,
पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाभिरामौ ।

किं वीक्षितेन भवता भुवि येन्य नान्यः,
कश्चिन्मनो हरति नाथ! भवान्तरेऽपि ॥ २१ ॥
स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता ।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मि,
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥ २२॥
त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात् ।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं,
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र पन्थाः ॥ २३ ॥
त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसङ्ख्यमाद्यं,
ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनङ्गकेतुम् ।
योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं,
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥ २४ ॥
बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित–बुद्धिबोधात्;
त्वं शङ्करोऽसि भुवनत्रयशंकरत्वात्,
धाताऽसि धीर शिवमार्गविधेर्विधानात्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥२५॥
तुभ्य नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ,
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः पमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन भवोदधिशोषणाय ॥ २६ ॥

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै-
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ।
दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः,
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥ २७ ॥
उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख-
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् ।
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं,
बिम्बं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ॥ २८ ॥
सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ।
बिम्बं वियद्विलसदंशुलतावितान,
तुङ्गोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥
कुन्दावदातचलचामरचारुशोभं,
विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम् ।
उद्यच्छशाङ्कशुचिनिर्झरवारिधार-
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥ ३० ॥
छत्रत्रयं तव विभाति शशाङ्ककान्त-
मुच्चैः स्थित स्थगितभानुकरप्रतापम् ।
मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभ,
प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥ ३१ ॥
उन्निद्रहेमनवपङ्कजपुञ्जकान्ती,
पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाभिरामौ ।

पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र धत्तः,
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३२ ॥
इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र !,
धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ।
यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक्कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि ॥ ३३ ॥
श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल-
मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ।
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं,
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥ ३४ ॥
भिन्नेभकुम्भगलदुज्ज्वलशोणिताक्त-
मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभागः ।
बद्धक्रमः क्रमगत हरिणाधिपोऽपि,
नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३५ ॥
कल्पान्तकालपवनोद्धतवह्निकल्प,
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्फुलिङ्गम् ।
विश्वं जिघत्सुमिव संमुखमापतन्तं,
त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥
रक्तेक्षणं समदकोकिलकण्ठनीलं,
क्रोधोद्धत फणिनमुत्फणमापतन्तम् ।
आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशङ्क-
स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥ ३७ ॥

वल्गत्तुरङ्गगजगर्जितभीमनाद-
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम् ।
उद्यद्दिवाकरमयूखशिखाऽपविद्धं,
त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति ॥ ३८ ॥
कुन्ताग्रभिन्नगजशोणितवारिवाह-
वेगावतारतरणातुरयोधभीमे ।
युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा-
स्त्वत्पादपङ्कजवनाश्रयिणो लभन्ते ॥ ३९ ॥
अम्भोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र-
पाठीनपीठभयदोल्बणवाडवाग्नौ ।
रङ्गत्तरङ्गशिखरस्थितयानपात्रा-
स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति ॥ ४० ॥
उद्भूतभीषणजलोदरभारभुग्नाः,
शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः ।
त्वत्पादपङ्कजरजोऽमृतदिग्धदेहा,
मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥
आपादकण्ठमुरुशृङ्खलवेष्टिताङ्गा,
गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजङ्घाः ।
त्वन्नाममन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः,
सद्यः स्वयं विगतबन्धभया भवन्ति ॥ ४२ ॥
मत्तद्विपेन्द्रमृगराजदवानलाहि-
सङ्ग्रामवारिधिमहोदरबन्धनोत्थम् ।

तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४३ ॥
स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र गुणैर्निबद्धा.
भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ।
धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्रं,
तं मानतुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥
॥ इति श्री भक्तामर स्तोत्रम् ॥

---

८ श्री कल्याणमन्दिरस्तोत्रम्

कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि,
भीताभयप्रदमनिन्दितमङ्घ्रिपद्मम् ।
संसारसागरनिमज्जदशेषजन्तु-
पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥
यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमाम्बुराशेः,
स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुम् ।
तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो
स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥ युग्मम् ॥२॥
सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप-
मस्मादृशाः कथमधीश भवन्त्यधीशाः ।
धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवान्धो,
रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः ॥ ३ ॥

मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ मर्त्यो,
नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत ।
कल्पान्तवान्तपयसः प्रकटोऽपि यस्मा-
न्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ॥ ४ ॥
अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ ! जडाशयोऽपि,
कर्तुं स्तवं लसदसङ्ख्यगुणाकरस्य ।
बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वितत्य,
विस्तीर्णता कथयति स्वधियाम्बुराशेः ॥ ५ ॥
ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश,
वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः ।
जाता तदेवमसमीक्षितकारितेयं,
जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥
आस्तामचिन्त्यमहिमा जिन संस्तवस्ते,
नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति ।
तीव्रातपोपहतपान्थजनान्निदाघे,
प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥
हृद्वर्तिनि त्वयि विभो शिथिलीभवन्ति,
जन्तोः क्षणेन निबिडा अपि कर्मबन्धाः ।
सद्यो भुजङ्गममया इव मध्यभाग-
मभ्यागते वनशिखण्डिनि चन्दनस्य ॥ ८ ॥
मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र,
रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि ।

तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४३ ॥
स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र गुणैर्निबद्धा.
भक्त्या मया रूचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ।
धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्र,
तं मानतुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥
॥ इति श्री भक्तामर स्तोत्रम् ॥

---

८ श्री कल्याणमन्दिरस्तोत्रम्

कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि,
भीताभयप्रदमनिन्दितमङ्घ्रिपद्मम् ।
ससारसागरनिमज्जदशेषजन्तु–
पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥
यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमाम्बुराशेः,
स्तोत्र सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुम् ।
तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो
स्तस्याहमेप किल संस्तवनं करिष्ये ॥ युग्मम् ॥२॥
सामान्यतोऽपि तव वणयितु स्वरूप-
मस्मादृशाः कथमधीश भवन्त्यधीशाः ।
धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवान्धो,
रूपं प्ररूपयति कि किल घर्मरश्मेः ॥ ३ ॥

मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ मर्त्यो,
नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत ।
कल्पान्तवान्तपयसः प्रकटोऽपि यस्मा-
न्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ॥ ४ ॥
अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ ! जडाशयोऽपि.
कर्तुं स्तवं लसदसङ्ख्यगुणाकरस्य ।
बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वितत्य,
विस्तीर्णता कथयति स्वधियाम्बुराशेः ॥ ५ ॥
ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश,
वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः ।
जाता तदेवमसमीक्षितकारितेय,
जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥
आस्तामचिन्त्यमहिमा जिन संस्तवस्ते,
नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति ।
तीव्रातपोपहतपान्थजनान्निदाघे,
प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥
हृद्वर्तिनि त्वयि विभो शिथिलीभवन्ति,
जन्तोः क्षणेन निबिडा अपि कर्मबन्धाः ।
सद्यो भुजङ्गमसया इव मध्यभाग
मभ्यागते वनशिखण्डिनि चन्दनस्य ॥ ८ ॥
मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र,
रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि ।

गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे,
चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ॥ ९ ॥
त्वं तारको जिन कथं भविनां त एव,
त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः ।
यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नून
मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः ॥ १० ॥
यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हतप्रभावाः,
सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन ।
विध्यापिता हुतभुजः पयसाऽथ येन,
पीतं न किं तदपि दुर्धरवाडवेन ॥ ११ ॥
स्वामिन्ननल्पगरिमाणमपि प्रपन्ना-
स्त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः ।
जन्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन,
चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः ॥ १२ ॥
क्रोधस्त्वया यदि विभो प्रथमं निरस्तो,
ध्वस्तास्तदा बत कथं किल कर्मचौराः ।
प्लोषत्यमुत्र यदिवा शिशिराऽपि लोके,
नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ॥ १३ ॥
त्वां योगिनो जिन सदा परमात्मरूप-
मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुजकोशदेशे ।
पूतस्य निर्मलरुचेर्यदिवा किमन्य-
दक्षस्य संभवि पदं ननु कर्णिकायाः ॥ १४ ॥

ध्यानाज्जिनेश भवतो भविनः क्षणेन,
देहं विहाय परमात्मदशां व्रजन्ति ।
तीव्रानलादुपलभावमपास्य लोके,
चामीकरत्वमचिरादिव धातुभेदाः ॥ १५ ॥
अन्त सदैव जिन यस्य विभाव्यसे त्वं,
भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् ।
एतत्स्वरूपमथ मध्यनिवर्तिनो हि,
यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः ॥ १६ ॥
आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेदबुद्ध्या,
ध्यातो जिनेन्द्र भवतीह भवत्प्रभावः ।
पानीयमप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमान,
कि नाम नो विषविकारमपाकरोति ॥ १७ ॥
त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि,
नूनं विभो हरिहरादिधिया प्रपन्नाः ।
किं काचकामलिभिरीश सितोऽपि शङ्खो,
नो गृह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥
धर्मोपदेशसमये सविधानुभावा
दास्ता जनो भवति ते तरुरप्यशोकः ।
अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि,
किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ॥ १९ ॥
चित्रं विभो कथमवाङ्मुखवृन्तमेव,
विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टिः ।

त्वद्गोचरे सुमनसा यदि वा मुनीश,
गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि ॥ २० ॥

स्थाने गभीरहृदयोदधिसंभवायाः,
पीयूषता तव गिरः समुदीरयन्ति ।
पीत्वा यतः परमसम्मदसङ्गभाजो,
भव्या व्रजन्ति तरसाऽप्यजरामरत्वम् ॥ २१ ॥

स्वामिन् सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो,
मन्ये वदन्ति शुचयः सुरचामरौघाः ।
येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुङ्गवाय,
ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः ॥ २२ ॥

श्यामं गभीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्न,
सिंहासनस्थमिह भव्यशिखण्डिनस्त्वाम् ।
आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चै,
श्चामीकराद्रिशिरसीव नवाम्बुवाहम् ॥ २३ ॥

उद्गच्छता तव शितिद्युतिमण्डलेन,
लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव ।
सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग
नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि ॥ २४ ॥

भो भोः प्रमादमवधूय भजध्वमेन–
मागत्य निर्वृतिपुरीं प्रति सार्थवाहम् ।

एतन्निवेदयति देव जगत्त्रयाय,
मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते ॥ २५ ॥

उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ,
तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः
मुक्ताकलापकलितोच्छ्वसितातपत्र
व्याजात्त्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥ २६ ॥

स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिण्डितेन,
कान्तिप्रतापयशसामिव सञ्चयेन ।
माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन,
सालत्रयेण भगवन्नभितो विभासि ॥ २७ ॥

दिव्यस्रजो जिन नमत्त्रिदशाधिपाना-
मुत्सृज्य रत्न रचितानपि मौलिबन्धान् ।
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र,
त्वत्सङ्गमे सुमनसो न रमन्त एव ॥ २८ ॥

त्वं नाथ जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोऽपि,
यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् ।
युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव,
चित्रं विभो यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥ २९ ॥
विश्वेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं,
किं वाऽक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश ।

अज्ञानवत्यपि सदैव कथञ्चिदेव,
ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकासहेतुः ॥ ३० ॥
प्राग्भारसंभृतनभांसि रजांसि रोषा-
दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि ।
छायाऽपि तैस्तव न नाथ हता हताशो,
ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा, ॥ ३१ ॥
यद्गर्जदूर्जितघनौघमदभ्रभीम,
भ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसलघोरधारम् ।
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे,
तेनैव तस्य जिन दुस्तरवारिकृत्यम् ॥ ३२ ॥
ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुण्ड-
प्रालम्बभृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्निः
प्रेतव्रजः प्रति भवन्तमपीरितो यः,
सोऽस्याभवत्प्रतिभवं भवदुःखहेतुः ॥ ३३ ॥
धन्यास्त एव भुवनाधिप ये त्रिसन्ध्य-
माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः ।
भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशाः
पादद्वयं तव विभो भुवि जन्मभाजः ॥ ३४ ॥
अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश,
मन्ये न मे श्रवणगोचरता गतोऽसि ।
आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रमन्त्रे.
किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति ॥ ३५ ॥

जन्मान्तरेऽपि तव पादयुग न देव,
मन्ये मया महितमीहितदानदक्षम् ।
तेनेह जन्मनि मुनीश पराभवाना,
जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥ ३६ ॥
नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन,
पूर्वं विभो सकृदपि प्रविलोकितोऽसि ।
मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः,
प्रोद्यत्प्रबन्धगतयः कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥
आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि,
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या ।
जातोऽस्मि तेन जनबान्धव दुःखपात्रं,
यस्मात् क्रियाः प्रतिफलन्ति न भावशून्याः ॥ ३८ ॥
त्वं नाथ दुःखिजनवत्सल हे शरण्य,
कारुण्यपुण्यवसते वशिना वरेण्य, ।
भक्त्या नते मयि महेश दया विधाय,
दुःखाङ्कुरोद्दलनतत्परता विधेहि ॥ ३९ ॥
निःसङ्ख्यसारशरणं शरणं शरण्य
मासाद्य सादितरिपु प्रथितावदातम् ।
त्वत्पादपङ्कजमपि प्रणिधानवन्ध्यो,
वन्ध्योऽस्मि चेद् भुवनपावन हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥
देवेन्द्रवन्द्य विदिताखिलवस्तुसार,
संसारतारक विभो भुवनाधिनाथ ।

त्रायस्व देव करुणाह्रद मां पुनीहि,
सीदन्तमद्य भयदव्यसनाम्बुराशेः
यद्यस्ति नाथ भवदङ्घ्रिसरोरुहाणां,
भक्तेः फलं किमपि संततिसंचितायाः ।
तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य भूयाः,
स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि ॥ ४२ ॥
इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेन्द्र,
सान्द्रोल्लसत्पुलककञ्चुकिताङ्गभागाः ।
त्वद्बिम्बनिर्मलमुखाम्बुजबद्धलक्ष्या,
ये संस्तवं तव विभो रचयन्ति भव्याः ॥ ४३ ॥
जननयनकुमुदचन्द्र,
प्रभास्वराः स्वर्गसंपदो भुक्त्वा ।
ते विगलितमलनिचया,
अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते ॥ युग्मम् ॥ ४४ ॥

---

९ श्री बृहच्छान्ति स्तोत्रम्

भो भो भव्याः शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वमेतत्,
ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हता भक्तिभाजः ।
तेषां शान्तिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा-
दारोग्यश्रीधृतिमतिकरी क्लेशविध्वंसहेतुः ॥ १ ॥

ॐ रोहिणी प्रज्ञप्ति वज्रशृङ्खला वज्रांकुशी-अप्रतिचक्रा-पुरुषदत्ता-काली-महाकाली गौरी-गान्धारी-सर्वास्त्रा-महाज्वाला-मानवी-वैरोट्या अच्छुप्ता-मानसी महामानसी षोडश विद्यादेव्यो रक्षन्तु वो नित्य स्वाहा ॥

ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्णस्य श्री णसंघस्य शान्तिर्भवतु तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॥

ॐ ग्रहाश्चन्द्रसूर्याङ्गारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतु-सहिताः सलोकपालाः सोमयमवरुणकुबेरवासवादित्यस्कन्द-विनायकोपेता ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयन्ता प्रीयन्ता, अक्षीणकोशकोष्ठागारा नरपतयश्च भवंतु स्वाहा ॥

ॐ पुत्र-मित्र-भ्रातृ कलत्र सुहृत्-स्वजन संबन्धि बन्धुवर्ग सहिता नित्यं चामोदप्रमोदकारिणः। अस्मिंश्च भूमण्डले आय-तननिवासिसाधुसाध्वीश्रावकश्राविकाणा रोगोपसर्गव्याधिदुःख दुर्भिक्षदौर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्भवतु ॥

ॐ तुष्टि-पुष्टि-ऋद्धि-वृद्धि-माङ्गल्योत्सवाः ।
सदा प्रादुर्भूतानि, पापानि शाम्यन्तु दुरितानि ।
शत्रवः पराङ्मुखा, भवन्तु स्वाहा ॥
श्रीमते शान्तिनाथाय, नमः शान्तिविधायिने ।
त्रैलोक्यस्यामराधीश-मुकुटाभ्यर्चिताङ्घ्रये ॥ १ ॥

शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्ति दिशतु मे गुरुः ।
शान्तिरेव सदा तेपा, येपां शान्तिर्गृहे गृहे ॥२ ॥
उन्मृष्टरिष्टदुष्टग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि ।
संपादितहितसंप-न्नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥ ३ ॥
श्रीसंघजगज्जनपद-राजाधिपराजसन्निवेशानाम् ।
गोष्टिकपुरमुख्याणा, व्याहरणैर्व्याहरेच्छान्तिम् ॥ ४ ॥

श्री श्रमणसघस्य शान्तिर्भवतु । श्रीजनपदाना शान्तिर्भवतु ॥ श्रीराजाधिपाना शान्तिर्भवतु । श्रीराजसन्निवेशाना शान्तिर्भवतु । श्रीगोष्ठिकाना शान्तिर्भवतु । श्रीपौरमुख्याणा शान्तिर्भवतु । श्रीपौरजनस्य शान्तिर्भवतु । श्रीब्रह्मलोकस्य शान्तिर्भवतु ।ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा ।

एपा शान्तिः प्रतिष्ठायात्रास्नात्राद्यवसानेपु । शान्तिकलशं गृहीत्वा कुंकुमचन्दनकर्पूरागरुधूपवासकुसुमाञ्जलिसमेतः स्नात्रचतुष्किकाया श्रीसंघसमेतः शुचिशुचिवपुः पुष्पवस्त्रचन्दनाभरणालङ्कृतः पुष्पमाला कण्ठे कृत्वा, शान्तिमुद्घोपयित्वा शान्तिपानीयं मस्तके दातव्यमिति ॥

नृत्यन्ति नृत्यं मणिपुष्पवर्पं, सृजन्ति गायन्ति च मङ्गलानि ।
स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मन्त्रान् कल्याणभाजो हि जिनाभिपेके ॥ १ ॥
शिवमस्तु सवजगतः, परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः ।
दोपाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखीभवन्तु लोकाः ॥ २ ॥

अर्हं तित्थयरमाया, सिवादेवी तुम्ह नयरनिवासिनी ।
अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, असिवोवसमं सिवं भवतु ॥३॥ स्वाहा ।
उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः ।
मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ४ ॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं, सर्वकल्याणकारणम् ।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥

॥ श्री घंटाकर्णमंत्रः ॥

ॐ ह्रीँ घंटाकर्णो महावीरः, सर्वव्याधिविनाशकः ।
विस्फोटकभये प्राप्ते, रक्ष रक्ष महाबल ॥ १ ॥
यत्र त्वं तिष्ठसे देव, लिखितोऽक्षरपंक्तिभिः ।
रोगास्तत्र प्रणश्यन्ति, वातपित्तकफोद्भवाः ॥ २ ॥
तत्र राजभयं नास्ति, यान्ति कर्णेजपाः क्षयम् ।
शाकिनीभूतवेताल–राक्षसाः प्रभवन्ति न ॥ ३ ॥
नाकाले मरणं तस्य, न च सर्पेण दृश्यते ।
अग्निचौरभयं नास्ति, ह्रीँ घण्टाकर्ण नमोऽस्तु ते ॥ ४ ॥
ठः ठः ठः स्वाहा ॥

श्री बीज तिथिनुं चैत्यवंदन

दुविध धर्म जिणे उपदिश्यो, चोथा अभिनदन,
बीजे जन्म्या जे प्रभु, भव दुःख निकन्दन ॥१॥
दुविध ध्यान तुमे परिहरो, आदरो दोय ध्यान,
एम प्रकाश्यु सुमति जिने, ते चविया बीज दिन ॥२॥
दोय बधन रागद्वेष, तेहने भावे तजीए,
मुज परे शीतलजिन कहे, बीज दिन शिव भजीए ॥३॥
जीवाजीव पदार्थनु, करो नाण सुजाण,
बीज दिने वासुपूज्य परे, लहो केवळनाण ॥४॥
निश्चय नय व्यवहार दोय, एकाते न ग्रहीए,
अरजिन बीज दिने च्यवी, एम जन आगळ कहीए ॥५॥
वर्त्तमान चोविशीए, एम जिन कल्याण,
बीज दिने केई पामीया प्रभु नाण निर्वाण ॥६॥
एम अनन्त चोविशीए, हुआ बहु कल्याण,
जिन उत्तम पद पद्मने, नमता होय सुख खाण ॥७॥

श्री बीज-तिथिनुं-स्तवन. (ढाल-३)

(ढाळ-पहेली) (देशी-सुरती-महिमानी)

सरस वचन रस वरसति, सरसती कळा भण्डार,
बीज तणो महिमा कहु जेम कह्यो शास्त्र मोझार १
जबूद्वीपना भरतमा, राजगृही नयरी उद्यान,
वीर जिणंद समोसर्या, वादवा आव्या राजन. २

श्रेणिक नामे भूपति, बेठा बेसण ठाय,
पूछे श्री जिनरायने, द्यो उपदेश महाराय ३
त्रिगडे बेठा त्रिभुवन पति, देशना दीये जिनराय,
कमळ सुकोमळ पाखडी, एम जिन हृदय सोहाय ४
शशी प्रगटे जेम ते दिने, धन्य ते दिन सुविहाण,
एक मने आराधता, पामे पद निर्वाण ५

ढाल २ जी. (अष्टापद अरिहंतजी-ए राग.)

कल्याणक जिनना कहु, सुण प्राणीजी रे,
अभिनदन अरिहंत, ए भगवन्त, भवि प्राणीजी रे,
माघ सुदि बीजने दिने, सुण०
पाम्या शिवसुख सार, हरख अपार भवि० १
वासुपूज्य जिन बारमा, सुण०
एहज तिथे थयु नाण, सफल विहाण, भवि प्राणीजी रे;
अष्ट कर्म चूरण करी, सुण प्राणीजी रे०
अवगाहन एकवार मुक्ति मोझार भवि० २
अरनाथ जीनजी नमु, सुण प्राणीजी रे,
अष्टादशमा अरिहन्त, ए भगवन्त, भवि प्राणीजी रे०
उज्जवल तिथि फागणनी भली, सुण प्राणीजी रे,
वरिया शिववधू सार, सुन्दर नार भवि० ३
दशमा शीतल जिनेश्वरू, सुण प्राणीजी रे०
परम पदनी ए वेल, गुणनी गेल, भवि प्राणीजी रे;
वैशाख वदि बीजने दिने, सुण प्राणीजी रे,
मुक्यो सरवे ए साथ, सुरनर नाथ. भवि० ४

श्रावण सुदनी बीज भली, सुण प्राणीजी रे,
सुमतिनाथ जिनदेव, सारे सेव, भवि प्राणीजी रे,
एणी तिथिए जीनजी तणां, सुण प्राणीजी रे,
कल्याणक पच सार, भवनो पार. भवि० ५

ढाळ ३ जी

जगपति जिन चोवीशमो रे लाल,
ए भाख्यो अधिकार रे भविकजन,
श्रेणिक आदे सहु मळ्या रे लाल,
शक्ति तणे अनुसार रे भविकजन,
भाव धरीने साभळो रे लाल १
दोय वरस दोय मासनी रे लाल,
आराधो धरी खन्त रे, भविक०
उजमणु विधिशु करो रे लाल,
बीज ते मुक्ति महन्त रे भ० भाव० २
मार्ग मिथ्या दूरे तजोरे लाल.
आराधो गुणना थोक रे, भविक०
वीरनी वाणी साभळी रे लाल,
उच्छरङ्ग थया बहु लोक रे भ० भाव० ३
एणि बीजे केई केई तर्या रे लाल,
वली तरशे करशे संगरे, भविक०
शशि सिद्धि अनुमानथीरे लाल,
शैल नागधार अकरे भ० भाव० ४

अषाड शुदि दशमी दिनेरे लाल,
ए गायो स्तवन रसाळरे, भविक०
नवलविजय सुपसायथी रे लाल,
चतुरने मगल माल रे भ० भाव० ५

कलश

एम वीर जिनवर, सयल सुखकर,
गायो अति उलट भरे,
अषाड उज्ज्वल दशमी दिवसे,
सवत अढार अठोत्तरे,
बीज महिमा एम वर्णव्यो, रही सिद्धपुर,
चोमास ए,
जेह भविक भावे सुणे गावे,
तस घर लील विलास ए ॥१

विजनो स्तुति

दिन सकल मनोहर, बीज दिवस सुविशेष,
राय राणा प्रणमे, चन्द्र तणी जिहा रेख,
तिहा चन्द्र विमाने, शाश्वता जिनवर जेह,
हु बीज तणे दिन, प्रणमु आणी नेह ॥ १ ॥
अभिनन्दन चन्दन, शीतल शीतळनाथ,
अरनाथ सुमति जिन, वासुपूज्य शिव साथ
इत्यादिक जिनवर, जन्म ज्ञान निरवाण,
हु बीज तणे दिन, प्रणमु ते सुविहाण ॥ २ ॥

परकाश्यो वीजे, दुविध धर्म भगवन्त,
जेम विमल कमल दोय, विपुल नयन विकसत,
आगम अति अनुपम, जिहा निश्चय व्यवहार,
वीजे सवि कीजे, पातिकनो परिहार ॥ ३ ॥
गज गामिनी कामिनी, कमल सुकोमल चीर,
चक्केसरी केसर, सरस सुगन्ध शरीर,
करजोडी वीजे, हु प्रणमु तस पाय,
एम लब्धिविजय कहे, पूरो मनोरथ माय ॥ ४ ॥

श्री पंचमीनुं चैत्यवन्दन.

त्रिगडे वेठा वीरजिन, भाखे भविजन आगे,
त्रिकरण शु त्रिहु लोकजन, निसुणो मन रागे ॥ १ ।
आराधो भली भातसे, पचमी अजुवाली,
ज्ञान आराधन कारणे, एहिज तिथि निहाळी ॥२॥
ज्ञान विना पशु सारिखा, जाणो एणे ससार,
ज्ञान आराधनथी लहे, शिवपद सुख श्रीकार ॥ ३ ॥
ज्ञान रहित क्रिया कही, काश कुसुम उपमान,
लोकालोक प्रकाशकर, ज्ञान एक प्रधान. ॥ ४ ॥
ज्ञानी श्वासोश्वासमे, करे कर्मनो छेह,
पूर्व कोडी वरसा लगे, अज्ञाने करे तेह ॥ ५ ॥
देश आराधक क्रिया कही, सर्व आराधक ज्ञान,
ज्ञान तणो महिमा घणो, अङ्ग पाचमे भगवान ॥ ६ ॥

पञ्च मास लघु पचमो, जावज्जीव उत्कृष्टि,
पच वर्ष पंच मासनो, पचमी करो शुभ द्रष्टि ॥ ७ ।
एकावन ही पचनो ए, काउस्सग्ग लोगस्स केरो
उजमणुं करो भावशु, टालो भव फेरो ॥८॥
ईम पचमी आराहिए ए, आणो भाव अपार.
वरदत्त गुणमजरी परे, रङ्गविजय लहो सार ॥ ९ ॥

श्री ज्ञान पंचमीनुं स्तवन

प्रणमो पचमी दिवसे ज्ञानने, गाजे जगमा जेह, सुज्ञानी ॥
शुभ उपयोगे क्षणमां निर्ज्जरे मिथ्या संचित खेह, सुज्ञानी
॥ १ ॥ प्रण० ।
सतपदादिक नवद्वारे करी, मति अनुयोग प्रकाश, सु०
नय व्यवहारे आवरण क्षय करी अज्ञानी ज्ञान उल्लास,
सुज्ञानी, प्रणमो० २
ज्ञानी ज्ञान लहे निश्चय कहे, दो नय प्रभुजीने सत्य, सु०
अन्तर्मुहूर्त रहे उपयोगथी, ए सर्व प्राणीने नित्य,
सुज्ञानी, प्रणमो० ३
लब्धि अन्तरमुहूर्त लघुपणे, छासठ सागर जिट्ठ, सु०
अधिको नरभव बहुविध जीवने, अन्तर कहिये न दिट्ठ,
सुज्ञानी, प्रणमो० ४
सम्प्रति समये एक बे पामता, होय अथवा नवि होय, सु०
क्षेत्र पल्योपम भाग असख्यमा, प्रदेश माने बहु जोय,
सुज्ञानी, प्रणमो० ५

मतिज्ञान पाम्या जीव असख्य छे,

कह्या पडिवाई अनन्त, सुज्ञानी,

सर्व आशातन वरजो ज्ञानी,

विजय लक्ष्मी लहो संत, सुजानी, प्रणमो० ६

श्री पंचमीनी स्तुति.

श्रावण सुदि दिन पचमीए, जन्म्या नेमि जिणद तो,
श्याम वरण तनु शोभतुं ए, मुख शारद को चन्द तो,
सहस वरस प्रभु आउखुं ए, ब्रह्मचारी भगवन्त तो,
अष्ट करम हेले हणी ए, पहोता मुक्ति महंत तो ॥१॥

अष्टापद पर आदिजिन ए, पहोत्या मुक्ति मझार तो,
वासुपूज्य चम्पापुरीए, नेमि मुक्ति गिरनार तो,
पावापुरी नगरीमां वलीए, श्रीवीरतणुं निर्वाण तो,
समेतशिखर वीस सिद्ध हुआए, शिर वहुं तेहनी आण तो ॥२॥

नेमिनाथ ज्ञानी हुवाए, भाखे सार वचन तो,
जीव दया गुण वेलडीए, कीजे तास जतन तो,
मृषा न बोलो मानवीए, चोरी चित्त निवार तो,
अनन्त तीर्थंकर एम कहे ए, परिहरीए परनार तो ॥३॥

गोमेध नामे जक्ष भलोए, देवी श्रीअम्बिका नाम तो,
शासन सानिध्य जे करे ए, करे वळी धर्मना काम तो,
तपगच्छ नायक गुणनीलोए, श्रीविजयसेन सूरिराय तो,
ऋषभदास पाय सेवताए, सफल करो अवतार तो ॥४॥

श्री अष्टमीनु चैत्यवदन.

महासुदि आठमने दिने, विजया सुत जायो,
तेम फागण सुदि आठमे, सभव चवी आव्यो ॥१॥
चैतर वदनी आठमे, जन्म्या ऋषभजिणंद,
दीक्षा पण ए दिन लही, हुआ प्रथम मुनिचद ॥२॥
माधव सुदि आठम दिने, आठ कर्म कर्या दूर,
अभिनन्दन चोथा प्रभु, पाम्या सुख भरपूर ॥३॥
एहिज आठम उजली, जन्म्या सुमतिजिणद,
आठ जाति कळशे करी, न्हवरावे सुर इन्द्र ॥४॥
जन्म्या जेठ वदि आठमे, मुनिसुव्रत स्वामी,
नेम अषाड सुदि आठमे, अष्टमी गति पामी ॥५॥
श्रावण वदनी आठमे, नमि जन्म्या जगभाण,
तेम श्रावण सुदि आठमे, पासजीनु निर्वाण ॥६॥
भादरवा वदि आठमदिने, चविया स्वामी सुपास,
जिन उत्तम पद पद्मने सेव्याथी शिववास ॥७॥

श्री आठमनुं स्तवन.

ढाळ पहेली

श्री राजगृही शुभ ठाम, अधिक दीवाजे रे,
विचरन्ता वीरजिणद, अतिशय छाजे रे.
चोत्रीश अने पात्रीश, वाणी गुण गाजे रे,
पाउधर्या वधामणी जाय, श्रेणिक आवे रे १

तिहा चोसठ सुरपति, आवीने त्रिगडु वनावे रे,
तेमा वेसीने उपदेश, प्रभुजी सुणावे रे,
सुरनर ने तिर्यंच, निज निज भाषा रे,
तिहा समजीने भवतीर, पामे सुख खासा रे २

तिहा इन्द्रभूति गणधार, श्री गुरुवीरने रे
पूछे अष्टमीनो महिमाय, "कहो प्रभु अमने रे,
तव भाखे वीरजिणंद "सुणो सहु प्राणी ! रे,
आठम दिन जिनना कल्याण, धरो चित्त आणी रे." २

ढाळ–वीजी

श्री ऋषभनु जन्म कल्याण रे,
वली चारित्र लह्यु भले वान रे,
त्रीजा सभवनु च्यवन कल्याण–
भविजन ! अष्टमी तिथि सेवो रे
ए छे शिववधू वरवानो मेवो–भविजन० १
श्री अजित सुमति नमि जन्म्या रे,
अभिनन्दन शिवपद पाम्या रे,
जिन सातमा च्यवन पाम्या–भविजन० २
वीशमा मुनि सुव्रत स्वामी रे, तेनो जन्म होय गुण धामी रे.
बावीसमा शिव विशरामी–भविजन० ३
पारस जिन मोक्ष महता रे, ईत्यादिक जिन गुणवता रे.
कल्याणक मोक्ष महता–भविजन० ४

श्रीवीर जिणदनी वाणी रे, निसुणी समज्या भवि प्राणी रे,
आठम दिन अति गुणखाणी-भविजन० ५
आठ कर्म ते दूर पलाय रे, एथी अडसिद्धि अडबुद्धि थाय रे,
ते कारण सेवो गुण लाय-भविजन० ६
श्री **उदय सागर** सूरि राया रे, गुरु शिष्य विवेके ध्याया रे,
तस न्यायसागर जय थाया-भविजन० ७

श्री अष्टमीनी स्तुति.

चोवीशे जिनवर हु प्रणमु नित्यमेव,
आठमदिन करीए, चदप्रभुनी सेव,
मूर्ति मन मोहन, जाणे पूनमचद,
दीठे दु ख जाए, पामे परमानद ॥१॥
मळी चोसठ इन्द्रो, पूजे प्रभुजीना पाय,
इन्द्राणी अपच्छरा, कर जोडी गुण गाय,
नंदीश्वर द्वीपे, मळी सुरवरनी कोट,
अट्ठाई महोत्सव, करता होडाहोड ॥२॥
शत्रुंजय शिखरे, जाणी लाभ अपार
चोमासु रह्या, गणधर मुनि परिवार,
भवियणने तारे देई धर्म उपदेश,
दूध साकरथी पण वाणी अधिक विशेष ॥३॥
पोसह पडिक्कमणु, करीए व्रत पच्चक्खाण,
आठम दिन करीए, अष्ट कर्मनी हाण,
अष्टमगल थाये, दिन दिन क्रोड कल्याण,
एम **सुखसूरि** कहे जीवित जन्म प्रमाण ॥४॥

श्री एकादशीनुं चैत्यवंदन.

शासन नायक वीरजी, प्रभु केवळ पायो,
संघ चतुर्विध स्थापवा, महसेन वन आयो ॥१॥
माधव सित एकादशी, सोमिल द्विज यज्ञ,
इन्द्रभूति आदि मल्या, एकादश विज्ञ ॥२॥
ऐकादशसे चउगुणो, तेहनो परिवार,
वेद अर्थ अवळो करे, मन अभिमान अपार ॥३॥
जीवादिक संशय हरीए, एकादश गणधार,
वीरे थाप्या वंदीए, जिनशासन जयकार ॥४॥
मल्लि जन्म अर मल्लि पास, वर चरण विलासी
ऋषभ अजित सुमति नमी, मल्लि घनघाती विनाशी ॥५॥
पद्मप्रभ शिववास पास, भवभवना तोडी,
एकादशी दिन आपणी, ऋद्धि सघळी जोडी ॥६॥
दशक्षेत्रे त्रिहु काळना, त्रणसे कल्याण,
वर्ष अग्यार एकादशी, आराधो वरनाण ॥७॥
अगियार अंग लखावीए, एकादश पाठा,
पुजणी ठवणी वींटणा, मशी कागळ काठा ॥८॥
अगीयार अव्रत छडवाए, वहो पडिमा अगीआर,
क्षमाविजय जिनशासने, सफळ करो अवतार ॥९॥

श्री मौन--एकादशीनुं स्तवन.

पंचम सुरलोकना वासी रे, नव लोकांतिक सुविलासी रे,

करे विनति गुणनी राशी, मल्लि जिन नाथजी व्रत लीजे रे,
भवि जीवने शिवसुख दीजे, मल्लि० ए आकणी० ॥१॥
तुमे करुणा रस भडार रे, पाम्या छो भवजल पार रे,
सेवकनो करो उद्धार, मल्लि० ॥ २ ॥ भवि० ॥
प्रभु दान सवत्सरी आपे रे, जगना दारिद्र दु ख कापे रे,
भव्यत्व पणे तस थापे, ॥ म० ॥ भ० ॥ ३ ॥
सुरपति सघळा मलि आवे रे, मणि रयण सोवन वरसावे रे,
प्रभु चरणे शीश नमावे ॥ मल्लि० ॥ भ० ॥ ४ ॥
तीर्थोदक कुंभ लावे रे, प्रभुने सिंहासन ठावे रे,
सुरपति भक्ते नवरावे ॥मल्लि ॥ भ० ॥ ५ ॥
वस्त्राभरणे शणगारे रे, फूल माला हृदय पर धारे रे
दु खडा इन्द्राणी उवारे ॥ मल्लि० ॥ भ० ॥ ६ ॥
मल्या सुरनर कोडी कोडी रे, प्रभु आगे रह्या कर जोडी रे,
करे भक्ति युक्ति मद मोडी, ॥ मल्लि० ॥ भ० ॥ ७ ॥
मृगशिर शुदिनी अजुआली रे, एकादशी गुणनी आली रे,
वर्या संयम वधु लटकाळी ॥ मल्लि० ॥ भ० ॥ ८ ॥
दीक्षा कल्याणक एह रे, गाता दु ख न रहे रेह रे,
लहे **रूपविजय** जस नेह ॥ मल्लि० ॥ भ० ॥ ९ ॥

श्री एकादशीनी स्तुति.

एकादशी अतिरूअडी गोविद पूछे नेम,
कोण कारण ए पर्व महोदु, कहो मुज शु तेम,
जिनवर कल्याणक अति भला, एकसो ने पचास,
तिण कारण ए पर्व महोदु, करो मौन उपवास ॥१॥

अगीयार श्रावकतणी पडिमा, कही ते जिनवरदेव,
एकादशी एम अधिक सेवो, वन गजा जिम रेव,
चोवीस जिनवर सयल सुखकर, जेसा सुरतरु चग,
जेम गग निर्मळ नीर जेवुं, करो जिनसु रग ॥२॥
अगीआर अग लखावीए, अगियार पाठा सार,
अगीआर कवली वींटणा, ठवणी पुजणी सार,
चाबखी चगी विविधरगी, शास्त्रतणे अनुसार,
एकादशी एम उजवो, जेम पामीए भवपार ॥ ३ ॥
वर कमल नयणी, कमल वयणी, कमल सुकोमल काय,
भुज दड अखड चण्ड जेहने, समरता सुख थाय,
एकादशी एम मन वमी, गणी हर्ष पडित शिष्य,
शासन देवी विघ्न निवारो, सघतणा निशदिश ॥ ४ ॥

श्री वीशस्थानक तपनु चैत्यवंदन

पहेले पद अरिहंत नमु, बीजे सर्व सिद्ध,
त्रीजे प्रवचन मन वरो, आचार्य सिद्ध ॥१॥
नमो थेराण पाचमे, पाठक पद छट्ठे,
नमो लोए सव्वसाहूण, जे छे गुण गरिट्ठे ॥२॥
नमो नाणस्स आठमे, दर्शन मन भावो,
विनय करो गुणवंतनो, चारित्र पद ध्यावो ॥३॥
नमो बंभवय धारीण, तेरमे क्रिया जाण,
नमो तवस्स चौदमे, गोयमं नमो जिणाणं ॥४॥

संयम ज्ञान सुअस्सने ए, नमो तित्थस्स जाणी,
जिन उत्तम पद पद्मने, नमता होय सुखखाणी ॥५॥

श्री वीश स्थानकनुं स्तवन.

हारे मारे प्रणमु सरस्वती मागु वचन विलास जो,
वीशेरे तप स्थानक महिमा गाईशु रे लोल,
हारे मारे प्रथम अरिहंत पद, लोगस्स चोवीश जो,
बीजे रे सिद्ध स्थानक पन्नर भावशु रे लोल १
हारे मारे त्रीजे पवयणशु गणशो लोगस्स सातजो,
चउथे रे आयरियाणं छत्रीशनो सही रे लोल,
हारे मारे थेराण पद पाचमे दश उदार जो,
छठ्ठे रे उवज्झायाण पचवीशनो सही रे लोल २
हारे मारे सातमे नमो लोए सव्वसाहू सत्तावीश जो,
आठमे नमो नाणस्स पचे भावशुं रे लोल,
हारे मारे नवमे दरिसण अडसठ मनने उदार जो,
दशमे नमो विणयस्स दश वखाणीये रे लोल ३
हारे मारे अगीयारमे नमो चारित्तस्स लोगस्स सत्तरजो
बारमे नमो बभस्स नव गुणे सही रे लोल,
हारे मारे किरियाण पद तेरमे वळी पचवीश जो,
चउदमे नमो तवस्स बार गुणे सही रे लोल ४
हारे मारे पदरमे गोयमस्स अठ्ठावीश जो,
नमो जिणाण चउव्वीश गणशु सोळमे रे लोल;-

हा रे मारे सत्तरमे नमो चारित्त लोगस्स सित्तेर जो,
नाणस्सनो पद गणशु एकावन अढारमे रे लोल ५
हा रे मारे ओगणीशमे नमो सुअस्स वीश पिस्तालीशजो,
वीसमे नमो तित्थस्स वीश भावशु रे लोल,
हा रे मारे तपनो महिमा चारशे उपर वीश जो,
षट् मासे एक ओळी पूरी कीजीए रे लोल ६
हा रे मारे तप करता वळी गणीए दोय हजार जो,
नवकारवाळी वीशे स्थानक भावशु रे लोल,
हा रे मारे प्रभावना संघ साहम्मि वत्सल सार जो,
उजमणा विधि कीजीये विनय लीजीये रे लोल ७
हा रे मारे तपनो महिमा कहे श्री वीर जिनराय जो
विस्तार ईम संबध गोयम स्वामीने रे लोल,
हा रे मारे तप करता वळी तीर्थंकर पद होय जो,
देव गुरु ईम कांति स्तवन सोहामणो रे लोल, ८

श्री वीश-स्थानक तपनी स्तुति ।

पूछे गौतम वीर जिणदा, समवसरण बेठा सुखकंदा,
पूजित अमर सूरिंदा,
केम निकाचे पद जिन चंदा, किणविध तप करता भवफंदा,
टाळे दुरितह दंदा,
तव भाखे प्रभुजी गत निंदा, सुण गौतम वसुभूति नन्दा,
निर्मल तप अरविंदा,

वीश स्थानक तप करता महिंदा, जेम तारक समुदाई चन्दा,
तेम ए सवि तप इंदा० ॥१॥
प्रथम पदे अरहंत नमो जे, बीजे सिद्ध पवयण त्रीजे,
आचारज थेर ठवीजे,
उपाध्याय ने साधु ग्रही जे, नाणदंसण पद विनय वही जे,
अगीआरमे चारित्र लीजे,
वंभवय धारिण गणी जे, किरियाण तवस्स करी जे,
गोयम जिणाण लहीजे,
चारित्रनाण सुअतित्थस्स कीजे, त्रीजे भव तप करत सुणी जे,
ए सवि जिन तप लीजे ॥२॥
आदि नमो पद सघले वीश, बार पन्नर वार वली छत्रीश,
दस पण वीस सगवीस,
पाच ने सडसठ तेर गणीश, सत्तर नव किरिया पण वीश,
बार अट्ठावीश चोवीश,
सित्तेर इगवन पीस्तालीश, पाच लोगस्स काउस्सग्ग रहीश,
नौकारवाली वीश,
एक एक पदे उपवास वीश मास खटे एक ओली करीश,
एम सिद्धांत जगीश ॥३॥
शक्ति एकासणुं तिविहार, छट्ठ अट्ठम मासखमण उदार,
पडिक्कमणा दोय वार,
इत्यादिक विधि गुरुगम धार एक पद आराधन भवपार,
उजमणुं विधि प्रकार

मातंग जक्ष करे मनोहार, देवी सिद्धाई शासन रखवाळ,
सघ विघन अपहार,
खिमाविजय जस उपर प्यार, शुभ भवियण धर्मी आधार,
वीरविजय जय कार ॥४॥

श्री पर्युषणनुं चैत्यवंदन

पर्व पर्युषण गुणनीलो, नवकल्प विहार,
चार मासान्तर थिर रहे, एहिज अर्थ उदार ॥१॥
अषाड सुदि चौदश थकी, सवत्सरी पचास
मुनिवर दिन सित्तेरमें, पडिक्कमता चौमास ॥२॥
श्रावक पण समता धरी, करे गुरुना बहुमान,
कल्पसूत्र सुविहित मुखे, सामळे थइ एकतान ॥३॥
जिनवर चैत्य जुहारीये, गुरुभक्ति विशाल,
प्राये अष्ट भवांतर, वरिये शिव वरमाल ॥४॥
दर्पणथी निज रूपनो, जुवे सुदृष्टि रूप,
दर्पण अनुभव अर्पणे, ज्ञान रमण मुनि भूप ॥५॥
आत्मस्वरूप विलोकताए, प्रगटयो मित्र स्वभाव,
राय उदायी खामणा, पर्व पर्युषण दाव ॥६॥
नव वखाण पूजी सुणे, शुकल चतुर्थी सीमा,
पंचमी दिन वाचे सुणे, होय विरोधी नियमा ॥७॥
ए नहीं पर्वे पचमी, सर्व समाणी चोथे,
भवभीरु मुनि मानशे, भाख्यु अरिहानाथे ॥८॥

वीश स्थानक तप करता महिदा, जेम तारक समुदाई चन्दा,
तेम ए सवि तप इंदा० ॥१॥
प्रथम पदे अरहत नमो जे, वीजे सिद्ध पवयण त्रीजे,
आचारज थेर ठवीजे,
उपाध्याय ने साधु ग्रही जे, नाणदसण पद विनय वही जे,
अगीआरमे चारित्र लीजे,
बभवय धारिण गणी जे, किरियाण तवस्स करी जे,
गोयम जिणाण लहीजे,
चारित्रनाण सुअतित्थस्स कीजे, त्रीजे भव तप करत सुणी जे,
ए सवि जिन तप लीजे ॥२॥
आदि नमो पद सघले वीश, बार पन्नर वार वली छत्रीश,
दस पण वीस सगवीस,
पाच ने सडसठ तेर गणीश, सत्तर नव किरिया पण वीश,
बार अट्ठावीश चोवीश,
सित्तेर इगवन पीस्तालीश, पाच लोगस्स काउस्सग रहीश,
नौकारवाली वीश,
एक एक पदे उपवास वीश, मास खटे एक ओली करीश,
एम सिद्धात जगीश ॥३॥
शक्ति एकासणु तिविहार, छट्ठ अट्ठम मासखमण उदार,
पडिक्कमणा दोय वार,
इत्यादिक विधि गुरुगम धार एक पद आराधन भवपार,
उजमणु विधि प्रकार

मातंग जक्ष करे मनोहार, देवी सिद्धाई शासन रखवाळ,
सघ विघन अपहार,
खिमाविजय जस उपर प्यार, शुभ भवियण धर्मी आधार,
वीरविजय जय कार ॥४॥

श्री पर्युषणनुं चैत्यवंदन

पर्व पर्युषण गुणनीलो, नवकल्प विहार,
चार मासान्तर थिर रहे, एहिज अर्थ उदार ॥१॥
अषाड सुदि चौदश थकी, संवत्सरी पचास
मुनिवर दिन सित्तेरमे, पडिक्कमता चौमास ॥२॥
श्रावक पण समता धरी, करे गुरुना बहुमान,
कल्पसूत्र सुविहित मुखे, साभळे थइ एकतान ॥३॥
जिनवर चैत्य जुहारीये, गुरुभक्ति विशाल,
प्राये अष्ट भवांतरे, वरिये शिव वरमाल ॥४॥
दर्पणथी निज रूपनो, जुवे सुदृष्टि रूप,
दर्पण अनुभव अर्पणे, ज्ञान रमण मुनि भूप ॥५॥
आत्मस्वरूप विलोकताए, प्रगटयो मित्र स्वभाव,
राय उदायी खामणा, पर्व पर्युषण दाव ॥६॥
नव वखाण पूजी सुणे, शुकल चतुर्थी सीमा,
पंचमी दिन वाचे सुणे, होय विरोधी नियमा ॥७॥
ए नहीं पर्वे पंचमी, सर्वे समाणी चोथे,
भवभीरु मुनि मानशे, भाख्यु अरिहानाथे ॥८॥

श्रुतिकेवली वयणा सुणी लही मानव अवतार,
श्री **शुभवीरने** शासने, पाम्या जयजयकार ॥९॥

श्री नवपदजीनुं चैत्यवंदन.

श्री सिद्धचक्र आराधीये, आसौ चैतर मास,
नवदिन नव आयबिलकरी, कीजे ओळी खास ॥१॥
केसर चन्दन घसी घणा, कस्तुरी बरास,
जुगते जिनवर पूजीया, मयणा ने श्रीपाळ ॥२॥
पूजा अष्ट प्रकारनी, देववदन त्रण काळ,
मत्र जपो त्रण काळने, गुणणु दोय हजार ॥३॥
कष्ट टल्यु उबर तणु, जपतां नवपद ध्यान,
श्री श्रीपाल नरिंद थया, वाध्यो बमणो वान ॥४॥
सातसो कोढिया सुख लह्या, निज आवास,
पुण्य मुक्ति वधू वर्या, पाम्या लील विलास ।५॥

श्री सिद्धचक्र स्तुति.

जिन शासन वाछित, पूरण देव रसाल,
भावे भवि भणीये, सिद्धचक्र गुणमाल,
त्रिहु काळे एहनी, पूजा करे उजमाल,
ते अमर पद सुख पामे सुविशाल ॥१॥
अरिहत सिद्ध वदो, आचारज उवज्झाय,
मुनि-दरिसण-नाण, चरण-तप ए समुदाय,
ए नवपद समुदित, सिद्धचक्र सुखदाय,
ए ध्याने भविना, भव कोटि दुख जाय ॥२॥

आसो चैतरनी, सुद सातमथी सार,
पूनम लगे कीजे, नव आयंबिल निरधार,
दोय सहस गणेरु पद सम साडाचार,
एकागी आयंबिल, तप आगम अनुसार ॥३॥
श्री सिद्धचक्र सेवक, श्री विमलेसर देव,
श्रीपालतणी परें, सुख पूरे स्वयमेव,
दु:ख दोहग नावे, जे करे ऐहनी सेव,
श्री सुमति सुगुरुनो, **राम** कहे नित्यमेव ॥४॥

दिवाळीनुं-चैत्यवंदन

मगध देश पावापुरी, श्री वीर प्रभु पधार्या,
सोळ पहोर देई देशना, भविक जीवने तार्या ॥१॥
अढार भेदे भाव्रे भणी, अमृत जेवी वाणी,
देशना देता रयणीए परण्या शिव राणी ॥२॥
ऊठो राय दीवा करो, अजुआळो दिन एह,
आसो मासे कार्तकी, दिवाळी दिन एह ॥३॥
मेरु थकी इन्द्र आवीया, लेई हाथमा दीवो,
मेरैया ! ते कारणे, लोक कहे चिरजीवो ॥४॥
कल्याणक कर्या जेणे, गुणणु जे गणशे,
जाप जपे जिनराजनुं, सौ पुस्तक नमशे ॥५॥
पहेले दिन गौतम नमु, पाम्या केवळज्ञान,
बार सहस गुणणु गणे, तेथी कोड कल्याण. ॥६॥
सुर नर वदु निर्मळा, गौतमने आपो,

आचारज पद्वी थाय, सौ साखे स्थापो ॥७॥
जुहार पटोरा ने कारणे, लोकातिक व्यवहार;
वेने भाई जमाडीयो, नदिवर्धन सार ॥८॥
भावड बीज तिहा थई, वीरे जाण्यु सार;
नयविमळ सुख सपदा, मेरुशिखर उवज्झाय ॥९॥

श्री दिवाळीनी स्तुति.

शासन नायक श्री महावीर. सात हाथ हम वरण शरीर,
हरि लछन जिन धीर;
जेहने गौतमस्वामी वजीर, मदन सुभट गजन वडवीर,
सायर परे गभीर;
कार्तिक अमावास्ये निर्वाण, द्रव्य उद्योत करे नृप जाण,
दीपक श्रेणी मडाण;
दिवाली प्रगट्यु अभिधान, पश्चिमरजनीए गौतम ज्ञान;
वर्धमान वर ध्यान ॥१॥
चउवीस ए जिनवर सुखकार, पर्व दिवाळी अति मनोहार,
सकल पर्व शिणगार,
मेरैया करे भवि अविकार, महावीर सर्वज्ञाय पद सार,
जपीये दोय हजार;
मज्झिम रजनी देव वदीजे, महावीर पारगताय नमीजे,
तस सहस दोय गुणीजे,
वळी गौतम सर्वज्ञाय नमीजे, पर्व दिवाळी एणिपेरे कीजे,

अग अगीयार उपागज बार, पयन्ना दस छ छेद मूल चार,
नदो अनुयोग द्वार,
छ लाख ने छत्रीस हजार, चौद पूरव विरचे गणधार,
त्रिपदीना विस्तार,
वीर पचम कल्याणक जेह, कल्पसूत्रमाहि भाख्यु तेह,
दीपोत्सव गुण गेह,
उपवास छट्ठ अट्ठम करे जेह, सहस लाख कोटी,
फल लहे तेह, श्री जिनवाणी एह ॥३॥
वीर निर्वाण समय सुर जाणी, आवे इन्द्र अने इन्द्राणी,
भाव अधिक मन आणी,
हाथ ग्रही दीवी निशि जाणी, मेरैया मुख बोले वाणी,
दिवाली कहेवाणी,
एणी पेरे दीपोत्सव करजो प्राणी, सकल सुमगल
कारण जाणी, लाभविमल गुणखाणी,
वदति रत्नविमल ब्रह्माणि, कमल कमडल वीणा पाणि,
द्यो सरस्वती वर वाणी ॥४॥

श्री सीमधर जिन स्तुति.

सीमधर जिनवर, सुखकर साहिब देव,
अरिहत सकळनी, भाव धरी करु सेव,
सकलागम पारग, गणधर भाषित वाणी,
जयवती आणा, ज्ञानविमल गुणखाणी ॥१॥

श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन.

श्री रे सिद्धाचल भेटवा, मुज मन मन अधिक उमाहो,

ऋषभ जिणंद पूजा करी, लीजे भव तणो लाहो श्रीरे० १
मणिमय मुरति श्री ऋषभनी, निपाई अभिराम,
भवन कराव्या कनकना, राख्या भरते नाम श्रीरे० २
नेम विना त्रेवीश प्रभु, आव्या सिद्धक्षेत्र जाणी
शत्रुंजा समो तीरथ नहीं, बोल्या सीमंधर वाणी श्रीरे० ३
पूर्व नवाणुं समोसर्या, स्वामी श्री ऋषभ जिणंद,
राम पांडव मुगते गया, पाम्या परमानंद श्रीरे० ४
पुरव पुन्य पसाउले, पुंडरिकगिरि पायो,
कान्तिविजय हरखे करी, श्री सिद्धाचल गायो श्रीरे० ५

श्री सिद्धाचलजीनी स्तुति (थोय)

श्री सिद्धाचल मंडण, ऋषभ जिणंद दयाल,
मरुदेवानंदन वंदन करु त्रणकाळ,
ए तीरथ जाणी, पुरव नवाणु वार,
आदीश्वर आव्या, जाणी लाभ अपार ॥१॥

श्री आपस्वभावनी सज्झाय.

आप स्वभावमां रे, अवधु सदा मगनमे रहेना ॥
जगत जीव है करमाधिना, अचरिज कछुअ न लीना ॥आप० ॥
॥ १ ॥ तु नहीं केरा, कोई नही तेरा, क्या करे मेरा मेरा० ॥
तेरा हे सो तेरी पासे, अवर सबे अनेरा ॥ आप० ॥२॥
वपु विनाशी तु अविनाशी, अब हे इनकु विलासी ॥वपु संग जब
दूर निकासी, तब तुम शिवका वासी ॥ आप० ॥३॥ राग ने रीसा

दोय खवीसा, ए तुम दुःखका दीसा, जब तुम उनकु दूर करीसा, तब तुम जगका ईसा ॥ आप० ॥ ४ ॥ पारकी आशा सदा निराशा, ए है जग जन पासा ॥ वो काटनकुं करो अभ्यासा, लहो सदा सुख वासा ॥ आप० ॥ ५ ॥ कबीहीक काजी कबहीक पाजी कबहीक हुआ अपभ्राजी ॥ कबहीक जगमे कीर्ति गाजी, सब पुदगलकी बाजी ॥ आप० ॥ ६ ॥ शुद्ध उपयोग न समताधारी, ज्ञान ध्यान मनोहारी ॥ कर्म कलंककु दूर निवारी, जीव वरे शिवनारी ॥ आप० ॥ ७ ॥

अ शीयलनी सज्झाय,

(धन्य धन्य ए दिन माहरो—ए देशी)

शीयल समु व्रत को नहि, श्रीजिनवर एम भाखेरे, सुख आपे जे शाश्वता

दुर्गति पडता राखे रे. शी० १

व्रत पच्चख्खाण विना जुओ, नव नारद जेह रे,
एकज शीयल तणे बळे,

गया मुगतिमा तेह र शी० २

साधु अने श्रावक तणा, व्रत छे सुखदायी रे,
शियल विना व्रत जाणजो,

कुसका सम भाई रे. शी० ३

तरुवर मूळ विना जीस्यो, गुण विण लाल कमान रे,
शीयल विना व्रत एहवु,

कहे वीर भगवान रे. शी० ४

नव वाडे करी निर्मळु, पहेलु शीयलज धरजो रे,
उदयरतन कहे ते पछी,
व्रतनो खप करजो रे ५

श्री वैराग्यनी सज्झाय.

ऊचा मन्दिर माळीया, सोड वाळीने सूतो,
काढो काढो एने सहु कहे,
जाणे जनम्यो ज नहोतो १

एकरे दिवस एवो आवशे. मन सबळोजी साले,
मंत्री मळ्या सवि कारमा
तेनु काई न चाले० एक रे० २

साव सोनाना साकला, पहेरण नवा वाघा,
धोळु रे वस्त्र एना कर्मनु,
ते तो शोधवा लाग्या एक रे० ३

चरु कढाइया अति घणा, बीजानु नहि लेखु,
खोखरी हाडली एना कर्मनी,
ते तो आगळ देखु एक रे० ४

केना छोरु ने केना वाछरु, केना माय ने बाप,
अन्तेकाळे जावु जीवने एकलु,
साथे पुण्य ने पाप एक रे० ५

सगी रे नारी एनी कामिनी, उभी टगमग जुवे,
तेनु पण काई चाले नहि,
बेठी ध्रुसके रवे एक रे० ६

वहाला ते वहाला शु करो वहाला वोळावी वळशे,
वहाला ते वनना लाकडा
ते तो साथे ज वळशे एक रे० ७

नहि त्रापो नहि तुबडी, नथी तरवानो आरो,
उदयरतन प्रभु इम भणे, मने पार उतारो एक रे० ८

संसारना खोटा सगपणनी सज्झाय.

(चेत तो चेतावु तने रे, पामर प्राणी–ए देशी)

सगु तारु कोण साचु रे, ससारीयामा–सगु०
पापनो तो नाख्यो पायो, धरममा तु नहि धायो,
डाह्यो थइने तु दबायो रे ससा० १

कूडु कूडु हेतज कीधु, तेने साचु मानी लीधु,
अन्त काले दुःख दीधु रे ससा० २

विसवासे व्हाला कीधा, पीयाला झेरना पीधा,
प्रभुने विसारी दीधा रे ससा० ३

मन ममतामा महाल्यो, चोरने मारग चाल्यो,
पापीओनो सग झाल्यो रे० ससा० ४

घरने धंधे घेरी लीधो, कामिनीये वश कीधो,
ऋषभदास कहे दगो दीधो रे० ससा० ५

श्री रत्नाकर पच्चीशी.

मदिर छो मुक्तितणी मागल्यक्रीडाना प्रभु,
ने इद्र नर ने देवना सेवा करे तारी विभु
सर्वज्ञ छो स्वामी वळी शिरदार अतिशय सर्वना,
घणु जीव तु घणु जीव तु भडार ज्ञानकळातणा. १
त्रण जगतना आधार ने अवतार हे करुणातणा,
वळी वैद्य हे दुर्वार आ ससारना दु खोतणा,
वीतराग वल्लभ विश्वना तुज पास अरजी उच्चरु,
जाणो छता पण कही अने हु हृदय आ खाली करु २
शु बाळको माबाप पासे बालक्रीडा नव करे,
ने मुखमाथी जेम आवे तेम शु नव उच्चरे ?
तेमज तमारी पास तारक आज भोळाभावथी,
जेवु बन्यु तेवु कहु तेमा कशु खोटु नथी ३
मे दान तो दीधु नहीं ने शीयल पण पाळ्यु नहीं,
तपथी दमी काया नही शुभ भाव पण भाव्यो नहीं
ए चार भेदे धर्ममाथी काइ पण प्रभु नव कर्यु,
म्हारु भ्रमण भवसागरे निष्फल गयु निष्फल गयु ४
हु क्रोध अग्निथी बल्यो वळी लोभ सर्प डस्यो मने,
गळ्यो मानरुपी अजगरे हु केम करी ध्याउ तने ?
मन मारु मायाजाळमा मोहन ' महा मुंझाय छे,
चडी चार चोरो हाथमा चेतन घणो चगदाय छे ५

मे परभवे के आ भव पण हित काई कर्यु नहीं,
तेथी करी संसारमां सुख अल्प पण पाम्यो नहीं,
जन्मो अमारा जिनजी ! भव पूर्ण करवाने थया,
आवेल बाजी हाथमां अज्ञानथी हारी गया ६

अमृत झरे तुम मुखरूपी चंद्रथी तो पण प्रभु,
भींजाय नहीं मुझ मन अरेरे ! शुं करुं हुं तो विभु,
पत्थर थकी पण मारुं मन खरे क्याथी द्रवे ?
मरकट समा आ मनथकी हुं तो प्रभु हार्यो हवे ७

भमतां महा भवसागरे पाम्यो पसाये आपना,
जे ज्ञान दर्शन चरणरूपी रत्नत्रय दुष्कर घणा,
ते पण गया परमादना वशथी प्रभु कहुं छुं खरुं,
कोनी कने किरतार आ पोकार हुं जईने करुं ? ८

ठगवा विभु आ विश्वने वैराग्यना रंगो धर्या,
ने धर्मना उपदेश रंजन लोकने करवा कर्या,
विद्या भण्यो हुं वाद माटे केटली कथनी कहुं ?
साधु थईने बहारथी, दांभिक अंदरथी रहुं ९

मे मुखने मेलुं कर्युं दोषो पराया गाईने,
ने नेत्रने निंदित कर्या परनारीमां लपटाईने,
वली चित्तने दोषित कर्युं चिंती नठारुं परतणुं,
हे नाथ मारुं शुं थशे चालाक थई चूक्यो घणुं १०

करे कालजाने कतल पीडा कामनी बीहामणी,
ए विषयमा बनी अंध हु विडबना पाम्यो घणी,
ते पण प्रकाश्युं आज लावी लाज आपतणी कने,
जाणो सहु तेथी कहु कर माफ मारा वाकने ११

नवकर मत्र विनाश कीधो अन्य मत्रो जाणीने
कुशास्त्रना वाक्यो वडे हणी आगमोनी वाणीने,
कुदेवनी संगतथकी कर्मो नकामा आचर्या,
मतिभ्रमथकी रत्नो गुमावी काच कटका मे ग्रह्या १२

आवेल दृष्टि मार्गमा मूकी महावीर आपने,
मे मूढधीये हृदयमा ध्याया मदनना चापने,
नेत्रवाणो ने पयोधर नाभि ने सुन्दर कटी,
शणगार सुन्दरीओतणा छटकेल थई जोया अति १३

मृगनयनी सम नारीतणा मुखचन्द्र नीरखवावती,
मुज मन विषे जे रग लाग्यो अल्प पण गूढो अति,
ते श्रुतरूप समुद्रमा धोया छता जातो नथी,
तेनु कहो कारण तमे वचुं केम हु आ पापथी ? १४

सुन्दर नथी आ शरीर के समुदाय गुणतणो नथी,
उत्तम विलास कलातणी देदीप्यमान प्रभा नथी,
प्रभुता नथी तो पण प्रभु अभिमानथी अक्कड फरु,
चोपाट चार गतितणी ससारमा खेल्या करु १५

आयुष्य घटतुं जाय तो पण पापबुद्धि नव घट,
आशा जीवननी जाय पण विषयाभिलाषा नव मटे,
औषध विषे करु' यत्न पण हु धर्मने तो नव गणु,
बनो मोहमा मस्तान हु पाया विनाना घर चणु १६
आत्मा नथी परभव नथी वळी पुण्य पाप कशु नथी,
मिथ्यात्वीनी कटु वाणी मे धरी कान पीधी स्वादथी,
रविसम हता ज्ञाने करी प्रभु आपश्री तो पण अरे,
दीवो लई कूवे पड्यो धिक्कार छे मुजने खरे. १७
मे चित्तथी नहीं देवनी के पात्रनी पूजा चही,
ने श्रावको के साधुओनो धर्म पण पाळ्यो नहीं,
पाम्यो प्रभु नरभव छता रणमा रड्या जेवु थयु',
धोबीतणा कुत्तासमु मम जीवन सहु एळे गयु. १८
हु कामधेनु कल्पतरु चितामणिना प्यारमा,
खोटा छता झख्यो घणु बनी लुब्ध आ ससारमा,
जे प्रगट सुख देनार त्हारो धर्म ते सेव्यो नहीं,
मुज मूर्ख भावोने निहाळी नाथ कर करुणा कई १९
मे भाग सारा चितव्या ते रोग सम चिंत्या नहीं,
आगमन इच्छ्यु धनतणु पण मृत्युने प्रीछ्यु नही,
नही चितव्यु मे नर्क कारागृह समी छे नारीओ,
मधुबिंदुनी आशामहीं भय मात्र हु भूली गयो २०
हु शुद्ध आचारोवडे साधु-हृदयमां नव रह्यो,
करी काम पर उपकारना यश पण उपार्जन नव कर्यो,

करे कालजाने कतल पीडा कामनी बीहामणी,
ए विषयमा बनी अंध हु विडबना पाम्यो घणी,
ते पण प्रकाश्यु आज लावी लाज आपतणी कने,
जाणो सहु तेथी कहु कर माफ मारा वाकने ११

नवकर मत्र विनाश कीधो अन्य मत्रो जाणीने,
कुशास्त्रना वाक्यो वडे हणी आगमोनो वाणीने,
कुदेवनी संगतथकी कर्मो नकामा आचर्या,
मतिभ्रमथकी रत्नो गुमावी काच कटका मे ग्रह्या १२

आवेल दृष्टि मार्गमा मूकी महावीर आपने,
मे मूढधीये हृदयमा ध्याया मदनना चापने,
नेत्रबाणो ने पयोधर नाभि ने सुन्दर कटी,
शणगार सुन्दरीओतणा छटकेल थई जोया अति १३

मृगनयनी सम नारीतणा मुखचन्द्र नीरखवावती,
मुज मन विषे जे रग लाग्यो अल्प पण गूढो अति,
ते श्रुतरूप समुद्रमा धोया छता जातो नथी,
तेनु कहो कारण तमे बचुं केम हु आ पापथी ? १४

सुन्दर नथी आ शरीर के समुदाय गुणतणो नथी,
उत्तम विलास कलातणी देदीप्यमान प्रभा नथी,
प्रभुता नथी तो पण प्रभु अभिमानथी अक्कड फरु,
चोपाट चार गतितणी ससारमा खेल्या करु १५

आयुष्य घटतु जाय तो पण पापबुद्धि नव घटे,
आशा जीवननी जाय पण विषयाभिलाषा नव मटे,
औषध विषे करु' यत्न पण हु धर्मन तो नव गणु,
बनी मोहमा मस्तान हु पाया विनाना घर चणु १६
आत्मा नथी परभव नथी वळी पुण्य पाप कशु नथी,
मिथ्यात्वीनी कटु वाणी मे धरी कान पीधी स्वादथी,
रविसम हता ज्ञाने करी प्रभु आपश्री तो पण अरे,
दीवो लई कूवे पड्यो धिक्कार छे मुजने खरे. १७
मे चित्तथी नहीं देवनी के पात्रनी पूजा चही,
ने श्रावको के साधुओनो धर्म पण पाळ्यो नहीं,
पाम्यो प्रभु नरभव छता रणमा रड्या जेवु थयु',
धोबीतणा कुत्तासमु मम जीवन सहु एळे गयु. १८
हु कामधेनु कल्पतरु चितामणिना प्यारमा,
खोटा छता झख्यो घणु बनी लुब्ध आ ससारमा,
जे प्रगट सुख देनार त्हारो धर्म ते सेव्यो नहीं,
मुज मूर्ख भावोने निहाळी नाथ कर करुणा कई १९
मे भोग सारा चिंतव्या ते रोग सम चिंत्या नहीं,
आगमन इच्छ्यु धनतणु पण मृत्युने प्रीछ्यु नहीं,
नहीं चितव्यु मे नर्क कारागृह समी छे नारीओ,
मधुबिंदुनी आशामहीं भय मात्र हु भूली गयो २०
हु शुद्ध आचारोवडे साधु-हृदयमा नव रह्यो,
करी काम पर उपकारनां यश पण उपार्जन नव कर्यो,

वळी तीर्थना उद्धार आदि कोइ कार्यो नव कर्या,
फोगट अरे ! आ लक्ष चोराशीतणा फेरा फर्या २१

गुरुवाणीमा वैराग्यकेरो रग लाग्यो नही अने,
दुर्जनतणा वाक्योमही शान्ति मळे क्याथी मने ?
तरु केम हु संसार आ अध्यात्म तो छे नही जरी,
तूटेल तळीआनो घडो जलथी भराये केम करी ? २२

मे परभवे नथी पुण्य कीधु ने नथी करतो हजी,
तो आवता भवमा कहो क्याथी थशे हे नाथजी ?
भूत भावी ने साप्रत त्रणे भव नाथ हु हारी गयो,
स्वामी त्रिशंकु जेम हु आकाशमा लटको रह्यो २३

अथवा नकामु आप पासे नाथ शु बकवु घणु,
हे देवताना पूज्य ! आ चारित्र मुज पोतातणु,
जाणो स्वरुप त्रण लोकनु तो माहरु शु मात्र आ,
ज्या क्रोडनो हिसाब नही त्या पाइनी तो वात क्या ? २४

त्हाराथी न समर्थ अन्य दीननो उद्धारनारो प्रभु !
म्हाराथी नहीं अन्य पात्र जगमा जोता जडे हे विभु !
मुक्ति मगळ स्थान तोय मुजने, इच्छा न लक्ष्मीतणी,
आपो सम्यग्रत्न श्याम जीवने तो तृप्ति थाये घणी २५

अब्भुट्ठिओ—यह सूत्र बोल कर, हमसे गुरुमहाराजके जो कुछ अपराध हुए हो, उनकी क्षमा मागी जाती है।

इरियावहि—इस सूत्रसे चलते फिरते जो कुछ पाप लगा है वह दूर होता है।

तस्सउत्तरी—'इरियावहि' से पाप दूर होता है, किन्तु उस पापकी विशेष शुद्धिके लिये यह सूत्र बोला जाता है।

अन्नत्थ—काउस्सग्गके १६ आगार (अपवाद), व काउ-स्सग्गमे किस तरह रहे ना—यह सूत्रमे बतलाया है।

लोगस्स—चौवीस जिनेश्वरो के नामोल्लेख पूर्वक उनकी स्तुति की गई है।

करेमि भंते—सामायिक लेनेके बाद पापकार्य, निन्दा,विकथा न करके धर्मका अभ्यास या वाचन करना। पढे हुएका स्मरण करना, नवकारवाली—माला फेरनी—इत्यादि कार्य करनेका इस सूत्रमे कहा गया है। 'सामायिक' शब्दका मतलब है की 'जिससे समताका लाभ, बधे हुए प्राचीन कर्मोका नाश, और नवीन कर्मो की रुकावट हो'—ऐसी ४८ मिनटोकी ज्ञानीओने बतलाई हुई क्रिया। सामायिकमे कच्चे पानी, कच्ची मट्टी, अग्नि, वायु वन-स्पति, स्त्री (पुरुषके लिये स्त्री व स्त्रीके लिये पुरुष) और पैसे को स्पर्श नही किया जाता।

समाइय-वयजुत्तो—इस सूत्रसे सामायिककी समाप्ति की जाती है। और जितनी वार सामायिक किया जाय उतनी वार अशुभ कर्मोका नाश होता है व उतने समयके लिये श्रावक साधुके

जैसा गिना जाता है, एव सामायिक बार बार करना चाहिए यह इस सूत्रमे कहा गया है।

जगचिंतामनी—यह चैत्यवदन गुरूश्री गौतमस्वामीजी जब अष्टापद तीर्थकी यात्राके लिये गये थे उस समय उन्होने रचा था।

इसकी पहेली गाथामे अष्टापद पर स्थित चौवीस तीर्थंकरोकी मूर्तिओको, दूसरीमे महाविदेह आदि क्षेत्रोके तीर्थंकरोको केवलज्ञानीओ व साधुओको, तीसरी गाथामे शत्रुन्जय आदि तीर्थोमे रहे हुए जिनेश्वरोको, चौथीमे तीन लोक स्थित ८५७००२८२ शाश्वत जिनचैत्यो को, और पाचवीं गाथामे १५४२५८३६०८० शाश्वत जिनप्रतिमाओको वदन किया है।

जंकिंचि—इस सूत्रसे तीन लोकमे स्थित नाम रूप तीर्थो की जिन प्रतिमाओको वदना की गई है।

नमुत्थुणं—इस सूत्रमे अरिहत भगवानके गुण कहे गये है। तीर्थंकरोके पाचो कल्याणकोके अवसर पर इन्द्र महाराज इस सूत्रसे भगवानकी स्तुति करते है।

जावंति चेइआइं—इस सूत्रसे स्वर्ग, मर्त्यलोक व पातालमे रही हुई जिन प्रतिमाओको वन्दन किया है।

जावत केवि साहू—इस सूत्रमे भरत, ऐरवत और महाविदेह क्षेत्रके अंदर रहे हुए साधु—साध्वीजीओको वदन किया है।

नमोऽर्हत्—इस सूत्रसे पाचो परमेष्ठिओको नमस्कार होता है। यह सूत्र श्रीमान् सिद्धसेनदिवाकरसूरिजी नामक आचार्य महाराजने बनाया है।

उवसग्गरं–यह श्री पार्श्वनाथ भगवानका स्तोत्र–स्तवन है। इसके पढने से सर्व विघ्न दूर होते है। इसमे भगवान पार्श्वनाथकी स्तुति करके समकितकी याचना की गई है। इसे श्री भद्रबाहु-स्वामीजी नामक आचार्य महाराजने रचा है।

जय वीयराय–इस सूत्रसे भगवानके पास उत्तम गुणोकी याचना की गई है, और दुःखका क्षय, कर्मका क्षय, समाधि मरण व समकित इन चार चीजोके लिये प्रार्थना की गई है।

अरिहंत चेइआणं–इस सूत्रसे अरिहंत भगवानको नमस्कार किया है, और वंदन, पूजन, सत्कार, बोधिबीज (समकित) व मोक्षके हेतु काउस्सग्ग करनेका इसमे कहा गया है।

कल्लाणकंदं–इसकी प्रथम गाथामे श्रीऋषभदेव, शान्तिनाथ, नेमिनाथ पार्श्वनाथ व महावीरस्वामी इन पाच जिनोकी दूसरीमे सर्व जिनेश्वरोकी, तीसरी गाथामे ज्ञानकी और चौथी गाथामे सरस्वती देवीकी स्तुति की है।

हर त्रयोदशीके दिन देवसि प्रतिक्रमणमे यह स्तुति ही बोली जाती है।

संसारदावा–इस सूत्रकी प्रथम गाथासे भगवान महावीर-स्वामी और दूसरी, तीसरी चौथी गाथाओसे 'कल्लाणकंद स्तुतिके मुताबिक स्तुति की गई है। इसे श्रीमान् हरिभद्रसूरिजीने सम-संस्कृतमे (प्राकृत व संस्कृत दोनो भाषाओमे गिनी जा सके ऐसी भाषामे) रची है, और यह चार ग्रन्थरुप गिनी जाती है।

पुक्खरवरदीवड्ढे-इस सूत्रसे वर्तमानमे विचरते वीस तीर्थंकरोकी व ज्ञानकी स्तुति की है।

सिद्धाणंबुद्धाणं-इस सूत्र से सब सिद्ध महावीरस्वामी नेमीनाथ व अष्टापदस्थित चौवीस तीर्थंकरोकी स्तुति की है।

वेयावच्च-इससे समकिती देवोका स्मरण किया जाता है।

इच्छामिठामि-इस सूत्रसे दिवसभरमें लगे हुए पापो को सामान्य रूपसे प्रगट करके उनकी माफी मागी जाती है।

नाणंमि-इन आठ गाथाओसे ज्ञानादि पाच आचारोके भेदोका वर्णन किया जाता है।

सुगुरुवंदना-इस सूत्रसे सुगुरुको द्वादशावर्तवदन करके उनके प्रति जो अपराध हुआ हो उसकी क्षमा मागी जाती है।

सातलाख-इससे तीन लोकमे रहे हुए ८४ लक्ष योनी के जीवोमे से जिनका वध हुआ हो उसके वास्ते 'मिच्छामि दुक्कड' दिया जाता है।

अठारह पापस्थानक- इस सूत्रमे सब मिलाकर जिन १८ प्रकारके पापका बन्धन होता है उनके नाम दिये गये है, और उनमेस जिस प्रकार पाप किया गया हो उसके लिए 'मिच्छामि दुक्कड' की याचना करनेमे आती है।

वंदित्तु-इस सूत्रमे श्रावकधर्मके बारह व्रत वगैरहम जो दोष लगे हो उनको पश्चात्तापके साथ प्रकट करते हुए, ऐसे दोष पुनः न लगे ऐसी भावना दरशाने के साथ, उनके लिए क्षमा मागी जाती है।

आयरिय उवज्झाए—इस सूत्रसे आचार्य, उपाध्याय, समस्त सघ तथा सर्वजीवोके प्रति क्रोध आदि कषाय किया गया हो एव अन्य जो कोई अपराध हुआ हो उसके लिए क्षमापना की जाती है।

इच्छामो अणुसट्ठि—इस सूत्रसे महावीरस्वामी, सर्व तीर्थकरो तथा जिनवाणी की स्तुति की गई है। यह सूत्र देवसि प्रतिक्रमणमे बोला जाता है। इसे केवल पुरुषो ही बोलते है।

विशाललोचन—इस सूत्रमे महावीरस्वामी, सर्व तीर्थकरो तथा जिनवाणीकी स्तुति की गई है। यह सूत्र राइ प्रतिक्रमणमें बोला जाता है। इसे केवल पुरुषो ही बोलते है।

श्रुत देवता की स्तुति—सिर्फ पुरुष ही बोलते है।

क्षेत्रदेवता की स्तुति- सिर्फ पुरुष ही बोलते है।

कमल दल स्तुति—(यह श्रुतदेवता की स्तुति है। स्त्रियो 'सुअदेवया' की स्तुतिके बदलेमे इसे बोलती है।)

भुवनदेवताकी स्तुति तथा क्षेत्रदेवताकी स्तुति—ये दोनो स्तुतिया भुवनदेवता तथा क्षेत्रदेवताकी है। ये दोनो पाक्षिक प्रतिक्रमणमे बोली जाती है। और स्त्रीया 'जिसे खित्ते साहू' के स्थानमे "यस्या क्षेत्र" वाली गाथा बोलती है।

अड्ढाइज्जेसु सूत्र—इस सूत्रमे अढाई द्वीपमे रहे हुए सर्व मुनिओको नमस्कार किया जाता है।

वरकनक स्तुतिसे उत्कृष्ट भावसे विचरनेवाले १७० तीर्थकरो को नमस्कार किया जाता है। इसे सिर्फ पुरुष ही बोलते है।

लघुशांति–श्री नाडुल नगरमा मरकी हटाववा श्रीमानदेवसूरिजीए आ स्तोत्र रच्यु छे एने भणवाथी, साभळवाथी तथा एना चडे मत्रेलु जल छाटवाथी सर्व रोगो दूर थया हता अने थाय छे. अने शाति फेलाय छे आ स्तोत्र पूर्वमाथी उद्धरेलु छे, तेथी जयादेवी आकर्षाइने केवी रीने शाति फेलावे छे, तेनी खूबीनो चमत्कारिक रीते विकास वताववामा आव्यो छे

चउक्कसाय सूत्र– आ श्रीपार्श्वनाथ प्रभुना गुणोनी स्तुतिरूप चैत्यवदन छे.

भरहेसरनी सज्झाय– आ सज्झायमा प्रात स्मरणीय ब्रह्मचारी दानेश्वरी तथा तपस्वी वगेरे उत्तम पुरुषो अने महासतीओना नाम गणाव्या छे.

मन्नह जिणाणं सज्जाय–आ सज्झायमा श्रावकने करवा योग्य छत्रीस कृत्योनु वर्णन छे

सकल–तीर्थ–वदना– आमा त्रण लोकनी अदर आवेला शाश्वता अशाश्वता चैत्यो तथा तेनी अदर रहेली प्रतिमाओनी सख्या बतावी, तेमने नमस्कार करवामा आव्यो छे आ तीर्थमाला श्रीजीवविजयजी महाराजाए रचेल छे.

सकलाऽर्हत स्तोत्र– चोवीशेय तीर्थंकर परमात्माओनी स्तुतिरूप आ सूत्र पाक्षिकादिक ३ प्रतिक्रमणोमा चैत्यवदन तरीके बोलाय छे आमांना २६ मा विना २७ मा सुधीना श्लोको श्रीमान् कलिकालसर्वज्ञ श्रीहेमचंद्राचार्यविरचित त्रिषष्टि–शलाका पुरुषचरित्रना मगलाचरण तरीके होवा छता, महत्त्वना होवाथी तेनो चैत्यवदन तरीके उपयोग करवामा आव्या छे अने २१ मो

श्लोक पण तेमना ज अन्य ग्रथोमानो छे बाकीना अन्य आचार्य-कृत जणाय छे २८मो श्लोक श्रीमद् हरिभद्रसूरिविरचित अनेकान्तजयपताका ग्रथना मगलाचरणरूप छे

स्नातस्या–स्तुति श्रीमत् कलिकालसर्वज्ञ श्रीहेमचन्द्राचार्य महाराजाना शिष्य बालचद्रमुनिए रचेली आ महावीरस्वामिनी स्तुति ज मात्र तेमना सतोष खातर पाक्षिकादि प्रतिक्रमणोमा बोलवा श्रीसघे कबूल करेली छे

पाक्षिकादि अतिचार–पाच आचार, सम्यक्त्व सहित बार व्रतो, सलेषणा, अने प्रतिसिद्धकरणादिना अतिचारो आमा आपवामा आवेला छे)

अजितशांति स्तव – आमा प्राकृत भाषामा भक्तिभर्या हृदयथी विविध मधुर छदोमा श्रीनदीषेण आचार्य महाराजे श्रीअजितनाथ प्रभु अने श्रीशातिनाथ प्रभुनी काव्यमय स्तुति करी छे

बृहच्छान्ति स्तोत्र

श्रीसघमा अने सर्वत्र शाति–तुष्टि–पुष्टि जळवाय माटे जेवी रीते श्रीजिनेश्वर परमात्माना जन्माभिषेक वखते इन्द्रादिक देवो शातिनी उदघोषणा करे छे, ते प्रमाणे प्रतिष्ठा स्नात्रादिना प्रसगे शातिनो उद्घोषणा करवा माटे मगलमय आ स्तोत्र छे

श्री संतिकर स्तोत्र

श्रीशातिनाथ प्रभुनु आ स्तोत्र सर्व विघ्नोथी रक्षण करनारु छे रोज एक वखत, त्रण वखत, सात वखत के एकवीश वखत पवित्रता साथे गणवाथी तरत सफलता मळे एवु होवानु कह्यु छे.

वंदितु सूत्रका भावार्थ

वंदित्तु (श्रावक का प्रतिक्रमण सूत्र) दिन और रात्रि में लगे हुए जुदा-जुदा अतिचार (प्रगट हुवे आत्म गुणों को मलिन करने वाले दोषों) से पीछे हटने के लिये शाम को सूर्यास्त के समय और सुबह सूर्य उगते समय बोलने का होता है। इसमें श्रावक के सम्यक्त्व सहित १२ व्रतो का वर्णन तथा उनमे लगने वाले जुदा-जुदा दोषो की समझ और उनकी माफी, आत्म साक्षी निंदा गुरु साक्षी गृहा किया जाता है।

सर्वज्ञ ऐसे तीर्थकर व सिद्ध भगवान को और धर्माचार्य को, उपाध्याय और सब साधुओ को वन्दना करके श्रावक धर्म मे लगे हुए दोषों से पीछे हटने की इच्छा करता हूँ ॥१॥

ज्ञान दर्शन और चरित्र में मैने जो कुछ सूक्ष्म या बादर व्रत के दोष लगाये हो, उनकी निंदा करता हूं और गुरु साक्षी से गर्हा करता हूँ ॥२॥

दो प्रकार सचित्त (सजीव वस्तु) और अचित्त (अजीव वस्तु) ऐसे ही पाप वाला और बहुत आरम्भ वाला स्वयं करने से और दूसरो पासे कराने से दोष लगा हो उन सब से मैं पीछे हटता हूँ। ३॥

पाच इन्द्रियो से अशुभ भावना वाला, चार कषायों युक्त, राग और द्वेष से जो कुछ मैंने अशुभ कर्म बाधा हो, उनकी निंदा करता हूँ और गुरु समक्ष गर्हा करता हूँ ॥४॥

(सम्यगदर्शन के अतिचार)

अर्थः-विना उपयोग से राज कर्मचरियों व बहुत लोगों के आग्रह से या पराधिनता के कारण से (मिथ्यात्वयों के मदिरादिक में) आने जाने में, व उन स्थान पर खडे रहने मे, व इधर उधर फिरने में जो कुछ अतिचार रूप पाप कर्म दिवस सम्बन्धी क्रिया हो, उन सब से पीछे हटता हूं अर्थात् गुरु समक्ष सब को त्याग करता हू ॥५॥

अर्थ : (१) जिन वचन में शंका, (२) अन्य धर्म मानने की इच्छा (३) सा ु साध्वी का मलिन वस्त्र व शरीर देखकर या धर्मष्टि पुरूषों की क्रिया देखकर दुर्गछा (४) मिथ्यात्वयों की प्रशंसा और (५) सन्यासी तापसादिकों का अत्यन्त गाढ परिचय करना यह सम्यक्त्व के पाच अतिचार दिन मे किये हो उनसे पीछे हटता हूं ॥६॥

खुद के लिये, दूसरो के लिये और दोनों के लिये आहारादिक पकाने में या पकवाने मे छः काय जीवो सम्बन्धी आरम्भ प्रवृति करने से जो कुछ पापमय दोप लगा हो उन सब दोषो की निन्दा करता हूं ॥७॥

॥ सामान्य १२ व्रत के अतिचार ॥

जिन व्रते मे कुछ भी छुट छाट न हो वो सूक्ष्म व्रत कहलाते हैं जिनको साधु महाराज पालते हैं और जिन व्रतों मे छूट छाट रखी जाय उनका स्थूल व्रत कहते है। छता यह गृहस्थो के लिये मुख्य धर्म क्रिया का अंग है ॥

(क) पांच अणुव्रतो (१) स्थूल जीव हिंसा का त्याग

(२) स्थूल मृषावाद का त्याग (३) स्थूल अदत्तादान का त्याग (४) स्वदारासंतोष पर स्त्रीगमन से अटकना (५) धन–दौलत धान–जमीन–जेवर–आदि का परिमाण ।

(ख) तीन गुणव्रत (१) भोग और उपभोग का परिमाण (२) दिशा का परिमाण (३) अनर्थ दंड विरमणव्रत दूसरे को पाप करने का उपदेश देना ।

(ग) हिंसा प्रदान–यानी हिंसाकारी शस्त्र–मिटर और मशीनरी दुसरे को देना–खुद बनाना और प्रमादाचरण- नाटक, सरकस, सिनेमा, रेडीयो – टेलीवीझन वगैरह वगैरह जो कुछ अतिचार लगाया हो उनसे पीछे हटता हूँ ॥८॥

॥ अर्थ सामायिक व्रत ॥

(९)(१०) अणुव्रत के अन्दर प्रमाद से अप्रशस्त भावना में रहकर स्थूल प्राणातिपात त्याग करके जो कुछ किसी जीवों को मारा हो, दुख दिया हो–इत्यादि इस पहला व्रत सम्बन्धी दिन में दुराचरण किया हो उन सब का प्रतिक्रमण करता हूँ ॥९॥१०॥

(११) दूसरे अणुव्रत में प्रमाद के कारण क्रोधादि भाव में रहनेसे स्थुल असत्य वचन बोलने से अतिचार लगा हो उसकी माफी चाहता हूँ ॥

(१२) बिना विचारे किसी पर आरोप रख देना । किसी को स्त्री व पति की गुप्त बात कही हुई प्रगट की या खोटा उपदेश दिया, झुठा लेख लिखा हो यह ५ अतिचारों

द्वारा मैने दिन भरमें अशुभ कर्म बाधा हो उन तमाम दोषों से पीछे हटता हूँ ॥

(१३) तीसरे अणुव्रत में प्रमाद के कारण से दूसरे की वस्तु ग्रहण करने का सोगद त्याग करके अप्रशस्त काम किया हो उनकी शुद्धि करता हूँ ॥

(१४) चोरी से मस्ती चीज ली हो या उनकी चोरी करने मे मदद की हो। अच्छी बुरी चीजों को इकट्ठा करके वेची हो। बुरी को अच्छी करके वेची हो राज तरफ से मनाई किवे हुए देश मे जाना, राजद्रोह करना या जकात, सेल्टेक्स इनकमटेक्स वगैरह वगैरह चोरी करना, भुग तोल, नाप रखना इत्यादि दिन सम्वन्धी जो कुछ दोप लगाया हो उसको मै शुद्धि करता हू ॥

(१५) अर्थः सदा के लिये लिया हुवा परस्त्री सम्वन्धी का सोगन तोड कर चौथे स्वदारा संतोप व्रत के अन्दर प्रमाद से खराव मन के भावना पूर्वक अशुद्ध आचरण किया हो।

(१६) अर्थ–अण अ द्ध आचरण वनते है ॥

किसी की ग्रहण की हुई या परणी हुई न हो ऐसी स्त्री वैश्यादि से सम्बन्ध करना, कुछ समय के लिये किसी की स्वीकार की हुई स्त्री से मोह करना परस्त्री के साथ काम क्रीडा करना, दूसरे की पुत्र–पुत्री का व्याह कराना, काम भोगे की तीव्र इच्छा करना–इस तरह से चोथे

व्रत अतिचारो से कर्म बन्ध किये हो तो दिन भर के सब पापो से पीछे हटता हूँ ॥

(१७) इस पाचवे व्रत मे स्थूल परिग्रह धन, पैसादि, खेत, मकान, बिल्डिग रुपया–आदी, सोना हीरा, वगैरह धातु, २४ प्रकार का धान इत्यादि अशुभ मन के भावो से प्रमाद पूर्वक परिमाण का सौगन त्याग कर अशुभ आचरण किया है ॥

(१८) ऊँची–पहाड पे जाने की, नीची भोयंरे मे जाने की दिशा, तिर्छी, पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण व चार अग्नि आदि दिशा मे अमुक अमुक मिलों तक जाने के परिमाण किये बाद भूल के कारण जाने से एक दिशा मे जाना, दूसरी दिशा मे ज्यादा जाने से पहले गुण व्रत मे जो अति-चार लगा हो उसको निंदा यानी आत्म साक्षी धिक्कारता हूँ ॥

(२०) शराब आदि कोई प्रकार की नशा वाली चीज, मास वगैरह नही खाने योग्य चीज और फुल फल सुगंन्धी तेलादि वस्तु, व सुगन्धी फुलों की माला इत्यादिक मर्यादा उपरात अधिक वापरने से उपयोग परिभोग के दूसरे गुणव्रत में लगे हुए अतिचारों की मै निन्दा करता हू ।

(२१) नियम से ज्यादा सचित्त खाया हो, सचित्त के साथ मिली हुई चीज खाई हो, कच्ची पचित मिश्र वस्तु खाई हो, आधी कच्ची आधी पकी वस्तु खाई हो, तुच्छ औषधि–दवाई या तुच्छ पदार्थ के तरह का अभक्ष्यादि वस्तु

खाई हो, खाने मे दिन सम्बन्धी लगे हुवे सब दोषों को विसराता हू, अर्थात त्याग करता हूँ॥२१॥

(२२) कुम्हार, लुहार, सुनार, भाड भुजादिक काम में अग्नि सम्बन्धी पाप कर्म किया हो तो अंगार कर्म (१) पुष्प-फल वनस्पत्ति अनाज के लिये वाग खेती वाडी अनाज आदि कर्म किया हो तो वन कर्म (२) गाडी वैल घोडा ऊट हाथी आदि को वेचना-व्यापार करना व साठी कर्म (३) वैल घोडा ऊँट आदि किराये, पे देना या लेना व भाटिक कर्म (४) कुवॉ, वावडी, नीव खण आदि खोदे या और के पास खुदवाये व स्फोटिक कर्म-यह ५ कर्म श्रावक को अवश्य ही त्याग करना चाहिए।

फिर हाथी दात व्यापार १-लाख-पापडा का व्योपार (२) गुड तेल घी आदि रस व्यापार (३) तोता, मैना, मुर्गा वकरा, ऊँट, दास, दासी का सेश अधिक व्यापार॥ (४) व विष जहार व्यापार अफीम, गाजा, भाग, चरस-सामेल आद का व्यापार ५ इन पाच कुव्यहार को भी श्रावकों को छोडना चाहिये ॥२२

वैसे ही फिर घंटी, विजली की आटा पीसने की मशीन हर जात की मोटर आइलइजन चरखा-कपडा वनाने की सोचे साठा तेल आदि का हर प्रकार के मशीन यंत्र चाहे हाथ से चले या विजली के मशीन यत्र से चले (१) जानवर के नाक कान विधाना या उनको खस्सी करवाना व निल्ल-

छण कर्म (२) खेत या वाग मे घास कॉटादि जलाने का आग लगवाना व दवदाह कर्म (३) छोटा या वडा तलाव व द्रह आदि का पानी सुखाना व सोसए कर्म (४) दुरा-चारी वेश्या, सिनेमा, टी. वी, रेडियो, ग्रामोफोन, नाटक, नाच, सरकस, भाड, तमासगिरों को व हिसक जीवो का पालन पोसण करना व दसई पोस कर्म यह ५ सामान्य कर्म भी श्रावकों को अवश्य छोडना चाहिये ॥२३॥

इस तरह १५ कर्मादान का व्यापार ही त्याग करना-त्याग करने से सातवॉ भोग व भोग व्रत मे अतिचार लगता नहीं ॥

॥ आठवा अनर्थदंड व्रत के ५ अतिचार को वनाने वाला अधिकरन यानि पाप कर्म का साधन वताते है ॥

आठ अनर्थ दंड मे मैंने शस्त्र कोई जात हथियार अग्नि, मुसल, यन्त्र किसी प्रकार की मशीनरी व मशीनरी मे काम आने वाले मीटर वगैरह, घास, लकडा, मूल जड-किसी प्रकार की दवाई, सापादिक को खिलाने का मंत्रादिक साप को पकडने के लिये जडी बूटी इत्यादिक पापकारी पदार्थ काम मे लिये हो उन सव का दिन मे अति चार लगा हो उनको विसराता हॅू अर्थात त्याग करता हॅू ॥२४॥

अर्थ—विना छाने पानी से या वेकाम स्नान किया हो, तेल पीठी का मर्दन कर मैल उतारा हो—नखों की पोलीश, पफ पावडर, मैंदी वगैरह शरीर पर लगाया हो,

सुगन्धी केसर चंदन अत्तर आदि से विलेपन किया हो, कुतूहल से या मोह दशा से रेडियो, टेलीवीजन, ग्रामोफोन, गायिका-वेश्या का गाना सुना हो स्त्री-आदि का रूप निरीक्षण किया हो, रस गंध की उत्तमता देखकर बेकाम विशेष उपयोग किया हो। वस्त्रादिक आसन, कुरसी टेबल बैंच गदी आदि व आभूषणादिक फिजूल प्रमाद से ज्यदा वापरा हो, उन सम्बन्धी दिन में लगे हुए सब अतिचार का त्याग करता हूँ ॥२५॥

काम भोग व स्त्री कथा करना, १ लोगों की हंसी मजाक हो वैसा काम चेष्टा करना। २ चपलता से कुवचन कहना या गाली देना। ३ पाप कृत कोई प्रकार की चीज तैयार करना या करवाना। ४ मर्यादा उपरात ज्यादा चीज काम में लेना इत्यादि अनर्थ दंड होता है। इसमें लगे हुए अतिचार की मै निंदा करता हूँ ॥ २६ ॥ (जिससे आत्मा व्यर्थ पाप से दडाय, उसको अनर्थ दंड कहते है ॥

मन, वचन, काया संबधी ३ प्रकार के दुष्ट प्रणिदान, भाव या बुरे योग व्यापार करना—ये तीन अतिचार. अस्थिर पने से सामायिक मे सामायिक के टाइम पहले ही उठ-जाना ४ मैने सामायिक ली है या नहीं ली ॥ प्रमाद से यह याद नहि रखना—इस तरह से—गलत सामायिक करने से ५ सामायिक व्रत नाम के पहला शिक्षाव्रत मे लगे हुए दोषो की मैं निंदा करता हूँ ॥२७॥

अर्थ—दिशा परिमाण व्रत को बाहर से वस्तु मगाना, अपने पास से बाहर भेजना, उप शब्द से अपना होना मालूम करना और पत्थर आदि फेककर जाण करना इत्यादि कार्य करते देशावगासिय नाम के दसरे शिक्षाव्रत में जो दोप आ गया हो उसकी मैं निन्दा करता हूँ ॥२८॥

अर्थ—पोपध में संथारा करते, पडिलेहन करते, मलमुत्र त्याग की विधि मे प्रमाद हुआ, भोजन की चिंता हुई ॥ विधि में भूल हुई हो इस तरह से तीसरे शिक्षा व्रत मे किसी तरह का दोप लगा हो उसको मैं निन्दा करता हू ॥२९॥

अर्थ—सचित पृथ्वी आदि पर साधु के लिये कल्पना या वस्तु रखना या सचित वस्तु फेंक देना, पराई वस्तु को अपना बनाना, अपनी वस्तु को पराया बनाना, विना भाव व गुस्से से दान देना और गोचरी के समय को टालकर आमंत्रण करना इत्यादि इस तरह चौथे शिक्षाव्रत मे जो कोई दोप लगा हो उनकी मैं निन्दा करता हू ॥३०॥

अर्थ—जो साधु ज्ञानादि गुण मे रत हैं या जो वस्त्रपात्र आदि उपाधि वाले है, वे सुखी कहलाते है। जो व्याधि से पीडित है तपस्या से खिन्न है या वस्त्र-पात्र आदि उपाधि से दुखी है या रोग के कारण दुखी हो और गुरु आज्ञा में रहने वाले विचरने वाले मुनिराज की मैने राग या द्वेप के कारण आहार पानी आदि से भक्ति की हो तो मेरे कृत्य की निन्दा करता हू, घृणा करता हूँ ॥३१॥

कर्म वध होता है कारण कि वह निर्दयता से नहिं करते परन्तु कोमल भाव से करते है ॥३६॥

अर्थ: जैसे अच्छा होशियार वैद्य शीघ्रता से रोग का नाश कर देता है उसी तरह से समकितधारी श्रावक भी अल्प कर्म बन्ध का प्रतिक्रमण, पश्चाताप, प्रायश्चित द्वारा नष्ट कर देता है ॥३७॥

अर्थ: जैसे शरीर मे रहे हुवे सर्पादिक के जहर का मन्त्र तंत्र जानने वाला वैद्य मंत्रों से नाश करता है व शरीर को विष रहित करता है, वैसे ही वो प्रतिक्रमणादि विधि पूर्वक करके लगे हुए पाप को पापरहित करता है. अर्थात आत्मा को निर्मल करता है ॥३८॥

अर्थ: इस प्रकार रागद्वेष से उत्पन्न किये हुए आठ प्रकार के कर्म को गुरु के पास जाहिर करके अर्थात आत्म साक्षी से निन्दा करके अच्छा श्रावक शीघ्र उन कर्मों को नाश करता है ॥३९॥

अर्थ: पाप किया हुआ मनुष्य भी गुरु के पास पवित्र भाव से आलोचना कर, व आत्मसाक्षी से निंदा करके, जैसे मजदूर बोझा उतारकर अत्यन्त हलका होता है वैसे ही वह बोझा उतर जाने से अत्यन्त हलका होता है ॥४०॥

अर्थ: जबकि श्रावक संसारी कार्य मे बहुत लयलीन होता है तो भी इन ६ आवश्यक क्रिया (सामयिक, लोगस्स गुरुवंदन, प्रतिक्रमण, काउस्सग्ग) के भाव सहित करने से थोडे ही समय मे दुःख का अन्त कर मोक्ष पायेगा ॥४१॥

अर्थ–निर्दोष आहार पानी होते हुए भी तथा तपधारी चरण तीसरी करण तिसरी वाले मुनिराज का योग होने पर भी प्रमाद के कारन मैंने दान नहीं दिया हो तो मैं अपनी निंदा करता हॅ ॥ घृणा करता हू ॥३२॥

अर्थ–धर्म प्रभाव से इस भाव मे सुख की इच्छा व दूसरे भाव से देव इन्द्रादि के सुख की इच्छा होने के लिये मन का व्यापार किया हो । ३ अनसन के लिये व विद्वता के लिये अपना सम्मान हुआ देख कर जीने की इच्छा (४) दुःख आने पर मरने की इच्छा (५) काम भोग के वास्ते तीव्र स्त्री की इच्छा का व्यापार यह संलेसणा के ५ प्रकार के अतिचार मेरे को (हे गुरुवर्य) जीवन पर्यन्त न होवे ॥३३॥

अर्थः–सब व्रतों के अतिचार मैंने काया के योग से किये हो उनको काया के शुभयोग से वचन से किये हुए का वचन द्वारा अशुभ चितवन को मन द्वारा आत्म निन्दा कर पडिक्कमता हॅू ॥३४॥

अर्थ– २ प्रकार के वदन (मुनि वदन और चैत्य वंदन) १२ प्रकार के व्रत, चार कषाय, दो प्रकार की शिक्षा (ग्रहण और आसवेन रुप) ३ गारव, ४ संज्ञा ३ दण्ड, ३ गुप्ती, ५ समिति और श्रावक की ११ पडिमा उनके विषय मे जो कोई दोष लगा हो उसकी निन्दा करता हॅ ॥३५॥

अर्थः– जो कि सम्यग् दोष जीव (योग्य कारण) से थोडा भी पाप करे तो भी उनको निश्चय से अल्प ही

कर्म वध होता है कारण कि वह निर्दयता से नाहिं करते परन्तु कोमल भाव से करते है ॥३६॥

अर्थ: जैसे अच्छा होशियार वैद्य शीघ्रता से रोग का नाश कर देता है उसी तरह मे समकितधारी श्रावक भी अल्प कर्म वन्ध का प्रतिक्रमण, पश्चाताप, प्रायश्चित द्वारा नष्ट कर देता है ॥३७॥

अर्थ: जैसे शरीर में रहे हुवे सर्पादिक के जहर का मन्त्र तन्त्र जानने वाला वैद्य मंत्रों से नाश करता है व शरीर को विष रहित करता है, वैसे ही वो प्रतिक्रमणादि विधि पूर्वक करके लगे हुए पाप को पापरहित करता है, अर्थात आत्मा को निर्मल करता है ॥३८॥

अर्थ: इस प्रकार रागद्वेष से उत्पन्न किये हुए आठ प्रकार के कर्म को गुरु के पास जाहिर करके अर्थात आत्म साक्षी से निन्दा करके अच्छा श्रावक शीघ्र उन कर्मों को नाश करता है ॥३९॥

अर्थ: पाप किया हुआ मनुष्य भी गुरु के पास पवित्र भाव से आलोचना कर, व आत्मसाक्षी से निंदा करके, जैसे मजदूर बोझा उतारकर अत्यन्त हलका होता है वैसे ही वह बोझा उतर जाने से अत्यन्त हलका होता है ॥४०॥

अर्थ: जबकि श्रावक संसारी कार्य मे बहुत लयलीन होता है तो भी इन ६ आवश्यक क्रिया (सामयिक, लोगस्स गुरुवंदन, प्रतिक्रमण, काउस्सग्ग) के भाव सहित करने से थोडे ही समय मे दुःख का अन्त कर मोक्ष पायेगा ॥४१॥

अर्थः आलोपगा गुरु के पास लेने की बहुत प्रकार की होने पर भी प्रतिक्रमण के समय याद नाहि आई हो जिससे ५ अणुव्रत रूप मूलगुण व सातव्रत रूप उत्तर गुण में जो दोष लगा हो उनको मैं निन्दता हू अर्थात मै गर्हा करता हूॅ ॥४२॥

अर्थः- केवली भगवान का कहा हुवा श्रावक धर्म की विराधना के वास्ते मै खडा हुवा हूॅ और धर्म की विराधना से पीछे हटा हूॅ त्रिविध से पिछे हटा हुआ मै चोवीस तीर्थ-करो की वंदना करता हूॅ ॥४३॥

अर्थः जितनी प्रतिमाए व जितने जिन मन्दिर उर्ध्व-लोक (ज्योतिष वैमानिक मे अधोलोक (भुवनपति) में तिरछालोक (मनुष्यलोक व नंदीश्वर आदि द्वीपो) मे है वहॉ रहे हुए उन सबको यहॉ पर रहा हुआ मै वंदन करता हूॅ ॥४४॥

अर्थः भरत, ऐरावत, और महाविदेह क्षेत्र में जो कोई साधु है और जो तीन करन, तीन दण्ड से विराम पाये हुवे सर्व साधुओ को मैने नमन किया है ॥४५॥

अर्थः अनादि काल से इकट्ठे किये हुवे पापों का नाश करने वाली लाखो जन्म जन्मान्तरो का अन्त करने वाली है और जो तीर्थङ्करो के पवित्र मुख से निकली हुई है, ऐसी सर्व हितकारक धर्म कथा से मेरा दिन व्यतीत होवे ॥४६॥

अर्थः अरिहत, सिद्ध, भगवान, साधु, श्रुत धर्म व चरित्र

धर्म यह मुझे मंगल रूप होवे और समकितधारी देवता मुझे समाधि को देवे अर्थात् समाधि प्राप्त करने में सहायक हो ॥४७॥

स्थूल जिन हिंसा आदि पाप कर्मों के करने का श्रावक के लिये प्रतिषेध किया गया है उन कर्मों के किये जाने पर प्रतिक्रमण किया जाता है (२) दर्शन, पूजन, सामयिक आदि जिन कर्तव्यों के करने की श्रावक को विधान किया गया है उनके न किये जाने पर प्रतिक्रमण किया जाता है। (३) जैन धर्म प्रतिपादित तत्वों की सत्यता के विषय में संदेह लाने पर अर्थात् अश्रद्धा उत्पन्न होने से प्रतिक्रमण किया जाता है।(४) जैन शास्त्रों के विरुद्ध विचार प्रतिपादन करने पर प्रतिक्रमण करने का है ॥४८॥

अर्थः किसी ने मेरा कोई अपराध किया हो तो मैं उसको खमाता अर्थात क्षमा करता हूँ। वैसे ही मैंने भी किसी का कुछ अपराध किया हो वो मुझे क्षमा करे ॥ मेरी सब जीवों के साथ मित्रता है किसी के साथ शत्रुता नहीं है ॥४९॥

अर्थः मैंने पापों की सम्यग् प्रकारे आलोचना निन्दा, गर्हा और दुर्गंच्छाकरी और त्रिविध प्रतिक्रमण करके अब मैं अन्त मे फिर से २४ जिनेश्वरों का वन्दन करता हूँ ॥५०॥

चार शरणां

(१)

मुजने चार शरणा होजो, अरिहंत सिद्ध सुसाधुजी,
केवली धर्म प्रकाशीओ, रत्न अमुलख लाधुंजा १
चिहुंगति तणा दुःख छेदवा, समरथ शरणा एहोजी
पूर्वे मुनिवर जे हुआ, तेणे कीधा शरणा तेहोजी. मुज० २
संसारमाही जीवने, समरथ शरणां चारोजी,
गणि समय सुंदर एम कहे, कल्याण मंगळ कारोजी. मुज० ३

(२)

लाख चोरासी जीव खमावीए, मन धरी परम विवेकजी,
मिच्छामि दुक्कडं दीजीए, जिन वचने लहीए टेकजी. लाख १
सात लाख भू दग तेउ वाउना, दस चौद वननां भेदोजी,
षट् विगल सुरतिरि नारकी, चउ चउ चौद वनना भेदोजी. लाख.२
मुजने वैर नहि केहशुं, सहुशुं मैत्री भावोजी.
गणि समयसुंदर एम कहे, पामीए पुन्य प्रभावोजी. लाख. ३

(३)

पाप अढारे जीव परिहरो, अरिहंत सिद्धनी साखेजी.
आलोया पाप छूटीए, भगवंत एणी पेरे भाखेजी पाप. १
आश्रव कषाय दोय बंधवा, वळी कलह अभ्याख्यानोजी.
रति अरति पैशुन्य निंदना, माया मोह मिथ्यात्वजी पाप. २
मन वचन कायाए जे कीया, मिच्छामि दुक्कडं तेहोजी,
गणि समयसुंदर एम कहे, जैन धर्मनो मर्म एहोजी. पाप. ३

(४)

धन धन ते दिन मुज कदी होशे ? हुं पामीश संजम शुद्धोजी,
पूरव ऋषि पंथे चालशुं गुरु वचने प्रतिबुद्धोजी० धन० १
अन्त प्रान्त भिक्षा गोचरी, रणवने काउस्सग्ग करशुंजी,
समता शत्रु मित्र भावशुं, संवेग सूधो धरशुं जी धन० २
संसारना संकट थकी, छुटीश जिन वचने अवधारोजी,
धन्य समय सुंदर ते घडी, पामीश भवनो हुं पारोजी. धन. ३

श्री आदिनाथ भगवान का स्तवन

माता मरुदेवीना नंद, देखी तारी मूरति मारुं
मन लोभाणुंजी; मारुं दिल लोभाणुंजी. देखी० १
करुणा नागर करुणा सागर; कायाकंचनवान;
धोरी लंछन पाउले कांई, धनुष्य पांचसे मान माता० २
त्रिगडे बेसी धर्म कहंता, सुणे पर्षदा बार,
जोजन गामिनी वाणीमीठी, वरसंती जलधार माता० ३
उर्वशी रुडी अपछरा ने, रामा छे मन रंग,
पाये नेपुर रणझणे कांइ, करती नाटारंभ माता० ४
तुंही ब्रह्मा, तुंही विधाता, तुंही जगतारणहार,
तुज सरीखो नहिं देव जगतमां, अरवडिआ आधार० ५
तुंही भ्राता, तुंही त्राता, तुंहीं जगतनो देव;
सुरनर किन्नर वासुदेवा, करता तुजपद सेव. माता. ६
श्री सिद्धाचल तीरथ केरो; राजा ऋषभ जिणंद,
कीर्ति करे 'माणेक मुनि', ताहरी टालो भव भय फंद.
माता० ७

॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमः ॥

हे शंखेश्वर स्वामि, प्रभु जग अंतर यामि.
तमने वंदन करीए, (२) शिव सुखना स्वामि.
हे शंखेश्वर स्वामि १

मारो निश्चय एकज स्वामि, बनु तमारो दास.
तारा नामे चाले, (२) मारा श्वासो श्वास
हे शंखेश्वर स्वामि २

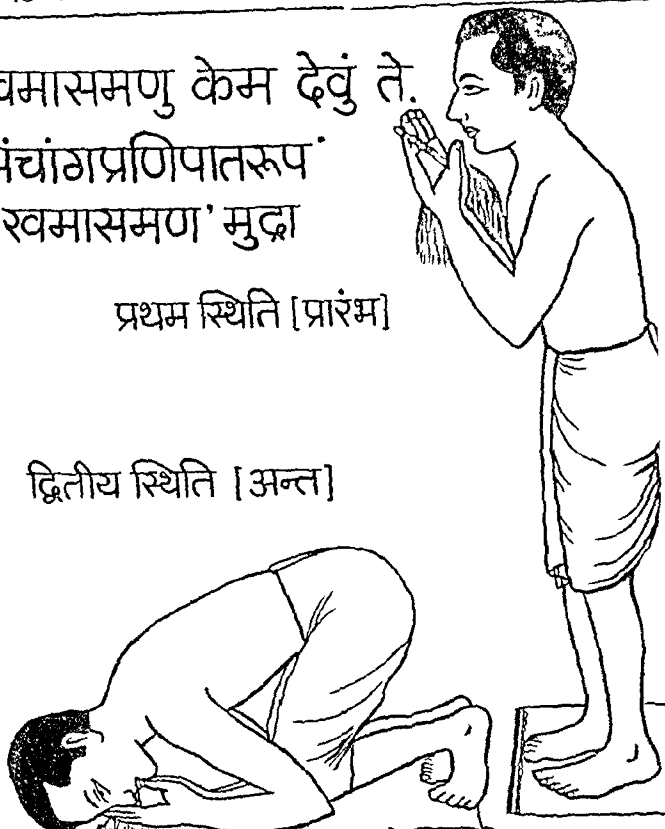
दुःख संकटने कापो स्वामी, वाछित ने आपो.
पाप हमारा हरजो, (२) शिव सुखने देजो.
हे शंखेश्वर स्वामि ३

निश दिन हुं मागु छुं स्वामि, तम शरणे रहेवा.
ध्यान तमारुं ध्यावु, (२) स्वीकारजो सेवा.
हे शंखेश्वर स्वामि ४

रात दिवस झंखु छुं स्वामि तमने मळवाने.
आतम अनुभव मांगु, (२) भव दुःख टळवाने.
हे शंखेश्वर स्वामि . ५

करुणाना सागर छो स्वामि, कृपा तणा भंडार
त्रिभुवनना छो नायक (२) जगना तारणहार.
हे शंखेश्वर स्वामि ६

પ. પૂ. આચાર્યશ્રી યશોદેવસૂરિ મહારાજ દ્વારા સંપાદિત શ્રી મુક્તિકમલજૈન
મોહનમાલા—વડોદરાના સૌજન્યથી આ ચિત્રો લેવામાં આવેલા છે

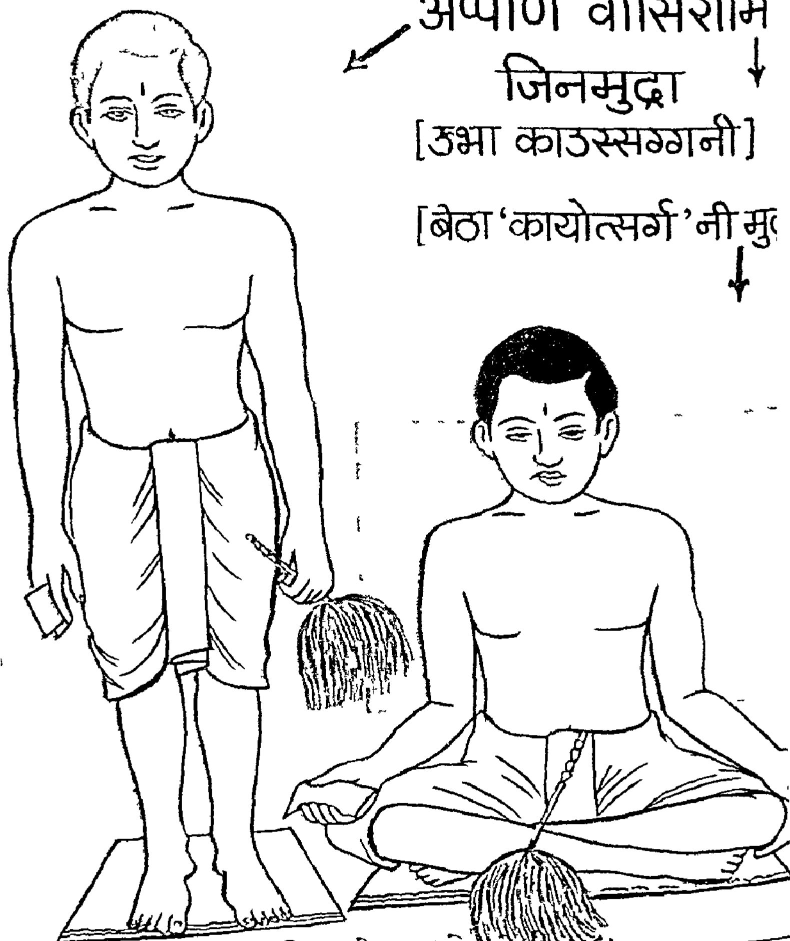


पचांग = बे हाथ बे पग अने मस्तक-ते वडे प्रणिपात = नमस्कार

— ખમાસમણું કેમ દેવું તે —

આપણી તમામ ક્રિયાઓમાં ખમાસમણું આવવાનું જ. બીજું ચિત્ર બરાબર જુઓ, અને તમે જે રીતે ખમાસમણું દો છો તેની સાથે સરખાવો અને ખામી હોય તો દૂર કરો. વધુ સમજણ મેળવવા પ્રારંભમાં છાપેલું 'ખમાસમણું કેમ દેવું' તે લખાણ વાંચો

काउसग केम करवो तेनी मुद्रा



કાઉસગ કેમ કરવો તેની મુદ્રા

બેઠા કાઉસગ કરનારે હાથ કેમ રાખવા, ચરવલો કેમ રાખવો તે, ઊ
કાઉસગ કરનારે બે પગના આગલા ભાગ વચ્ચે કેટલું અંતર રાખવું
મુહપત્તી ચરવલો ક્યા હાથમાં રાખવા, હાથ જાંઘની પાસે કેમ રાખ
... ચિત્રથી સમજાશે

वंदनना प्रारंभथी उवसग्गहरं सुधीनी 'योगमुद्रा

जयवीयराय। थी आभवन सुधी 'मुक्ताशुक्तिमुद्रा



चैत्यवंदननी आसन-मुद्रा



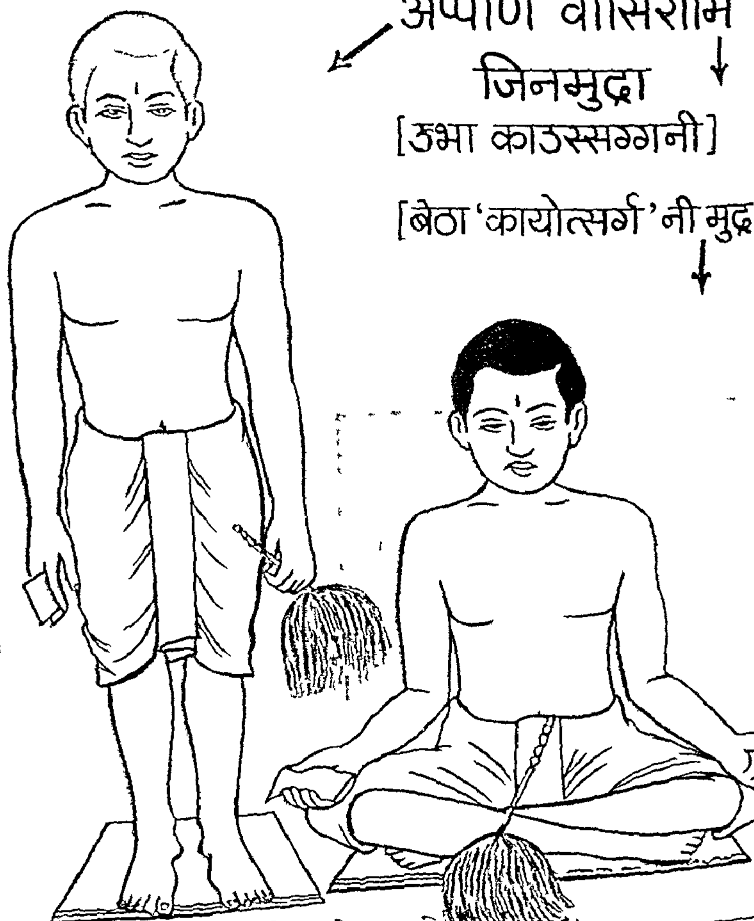
जयवीयराय वखतनी मुद्रा

वारिज्जइ थी जैन जयति शासनम्। सुधी





काउसग्ग केम करवो तेनी मुद्रा.



—કાઉસગ્ગ કેમ કરવો તેની મુદ્રા—

બેઠા કાઉસ્સગ્ગ કરનારે હાથ કેમ રાખવા, ચરવલો કેમ રાખવો તે, ઊભ
કાઉસ્સગ્ગ કરનારે બે પગના આગલા ભાગ વચ્ચે કેટલું અંતર રાખવું
મુહપત્તી ચરવલો ક્યા હાથમાં રાખવા, હાથ જાંઘની પાસે કેમ રાખવ
અને ધ્યાનને લગતી મુદ્રા કેમ રાખવી તે આ ચિત્રથી સમજાશે

प्रतिक्रमणमा बेठा हो त्यारे

प्रतिक्रमणमा काळवख्ते माथे कामळी



बे हाथ जोडी एकाग्र चित्तराखी प्रतिकमण करवु



काळवख्ते लघुनीति पेसाब वगेरे करणे खुल्ला जवु पडे त्यारे चित्रमा बताव्यामुजब माथे कामळी

માતરૂ -પેશાબ-વડી શંકાદિ કરવા જ
અને તે વખતે કામલીને કાલ થઇ ગયે
(મુબઇમા છે) અને જ્યા ખાગી ગયા
ત્યારે અથવા વરસાદના ઝરમર હોય
કામલી ઓઢીને જ માતરૂ જવુ
કામલી ભૂલી ગયા હોય તો કોઇની
માગી લેવી અથવા શ્રી સંઘે ઓઢવાની
રાખવી, મુહપત્તી કેડે ખોસવી
બગલમા રાખવો માતરૂ કર્યા પછા
પાણીથી હાથ ધોઇ નાખવા

मुहपत्ती अने शरीरनी ५०, पडिलेहणा अने ५०, बोल.

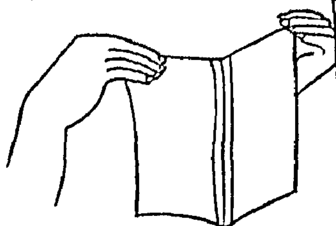
सूचना चरवलावाळाने ज उभडक बेसीने पडिलेहण करवानो अधिकार छे न होय तेने बेसीने पडिलेहण करवी



१ उभडक बेसो,
२ हाथ बे पगनी अदर राखो,
३ मुहपत्तीने खोलो,
४ पछी अवलोकन करो-
ते साथे 'सूत्र' आ बोलने
मनमा बोलो

नं १ थी १
मुहपत्तीपडि
१ दृष्टिपडिलेहणा

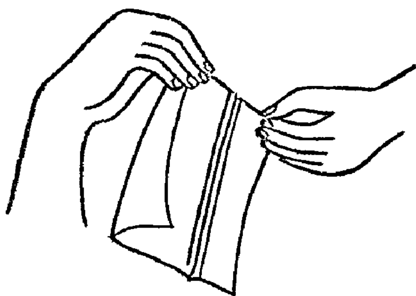
①



हवे मुहपत्तीने बीजी
बाजुए फेरवी, प्रमार्जना
करवानी साथे
अर्थतत्त्वकरीसद्दहु' बोलो

दृष्टिपडिलेहणा

②

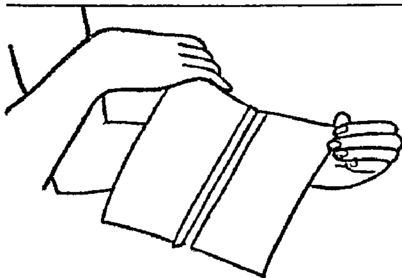


"सम्यक्त्व मोहनीय,
मिश्र मोहनीय,
मिथ्यात्व मोहनीय परिहरू",

आ बोल बोलीने मुहपत्तीना अेक छेडाने त्रणवार खखेरवो

२-६ ऊर्ध्वपप्फोडा

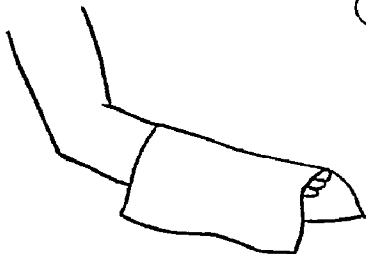
③

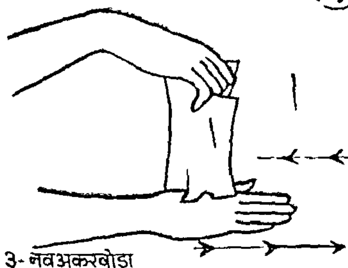


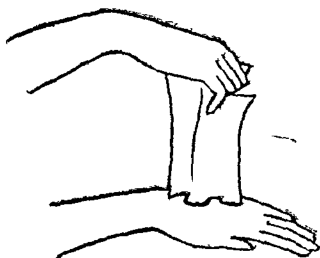
"काम राग, स्नेह राग,
दृष्टि राग परिहरू"

④

आ बोल बोलीने मुहपत्तीना बीजा छेडाने त्रणवार खखेरवो पछी चित्र मुजब डाबा हाथना कांडाउपर नाखवी




3- नवअकरबोडा





(५) मुहपत्तीने चित्रमा बताव्या मुजब आगलीओमा भरावो पछी आगळाथी काडा तरफ अने फरी काडाथी आगळा तरफ मुहपत्ती वडे त्रण त्रणवार प्रमार्जना करो साथे नीचेना बोल बोलो-

"सुदेव,सुगुरू,सुधर्म आदरू"
"कुदेव,कुगुरू,कुधर्म परिहरू",
ज्ञान दर्शन चारित्र आदरू,

(६) "ज्ञान विराधना,दर्शन विराधना, चारित्र विराधना परिहरू"
"मनो गुप्ति,वचन गुप्ति, काय गुप्ति आदरू","मनोदड वचन दड,कायदड परिहरू"

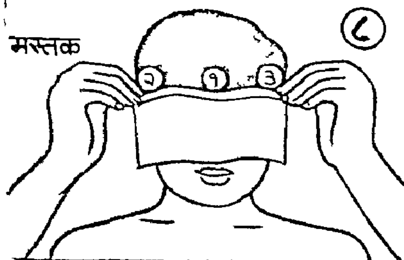
पछी जमणा हाथना पृष्ठभागे मुहपत्ती (छठ्ठा चित्र मुजब) फेरवता

(७) "हास्य,रति,अरति परिहरू" बोलो

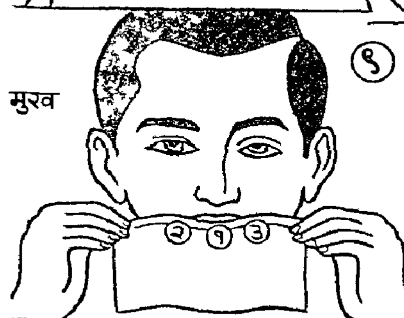
पछी डाबा हाथमा मुहपत्ती भरावीने जमणा हाथना पृष्ठभागे फेरवता

"भय,शोक जुगुप्सा परिहरू' बोलो

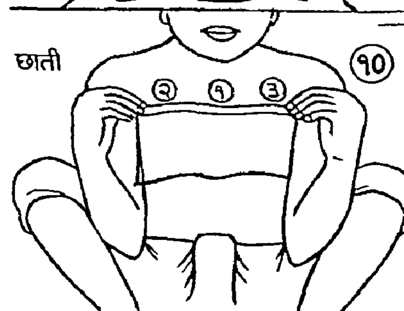
शरीरनी २५,पडिलेहणामां मस्तकादिनी पडिलेहणा.



पछी मुहपत्तीना बे छेडाने बे हाथथी पकडीने मस्तकनी वच्चोवच अने तेनी बने बाजुए पडिलेहणा करता अनुक्रमे
"कृष्ण लेश्या, नील लेश्या, कापोत लेश्या, परिहरू," बोलो



पछी मुखनी प्रमार्जना करता-
"रसगारव, रिद्धिगारव, सातागारव परिहरू" बोलो



पछी छातीनी पडिलेहणा करतां-
"मायाशल्य, नियाणशल्य, मिथ्यात्वशल्य परिहरू."
आ बोलने मनमा बोलो

खभा अने पगनी पडिलेहणा

(११)



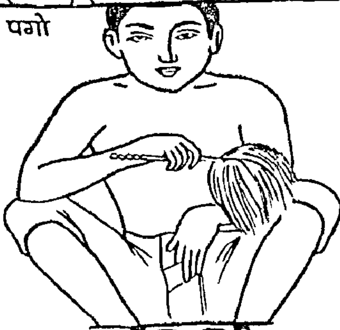
ते पछी मनमा नीचेना बोल बोलवा पूर्वक जमणा खभानी पडिलेहणा करो-

"क्रोधमान परिहरू".

डाबा खभे करता-

"मायालोभ परिहरू".

बोलो



चरवलाथी अथवा मुहपत्तीथी जमणा पगनी (३ वार) प्रमार्जना करत

"पृथ्वी काय, अप्काय, तेऊकायनी रक्षा करू",

अने डाबा पगे करता

"वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकायनी रक्षा करू"

बोलो

(१२)



साध्वीजीने न १० अने ११ नी अने श्राविकाओने ८ १० ११ नंबरनी पडिलेहणा होती नथी

सुगुरुवंदनना प्रारंभनुं

अवनतवन्दन

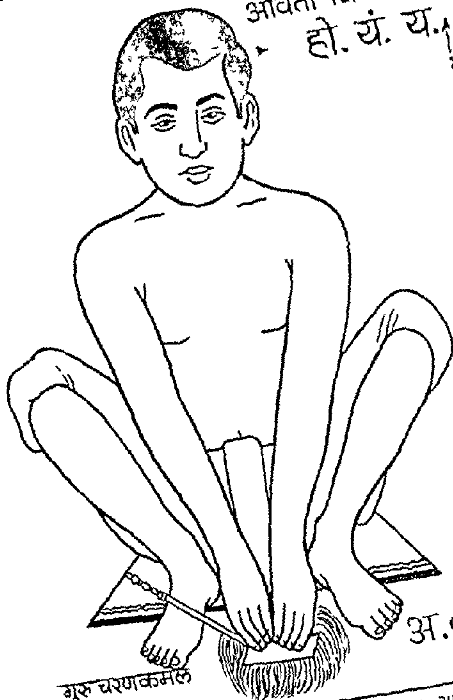
[प्रारंभनु शीर्षनमन]



સૂચના—પ્રતિક્રમણમા ઊભા ઊભા કરવાની ક્રિયા ઊભા ઊભા જ કરવાની હોય છે પણ આજની પરિસ્થિતિ એવી કમનસીબી ભરી છે કે સેકડો એસી થી નેવુ ટકા લોકો ઊભા થવા માટેના સીગ્નલ જેવો ચરવલો લાવતા નથી એટલે બેઠા બેઠા બધુ કરે છે

અહી આ ઊભા ઊભા વાદણા શરૂ કરતા પ્રારંભમા આ મુદ્રા કરવાની છે

सुगुरुवंदन प्रसंगना ६ आवर्तो.



વાંદણા વખત મુહપત્તી, બે હાથ અને ચરવલો ક્યા અને કેવી રીતે રાખવા
તે ચિત્રમા જુઓ
अ બોલતી વખતે બે હાથ ક્યા મૂકવા અને हो બોલતી વખતે ક્યા મૂકવા,
બીજા અક્ષરો શરીરના ક્યા સ્થાન પાસે બોલવા તે તથા યથાજાત મુદ્રા સૂચિત
શીર્ષનમન વગેરે કેમ કરવું તે અહીંથી શરૂ થતા ૬ ચિત્રોમા બતાવ્યું છે

વાંદણાની વધુ સમજ માટે પ્રાગ ભના ૫૬૨મા પાના ઉપરનું લખાણ વાંચો,
જેથી વિધિપૂર્વક વંદણ કરી શકો

सुगुरुवंदनना प्रारंभनुं

अवनतवन्दन

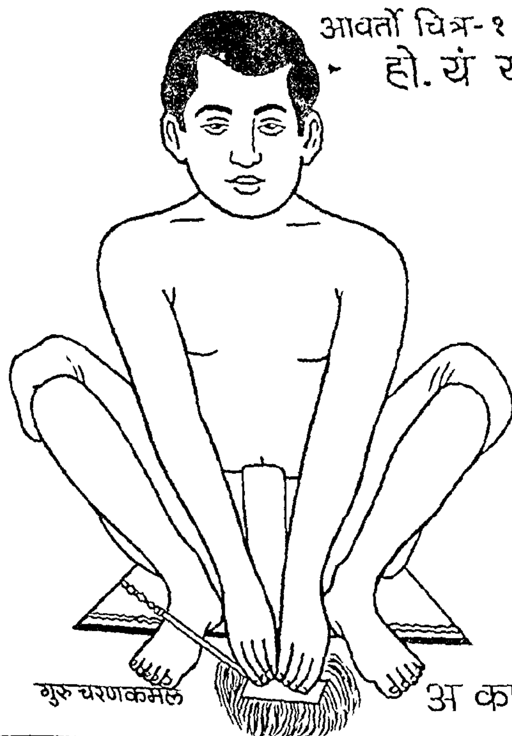
[प्रारंभनु शीर्षनमन]



સૂચના—પ્રતિક્રમણમાં ઊભા ઊભા કરવાની ક્રિયા ઊભા ઊભા જ કરવાની હોય છે પણ આજની પરિસ્થિતિ એવી કમનસીબી ભરી છે કે સેંકડે એંસી થી નેવું ટકા લોકો ઊભા થવા માટેના સીગ્નલ જેવો ચરવલો લાવતા નથી એટલે બેઠા બેઠા બધું કરે છે

અહીં આ ઊભા ઊભા વાંદણા શરૂ કરે ત્યારે પ્રારંભમાં આ મુદ્રા કરવાની છે

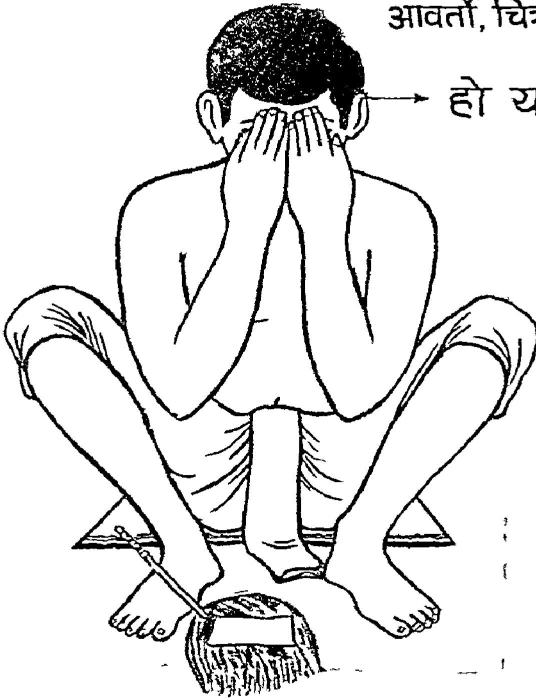
सुगुरूवंदन प्रसंगना ६ आवर्तो.



વાંદણા વખતે મુહપત્તી, બે હાથ અને ચરવલો ક્યાં અને કેવી રીતે રાખવા તે ચિત્રમાં જુઓ

અ બોલતી વખતે બે હાથ ક્યાં મૂકવા અને હો બોલતી વખતે ક્યાં મૂકવા, બીજા અક્ષરો શરીરના ક્યા સ્થાન પાસે બોલવા તે તથા યથાજાત મુદ્રા સૂચિત શીર્ષનમન વગેરે કેમ કરવું તે અહીંથી શરૂ થતા, ચિત્રોમાં બતાવ્યું છે

વાંદણાની વધુ સમજ માટે પ્રારંભના પંદરમા પાના ઉપરનું લખાણ વાંચો, જેથી વિધિપૂર્વક વંદણ કરી શકો



आवर्तो, चित्र-२


आवर्तो चित्र-३
भे. णि.
ता.व.
ज ज ज्ज





-भे णि भे

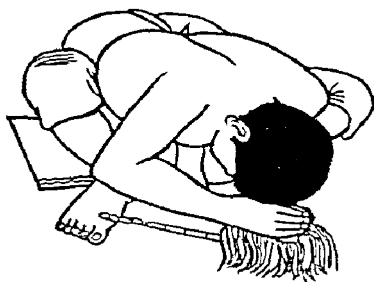
ताव

बेसीने वादणा करवाना होय त्या

'सफास खमणिज्जो -'खामेमि

[यथाजातमुद्रा]

—•हो





सफास वरवते मुहपत्ती उपर सवळा हाथ राखीने
नमस्कार करवो पछी खमणिज्जो बोलता तेमज खामेमि

'नमुत्थुण' वरताते अन्य प्रकारे कराती बीजी बे योगमुद्राओ



नमुत्थुण' वरवते करवानी योगमुद्रा
(प्रकार १)



नमुत्थुण वरवते करवानी योगमुद्रा
(प्रकार ३)

'वदित्तुसूत्रनु प्रचलित आसन

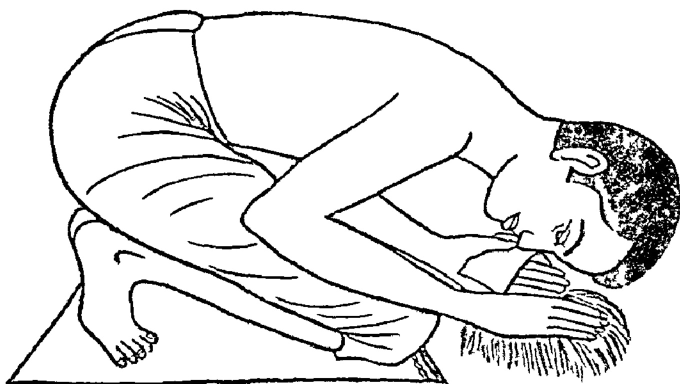


वदित्तुसूत्र'नु मुख्य आसन वीरासन



चरवलावाळो 'अब्भुट्ठिओ' केवी रीते खामे

चित्र-



मूलमुद्रा

थापवानो हाथ जमण

बेठेलानु 'अब्भुट्ठिओ'



चित्र-२



नमो लोए सव्वसाहूणं

नमो उवज्झायाणं

नमो आयरियाणं

नमो सिद्धाणं

नमो अरिहंताणं

एसो पंच नमोक्कारो

सव्व पावप्पणासणो

मंगलाणं च सव्वेसिं

पढमं हवइ मंगलम्

सत्ति

अपरिग्रह

ब्रह्मचर्य

अस्तय







ન પ્રકાશન મંદિર, અ વ

